नहले पर दहला

मूल-लेखक
समरसेट माम

अनुवादक
हरिभूषण गुप्ता

दिल्ली
रणजीत प्रिन्टर्स एन्ड पब्लिशर्स

[१]

सृष्टि परिवर्तनशील है पर मानव स्वभाव सदा एक ही रहता है।

[२]

विग्राज़ियो बुग्रोनाकोर्सी दिन भर बहुत व्यस्त रहा था और थक भी गया था पर अपने नियमित अभ्यास के अनुसार सोने से पहिले उसने अपनी डायरी में संक्षेप में लिखा : "नगरनिवासियों ने एक व्यक्ति को ड्यूक के पास इमोला भेजा"। शायद महत्वहीन समझकर उसने उस व्यक्ति के नाम का उल्लेख नहीं किया। वह व्यक्ति था मैक्यावैली और ड्यूक था सीज़र बोर्ज़िया।

विग्राज़ियो को वह दिन पहाड़-सा जान पड़ रहा था। बहुत सवेरे ही वह घर से निकल पड़ा था। उसके साथ एक टट्टू पर सवार उसका भांजा पीयरो जिग्राकोमिनी भी था जिसको मैक्यावैली ने अपने साथ ले जाना स्वीकार कर लिया था। उस दिन—६ अक्तूबर १५०२—को पीयरो की अठारहवीं वर्षगाँठ थी और इस भाँति जिंदगी के रास्ते पर निकल पड़ने के लिए बहुत ही शुभ दिन था। पीयरो एक सुघड़ युवक था। कद कुछ लम्बा था परन्तु देखने में सुन्दर लगता था। पितृहीन होने के कारण उसने अपने मामा के संरक्षण में ही शिक्षा प्राप्त की थी। उसकी लिखावट सुन्दर थी और इटालियन ही नहीं लैटिन

भाषा भी वह भली-भाँति जानता था। मैक्यावैली के आदेशानुसार पीयरो ने प्राचीन रोमन जाति के इतिहास का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मैक्यावैली रोमन जाति का बड़ा भक्त था। उसकी यह धारणा थी कि मानव प्रकृति अपरिवर्तनीय है, और मनुष्य के रागद्वेष, भावावेग सदा एकसे रहते हैं। इसलिए समान परिस्थितियों में कारण समान होने से परिणाम भी समान ही निकलते हैं। निष्कर्ष यह निकला कि यदि आज की पीढ़ियां इसे ध्यान में रक्खें कि किसी परिस्थिति विशेष में प्राचीन रोमन लोगों ने किस प्रकार व्यवहार किया था तो वे भी अपने व्यवहार में बुद्धिमत्ता तथा दक्षता का परिचय दे सकती है।

विआजियो अपने मित्र मैक्यावैली के अधीन एक साधारण से सरकारी पद पर नियुक्त था, और उसकी तथा उसकी बहिन की भी यही इच्छा थी कि पीयरो को भी कोई ऐसी ही नौकरी मिल जाये। जिस काम के लिए आज मैक्यावैली जा रहा था वह पीयरो के लिये व्यावहारिक ज्ञान सीखने का अच्छा मौका था। क्योंकि विआजियो यह जानता था कि मैक्यावैली से अधिक योग्य शिक्षक पीयरो को और कोई नहीं मिल सकता। यह बात खड़े-खड़े ही निश्चित हुई थी क्योंकि एक दिन पहले ही मैक्यावैली को प्रमाणपत्र और सुरक्षित यात्रा के लिए अधिकार पत्र आदि मिले थे।

मैक्यावैली मिलनसार व्यक्ति था और अपने मित्रों का सच्चा हितैषी था। जैसे ही विआजियो ने यह प्रस्ताव रक्खा कि वह पीयरो को अपने साथ ले जाए उसने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया।

पीयरो की मां यह समझते हुए भी कि अवसर चूकने योग्य नहीं है, कुछ व्यग्र थी। पीयरो आज तक कभी उसकी आँखों से ओझल नहीं हुआ था और वह समझती थी कि विरोधियों से भरी दुनिया में अकेला चल पड़ने के लिए अभी वह छोटा है। दूसरे उसे यह भी डर था कि उसका सदाचारी बेटा मैक्यावैली की कुसंगति में पड़कर कहीं बिगड़ न

जाये क्योंकि यह प्रसिद्ध था कि मैक्यावैली ऐयाश तबियत और लम्पट आदमी है। मैक्यावैली को इस बात की कोई लज्जा भी नहीं थी बल्कि नगर की महिलाओं तथा सरायों की नौकरानियों के साथ अपने करतबों की कहानियाँ वह ऐसे रस लेकर सुनाया करता था कि किसी भी भली स्त्री का मुख लज्जा से लाल हो जाय और साथ ही उसके कहने का ढंग ऐसा रोचक होता था कि नाराज होने पर भी गंभीर बने रहना कठिन हो जाता था।

विआजियो ने अपनी बहिन को समझाने का प्रयत्न किया। "फ्रांसेस्का ! दीदी ! अब तो निकोलो का विवाह भी हो गया है, अब वह अवश्य ही अपनी बुरी आदतों को छोड़ देगा। उसकी स्त्री मेरी एटा भली स्त्री है और उससे प्रेम भी करती है। क्या तुम निकोलो को ऐसा मूर्ख समझती हो कि जो चीज़ उसे अपने घर में बिना कौड़ी खर्च किये मिल सकती है उसके लिए वह घर से बाहर अपना धन लुटायेगा ?"

"निकोलो जैसा स्त्री-प्रेमी पुरुष कभी भी एक स्त्री से सन्तुष्ट नहीं हो सकता, और यदि वह स्त्री उसकी अपनी पत्नी हो तब तो और भी कम।" बहिन बोली।

विआजियो जानता था कि बहिन की बात में कुछ सार जरूर है परन्तु फिर भी वह हार मानने को तैयार न था। कन्धे उचकाते हुए वह बोला—"पीयरो अब अठारह वर्ष का हो गया। यदि ये सब बातें उसने अभी तक नही सीखी हैं, तो अब तो सीखेगा ही। क्यों भई तुम अभी तक ब्रह्मचारी ही हो ?"

"हां," पीयरो ने सहज ही में ऐसे ढंग से उत्तर दिया कि उसका विश्वास न करना असम्भव था। "अपने बेटे की कोई बात मुझसे छिपी नहीं है। वह ऐसा कोई कार्य कर ही नहीं सकता जिसे मैं ठीक न समझूं।"

"तब तो तुम्हें उसे भेज देने में कोई आनाकानी करनी ही नहीं चाहिए।" भाई ने कहा। "तुम उसे ऐसे आदमी के सुपुर्द कर रही हो

कि यदि पीयरो में कुछ भी बुद्धि है तो वह उसके साथ रह कर आदमी बन जायेगा।"

मौना फ्रांसेस्का ने अपने भाई की ओर रोषपूर्ण दृष्टि डाली। "तुम तो उसके हाथ की कठपुतली बने हुए हो। तुम पर उसने न जाने कौन-सा जादू डाल रक्खा है। वह सदा तुम्हारी हँसी उड़ाता रहता है और अपना काम भी निकालता रहता है। मेरी तो समझ में नही आता कि नौकरी में क्यों उसका दर्जा बड़ा है और क्यों तुम्हें उसके अधीन काम करने में सन्तोष है?"

मैक्यावैली व विआजियो समवयस्क थे। दोनों की अवस्था ३३ वर्ष की थी। परन्तु विआजियों का विवाह नगर के शासक मैडिसी के कृपा पात्र तथा प्रतिष्ठित विद्वान् मारसोलियो फिसिनों की लड़की से हुआ था। इसीलिये उसे सरकारी नौकरी पहले मिल गई। उन दिनों नौकरी के लिए योग्यता अथवा सिफारिश में से किसी एक से काम चल जाया करता था।

विआजियो का कद मँझोला, देह भारी तथा चेहरा गोल और गहरे रंग का था। और देखने में वह सज्जन और मिलनसार लगता था। वह ईमानदार भी था और परिश्रमी भी। वह अपनी साधारण स्थिति से सन्तुष्ट था। क्योंकि वह अपनी सीमाएँ पहचानता था और उसे किसी से भी ईर्ष्या अथवा द्वेष न था। अच्छा रहन-सहन तथा अच्छे लोगों से उसे मेल-जोल पसन्द था। इच्छाएँ सीमित होने के कारण उसका जीवन सुखी था। वह बहुत कुशाग्र बुद्धि तो न था परन्तु मूर्ख भी न था। वैसा होने पर मैक्यावेली जैसा मनुष्य उससे कभी मेल-जोल न रख पाता।

विआजिओ ने सहज ही उत्तर दिया, "सीन्यौरी के कर्मचारियों में मैक्यावैली जैसा असाधारण बुद्धिमान व्यक्ति दूसरा नहीं है।"

"यह बकवास है।" बहिन ने बात काटी।

(सीन्यौरी उस समय फ्लौरेंस की नगरपालिका थी तथा आठ वर्ष

पहले मैडिसी के निर्वासन के समय से राज्य की प्रधान शासक समिति थी ।)

"उसके व्यावहारिक ज्ञान और विलक्षण प्रतिभा को देखकर बड़े बड़े बूढ़े खुर्राट भी दांतों तले उंगली दबाते हैं । दीदी, मेरी बात गाँठ बाँध लो । अभी वह और ऊंचा पहुँचेगा । साथ ही यह भी जान लो कि मैक्यावैली उन लोगों में से नहीं है जो मित्र को बिसार दें ।"

"मुझे तो उसका रत्ती भर भी विश्वास नहीं । मेरी समझ में तो वह तुम्हें भी काम निकलने पर दूध की मक्खी की भाँति निकाल कर फेंक सकता है ।"

विआजियो को यह सुनकर हँसी आ गई । "क्या तुम उससे इसलिए नाराज हो कि उसने तुम्हारे आगे कभी प्रेम-प्रदर्शन नहीं किया । १८ वर्ष के पुत्र की माँ होते हुए भी पुरुषों के लिए अब भी तुम में आकर्षण की कमी नहीं ।

"वह खूब समझता है कि भली स्त्रियों के साथ उसकी दाल कभी नहीं गल सकती । मैं उसकी नस-नस से परिचित हूँ । शासन के लिए यह बड़ी ही लज्जा की बात है कि उसने रंडियों को बाज़ारों में ऐसे अकड़ कर चलने की छूट दे रक्खी है कि भले लोगों का निकलना दूभर हो गया है । तुम्हें वह इसीलिए अच्छा लगता है कि वह तुम्हें अश्लील कहानियाँ सुनाकर हँसाता रहता है । तुम भी कुछ कम थोड़े ही हो ।"

"इतना तो तुम्हें मानना पड़ेगा कि अश्लील कहानियाँ सुनाने में उसका कोई सानी नहीं है ।"

"और इसी से तुम शायद उसको प्रतिभावान् समझते हो ।"

विआजियो फिर हँस पड़ा—"नहीं-नहीं, केवल यही बात नहीं है । फ्रांस में अपना दूतकार्य उसने सफलता-पूर्वक निभाया । उसके पत्र ऐसे सार-पूर्ण होते थे कि शासन सभा के जो सभासद उसको व्यक्तिगत रूप से पसन्द नहीं करते थे, उन्हें भी यह बात माननी पड़ी ।"

मोना फ्रांसेस्का को कोई उत्तर न सूझा । वह कुछ भाव से बेरुखी

रही। पीयरो इस समय तक एक चतुर नवयुवक की भाँति सारी बात सुनता रहा था। उसके मामा ने उसके लिये जो नौकरी तजवीज़ की थी उसमें तो उसे कोई विशेष रुचि न थी परन्तु मामा के विचार ने उसको बड़ा प्रभावित किया था। वह इस निष्कर्ष पर तो पहुँच ही चुका था कि उसके मामा ने अपनी व्यावहारिक बुद्धि से बहिन की समस्त शंकाओं को निर्मूल कर उसे निरुत्तर कर दिया है।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही विआजियो ने पीयरो को बुलवा लिया और उसको टट्टू पर बैठाकर स्वयं पैदल ही मैक्यावैली के घर की ओर चल पड़ा।

[३]

द्वार पर घोड़े यात्रा के लिए तैयार खड़े थे। एक मैक्यावैली के लिए और दो उन दोनों नौकरों के लिए जिन्हें वह अपने साथ लिए जा रहा था। उनमें से एक को अपना टट्टू थमाकर पीयरो ने अपने मामा के साथ घर में प्रवेश किया। मैक्यावली बड़ी व्यग्रता से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। स्वागत रूप में उसने केवल इतना ही कहा—"अब हमें फौरन चल देना चाहिए।"

मेरिएटा की आँखें आँसुओं से भरी थीं। वह एक साधारण-सी नवयुवती थी। उससे उसी वर्ष मैक्यावैली ने विवाह किया था, उसके रूप के लिए नहीं बल्कि इसलिए कि विवाह तो करना ही था और मेरिएटा संभ्रान्त कुल की लड़की थी और दहेज भी मैक्यावैली की स्थिति के अनुसार ही अपने साथ लाई थी।

मैक्यावैली ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—"रोओ मत, मैं थोड़े ही समय के लिए तो जा रहा हूँ।"

"किन्तु तुम्हें जाना ही नहीं चाहिए" उसने सुबक कर कहा और फिर विआजियो को सम्बोधित करके बोली, "इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है ये दूर तक घोड़े की सवारी नहीं कर सकते।"

"क्यों क्या हुआ तुम्हें निकोलो ?" विआजियो ने पूछा।

"वही पुराना रोग है पेट में गड़बड़। पर क्या किया जाय, लाचारी है।" यह कहकर उसने मेरिएटा को हृदय से लगा लिया, "अच्छा, अब विदा दो।"

"आप मुझे पत्र तो बराबर देते रहेंगे न ?"

"ज़रूर और जल्दी-जल्दी ही", मुस्कराते हुए उसने उत्तर दिया।

मुस्कान में उसकी स्वाभाविक कठोर मुद्रा विलीन हो गई और उसकी भंगिमा में कुछ ऐसा आकर्षण झलक आया जिससे मैरिएटा का उसके प्रति प्रेम सहज ही में समझ में आ सकता था। उसने मैरिएटा के होठ चूम लिए और उसके दोनों गालों को स्नेह से थपथपाने लगा।

"तुम परेशान मत हो। विआजियो तुम्हारी देखभाल करता रहेगा।"

पीयरो घर में प्रवेश करके द्वार से लगकर ही खड़ा था। किसी का ध्यान उधर आकर्षित नहीं हुआ था। यद्यपि मैक्यावैली उसके मामा का अन्तरंग मित्र था किन्तु उसने उसको बहुत कम देखा था और जीवन में बातचीत तो शायद ही कभी थोड़ी-बहुत हुई हो। अब उसे इस व्यक्ति को भली-भांति देखने का अवसर मिला था जो उस दिन से उसका स्वामी बनने वाला था। उसका कद मँझोला था जो कृशता के कारण कुछ अधिक लम्बा जान पड़ता था। उसका सिर छोटा था जिस पर छोटे कटे हुए काले बाल थे। उसके छोटे नेत्र काले तथा चंचल थे। नाक लम्बी और होठ पतले थे। चुप रहने पर उसके होठ एक-दूसरे से इतने सटे रहते थे कि उसका मुख एक व्यंग भरी पतली-सी रेखा जैसा जान पड़ता था। सोते समय उसके रूखे चेहरे पर

ऐसी मुद्रा आ जाती जो सावधानी, विचारशीलता, कठोरता तथा रुक्षता का अजीब सम्मिश्रण-सा लगती। इस व्यक्ति के साथ हँसी-ठट्ठा सहज न था।

शायद मैक्यावैली को पीयरो की व्यग्रता का कुछ आभास हुआ। उसने एकाएक उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुए विआजियो से पूछा, "क्या यही पीयरो है ?"

"इसकी माँ चाहती है कि तुम इसकी भली प्रकार देखभाल करना जिससे यह किसी चक्कर में न फँस जाये।"

मैक्यावैली के मुख पर हल्की-सी मुस्कान फैल गई।

"मेरी भूलों के दुष्परिणामों को देखकर उसे अवश्य ही शिक्षा मिलेगी कि सच्चरित्रता और परिश्रम से ही कोई व्यक्ति इस संसार में अपना जीवन सफल बना सकता है और परलोक में सुखी रह सकता है।"

और फिर वे रवाना हो गये। नगर की सड़क पर चौकोर पत्थर बिछे हुए थे, अतएव उन्होंने अपने घोड़ों को धीरे-धीरे चलाया। पर नगर का द्वार पार करने के बाद खुली सड़क पर वे उनको दुलकी दौड़ाने लगे। उनकी यात्रा लंबी थी और घोड़ों को विश्राम देना आवश्यक था। मैक्यावैली और पीयरो साथ-साथ चल रहे थे तथा नौकर पीछे-पीछे आ रहे थे। चारों व्यक्ति अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे क्योंकि फ्लोरेन्स की पड़ौसी राज्यों से मित्रता होते हुए भी मार्ग सुरक्षित नहीं थे और प्रायः लुटेरे सैनिक यात्रियों को लूट लिया करते थे। यात्रियों के पास उस समय जो सुरक्षा-पत्र होता था वह अधिक सहायक नहीं होता था। मैक्यावैली चुप था। पीयरो भी स्वभाव से शर्मीला न था, पर उसकी तीक्ष्ण, गम्भीर मुखाकृति तथा तनी हुई भौंहें देखकर वह कुछ भयभीत-सा था और अपनी ओर से बातचीत न चलाना ही उसने उचित समझा। कुछ ठंडक होते हुए भी सबेरा सुहावना लग रहा था और पीयरो के हृदय में उमंगें उठ रही थीं। ऐसी साहसपूर्ण महान्

यात्रा पर जाते हुए चुप रहना कितना कठिन था, विशेषकर जब उसके मन में नवीन उत्साह की लहरें उठी आ रही थीं। अनेकों प्रश्न पूछने की उसकी अभिलाषा थी। किन्तु वे उसी भाँति चलते रहे। धीरे-धीरे आसमान में सूरज निकल आया और हवा में भी कुछ गर्मी आ गई। तब भी मैक्यावैली का मौन न टूटा। वह कभी-कभी हाथ से संकेत करके घोड़ों को आहिस्ता चलाने का आदेश दे देता था।

[४]

मैक्यावैली विचारों में डूबा हुआ था। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध ही इस दूतकार्य पर जा रहा था और उसने यथाशक्ति यह प्रयत्न किया था कि उसके स्थान में किसी अन्य व्यक्ति को भेज दिया जाय। उसकी तबियत ठीक नही थी और इस समय भी उसके पेट में दर्द हो रहा था। दूसरे उसका विवाह भी हाल ही में हुआ था और वह नववधू को वियोग से दुःखी नहीं करना चाहता था। विदा होते समय यद्यपि उसने उसे शीघ्र लौट आने का वचन दिया था किन्तु वह भली-भाँति जानता था कि महीनों छुट्टी मिलने की आशा नहीं है। फ्रान्स में दूत-कार्य पर जाने से उसको अनुभव हो गया था कि कूटनीति की वार्त्ताएँ जल्दी ही समाप्त नहीं होतीं।

पर यही मुसीबतों का अन्त न था। इटली की अवस्था उस समय बहुत बिगड़ी हुई थी। देश फ्रांस के शाह बारहवें लुई के अधीन था। नेपल्स के राज्य का बहुत बड़ा भाग उसके अधिकार में था, यद्यपि यह अधिक सुदृढ़ न था क्योंकि स्पेन-निवासी, जिनके अधिकार में सिसली और कैलेब्रिया के राज्य थे, उसको तंग करते रहते थे। किन्तु मिलान प्रदेश पर उसका दृढ़ अधिकार था। वेनिस के साथ उसकी मित्रता थी

और धन के बदले में फ्लोरेन्स, सायना और वोलोगना के राज्यों को उसने अपने संरक्षण में ले लिया था, पोप से भी उसने सन्धि करली थी। पोप ने उसको इस बात की अनुमति दे दी थी कि वह अपनी रोगिणी बंध्या पत्नी को त्यागकर चार्ल्स अष्टम की विधवा ब्रिटानी की रानी एन से विवाह कर ले। इसके बदले में शाह ने पोप के बेटे सीज़र बोर्जिया को वैलैन्टीनोये का ड्यूक बना दिया था और नैवारे के शाह की बहिन शालौट डि एलबर्ट से उसका विवाह करा दिया था। उसने पोप को सैनिक-सहायता का वचन भी दिया था जिससे वह चर्च के खोए हुए राज्य तथा प्रदेशों पर फिर से कब्जा कर सके।

बैलैन्टीनोये के ड्यूक होने के नाते सीज़र बोर्जिया बैलैन्टीनो के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। उस समय उसकी आयु तीस वर्ष से भी कम ही थी। उसकी भाड़े की सेना के नायक समस्त इटली में सर्वोत्तम समझे जाते थे, जिनमें से पागोलो, प्रसिद्ध सिनी घराने का मुखिया सिनी, पैरूगिया का स्वामी जिआन पाओलो वैगोलियोनी तथा सिटा डि कैस्टलो का स्वामी विटैलोज्ज़ो विटैली आदि प्रमुख थे। वह एक वीर और सुयोग्य सेनाध्यक्ष सिद्ध हो चुका था। सैनिक शक्ति, छल-कपट तथा आतंक फैलाकर उसने अपने राज्य का विस्तार बढ़ा लिया था और इटली भर में अपना सिक्का बैठा दिया था। अनुकूल अवसर से लाभ उठाकर उसने फ्लोरेन्स वासियों को विवश कर दिया था कि वे उसे और उसकी सेना को तीन वर्ष तक अच्छी खासी रकम देते रहें, परन्तु उन्होंने भी धन के बदले फ्रांस का संरक्षण पाकर सीज़र वोर्जिया की नियुक्त रद कर दी और उसका वेतन बन्द कर दिया। इससे उसकी क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी और शीघ्र ही उसने प्रतिशोध भी ले लिया।

जिस वर्ष में इस कहानी का आरम्भ होता है उसके जून मास में फ्लोरेन्स के अधीन एरेज्ज़ो नगर ने विद्रोह करके स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी थी। वैलैन्टीनो के सर्वश्रेष्ठ सेनाध्यक्ष बिटैलोज्ज़ो विटैली फ्लोरेन्स वासियों का कट्टर शत्रु था क्योंकि उन्होंने उसके भाई पाओलो को फांसी

दे दी थी, इस लिए उसने विद्रोहियों की सहायता की और फ्लोरेन्स की सेना को परास्त कर दिया। उसके साथ पेरूगिया का लार्ड वैंगलियोनी भी था। अब केवल दुर्ग ही जीतने को बाकी रहा था। इस घटना से आतंकित होकर सीन्योरी ने पीयरो सौडेरिनी को इसलिए मिलान भेजा कि जिन चार सौ वीर सैनिकों को भेजने का वचन फ्रांस के बादशाह ने दिया था वे शीघ्र ही कूच कर दें। पीयरो सौडेरिनी प्रभावशाली व्यक्ति था और फ्लोरेन्स का मुख्याध्यक्ष भी। फ्लोरेन्स ने अपनी उस सेना को भी मदद के लिए बढ़ने का आदेश दिया जो पीसा के निकट घेरा डाले पड़ी थी और बहुत समय से उसको जीतने का प्रयत्न कर रही थी। किन्तु उसके पहुँचने के पूर्व ही दुर्ग भी उनके हाथ से निकल गया। इसी नाजुक अवसर पर वैलेन्टीनो ने, जो उस समय कुछ ही दिन पहले जीते हुए अर्वीनों में था, सीन्योरी को कड़ा आदेश भेजा कि वह अपना दूत उससे बातचीत करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र भेजे। सीन्योरी ने पीयरो सौडेरिनी के भाई को, जो वौल्टेरा का लाट पादरी था भेज दिया। साथ में सहायक के रूप में मैक्यावैली भी गया। बला शीघ्र ही टल गई क्योंकि फ्रांस के शाह ने प्रतिज्ञानुसार एक भारी सेना भेज दी थी जिससे भयभीत होकर सीज़र बोर्ज़िया ने अपने सेनानायकों को वापिस बुला लिया था।

उसके सेनानायक स्वयं भी छोटे-छोटे राज्यों के स्वामी ही तो थे। उनको आशंका थी कि काम निकल जाने पर ड्यूक उनको भी उसी निर्दयता से कुचल डालेगा जिस तरह उसने अन्य प्रदेशों के स्वामियों को समूल नष्ट कर दिया था। उनको सूचना मिली कि ड्यूक ने फ्रांस के शाह के साथ एक गुप्त समझौता किया है जिसकी शर्तों के अनुसार शाह, ड्यूक को पहले बोलोगना जीतने के लिए सैनिक टुकड़ी भेजेगा। तत्पश्चात् उन सारे सेनानायकों के विनाश में सहायता देगा जिनके प्रदेशों को अपने राज्य में मिलाना सुविधा-जनक समझा जाएगा। थोड़े-बहुत प्रारम्भिक विचार विनिमय के बाद वे पेरूगिया के

समीप, ला मैगियोन नामक स्थान में, अपनी सुरक्षा के निमित्त उपाय खोज निकालने के लिए मिले। उस समय विटेलोज्ज़ो रोगशय्या पर पड़ा हुआ था। पर उसे पालकी में ले जाया गया। पागोलो और सिनी, उसका भाई धर्माध्यक्ष तथा उसका भतीजा ग्रैबिना का ड्यूक साथ-साथ पहुँचे। सभा में उपस्थित होने वाले अन्य व्यक्तियों में बैन्टीबोडालियो बोलोगना के लॉर्ड का बेटा, पैरुगिया के दो भाईवैगलियोनी तथा नवयुवक औलीवर्टो थे। इनके अलावा सायना के लॉर्ड पेन्डौल्फो पैट्रसी का दाहिना हाथ ऐन्टोनियो भी मौजूद था। उनके सम्मुख महान विपत्ति मुँह फाड़े खड़ी थी और सर्व सम्मति से यह स्वीकृत हुआ कि सुरक्षा के लिए समुचित उपाय खोजना चाहिए। ड्यूक भयावह व्यक्ति था, अतएव आवश्यक समझा गया कि प्रत्येक कार्य सतर्कता से किया जाय। उन्होंने निर्णय किया कि बाह्य रूप से ड्यूक से सम्बन्ध विच्छेद न किया जाय किन्तु गुप्त रूप से कार्यवाही की जाय और आक्रमण उसी समय किया जाय जब तैयारियां पूरी हो जायें। उनके अधीन एक विशाल वैतनिक सेना पैदल तथा घुड़सवारों की थी और बिटेलोज्ज़ो का तोपखाना अत्यन्त शक्तिशाली था। उस समय समस्त इटली में भाड़े के सैनिकों की भरमार थी। ऐसे सैनिकों की भर्ती के लिए चारों ओर दूत भेजे गए और उसी समय अपने प्रतिनिधि मदद के लिए फ्लोरेन्स के पास भी भेज दिए क्योंकि बोर्जिया की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा फ्लोरेन्स के लिए भी उतनी ही संकटपूर्ण थी जितनी उन सबके लिए।

ड्यूक को शीघ्र ही इस षड्यन्त्र का समाचार मिल गया और उसने अपनी ओर से फ्लोरेन्स को कहलवा भेजा कि जिस सेना को उन्होंने आवश्यकता पड़ने पर भेजने का वचन दिया था, उसे तुरन्त भेज दें तथा संधि की बातचीत करने के लिए अपना राजदूत भी उसके पास भेजें। मैक्यावैली का इमोला जाने का यही कारण था। उसको सफलता में विश्वास न था। सीन्योरी ने उसको केवल इस कारण से ही भेजा था कि उसकी स्थिति मामूली थी, उसके अधिकार बहुत ही सीमित थे।

उसको संधि करने का अधिकार न था। उसको केवल यही आदेश मिला था कि इमोला के समाचार भेजे और सीन्योरी के निर्देश की प्रतीक्षा करे। ऐसे दूत को भेजना उस मनुष्य की क्रोधाग्नि को केवल प्रज्ज्वलित करना था जो पोप की अवैध संतान होते हुए भी रोमगना, वैलेन्शिया तथा अरबीनो का ड्यूक, एन्ड्रिया का राजा, फोम्बीन्ते का लार्ड तथा चर्च का प्रधान सेनापति बना हुआ था। मैक्यावैली को ड्यूक को यह बताने का आदेश दिया गया था कि सीन्योरी ने षड्यन्त्रकारियों को सहायता देना अस्वीकार कर दिया है। किन्तु यदि वह आर्थिक या सैनिक सहायता मांगे तो सीन्योरी को उसकी सूचना दे तथा उत्तर की प्रतीक्षा करे। उसका कर्त्तव्य तो केवल टालमटूल करना था क्योंकि यही फ्लोरेन्स की नीति थी। सीन्योरी सदा तटस्थ रहने का बहाना खोज निकालती और यदि अकस्मात् शिकंजे में फंस जाती तो थैली का मुंह खोल देती और कम से कम धन देकर मामला रफ़ा-दफ़ा कर लेती।

मैक्यावैली पर यह भी भार था कि वह जल्दबाज ड्यूक को अधीर न होने दे। कोई सारपूर्ण वचन न दे और मीठे-मीठे शब्दों से उसकी शंका का निवारण करता रहे। साथ ही मक्कार के साथ मक्कार बना रहे, छल का उत्तर छल से दे और उस मनुष्य का भेद लेने का प्रयत्न करता रहे जो अपने रहस्यों को गुप्त रखने के लिए विख्यात था।

मैक्यावैली ने ड्यूक को अर्विना में यद्यपि थोड़ी ही देर तक देखा था तो भी उसके हृदय पर उसके व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ी थी। उसने वहीं पर सुना था कि ड्यूक गिडोवाल्डो डा मोन्टीफ़ैल्ट्रो सीज़र बोर्जिया पर पूर्ण विश्वास करने के कारण ही अपने राज्य से हाथ धो बैठा और अपना जीवन भी कठिनाई से ही बचा सका। मैक्यावैली वैलैन्टीनो के हृदय विदारक विश्वासघात से भली-भांति परिचित था परन्तु जिस उत्साह तथा विलक्षण चतुरता से उसने सारे मामले को निबटाया उसकी प्रशंसा किए बिना वह न रह सका। वह व्यक्ति साधारण न था। वह न केवल निडर, अनाचारी, क्रूर तथा प्रतिभावान्

और चतुर सेनापति ही था वरन् एक योग्य संगठनकर्त्ता तथा कुशल राजनीतिज्ञ भी था। मैक्यावैली के पतले होंठों पर व्यंग भरी मुस्कान फैल गई तथा आंखें चमक उठीं क्योंकि ऐसे प्रतिद्वन्द्वी के सामने अपनी चतुरता के प्रदर्शन की कल्पना मात्र ने उसे उत्तेजित कर दिया था। इस बात से वह इतना उल्लसित हो उठा कि अपने पेट के दर्द का भी उसे ध्यान तक न रहा। बल्कि वह रुचिपूर्वक भोजन का ध्यान करने लगा और उसने फ्लोरेन्स तथा इमोला के लगभग बीचोंबीच स्कार्पिया नगर में किसी सराय में भोजन करने तथा वहीं से घोड़े किराए पर लेने का निश्चय किया।

वे सब काफी तेज चाल से यात्रा करते आए थे। मैक्यावैली को उसी दिन इमोला पहुँचना था और जिन घोड़ों पर वे सवार थे उन पर सवारियों के अतिरिक्त बहुत-सा सामान भी लदा हुआ था, अतएव उनको आराम देना ही उचित समझा गया। उसने निश्चय किया कि वह तथा पीयरो उसी दिन भाड़े के घोड़ों पर चले जायें और दोनों नौकर दूसरे दिन सबेरे उसका घोड़ा तथा पीयरो का टट्टू लेकर पीछे से पहुँच जायें।

वे सब अलबर्गो डेलापोस्ता में ठहरे। मैक्यावैली ने घोड़े से उतर कर अपनी टांगें सीधी कीं जिससे उसको बडा आराम मिला। उसने पूछा कि जल्दी से उसे क्या-क्या खाने के लिए मिल सकता है और यह जानकर उसको बड़ी खुशी हुई कि पनीर, पक्षियों का मांस, बोलोगना का कबाब तथा सुअर के गोश्त के भल्ले तैयार हैं। भोजन का वह शौकीन था और उसने बड़ी तृप्ति के साथ खाना खाया। उसके बाद देशी तेज लाल शराब पीकर तो वह प्रसन्न हो गया। पीयरो ने भी अपने स्वामी की भांति ही डटकर भोजन किया। जब वे फिर से घोड़ों पर सवार हुए तो पीयरो बहुत ही खुश था। इतना खुश कि फ्लोरेन्स की गलियों में गाये जाने वाले एक लोकप्रिय गीत की धुन गुनगुनाने लगा। मैक्यावैली के कान खड़े हो गए।

"अच्छा पीयरो ! तुम्हारे मामा ने तो कभी नहीं बताया कि तुम गाना भी जानते हो ।"

पीयरो उमंग में और भी ऊंचे स्वर से गाता रहा ।

"अच्छी आवाज़ है।" मैक्यावैली ने स्नेहपूर्वक मुस्कराते हुए कहा । उसने लगाम खीचकर घोड़े की चाल धीमी कर दी । पीयरो समझ गया कि वह और गाना सुनना चाहता है । वह एक सुपरिचित गीत गाने लगा । जिसके बोल स्वयं मैक्यावैली ने ही लिखे थे । गीत सुनकर मैक्यावैली खुश हुआ । साथ ही वह यह भी सोचने लगा कि लड़का उसे अपने ऊपर प्रसन्न करने के लिए ही वह गीत गा रहा है । प्रसन्न करने का यह सुन्दर ढंग मैक्यावैली को अनुचित नहीं लगा ।

"तुमने यह गीत किससे सीखा ?"

"मामा ने ये बोल मुझे लिखकर दिए थे और वे धुन में बैठ भी गए ।"

मैक्यावैली ने कोई उत्तर नहीं दिया और फिर अपनी चाल बढ़ा दी । उसे लगा कि इस बालक के विषय में और अधिक जानकारी हासिल करे । यद्यपि वह उसे अपने मित्र विआजियो को खुश करने के लिए ही साथ लेता आया था, तो भी वह उसका कुछ न कुछ अच्छा उपयोग करना चाहता था । इसलिए बाकी यात्रा में जब पहाड़ी रास्ते पर उसे अपने घोड़े की चाल धीमी करनी पड़ती थी तो वह उससे बातचीत करने लगता था । मैक्यावैली चाहने पर अत्यन्त ही हँसमुख, रोचक और मनोरंजक हो सकता था और साथ ही अत्यन्त सूक्ष्म भी । पीयरो में अभी इतनी दुनियादारी न थी कि वह यह भाँप सके कि बड़ी लापरवाही के साथ किए गए मित्रतापूर्ण प्रश्नों का उद्देश्य उसके समूचे व्यक्तित्व को खोल कर देख लेना ही था । पीयरो शर्मीला नहीं था और न अहंकारी ही । वह यौवन-सुलभ आत्मविश्वास और निर्भीकता से सब बातों का उत्तर देता रहा । वह बहुत उकता उठा था इसलिए उस नीरस समय को व्यतीत करने के लिए आपबीती सुनाने में उसे अतीव आनन्द और

सन्तोष ही हुआ । एक प्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् मारसीलियो फिसीनो का देहान्त तीन वर्ष पहले ही हुआ था । वह विआजियो का श्वसुर था और पीयरो की शिक्षा उसी की देख-रेख में हुई थी । उसी की सलाह से पीयरो ने लेटिन भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था और अपनी इच्छा के विरुद्ध ही ग्रीक भाषा भी थोड़ी-बहुत जान गया था ।

मैक्यावैली ने कहा—"यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैंने ग्रीक भाषा नहीं पढ़ी । यह जानकर कि तुमने ग्रीक लेखकों के ग्रन्थ मूल में पढ़ रक्खे हैं, मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है ।"

"परन्तु यह मेरे किस काम आएगी ?"

"इससे तुमको शिक्षा मिलेगी कि मनुष्य के जीवन का वास्तविक लक्ष्य आनन्द प्राप्ति ही है, जिसे प्राप्त करने के लिए उच्च कुल, सच्चे मित्र, अच्छा भाग्य, स्वास्थ्य, धन, सुन्दरता, बल, यश, सम्मान तथा सुशीलता की आवश्यकता होती है ।"

पीयरो हँस पड़ा ।

"इससे तुम्हें यह भी शिक्षा मिलेगी कि जीवन का कोई भरोसा नहीं और वह विपत्ति तथा कठिनाईयों से भरा है । इसलिए यह उचित ही है कि जब तक उम्र है तब तक जीवन का आनन्द लूटा जाय ।"

पीयरो बोला—"यह जानने के लिए ग्रीक क्रियाओं के काल याद करने की आवश्यकता न थी ।"

"शायद यह ठीक है, परन्तु इच्छानुकूल चलने के लिए भी यदि किसी शास्त्र का आधार मिल जाय तो आत्म-विश्वास बढ़ जाता है ।"

मैक्यावैली ने अपने प्रश्नों द्वारा बड़ी चतुरता से यह जान लिया कि फ्लोरैन्स में पीयरों की किन लोगों से मित्रता थी और उसका रहन-सहन किस ढंग का था । भिन्न भिन्न विषयों पर पीयरों की राय पूछ कर मैक्यावैली ने उसकी योग्यता तथा चरित्र का अच्छा खासा ज्ञान प्राप्त कर लिया । वह अनुभवहीन अवश्य था परन्तु था सजग बुद्धि वाला—विशेषकर अपने मामा विआजियो की तुलना में जो भला और

ईमानदार होने पर भी मन्द बुद्धि था। पीयरो में जवानी का उत्साह, जीवन का सुख भोगने की स्वाभाविक लालसा और दुस्साहस-पूर्ण कार्य करने की क्षमता थी। यद्यपि वह चतुर तथा एक प्रकार से सरल स्वभाव का था परन्तु विवेक की कट्टरता उसमें न थी। मैक्यावैली भी यही उचित समझता था क्योंकि यदि कभी कोई थोड़ा-बहुत अनुचित कार्य करना पड़े तो ऐसे व्यक्ति को उसमें विशेष झिझक नहीं होगी। पीयरो बलिष्ट तथा फुर्तीला था और उसमें साहस की कमी की तो कल्पना ही न हो सकती थी। निर्भीक चेष्टा तथा आकर्षक व्यवहार, सभी से उसके गुणों का ही परिचय मिलता था। केवल इतना जानना बाकी था कि वह भेद की बात को अपने मन में रख सकता है या नहीं और उस पर कितना भरोसा किया जा सकता है। पहली बात तो तुरन्त जानी जा सकती थी और रही दूसरी बात सो मैक्यावैली किसी व्यक्ति पर आवश्यकता से अधिक भरोसा करता ही न था। कुछ भी हो उस बालक में इतना ज्ञान तो था ही कि अपने स्वामी की दृष्टि में उठने में ही उसका हित है। मैक्यावैली का उसकी प्रशंसा में कहा हुआ एक वाक्य भी उसके भविष्य को उज्ज्वल बना सकता था और उसकी तनिक सी निन्दा भी उसको पदच्युत करने के लिए पर्याप्त थी।

(५)

वे इमोला के समीप पहुँच गए थे। नगर एक नदी के किनारे उपजाऊ मैदान में बसा हुआ था। उसके आस-पास की बस्तियों में युद्ध-जनित विनाश के कोई भी चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होते थे क्योंकि वहाँ के निवासियों ने सीज़र बोर्जिया की सेना के पहुँचते ही आत्म-समर्पण कर दिया था। जिस समय ये लोग नगर से लगभग दो मील दूर थे, उन्होंने

सात-आठ घुड़ सवारों को देखा। मैक्यावैली ने उनमें से ड्यूक के मुख्य सचिव एगापीटो ड अमालिया को पहचान लिया जिससे उसका परिचय अर्वीनो में हो चुका था। उसने मैक्यावैली का हार्दिक स्वागत किया और जब उसने अपने वहाँ आने का उद्देश्य बतलाया तो तुरन्त उसको साथ लेकर नगर की ओर लौट पड़ा। सीन्योरी ने एक दिन पूर्व एक पत्र-वाहक द्वारा ड्यूक के दरबार में स्थित अपने प्रतिनिधि के समीप सूचना भेज दी थी कि मैक्यावैली राजदूत बनकर वहाँ पहुँच रहा है। वही पत्रवाहक नगर के सिंह द्वार पर मैक्यावैली की प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। वे एक सुदीर्घ यात्रा करके आ रहे थे। अतएव एगापीटो ने मैक्यावैली से कहा कि यदि वह चाहे तो ड्यूक को अपना प्रमाण पत्र देने से पूर्व कुछ देर आराम करके स्वस्थ हो ले। यद्यपि ड्यूक की सेना के डेरे नगर के परकोटे की प्राचीर के दूसरी ओर पड़े हुए थे तो भी नगर में काफी हलचल थी। उस छोटे से नगर में जो अब ड्यूक की राजधानी बन गया था, उसके व्यक्तिगत सेवकों के अतिरिक्त दरबारी लोग, इटली के अन्य राज्यों के प्रतिनिधिगण, व्यापारी, कृपाकांक्षी, चाटुकार, गुप्तचर अभिनेता, कवि, वारांगनाएं तथा और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के पेशेवर इकट्ठे थे जो विजेता के पीछे-पीछे येनकेन प्रकारेण धनोपार्जन की आशा से वहाँ पहुँचे थे। परिणामस्वरूप वहाँ ठहरने के लिए स्थान मिलना दुर्लभ हो गया था। नगर की कुछेक सरायों में इतनी भीड़ थी कि एक-एक पलंग पर चार-पांच व्यक्तियों को एक साथ सोना पड़ता था। किन्तु फ्लोरेन्स के प्रतिनिधि ने मैक्यावली तथा उसके अनुचरों के ठहरने का प्रबन्ध एक मठ में कर दिया था और उसी मठ में चलने के लिए पत्रवाहक ने मैक्यावैली से आग्रह किया। मैक्यावैली ने एगापीटो को सम्बोधित करके कहा—'यदि माननीय ड्यूक को फुर्सत हो तो मैं इसी समय मिलना चाहता हूँ।"

"मैं अभी जाकर देखता हूँ कि उनको अवकाश है या नहीं। यह कर्मचारी आपको महल तक पहुँचा देगा।"

जिस व्यक्ति की ओर उसने संकेत किया था उसे वहीं छोड़ बाकी व्यक्तियों को लेकर एगापीटो शीघ्रतापूर्वक चला गया। और लोग धीरे-धीरे नगर की तंग गलियों में होते हुए बीच चौक में पहुँचे। मार्ग में मैक्यावैली ने साथ वाले अफसर से पूछा, "इस नगर में सबसे अच्छी सराय कौन-सी है? उन साधु-संन्यासियों का भोजन मुझसे नहीं खाया जायगा और खाली पेट सोने की मेरी कतई इच्छा नहीं है।"

"यहाँ तो 'स्वर्ण केसरी' ही सबसे अच्छी सराय मानी जाती है।" मैक्यावैली ने पत्रवाहक से कहा, "मुझे महल तक पहुँचाने के बाद तुम 'स्वर्ण केसरी' चले जाना और वहां कह देना कि मेरे वास्ते काफी खाना तैयार रक्खें।" फिर पीयरो से बोला, "घोड़ों के बंधवाने का प्रबन्ध कर लेना। यह व्यक्ति तुम्हें मठ का मार्ग दिखला देगा और देखना जीन वग़ैरः सुरक्षित स्थान में रख दी जावें। उसके बाद तुम महल में आकर मेरी प्रतीक्षा करना।"

राजमहल विशाल था परन्तु कला-विहीन, क्योंकि उसे निर्मित कराने वाली महिला कैटैरीना स्फोरज़ा बड़ी कंजूस थी। यह महल मुख्य बाजार के एक कोने में बना हुआ था। यहीं पर मैक्यावैली तथा अफसर घोड़े से उतर पड़े और प्रहरी उन्हें महल में ले गया। साथ वाले अफसर ने एक सैनिक को अपने पहुँचने का सन्देशा देकर मुख्य सचिव के पास भेज दिया। और कुछ ही देर में वह वहां आ पहुँचा जहां मैक्यावैली प्रतीक्षा कर रहा था। एगापीटो के चेहरे का रंग सांवला था, सर पर काले लम्बे बाल, छोटी काली दाढ़ी, त्वचा पीली और नेत्र गम्भीर तथा चातुर्यपूर्ण थे। वह शिष्ट तथा व्यवहार कुशल था। उसकी वाणी में माधुर्य और व्यवहार में ऐसी सरलता थी कि लोगों को उसकी योग्यता तथा कुशलता के सम्बन्ध में धोखा हो जाता था। वह ड्यूक के शरीर तथा हित दोनों का ही रक्षक था। क्योंकि वैलैन्टीनो में यह नैसर्गिक गुण था कि जिनकी उसको आवश्यकता थी उनको वह अपना भक्त बना लेता था। उसने मैक्यावैली को बताया कि

ड्यूक उससे उसी समय मिलने के लिए तैयार है। वे दोनों सुन्दर सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर पहुँचे और मैक्यावैली ने एक सजे हुए कमरे में प्रवेश किया जिसकी दीवालों पर रंगीन चित्र बने हुए थे। वहीं पत्थर की एक विशाल अंगीठी बनी हुई थी। उसके कगार पर वीर किन्तु अभागी कैटरीना स्फोर्जा का राजचिन्ह अंकित था जिसे सीजर वोर्जिया ने रोम में बन्दी बनाकर रख छोड़ा था। अँगीठी में बिना धुएं की आग जल रही थी और ड्यूक उस ओर पीठ किए हुए खड़ा था। कमरे में केवल एक व्यक्ति और उपस्थित था, जिसका नाम था जुआन वोर्जिया जो पोप का भतीजा और मौनरील का धर्माध्यक्ष था। वह बड़ा ही चतुर और रोबीला था और एक खुदाई के कामवाली ऊँची कुर्सी पर बैठा हुआ अँगीठी में अपने पांव सेक रहा था।

मैक्यावैली ने ड्यूक तथा धर्माध्यक्ष का झुककर अभिवादन किया। ड्यूक भी आदर सहित आगे बढ़ आये और उसका हाथ पकड़कर एक कुर्सी पर बैठाते हुए कहा, इतनी दूर की यात्रा करने से आप थक गए होंगे और कुछ ठंड भी महसूस करते होंगे। आपने भोजन कर लिया है ?"

"जी हाँ, मैंने मार्ग में ही भोजन कर लिया था। मैं क्षमा चाहता हूँ कि यात्रा के ही वस्त्रों में आपके सम्मुख उपस्थित हुआ हूँ। किन्तु मुझे जो कुछ अपनी सरकार की ओर से कहना है, उसे आपकी सेवा में शीघ्र ही निवेदन कर देने में देर नहीं करना चाहता था।" यह कहकर उसने अपना प्रमाण-पत्र ड्यूक को दे दिया। सीज़र बोर्जिया की आकृति सुन्दर तथा बरबस मन को हरने वाली थी। उसका कद साधारण मनुष्यों से लम्बा, कन्धे चौड़े, वक्ष दृढ़ तथा कमर पतली थी। वह काले वस्त्र धारण किए हुए था, जिनमें से उसका रंग और भी उज्ज्वल होकर झलक रहा था। उसके अंगों पर केवल दो आभूषण थे—एक तो दाएं हाथ की अनामिका में एक अंगूठी, दूसरे बादशाह लूई द्वारा दिया हुआ सैंट माइकेल की उपाधि का प्रतीक गले का कंठा। उसके चमकीले तथा

सुनहरे बाल सुन्दर कढ़े हुए थे तथा इतने लम्बे थे कि कन्धों तक पहुँ-चते थे। उसने मूंछें तथा छोटी नुकीली दाढ़ी रक्खी हुई थी। उसकी नाक सीधी तथा कोमल थी और तीक्ष्ण भोंहों के नीचे उसकी सुन्दर आंखें भली और साहसपूर्ण लगती थीं। उसका सुन्दर मुख कामुक और त्वचा स्वच्छ और चिकनी थी। उसकी चाल राजसी पर सौम्य थी और उसकी प्रत्येक चेष्टा तथा व्यवहार में राजोचित गुण विद्यमान थे। मैक्यावैली ने मन ही मन विचार किया कि निर्लज्जतापूर्ण उपायों से पोप बने बैठे एक टेढ़ी नाक वाले स्थूलकाय स्पेनवासी पादरी तथा एक रोमन वेश्या के पुत्र में राजसी चालढाल कहां से आ गई।

ड्यूक ने कुछ सोचकर कहा "मैंने तुम्हारी सरकार से राजदूत भेजने की प्रार्थना इसलिए की थी कि मैं जानना चाहता हूं कि प्रजातन्त्र मेरे साथ कैसा सम्बन्ध रखना चाहता है।"

मैक्यावैली ने अपना तैयार किया हुआ भाषण आरम्भ कर दिया। मैक्यावैली की चतुर आंखों ने लक्ष्य किया कि यद्यपि ड्यूक उसके वक्तव्य को ध्यान से सुन रहा था परन्तु उसका पूर्ण विश्वास था कि जिन सद्-भावनापूर्ण विचारों को मैक्यावैली सीन्यौरी के आदेशानुसार व्यक्त कर रहा था वे कोरा शब्दजाल थे। कुछ क्षणों तक वहां निस्तब्धता रही। ड्यूक कुर्सी पर पीछे को झुका और वक्षस्थल पर पड़े कंठे पर बांया हाथ फेरने लगा। जब वह बोला तो उसके शब्दों में रुखाई थी, "मेरे प्रदेश की सीमाएँ आपके राज्य से दूर तक मिलती हैं। इसलिए उनकी रक्षा करने में कोई भी कसर मैं उठा न रक्खूंगा। मैं भली भांति जानता हूँ कि आपकी सरकार का मेरे प्रति मैत्रीपूर्ण भाव नहीं है। आपने हर तरह के प्रयत्न किए कि मेरा पोप से तथा फ्रांस के बादशाह से मनमुटाव हो जाय। यदि मैं हत्यारा भी होता तो आप मेरे साथ इससे बुरा व्यवहार नहीं करते। अब आपको ही यह निर्णय करना है कि मुझे अपना मित्र बनाना चाहते हैं अथवा शत्रु।"

उसकी वाणी वीणा के समान मधुर थी तथा गम्भीरता की गरिमा

उसमें न थी। उसमें तेजाब जैसी तीक्ष्णता न थी बल्कि एक प्रकार की हृदयवेधी कुटिलता थी, जिससे उसका भाषण इतना अहंकारपूर्ण तथा अपमानजनक लगता था मानो वह किसी राजदूत से नहीं किसी तुच्छ दास से बातें कर रहा हो। उसे चुपचाप सहन करना सरल कार्य न था। किन्तु मैक्यावैली चतुर कूटनीतिज्ञ था और सहज ही में क्रोध को पी जाता था। "मान्यवर, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे शासक जितने उत्सुक आपकी मित्रता प्राप्त करने के लिए हैं उतने उत्सुक और किसी वस्तु को पाने के लिए नहीं। किन्तु वे इस बात को नहीं भूल सके हैं कि आपने विटोलोज्जो को हमारे प्रदेश पर आक्रमण करने की स्वीकृति दी थी और इसी कारण से उन्हें आपकी ओर से सन्देह है।" मैक्यावैली ने ये शब्द बड़ी नम्रता से कहे।

"इस घटना से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। विटोलोज्जो ने जो कुछ किया अपनी इच्छा से ही किया।"

"किन्तु वह आप से वेतन पाता था और आपकी आज्ञा के अधीन था।"

"यह आक्रमण मेरी जानकारी में नहीं हुआ और न ही मैंने कोई सहायता ही पहुँचाई। किन्तु मैं यह बहाना नहीं करता कि मुझे इस घटना से दुःख हुआ। मुझे कोई दुःख नहीं हुआ। क्योंकि फलोरेंस वालों ने मेरे साथ विश्वासघात किया था जिसका उनको उचित दण्ड मिल गया। किन्तु जब मैंने देखा कि उनको पर्याप्त दण्ड मिल चुका है तो मैंने अपने सेनानायकों को वापस बुला लिया। इससे लोग मेरे शत्रु बन गए और मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं।"

मैक्यावैली ने इस अवसर पर ड्यूक को यह स्मरण कराना उपयुक्त न समझा कि उसने फ्रांस के बादशाह के कड़े आदेश के कारण ही अपने सेनानायकों को वापस बुलाया था।

"इस विषय में भी आप लोग उतने ही दोषी हैं, जितने विटोलोज्जो को अपने प्रदेश पर आक्रमण के लिए उत्तेजित करने के मामले में थे।"

"हम ?" मैक्यावैली ने चकित होकर कहा।

"यदि आप लोग पाओलो विटेली को कष्ट देने तथा मरवाने की मूर्खता नहीं करते तो यह सब न होता। इसमें कोई अचम्भे की बात नहीं है कि उसका भाई विटेलोज्जो उसकी मृत्यु का प्रतिकार ले और केवल इस कारण कि मैंने उसको आगे बढ़ने से रोका वह मेरा भी शत्रु बन जाय।"

यहां यह बतला देना आवश्यक है कि यह सब कुछ कहने में ड्यूक का क्या अभिप्राय था।

फ्लोरैन्स ने पीसा को विजय करने के लिए बहुत काल से उसके चारों ओर घेरा डाल रक्खा था, किन्तु उसको बहुत हानि उठानी पड़ी और उसकी सेना की भारी पराजय हुई। सिन्यौरी ने इस पराजय का कारण सेनाध्यक्ष की अयोग्यता समझा। अतः उसने भाड़े की दो सेनाएँ नियुक्त कीं जिसके नायक क्रमशः पाओलो तथा विटेलोज्जो विटैली थे, जो परस्पर भाई-भाई थे और उस समय फ्रांस के बादशाह के अधीन नौकर थे। पाओलो को प्रधान सेनापति बनाया गया और दुबारा युद्ध आरम्भ हुआ। पाओलो के अधीन सेना ने नगर की प्राचीर को भेद कर मार्ग बना लिया किन्तु जिस समय वह सेना नगर में प्रविष्ट होने ही वाली थी कि पाओलो ने उसको पीछे लौटने का आदेश दे दिया। ऐसा करने का कारण उसने यह बतलाया कि वह व्यर्थ अपने सैनिकों की हत्या करवाना नहीं चाहता था क्योंकि उसको पूर्ण विश्वास था कि नगर कुछ शर्तों पर अवश्य ही आत्म-समर्पण कर देगा। परन्तु इस उत्तर से सिन्यौरी को सन्तोष नहीं हुआ और उसने अनुमान किया कि पाओलो ने उसके साथ दग़ा की है। अतएव उसने दो अधिकारियों को घटनास्थल पर भेजा जो बाह्य रूप से तो युद्ध की सहायता के लिए धन पहुँचाने गए थे परन्तु वास्तव में उनका उद्देश्य दोनों भाइयों को बन्दी बनाना था। पाओलो विटैली अपनी सेना सहित कैसीना से लगभग एक मील की दूरी पर डेरा डाले पड़ा हुआ था। दोनों अधिकारियों ने इस

सेनाध्यक्ष को युद्ध के सम्बन्ध में मन्त्रणा करने के बहाने अपने पास बुलवाया। पहले सबने मिल कर एक साथ भोजन किया और इसके बाद पाओलो को किसी एकांत कमरे में ले जाया गया जहां उसको तुरन्त बन्दी बना लिया गया। उसको फ्लोरैन्स ले जा कर अनेकों कष्ट दिए गए किन्तु उसने अपना अपराध स्वीकार नहीं किया। अन्त में उसका सिर कटवा डाला गया।

मैक्यावैली ने बात काट कर कहा, "पाओलो विटैली विश्वासघाती था। उस पर न्यायालय में वैधरूप से अभियोग चलाया गया और अंत में वह दोषी प्रमाणित हुआ। उसको अपने दुष्कर्म का उचित दण्ड मिला।"

"वह दोषी था या निर्दोष इससे कोई बहस नहीं, किन्तु उसे मार देना बड़ी भारी भूल थी।"

"अपने देश के सम्मान और गौरव के लिए अपने शत्रु के विरुद्ध उचित कार्यवाही करना आवश्यक था, जिससे संसार को दिखा दिया जाय कि फ्लोरेंस में अपनी रक्षा करने का सामर्थ भी है।"

"फिर उसके भाई को क्यों जीवित छोड़ दिया ?"

मैक्यावैली ने झुंझलाहट में अपने कंधे उचकाए। प्रश्न चुभने वाला था।

"विटेलोज्जो को कैसीना लाने के लिए दूत भेजे गए। किंतु उसको इसमें कुछ चाल की गंध आई। उस समय वह रोगशय्या पर पड़ा हुआ था। उसने कपड़े बदलने के निमित्त कुछ समय की मांग की और किसी प्रकार से वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। इस घटना से बड़ा गोलमाल हुआ। यह तो पता न था कि अपने आदमी ही ऐसी मूर्खता का व्यवहार करेंगे।"

ड्यूक के मुख पर हल्की किंतु उल्लसित मुस्कान थी। उसके नेत्र किसी परिहास की भावना से प्रदीप्त हो उठे थे।

"यदि परिस्थिति बदल जाए और पूर्व निश्चित कार्यक्रम को पूरा

करना हितकर न हो तो फिर उसपर जमे रहना भारी भूल है। जब विटेलोज्जो तुम्हारे चंगुल से निकल गया था तो उचित था कि आप पाओलो को फ्लोरैन्स ले जाते और कारागार में डालने के बजाय उसको महल में ठहराते। उसपर अभियोग चलाते और चाहे जो भी प्रमाण होते उसे निर्दोष ठहराते। तब उसको पूर्व पद पर नियुक्त करते, उसका वेतन बढ़ाते और उसका बड़े से बड़ा सम्मान करते। इस भाँति उसके हृदय में इस बात का विश्वास जमा देते कि आप उस पर पूरा भरोसा करते हैं।"

"जिसका परिणाम यह होता कि वह धोखा देकर हमें शत्रुओं के हवाले कर देता।"

"संभव है उसके ऐसे ही विचार होते किन्तु कुछ समय तक वह अवश्य ऐसी चेष्टा करता जिससे वह सिद्ध कर सके कि तुमने उसका भरोसा ठीक ही किया है। ये भाड़े के सेनापति बड़े लालची होते हैं और धन देकर इनसे जो चाहो करवाया जा सकता है। तब आप विटेलोज्जो को भी इतना बड़ा लालच दिखाते जिसे वह अस्वीकार न कर सकता। वह भी अपने भाई के साथ सम्मिलित हो जाता और इस भांति जब वे आपकी ओर से निश्चिन्त हो जाते तो कोई अनुकूल अवसर पाकर तनिक चतुराई से काम लेकर, बिना अभियोग चलाए ही दोनों को मौत के घाट उतार देते।"

मैक्यावैली का मुख आरक्त हो उठा। "ऐसा विश्वासघात फ्लोरैन्स के सुयश पर सदा के लिए कलंक का टीका लगा देता।"

"विश्वासघातियों के साथ ऐसा ही करना चाहिए। धर्म मार्ग पर ही चलते रहने से शासन सत्ता नहीं चलती। राज्य का शासन चतुराई, हिम्मत, दृढ़ता, तथा क्रूरता द्वारा चलता है।"

इसी समय एक अधिकारी कमरे में आकर धीरे से एगापीटो के कान में कुछ कहने लगा। वैलैन्टीनो इस विघ्न से भौंह चढ़ाकर व्यग्रता से अपनी उंगलियों द्वारा मेज़ पर तबला सा बजाने लगा। एगापीटो ने कहा,

"सरकार, इस समय व्यस्त हैं। उनसे कहो कि बाहर प्रतीक्षा करें।"

ड्यूक ने कठोर स्वर में पूछा, "क्या बात है ?"

"हुजूर, दो गैस्कन सैनिक लूटमार करते हुए पकड़े गए हैं। उनको लूट का माल सहित यहां पकड़ कर लाया गया है।" ड्यूक ने धीरे से मुस्कराकर कहा "फ्रांस के बादशाह की प्रजा को प्रतीक्षा कराना ठीक नहीं। उन्हें अन्दर ले आओ।" अधिकारी के चले जाने पर ड्यूक मैक्या-वैली से मीठे स्वर में बोला, "ज़रा यह आवश्यक कार्य निबटा लूं। तब तक के लिए क्षमा चाहता हूँ।"

"मेरा तो सारा समय आप ही की सेवा में है।"

"मुझे विश्वास है मार्ग में आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ !"

"कोई नहीं ! भाग्यवश मुझे स्कारपेरिया में एक सराय मिल गई जहाँ मुझे अच्छा ही भोजन मिल गया था।"

"मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरे राज्य में यात्रियों का मार्ग वैसा ही निष्कंटक हो जैसा सुना जाता है एन्टोनायन काल में रोमन साम्राज्य में था। यहां के प्रवास में आपको यह जानने का अवसर मिलेगा कि मैंने उन तमाम अत्याचारियों का दमन कर दिया है जो इटली के लिए कलंक स्वरूप थे। मैंने अपने राज्य की सुव्यवस्था से प्रजा का जीवन सुरक्षित तथा समृद्धिशाली बना दिया है।"

कमरे के बाहर से लोगों के चलने की आवाज़ आ रही थी और बात-चीत का स्वर ऊंचा होता जा रहा था। शीघ्र ही उस विशाल कक्ष का द्वार खुल गया और लोगों का एक समुदाय वहां घुस पड़ा। सबसे पहले उसी अधिकारी ने प्रवेश किया जो पहले सूचना देने आया था। उसके पीछे दो और व्यक्ति थे जिनके सुघड़ वस्त्र देखकर मैक्यावैली ने अनुमान किया कि वे कोई प्रतिष्ठित नागरिक होंगे। उनके पीछे दो महिलाओं ने प्रवेश किया जिनमें एक वृद्ध और दूसरी प्रौढ़ थी और उनके साथ एक वृद्ध भद्र पुरुष था। इन सब के बाद दो सैनिक आए। एक के हाथ में चाँदी के दीपदानों की जोड़ी थी तथा दूसरा चांदी की कलई का

गिलास तथा दो तश्तरियां लिए हुए था। उनकी लाल तथा नीली वर्दी बता रही थी कि वे ड्यूक के ही सैनिक थे। उसके बाद दो मनुष्य और अन्दर आये जिनके हाथ पीठ की ओर बँधे हुए थे और जिनको सैनिक धक्का देकर तथा घसीट कर अन्दर ला रहे थे। वे दोनों साधारण से वस्त्र पहने थे और गँवार से लगते थे तथा ड्यूक के बर्दीधारी सैनिकों के बीच गुंडे जैसे जान पड़ते थे। उनमें से एक व्यक्ति लगभग ४० वर्ष का अधेड़ था। वह स्वभाव का चिड़चिड़ा जान पड़ता था। उसके मुख पर घनी काली दाड़ी थी, शरीर बलिष्ट था तथा माथे पर किसी घाव का गूंथ साफ दिखाई पड़ता था। दूसरा एक युवक था जिसकी दाड़ी-मूंछ अभी नहीं उगी थी, उसकी त्वचा खुरदरी तथा पीले रंग की थी परन्तु उसके नेत्र बड़े चंचल थे जिनमें उस समय भय स्पष्ट झलक रहा था। डयूक ने उनको आज्ञा दी कि वे उसके सामने आकर खड़े हों। सैनिकों ने धक्का देकर दोनों को ड्यूक के सम्मुख खड़ा कर दिया। तब ड्यूक ने पूछा कि उन पर क्या अभियोग लगाया गया है। पता चला कि जब वे दोनों महिलाएं गिर्जा गई हुई थीं तब उन दोनों ने उनके घरों में घुसकर चाँदी के बर्तन निकाल लिए थे। ड्यूक ने महिलाओं से प्रश्न किया, "तुम यह किस प्रकार सिद्ध करोगी कि ये सब चीजें तुम्हारी ही हैं?"

दोनों सम्भ्रान्त व्यक्तियों में से एक बोला "मान्यवर, श्रीमती ब्रेगीडा मेरी बहिन है। मैं इन वस्तुओं को भली प्रकार पहचानता हूँ। ये उनके दहेज में दी गई थीं।"

दूसरे व्यक्ति ने इस बात का समर्थन किया। तब ड्यूक ने दोनों महिलाओं के साथ वाले बूढ़े आदमी से प्रश्न किया "तुम कौन हो?"

"हुज़ूर मैं सुनार हूँ। मेरा नाम जियाकोमो फैव्रोनियो है। इन दोनों आदमियों ने ये चीजें मुझे बेची थीं। उन्होंने कहा था कि फ़ोर्ली की लूट में उन्हे ये चीजें मिली थीं।"

"क्या तुमको पूरा यकीन है कि ये वही आदमी हैं?"

"जी हाँ सरकार मुझे पूरा यकीन है।"

अफ़सर ने कहा, "हम जियाकोमो को गैस्कनों के डेरे पर ले गए थे। वहाँ इसने दोनों को तुरन्त ही बिना हिचकिचाहट के पहचान लिया।

ड्यूक ने तब आग्नेय नेत्रों से सुनार की ओर देखकर कहा "तुम्हें क्या कहना है?"

सुनार का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में उत्तर दिया, "हुज़ूर, जब मुझे पता चला कि श्रीमती व्रेगीडा के घर में दीपदान और तश्तरियों की चोरी हुई है तो मुझे शक हुआ। मैं फौरन श्रीयुत बर्नर्डो के पास पहुँचा और उनको बतलाया कि दो गैस्कन सैनिकों ने मेरे हाथ कुछ चांदी के बर्त्तन बेचे हैं।"

"तुमने यह काम डर से किया या कर्त्तव्य पालन के भाव से?"

कई क्षण तक सुनार के मुंह से एक शब्द भी न निकल सका। वह भय से थर-थर काँप रहा था।

"श्रीयुत बर्नर्डो मजिस्ट्रेट हैं। मैंने उनका बहुत-सा काम किया है। चोरों का माल मैं अपने पास नहीं रखना चाहता था।"

मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया, "श्रीमान्, यह सच कहता है। मैं उन चीजों को देखने के लिए गया और फौरन पहचान लिया।"

एकाएक दोनों महिलाओं में से युवती ने जोर से कहा "ये चीजें मेरी हैं श्रीमान्; चाहे किसी से पूछ लीजिये वे मेरी ही हैं।"

"चुप रहो," कहकर ड्यूक ने दोनों गैस्कनों की ओर देखा।

"क्या तुम मंजूर करते हो कि तुमने ये चीजें चुरायीं?"

युवक सैनिक रोकर बोला, "नहीं, नहीं, इसमें भूल हुई है। मैं अपनी माँ की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने चोरी नहीं की। इस सुनार ने पहचानने में भूल की है। मैंने तो इसे पहले कभी देखा भी नहीं है।"

"ले जाओ इसे और लगाओ कोड़े इसके बदन पर। अभी सब सच बता देगा।"

युवक और भी ज़ोर से रोने लगा, "मैं यह सब सहन नहीं कर सकूंगा।"

"ले जाओ इसको।"

युवक ने हाँफते हुए अपना अपराध स्वीकार कर लिया। ड्यूक को हँसी आ गई। तब मुड़ कर दूसरे से पूछा, "और तुम क्या कहते हो?" उसने गर्व से अपना सिर उठाते हुए उत्तर दिया, "मैंने चोरी नहीं की। मैंने अपना हक समझकर इन चीजों को लिया है। हमने नगर पर विजय प्राप्त की है।"

"बिल्कुल झूठ। तुमने नगर को जीता नहीं है वरन उसने स्वयं आत्मसमर्पण किया है।"

तत्कालीन इटली के प्रचलित युद्ध नियमानुसार यदि किसी नगर पर युद्ध द्वारा अधिकार किया जाता था तो सैनिकों को नगर में मनमानी लूटमार करने की छूट होती थी। किन्तु यदि नगर स्वयं आत्म-समर्पण करदे तो यद्यपि उसे युद्ध व्यय के दण्ड स्वरूप विजयी सेना को पर्याप्त धन देना पड़ता था, तो भी नगरवासियों का जीवन तथा सम्पत्ति सुरक्षित रहती थी। इस नियम से यह लाभ था कि नगर निवासी आसानी से आत्मसमर्पण कर सकते थे। ऐसा कदाचित ही होता था कि राजभक्ति के कारण वे आखिर तक युद्ध करते रहें।

ड्यूक ने दण्ड की घोषणा करते हुए कहा, "मेरी आज्ञा थी कि सेना नगर की चहारदीवारी के बाहर ही रहे और नगरनिवासियों की जान व माल को नुकसान पहुँचाने वाला मृत्यु दण्ड का भागी हो।" फिर अधिकारी की ओर मुड़कर उससे कहा, "प्रातःकाल ही दोनों को चौक में फाँसी पर लटका दो। सैनिक डेरों में इनके अपराध और दण्ड की सूचना भी दे दो। मृतकों के शव पर देखभाल के लिए दोपहर तक दो सैनिक नियुक्त किए जायें और ड्योड़ी पीटने वाला थोड़ी-थोड़ी देर पश्चात् नगर निवासियों को बतलाता रहे कि वे मेरे न्याय पर पूरा भरोसा रखें।"

भयभीत युवक ने अपने साथी से पूँछा, "क्या कह रहे हैं? क्या दण्ड मिला?" ड्यूक ने दोनों गैस्कनो से तो फ्रेंच भाषा में बात की थी किन्तु अपने कर्मचारी से इटालियन भाषा में।

उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह केवल उदास किन्तु घृणापूर्ण नेत्रों से ड्यूक की ओर देखता रहा। ड्यूक ने युवक का प्रश्न सुन लिया था इसलिए उसने अपना दण्ड फ्रेंच भाषा में दुहराया, "तुम्हें प्रातःकाल फांसी होगी जिससे दूसरों को शिक्षा मिल सके।"

युवक चीत्कार कर उठा। वह घुटनों के बल बैठकर दया की याचना करने लगा, "मुझ पर दया कीजिये, दया कीजिये। मेरी उम्र अभी मरने की नहीं है। मैं मरना नहीं चाहता। मुझे डर लगता है।"

ड्यूक ने उपेक्षापूर्वक कहा, "ले जाओ इनको।"

युवक को घसीटकर वहाँ से ले जाया गया। उसके रोने की आवाज चारों तरफ गूंज रही थी और उसके गालों पर आँसुओं की धारा बह रही थी। पर दूसरे आदमी का चेहरा क्रोध से विकृत हो गया था। उसने मुँह में थूक भरकर ड्यूक की ओर थूक दिया। शीघ्र ही उन दोनों को वहाँ से घसीटकर बाहर कर दिया गया। ड्यूक ने तब एगापीटो से कहा, "देखना, ऐसा प्रबन्धकर देना कि ये लोग अन्तिम प्रार्थना कर सकें। यदि ये बिना अपने अपराधों का प्रायश्चित किए ही सृष्टिकर्ता के सम्मुख जाएंगे तो मेरी आत्मा पर उसका भारी बोझ बना रहेगा।"

एगापीटो के होठों पर फीकी मुस्कान थी। वह चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। तब ड्यूक धर्माध्यक्ष तथा मैक्यावैली को सुनाकर कहने लगा, "वे धूर्त भी थे तथा मूर्ख भी। जिस नगर में चोरी की उसी नगर में चोरी का माल बेचना परले सिरे की मूर्खता है। उनको चाहिये था कि वे इन चीजों को कुछ दिनों के लिए छिपा देते और जब किसी बड़े बोलोगना अथवा फ्लोरैन्स जैसे नगर में जाते तो वहाँ उनको बेच देते।" किन्तु उसी समय उसने लक्ष्य किया कि सुनार द्वार पर खड़ा हुआ था और कुछ कहने की मुद्रा में था।

"तुम वहाँ पर क्या कर रहे हो?"

"सरकार मेरी कीमत कौन लौटाएगा? मैं तो गरीब आदमी हूँ।"

वैलैन्टीनो ने घुड़ककर पूछा, "क्या तुमने उन चीजों की ठीक कीमत दी थी ?"

"मैंने उन चीजों की ठीक ही कीमत दी थी। उन ठगों ने तो बहुत अधिक धन माँगा था पर मैं भी तो कुछ लाभ उठाना चाहता था।"

"इससे तुमको शिक्षा मिलेगी। भविष्य में तब तक कोई चीज मत खरीदना जब तक तुमको यह यकीन न हो जाय कि उनको बेचनेवाला उनका सच्चा मालिक है।"

"श्रीमान्, मैं यह नुक्सान बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा।"

"निकल जाओ यहाँ से।" यह शब्द ड्यूक ने इतने जोर से कहे कि सुनार के मुख से सहसा एक चीख निकल पड़ी और वह एक डरे हुए खरगोश की भाँति तुरन्त वहाँ से हवा हो गया।

ड्यूक कुर्सी पर टिककर बैठ गया और ज़ोर से हंसने लगा। तब उसने मैक्यावैली से नम्र वाणी में कहा, "इस विघ्न के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं यह जरूरी समझता हूँ कि पीड़ितों के साथ न्याय तुरन्त कर देना चाहिए और मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रजा के लोगों को यह पता चल जाय कि किसी के साथ अनुचित व्यवहार होने पर मुझसे तुरन्त न्याय की माँग की जा सकती है और उनके साथ पूरा-पूरा इन्साफ होगा।

धर्माध्यक्ष ने कहा, "जिस राजा ने हाल ही में कोई प्रदेश जीता हो उसे अपना प्रभुत्व दृढ़ करने के लिए इसी नीति का सहारा लेना चाहिये। इसी में दूरदर्शिता तथा चतुरता है।"

ड्यूक ने साधारण स्वभाव से कहना आरम्भ किया, "यदि लोगों को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता मिल जाय तो वे राजनीतिक स्वतन्त्रता छिन जाने की अधिक चिन्ता नहीं करते। जब तक उनके परिवार की स्त्रियों का सतीत्व तथा उनकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है तब तक वे अपने भाग्य से संतुष्ट रहते हैं।"

मैक्यावैली सारी घटना का चुपचाप निरीक्षण करता रहा। उसको मन ही मन हंसी भी आई जिसको उसने अपनी मुद्रा से प्रगट न होने दिया क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि यह घटना सच्ची न थी बल्कि जानबूझ कर नाटकीय ढंग से प्रस्तुत की गई थी। वह भलीभांति जानता था कि ड्यूक में इतना साहस नहीं है कि वह फ्रांस के बादशाह के दो प्रजाजनों को फांसी पर लटकवा दे। सम्भवतया उनको उस समय तक छोड़ भी दिया गया हो। और परेशानी के बदले में उनको कुछ धन भी भेंट किया गया हो। अगले दिन ही वे फिर गैस्कनों की सेना की पंक्तियों में दिखाई देंगे। मैक्यावैली ने अनुमान लगाया कि इस दृश्य को उपस्थित करके ड्यूक यह दिखलाना चाहता था कि वह अपने नवीन जीते हुए प्रदेश पर किस योग्यता से शासन करता है। विशेषकर बोलोगना तथा फ्लोरैन्स के विषय में उसका संकेत एक छिपी हुई धमकी थी कि उसकी सेना का उन स्थानों में पहुँचना संभव है। यह इशारा मैक्यावैली जैसे सुदक्ष कूटनीतिज्ञ की तीव्र दृष्टि से छिपा नहीं रह सकता था।

उस समय कमरे में निस्तब्धता फैली हुई थी। ड्यूक धीरे-धीरे अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ मैक्यावैली को अपलक नेत्रों से देखकर कुछ सोच रहा था। मैक्यावैली को ऐसा लग रहा था मानो ड्यूक मन ही मन निर्णय कर रहा हो कि जिस व्यक्ति को फ्लोरैन्स की सरकार ने उसके पास बातचीत करने के लिए भेजा था वह किस ढंग का है। वह ड्यूक की पैनी नज़र से आंखें नहीं मिलाना चाहता था, इसलिए नीचा मुख करके अपने हाथों के नाखूनों को इस प्रकार देख रहा था मानो वे बढ़े हुए हों और उनका कटवाना आवश्यक हो। वह कुछ किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सा हो रहा था और इसी से थोड़ा-सा व्यग्र भी था। क्योंकि पाओलो विटैली की हत्या में आदि से अन्त तक उसी का हाथ रहा था। जब उसे पाओलो के अपराध का पूरा यकीन हो गया तो उसी ने अपने उच्चाधिकारियों को, जो ढीली-ढाली नीति बरत रहे थे अविलम्ब कार्य-वाही करने के लिए उकसाया था। उसी ने सरकारी कर्मचारियों को

आदेश दिया था कि दृढ़तापूर्वक काम पूरा करें। यद्यपि विटेलोज्जो बच कर निकल गया था पर उसी ने पाओलो को मृत्यु-दण्ड देने का आग्रह किया था। किन्तु उसने तो सारा काम बड़े ही गुप्त रूप से किया था। फिर सीज़र बोर्जिया को वह भेद किस प्रकार ज्ञात हुआ ? मैक्यावैली को सन्देह हुआ कि ड्यूक ने उपर्युक्त घटना के दुष्परिणाम की चर्चा मैक्यावैली को केवल यह जानने के लिए की है कि उस घटना में मैक्यावैली का कितना हाथ है। यह बात ड्यूक से छिपी न थी और उसके ईर्ष्यालु हृदय में इस बात का हर्ष था कि उसने मैक्यावैली की अयोग्यता पकड़ ली है। मगर ड्यूक उन व्यक्तियों में से न था जो बिना किसी उद्देश्य के ही कोई बात कह देते हैं। सम्भवतया उसने यह बात इसलिए नहीं कही थी कि वह फ्लोरेंस के राजदूत पर यह प्रगट करदे कि उसको फ्लोरेंस के राज-दरबार में होने वाली सारी घटनाओं का पता है, वरन् इसलिए कि मैक्यावैली के आत्म-विश्वास की नींव ढीली हो जाय जिससे वह ड्यूक की बात को जल्दी ही माना जाय। इस विचार के आते ही ऐसा लगा मानो मैक्यावैली के होठों पर हलकी मुस्कान फैल गई हो और उसने ड्यूक की ओर नज़र उठायी। और शायद ड्यूक भी इसी प्रतीक्षा मे था कि जब मैंक्याविली उसकी ओर देखे तभी वह कुछ कहे।

"राजदूत, मैं आपको ऐसा भेद बतलाना चाहता हूँ जिसे मैंने संसार में किसी पर प्रगट नही किया है।"

धर्माध्यक्ष ने कहा, "आज्ञा हो तो मैं यहां से हट जाऊं ?"

"नहीं, मैं आपकी समझ पर भी उतना ही भरोसा करता हूं जितना इन पर।"

मैक्यावैली ध्यान की मुद्रा में सुन्दर ड्यूक की ओर स्थिर दृष्टि से देखता हुआ प्रतीक्षा करने लगा।

"औरसिनी कुल ने मुझसे बहुत-बहुत आग्रह किया है कि मैं फ्लोरेंस पर आक्रमण कर दूं। किन्तु मुझे आपके देश से कोई वैर नहीं है। इसलिए मैंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया है। परन्तु यदि आपके

शासक मुझसे समझौता करना चाहते हों तो ओरसिनी वालों से मेरी आखिरी बातचीत होने के पहले ही कर लें। हम दोनों ही फ्रांस के बादशाह के मित्रराष्ट्र हैं, इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि हम आपस में भी मित्र ही बने रहें। हम दोनों के प्रदेशों की सीमाएं मिलती हैं, इसलिए हम लोग सहज ही एक दूसरे के सहायक भी हो सकते हैं और बाधक भी। आप भाड़े की सैना पर निर्भर है जिनके नायकों का भरोसा नहीं किया जा सकता। मेरी निजी सेना है जो सुशिक्षित भी है तथा अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित भी। मेरे सेनापति योरुप भर में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।"

मैक्यावैली ने अत्यन्त रुखाई से कहा, "किन्तु श्रीमान्, हमारे सेनापतियों की भाँति ही वे भी अधिक विश्वसनीय नहीं हैं।"

"मेरे पास और भी हैं जो विश्वासपात्र हैं। जानते हो वे कौन हैं? वे ही मूर्ख जो मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं। मूर्ख पाओलो ओरसिनी, वेंटीवोग्लियो जो सोचता है कि मेरी दृष्टि बोलोगना पर लगी हुई है, वैगलियोनी समुदाय जिसको पैरुगिया का भय है, ओलीवैरोटो तथा विटैलोज्जो जो फ्रांस में लगी बीमारी के कारण पंगु हो गया है।"

"वे सब शक्तिशाली हे और आपके विरुद्ध विद्रोही भी।"

"मुझे उनके सारे कुचक्रों का पता है और मौका आने पर मैं उचित कार्यवाही करूंगा। विश्वास रखिए कि जो आग उनके चारों ओर धधक रही है वे बुझा नहीं सकेंगे। दूत, समझ से काम लो। अर्बीनों पर अधिकार द्वारा समस्त मध्य इटली पर मेरा अधिकार हो गया है। गिरोवाल्डो डी मोन्टीफैल्ट्रो मेरा परम मित्र था और पोप अपनी भतीजी एंजिला बोर्जिया का विवाह गिरोवाल्डो के भतीजे तथा उत्तराधिकारी के साथ कराना चाहता था। मैं यदि उसके प्रदेश को अपने हित के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण न समझता तो उसपर कभी भी आक्रमण न करता। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह मेरे लिए नितान्त आवश्यक हो गया था और मैं नीति में भावुकता को कोई स्थान नहीं देता। मैं

शत्रुओं से आपकी रक्षा कर सकता हूं। अगर हम दोनों मिल जाएं तो मेरी सेना आपकी उपजाऊ भूमि तथा अपार सम्पत्ति, तथा सहारे के लिए धर्माधिकारी की धार्मिक सत्ता द्वारा हम इटली की सबसे प्रबल शक्ति बन सकते हैं। तब हमको फ्रांस की कृपा-प्राप्ति के लिए अपार धन न देना पड़ेगा वरन उसको हमारे साथ बराबरी का व्यवहार करना पड़ेगा। अब अवसर आ गया है कि हम दोनों में गठबंधन हो जाय।"

मैक्यावैली चौंक पड़ा किन्तु नम्रतापूर्वक बोला, "श्रीमान् आपका कथन सारपूर्ण है। जिस भांति आपने यह बात मेरे सामने रक्खी है उससे अधिक स्पष्ट तथा मान्य रूप में कोई भी व्यक्ति न रख सकता था। आप जैसा कर्तव्य परायण तथा योग्य सेनाध्यक्ष खोजने पर भी नहीं मिल सकता है क्योंकि न केवल आपके विचार तर्कसंगत है वरन् आप में उन्हें व्यक्त करने की क्षमता भी है।"

ड्यूक ने मुस्कराकर संकेत किया कि वह इस बड़ाई के योग्य नही है। पर मैक्याणैली उसी खुशामदी ढंग से कहता गया। उसका हृदय कण्ठ तक आ गया था क्योंकि वह जानता था कि अब जो कुछ वह कहने वाला है वह ड्यूक को अत्यन्त ही अप्रिय लगेगा। "मैं अपनी सरकार को पत्र लिखकर आपने जो कुछ कहा है सब सूचित कर दूंगा।"

"क्या मतलब ?" वैलैन्टीनो ने ज़ोर से कहा, "यह बड़ी ज़रूरी बात है और मैं इसका निर्णय तुरन्त चाहता हूं।"

"किन्तु मुझे तो समझौता करने का अधिकार नहीं है।"

"तब तुम यहां किसलिए आए हो ?" ड्यूक ने कुर्सी से उछल कर पूछा। उसी क्षण द्वार खुला। एग्पीटो ड्यूक के निर्देश का पालन करके लौटा था, किन्तु इसका मैक्याणैली के हृदय पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। वह सहसा विचलित न होता था किन्तु इस घटना ने जैसे उसको झकझोर दिया हो।

"मैं तो इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि श्रीमान् ने मेरी सरकार को बातचीत के लिए किसी राजदूत को भेज देने के लिए लिखा था।"

"किन्तु ऐसे राजदूत को जिसे बातचीत करने का पूरा अधिकार प्राप्त हो।"

उस समय तक मैक्यावैली के साथ ड्यूक का व्यवहार भद्रतापूर्ण ही रहा था, किन्तु अब उसके रोषपूर्ण नेत्रों से मानो चिनगारियां निकलने लगीं। वह झपटकर मैक्यावैली के पास पहुंचा। मैक्यावैली भी उठकर खड़ा हो गया। दोनों एक दूसरे की ओर अपलक दृष्टि से देखने लगे।

"तुम्हारी सरकार मुझे मूर्ख बना रही है। उन्होंने तुमको भेजा ही इसलिए कि तुम्हें निर्णय करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। उनकी टालमटूल की यह नीति मुझे असह्य हो उठी है। और कब तक मेरे धैर्य की परीक्षा ली जायगी ?"

धर्माध्यक्ष उस समय तक मौन बैठा हुआ था। उसने इस विवाद को शान्त करने के लिए कुछ कहना चाहा किन्तु ड्यूक ने उसे बड़े कठोर शब्दों में चुप रहने के लिए कहा। झुंझलाहट में वह कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। ऐसा जान पड़ता था कि वह आपे से बाहर है क्योंकि वह बहुत कटु, अशिष्ट तथा व्यंग्यपूर्ण हो गया था। मैक्यावैली निर्भीक तथा स्थिर खड़ा हुआ उसको उत्सुक दृष्टि से देख रहा था। अन्त में ड्यूक धम्म से कुर्सी पर बैठकर कहने लगा, "अपने शासकों से कहो कि उन्होंने मेरा बड़ा अपमान किया है।"

"मेरे शासक श्रीमान् के अपमान की कल्पना भी नहीं कर सकते। उन्होंने मुझे आपको यह सूचित करने के लिए भेजा था कि विद्रोहियों ने उनकी सहायता मांगी थी जिसे देना उन्होंने अस्वीकार कर दिया है।"

"शायद, वे इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि देखें ऊंट किस करवट बैठता है ?"

बात सच्ची होते हुए भी मैक्यावैली को बुरी लगने वाली थी। पर फिर भी उसकी मुद्रा वैसी ही निर्विकार बनी रही।

"उनको न औरसिनी से कुछ लगाव है और न विटैलौज्जो से। वे तो श्रीमान् से मित्रता जोड़ने के इच्छुक हैं। इसलिए मैं अनुरोध करता हूँ कि आप अपना आशय खोलकर बतलाए। कम से कम यह जान लेना आवश्यक है कि आप किस प्रकार का समझौता चाहते हैं, जिसे मैं शासन के सम्मुख रख सकूं।"

"और बहस व्यर्थ है। तुम मुझे विद्रोहियों से संधि करने के लिए बाध्य कर रहे हो। कल ही मैं औरसिनी का फ्लोरेन्स पर आक्रमण करने का प्रस्ताव मानकर उनको वश में कर सकता हूं।

मैक्यावैली ने कटुता से उत्तर दिया, फ्लोरेन्स फ्रांस के बादशाह के संरक्षण में है। उन्होंने ज़रूरत होने पर बहुत-सी पैदल सेना तथा चार-सौ घुड़सवार भेजने का वचन दिया है।"

"फ्रांस का वचन केवल उस धन के लिए होता है जिसे वह निरतर मांगता रहता है, मगर धन मिल जाने पर वे उसका पालन नहीं करते।"

मैक्यावैली जानता था कि यह बात सच है। कई बार फ्लोरेन्स निवासियों को फ्रांस के लोग तथा उसकी दुहरी नीति के कारण हानि उठानी पड़ी थी। उसने कई बार निश्चित धन के बदले विपत्ति में सैनिक सहायता देने का वचन दिया था परन्तु धन मिल जाने पर सदा सेना भेजने में विलम्ब करता रहा और कभी भेजी भी तो आधी से अधिक सेना न भेजी। ड्यूक इससे अधिक स्पष्टवादी और क्या हो सकता था? दो ही बातें थी, या तो फ्लोरेंस उसकी मित्रता स्वीकार करे—और उसकी विश्वासघाती मित्रता इटली में किसी से छिपी न थी—नहीं तो वह अपने असन्तुष्ट सेनानायकों से समझौता करके और उनके साथ मिलकर फ्लोरेंस पर आक्रमण कर देगा। परिस्थिति विपदजनक थी और मैक्यावैली कुछ इस ढंग की बात कहने की खोज में था जिससे आगे बातचीत करने का मार्ग खुला रहे। किन्तु ड्यूक ने उसे बीच ही में रोक दिया।

"दूत, अब तुम्हें किस बात की प्रतीक्षा है ? तुम अब जा सकते हो।"

उसने मैक्यावैली के प्रणाम का भी उत्तर नहीं दिया। एग्पीटो उसको पहुंचाने नीचे तक आया। उसने कहा, "ड्यूक का स्वभाव बड़ा क्रोधी है। उनको उत्तर प्रत्युत्तर का अभ्यास नहीं है।"

"उनका यह स्वभाव मेरी नजर से छिपा नही है।" मैक्यावैली ने कुछ कटुता से उत्तर दिया।

[६]

पीयरो तथा पत्रवाहक ड्योढ़ी पर बैठे हुए मैक्यावैली की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही द्वार खुला वे मैक्यावैली को साथ लेकर 'स्वर्ण केसरी' सराय में चले आए। भोजन का आदेश देते समय यह बात उन्होंने सराय के मालिक को जता दी थी कि भोजन साधारण व्यक्ति के लिए नहीं, फ्लोरेन्स के राजदूत के लिए चाहिए। इसलिए खाना बहुत बढ़िया बना था। मैक्यावैली ने खूब पेट भर कर भोजन किया। देशी शराब यद्यपि टस्कैनी जैसी अच्छी तो न थी, पर काफ़ी तेज़ थी। जिसे उसने काफी मात्रा में चढ़ाया। विचार करने पर वह इस परिणाम पर पहुंचा था कि ड्यूक के साथ उसकी बातचीत असन्तोषजनक न रही। वैलैन्टीनो का क्रोध यह संकेत करता था कि वह बहुत परेशान है और फ्लोरेन्स के साथ तुरन्त संधि करने के लिए आग्रह से यह प्रगट होता था कि वह अपनी परिस्थिति संकटाकीर्ण समझ रहा है। ड्यूक के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से मैक्यावैली चिन्तित न था। घर से चलते समय ही उसने समझ लिया था कि उसे सद्व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिए। भरपेट भोजन कर लेने के बाद उसने पत्रवाहक को अपने ठहरने के स्थान पर ले चलने की आज्ञा दी। उसके

पद को ध्यान में रखते हुए एक कोठरी मैक्यावैली के लिए खाली कर दी गई थी। किन्तु पीयरो तथा पत्रवाहक को बरामदे में ही अनगिनती यात्रियों के साथ केवल मूंज का गद्दा मिला। किन्तु उनको सन्तोष था कि सिर पर छत तो है। सोने से पहले मैक्यावैली ने अपनी सरकार को एक पत्र लिखा जिसमें उसने शाम की सारी घटना का उल्लेख कर दिया। पत्र-वाहक को यह पत्र लेकर सवेरा होते ही फ्लोरेन्स को वापिस लौटना था। मैक्यावैली ने पीयरो से कहा, "अच्छा हो तुम भी एक पत्र विम्रा-जियो को लिख दो जिससे वह तुम्हारी मां को यहां सकुशल पहुँचाने का समाचार सुना दे। उसे यह भी लिख देना कि मेरे लिए प्लूटार्क की पुस्तक अवश्य भेज दें।"

मैक्यावैली अपने साथ केवल डान्टे तथा लिवी की ऐतिहासिक कहा-नियाँ ही लाया था। प्लूटार्क मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद दोनों ही था। जब पीयरो पत्र लिख चुका तो मैक्यावैली बिना तकल्लुफ़ उसे लेकर पढ़ने लगा। पत्र पढ़कर वह किंचित मुस्कराया। पीयरो ने लिखा था, "मि० निकोलो दोपहर तक मौन ही धारण किए रहे और यह सोचकर कि वह महत्वपूर्ण विचारों में तल्लीन हैं, मैंने भी कोई बाधा नहीं डाली। पर दोपहर के भोजन के बाद तो वह इतने खुले दिल से तथा विनोदपूर्ण ढंग से बातचीत करने लगे कि स्कारपेरिया से इमोला तक का रास्ता बातों-बातों में ही कट गया और मुझे पता भी न चला। उनका कहना है कि मेरी आवाज़ मीठी है। सोचता हूं मैं अपनी बांसुरी साथ ले आया होता तो अच्छा होता।"

मैक्यावैली ने कहा, "वास्तव में तुमने बड़ा अच्छा पत्र लिखा है। अपनी मां को बताने के लिए तुमने जो समाचार भेजे हैं वे बिल्कुल ठीक और उचित हैं। अच्छा चलो अब दिनभर की मेहनत के बाद आराम किया जाय।"

[७]

मैक्यावैली को थोड़ी ही नींद की ज़रूरत थी और वह सूर्योदय होते ही उठ बैठा। उसने कपड़े पहनने में सहायता देने के लिए पीयरो को बुलाया, सवारी के कपड़े उसने एक थैले में रख दिए और काली गम्भीर पोशाक पहन ली जिसे वह आमतौर पर पहनता था। वह मठ में नहीं रहना चाहता था क्योंकि उसे ऐसे स्थान की ज़रूरत थी जहां आवश्यकता पड़ने पर वह लोगों से गुप्त रूप से मिल सके। वह भली भांति जानता था कि मठ में रहने से उसके मिलने वालों का तथा सारी कार्यवाहियों का भेद छिपा न रह सकेगा। पत्रवाहक फ्लोरेन्स के लिए चल पड़ा था। पीयरो को लेकर मैक्यावैली 'स्वर्ण केसरी' गया। इमोला एक छोटा-सा सुन्दर नगर था और ऐसा नहीं जान पड़ता था कि वहां हाल ही में शासन बदला है। तंग टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में से जाते-जाते उन्हें बहुत से लोग अपने-अपने विविध कार्यों पर जाते हुए मिले और लगता था कि वे सन्तुष्ट हैं। उनके रहन-सहन में कोई अन्तर आया नहीं जान पड़ता था। कभी-कभी पैदल चलने वालों को घुड़सवारों तथा लकड़ी से लदे हुए खच्चरों को मार्ग देना पड़ता था। एक मनुष्य गधैयों को लिए हुए घूम रहा था और गा-गाकर कह रहा था कि गर्भवती स्त्रियों के लिए उनका दूध बड़ा लाभप्रद है। किसी खिड़की से एक बुढ़िया ने सिर निकालकर उसे बुलाया तो वह ठहर गया। बुढ़िया शीघ्र ही एक गिलास लिए हुए द्वार पर आ गई। एक बिसाती सुई पेचक आदि लिए हुए कर्कश स्वर में अपना माल बेच रहा था। गली में दुकानें थीं और वहीं 'स्वर्ण केसरी' सराय भी थी। कोई मनुष्य जीन मोल ले रहा था, कोई नाई की दुकान पर बाल कटवा रहा था और कोई स्त्री जूते की दुकान पर जूते पहन रही थी। लोग अधिक ऐश्वर्य शाली तो नहीं परन्तु साधारणतया समृद्ध जान पड़ते थे। और कोई भिखमंगा नहीं नज़र आता था।

वे 'स्वर्ण केसरी' में भीतर पहुँचे और मैक्यावेली ने अपने तथा पीयरो के लिए खाना तथा शराब लाने की आज्ञा दी। उन्होने रोटियों को शराब में डुबो-डुबोकर खाया और बाकी शराब पी गए। इस प्रकार पेट भर वे एक नाई की दुकान पर पहुँचे और मैक्यावेली ने अपनी दाढ़ी बनवाई। नाई ने उसके छोटे-छोटे घने और काले बालों में अत्यन्त सुगधित जल छिड़क कर बाल काढ़े। तब तक पीयरो अपनी चिकनी ठोड़ी पर हाथ फेरता रहा। उसने कहा, "श्रीयुत निकोलो, मैं सोचता हूं कि मै भी दाढ़ी बनवा लूं।"

मैक्यावेली ने मुस्कराकर कहा, "अरे अभी तो कुछ सप्ताह ठहर सकते हो।" फिर नाई को आदेश दिया कि उसके सिर में भी सुगन्धित जल डालकर बाल काढ़ दे।

अन्त में वे दोनों तैयार हो गए। मैक्यावेली ने नाई से बार्थोलोमियो मार्टेली के मकान का पता पूछा जिससे मिलने का वह इच्छुक था। पर नाई ने जो पता बतलाया वह इतना टेढ़ा-मेढ़ा था कि मैक्यावेली ने कहा कि यदि वह किसी को रास्ता दिखाने के लिए भेज दे तो अच्छा हो। नाई ने अपनी दुकान के द्वार पर जाकर गली में खेलते हुए एक लड़के को बुलाया और उसको नवागन्तुकों को मार्ग दिखलाने के लिए कहा। मार्ग मुख्य चौक में से होकर जाता था जहाँ ड्यूक का महल बना हुआ था। उस दिन हाट थी इसलिए चारों तरफ उन किसानों ने सामान लगा रक्खा था जो शहर में बेचने के लिए फल, तरकारी, मुर्गियां, मांस और पनीर आदि लाए थे। कुछ दुकानें लोहे, पीतल के बर्तनों की और कुछ नए व पुराने कपड़ों की भी थीं। हर प्रकार की वस्तु वहां बिक रही थी। लोगों की भीड़ की भीड़ सौदा खरीदने में व्यस्त थी। कुछ खरीद रहे थे और कुछ केवल देखभर रहे थे। सब ओर कोलाहल हो रहा था। अक्तूबर के महीने में दिन बड़ा सुहावना लग रहा था।

ज्योंही मैक्यावेली और पीयरो चौक में पहुँचे उन्हें पीतल के ढोल की ऊँची आवाज़ सुनाई पड़ी। दूसरा शोर कुछ कम हो गया। रास्ता

दिखाने के लिए साथ आने वाला छोकरा उत्तेजित होकर बोला, "यह ड्यौंडी पीटने वाला है, मैं भी तो सुनूं वह क्या कह रहा है ।" वह मैक्यावैली का हाथ पकड़कर दौड़ने लगा ।

बहुत से लोग उधर की ओर बढ़े । जिस ओर लोग बढ़ रहे थे उधर मैक्यावैली ने नज़र डाली तो देखा कि चौक के दूसरे सिरे पर फांसी का फंदा लटका हुआ है जिस पर दो आदमी झूल रहे हैं । वह इस विभीषिका को नहीं देखना चाहता था इसलिए उसने अपना हाथ छुड़ा लिया । लड़का अपना कार्य भूलकर कौतूहल के क्षेत्र की ओर दौड़ पड़ा । ड्यौड़ी पीटने वाला ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, पर दूर होने के कारण शब्द मैक्यावैली तक नहीं पहुँचे । विवश वह एक स्थूलकाय वृद्धा की ओर मुड़ा जो अपनी दुकान पर पहरा सा दे रही थी । "क्या हुआ है ?" उसने पूछा, यह ड्यौंडी पीटने वाला क्या कह रहा है ।"

बुढ़िया कन्धे उचकाकर बोली, "दो चोरों को फांसी दी गई है । ड्यूक की आज्ञा से दुपहर तक आध-आध घंटे बाद यह ड्यौंडी पीटने वाला चिल्ला-चिल्लाकर लोगों को बतलाता रहेगा कि उनको नागरिकों की सम्पत्ति चुराने के अपराध में फांसी दी गई है । कहते हैं कि वे दोनों फ्राँसीसी सैनिक थे ।"

मैक्यावैली चौंक पड़ा, पर उसने अपना भाव प्रगट न होने दिया । जिस बात का उसे संदेह था वह असम्भव सी थी पर फिर भी उसे स्वयं देखना आवश्यक था । भीड़ में कठिनता से धक्कामुक्की करता हुआ दोनों लाशों पर दृष्टि जमाए वह आगे बढ़ा । घोषणा करने वाला अपनी बात खत्म करके चबूतरे से उतर पड़ा और लापरवाही से एक ओर चला गया । भीड़ छँट गई और आखिरकार मैक्यावैली बिना कठिनाई के लाशों के समीप जा पहुँचा । अब तो संदेह के लिए कोई गुंजाइश न थी । यद्यपि उनके चेहरे फांसी पर लटकने से वीभत्सरूप से विकृत हो गए थे तो भी ये दोनों वे ही गैस्कन सैनिक थे, वही चिड़चिड़ा चेहरे तथा माथे पर गूंथ वाला अधेड़ तथा चंचल आंखों वाला युवक जिनको गत

रात्रि में ड्यूक के सामने न्याय के लिए लाया गया था। तो यह केवल नाटक न था। मैक्यावैली स्तम्भित खड़ा रह गया और मर्माहत-सा शून्य में ताकने लगा। पथ-प्रदर्शक बालक ने उसका हाथ छुआ और खिन्नता-पूर्वक बोला, "काश ! जिस समय इनको फांसी दी गई थी मैं यहां उपस्थित होता ! किसी को पता तक न चला कि यह सब कब होगया।"

"यह सब बच्चों के देखने के लिए नहीं है", मैक्यावैली ने अन्यमनस्क भाव से कहा। वह उस समय और विचारों में उलझा हुआ था।

बालक ने दांत निकालकर कहा, "मैंने अनेकों बार ऐसे दृश्य देखे हैं। उनको हवा में नाचते हुए देखकर बड़ा आनन्द आता है।"

"पीयरो।"

"जी।"

"चलो बच्चे, हमें श्रीयुत बार्थोलोमियो के घर ले चलो।" रास्ते भर मैक्यावैली मौन रहा। उसकी भवें तनी हुई थीं और होठ इतने भिचे हुए थे कि उसका मुख एक कुटिल रेखा के समान दीख पड़ता था। वह सोच रहा था कि वैलेन्टीनो ने क्या सोचकर ऐसा किया। उसने दो उपयोगी सैनिकों को साधारण सी चोरी के लिए फांसी दे दी जबकि इस अपराध के लिए कोड़ों का दण्ड भी पर्याप्त होता। यह सच है कि आदमी के जीवन का मूल्य उसके लिए कुछ नहीं है, पर यह मानना भी कठिन है कि ड्यूक इमोला के नागरिकों का विश्वास पाने के लिए इतना उत्सुक था कि वह सेनानायकों तथा सेना के रोष की बाज़ी लगादे। मैक्यावैली हतबुद्धि हो गया। उसको निश्चय हो गया कि उस घटना के समय उसकी उपस्थिति ड्यूक के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक थी। वरना चाहे वह इस मामले को स्वयं ही तै करता पर फिर भी फ्लोरेन्स के राजदूत से आवश्यक बातचीत समाप्त न होने तक के लिए वह अवश्य ठहर सकता था। क्या वह फ्लोरेन्स की सरकार को यह दिखलाना चाहता है कि वह फ्रांस पर आश्रित नहीं है और यद्यपि उसके सेनानायकों ने विद्रोह कर रक्खा है तब भी वह इतना शक्तिशाली है कि उनके रोष

की उपेक्षा कर सकता है ? अथवा इस घटना का सार उस धमकी में था कि ये सैनिक लूट का माल सरलता से फ्लोरेन्स में बेच सकते थे ? किन्तु उस क्रूर तथा धूर्त दिमाग की बातों को समझना सरल काम न था।

बालक ने सहसा कहा, "यही मकान है श्रीमान् ।"

मैक्यावैली ने उसके हाथ पर एक मुद्रा रक्खी जिसे पाकर वह प्रसन्नता से उछलता-कूदता भाग गया। पीयरो ने द्वार खटखटाने वाला पीतल का कड़ा उठाकर गिराया। कुछ देर बाद पीयरो ने फिर धक्का दिया। मैक्यावैली ने देखा कि मकान बड़ा सुन्दर बना हुआ है और इसमें रहने वाला अवश्य ही अमीर व्यक्ति होगा। दूसरी मञ्जिल की खिड़कियों में कागज के स्थान पर प्रत्याशित रूप से कांच लगा हुआ था जिससे पता चलता था कि उसके साधन यथेष्ट हैं।

[८]

मैक्यावैली बार्थोलोमियो मार्टेली से परिचित नहीं था किन्तु उसको आज्ञा थी कि वह उससे सम्पर्क स्थापित करे। उस छोटे से नगर में उसका स्थान महत्वपूर्ण था क्योंकि वह नगरपालिका का सदस्य भी था तथा धनी नागरिक भी । इमोला के पास ही उसकी जायदाद थी और नगर में भी कई मकान थे। इसके पिता ने लेवेन्ट में व्यापार द्वारा धन कमाया था और वह स्वयं भी युवावस्था में समिरना में रह चुका था। इसीलिए उसका सम्बन्ध फ्लोरेंस निवासियों से भी था क्योंकि फ्लोरेंस वालों का व्यापार निकट-पूर्व से काफी था और बहुत से फ्लोरेंस निवासी उन प्रदेशों के भिन्न-भिन्न नगरों में बस गए थे ।

बार्थोलोमियो का पिता फ्लोरेंस के किसी कुलीन व्यापारी का साझीदार था और अन्त में उसकी लड़की से विवाह भी किया था ।

बिम्राजियो का वह दूर का रिश्तेदार होता था। दोनों की नानियां जिनका बहुत समय पहले देहान्त हो चुका था, आपस में बहिनें थीं। बिम्राजियो ने मैक्यावैली और पीयरो को अपने साथ ले जाने को तैयार करने के लिए यह लालच भी दिया था कि उसके द्वारा मैक्यावैली की इस उपयोगी मनुष्य से मित्रता हो जाने की सम्भावना थी।

बार्थोलोमियो वास्तव में बहुत ही काम का आदमी था। वह इमोला में केवल एक प्रतिष्ठित मनुष्य ही न था वरन् उस संघ का नेता था जिसकी प्रेरणा से नगर ने बिना युद्ध किए ही आत्म-समर्पण कर दिया था। ड्यूक ने, जो दूसरों की सम्पत्ति लुटाने में काफ़ी उदार था, उसको उपहार में एक जागीर दी थी जिसके साथ ही उसको काउण्ट की उपाधि भी मिल गई थी। यह सब बातें मैक्यावैली को उस बातून नाई से पता चली थीं। उसको यह भी पता चला था कि वह ऊपर से चाहे जो कहे अन्दर से इस उपाधि से वह बहुत प्रसन्न है। ड्यूक उस पर भरोसा करता था। वह जानता था कि बार्थोलोमियो विश्वासपात्र बने रहने में ही अपना भला समझता है। ड्यूक ने उसको व्यापारिक आयोगों पर भेजा था जिनको उसने भली प्रकार निभाया था। ड्यूक यद्यपि अपने भेद गुप्त रखता था किन्तु तो भी संभवतया बार्थोलोमियो को उसके संकल्पों का औरों से अधिक ही ज्ञान था। मैक्यावैली को विश्वास था कि धीरे-धीरे किसी न किसी तरह वह भेद उससे वह निकाल लेगा। बार्थोलोमियो फ्लोरेंस की सरकार के बन्धन में भी था क्योंकि उसके दो मकान फ्लोरेंस में भी थे और यदि वह टेढ़ा चला तो उसका बदला चोरी से एक मकान को जलवाकर लिया जा सकता था। यदि यह चेतावनी भी पर्याप्त नहीं होती तो किसी प्रकार लेबाण्ट के व्यापार में धक्का पहुंचाया जा सकता था जिसमें उसका बहुत धन फंसा हुआ था।

मैक्यावैली ने मन में सोचा कि मित्रों का होना अच्छी बात है किन्तु उनको यह जता देना भी आवश्यक है कि यदि वे मित्रता का

व्यवहार नहीं करते तो उनसे बदला भी लिया जा सकता है ।

इतने में एक नौकर ने द्वार खोला । जब मैक्यावैली ने अपना नाम बताते हुए पूछा कि क्या उसका स्वामी अन्दर है तो उसने उत्तर दिया, "काउन्ट आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।"

नौकर उनको अन्दर चौक में ले गया । चौक की सीढ़ियों द्वारा वे ऊपर एक कमरे में पहुँचे जो न बहुत बड़ा था और न बहुत छोटा, और देखते ही पता चल सकता था कि वह गृहस्वामी की बैठक है । उन्होंने एक दो क्षण प्रतीक्षा की । इतने ही में बार्थोलोमियो ने कुछ धूमधाम से वहां प्रवेश किया । अतिथियों का उसने भली-भांति स्वागत किया ।

"मि० निकोलो मुझे आपके आगमन की सूचना मिल गई थी और मैं बड़ी उत्कण्ठा से आपकी प्रतीक्षा कर रहा था ।"

वह लगभग चालीस वर्ष का भारी-भरकम मनुष्य था । उसके बाल लम्बे थे पर आगे से कुछ उड़े हुए थे । घनी काली दाढ़ी थी, चेहरे का रंग लाल था, ठोढ़ी चौड़ी और तोंद आगे को निकली हुई थी । मैक्यावैली स्वयं बहुत दुबल-पतला था और मोटे आदमियों को पसन्द नहीं करता था । वह कहा करता था कि इटली में जब तक कोई मनुष्य विधवाओं, अनाथों और कंगालों का धन नहीं अपहरण करे तब तक वह मोटा नहीं हो सकता ।"

"कल पत्रवाहक एक पत्र लाया था जिसमें बिआजियो ने लिखा था कि आप आ रहे हैं ।"

"हां पत्रवाहक को इधर आना था इसलिए बिआजियो को पत्र भेजने का अवसर मिल गया । यह बिआजियो का भांजा पीयरो है ।"

बार्थोलोमियो ने खिलखिलाकर हंसते हुए पीयरो को अपनी बाहों में भरकर तोंद से लिपटा लिया और उसके दोनों कपोलों को चूमा ।

"तब हम दोनों भी मामा-भांजे हैं" उसने झंकृत स्वर से कहा ।

"मामा-भांजे ?" मैक्यावैली धीरे से बोला ।

"क्या आपको नहीं मालूम ? बिआजियो की नानी और मेरी नानी

बहिनें थीं। वे दोनों कार्लो पेरुज्जी की पुत्रियां थीं।"

"बड़े आश्चर्य की बात है कि विआजियो ने मुझे नहीं बताया। पीयरो, तुम्हें पता था ?"

"नहीं श्रीमान्।"

यद्यपि मैक्यावेली इस सम्बंध को भली प्रकार जानता था परन्तु उसने अपनी अज्ञानता प्रगट की, क्योंकि वह अपना भेद किसी पर बिना कारण प्रगट नहीं होने देता था। वह इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ कि पियरो ने संकेत समझ लिया और बिना झिझके तुरन्त उत्तर दे दिया। लड़का समझदार था।

बार्थोलोमियो ने उनको बैठने के लिए कहा। कमरे में कोई अंगीठी नहीं थी किन्तु एक तसले में जलते हुए अंगारे कमरे के शीत को दूर कर रहे थे। उसने फ्लोसरेन्स निवासी मित्रों के विषय में मैक्यावेली से पूछा जहाँ वह व्यापार के सम्बन्ध में प्रायः जाया करता था। मैक्यावेली उनके बारे में वतलाने लगा और वे कुछ देर तक इधर-उधर के विषयों पर बातचीत करते रहे। थोड़ी देर बाद वार्तालाप पीयरो सोडेरिनी के बारे में होने लगा जो हाल ही में फ्लोरेन्स का आजीवन राष्ट्रपति चुना गया था।

"वह मेरा परम मित्र है और बहुत ही सज्जन तथा ईमानदार आदमी है। उसी की आज्ञानुसार मैं इमोला आया हूं" मैक्यावेली ने कहा। उसने बार्थोलोमियो को यह जतलाना ठीक समझा कि वह राष्ट्रपति का विश्वासपात्र है।

"आपसे मिलकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मेरे योग्य जो सेवा हो उसके लिए मै सदैव प्रस्तुत हूं। मैंने विआजियो से मलमल का थान भेजने के लिए कहा था पर मै सोचता हूँ कि जल्दी-जल्दी में शायद आप न ला सके होंगे।"

विआजियो दूसरों की सेवा करने को सदा तत्पर रहता था इसलिए अनेकों लोग उससे सब तरह का काम लेते थे और मैक्यावेली तो बिना किसी झिझक के उसको कोई न कोई काम बताता ही रहता था।

उसने उत्तर दिया, "नहीं-नहीं, विग्राजियो ने विशेष आग्रह से आपकी वस्तु भेजी है। पर वह नौकरों के पास है और वे दिन चढ़े पहले यहां न पहुंच सकेंगे।"

"मेरी स्त्री मेरे लिए कमीज बना रही है। उसने कसीदाकारी मठवासी तपस्विनियों से सीखी है और यह कहने में मुझे संकोच नहीं कि इमोला में वह इस कार्य में अद्वितीय है। बल्कि पूरी कलाकार है।"

मैक्यावैली उस समय सोचनें में डूबा हुआ था। वह बार्थोलोमियो को आंकने का प्रयत्न कर रहा था। उसका स्नेहपूर्ण उग्र स्वभाव तथा रक्त की प्रचुरता और साथ ही उसकी मुक्ति हंसी तथा वाचालता से तो यह जान पड़ता था कि वह खाने-पीने वाला व्यक्ति है। अब यह देखना बाकी था कि यह विनोदप्रिय शिष्टाचार तथा उदार सौजन्यता केवल कार्यकुशल तथा कपटी मस्तिष्क के आवरण मात्र ही तो नहीं हैं। उसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि वह बड़ा चतुर व्यापारी है और सौदा करने में पटु है।

मैक्यावैली ने बातचीत का रुख इमोला और उसकी परिस्थितियों की ओर घुमाया। बार्थोलोमियो मुक्तकंठ से ड्यूक की प्रशंसा करने लगा। उसने आत्मसमर्पण की शर्तों को पूर्णरूप से निबाहा है। नगर पर विजय प्राप्ति के बात क्षतिपूर्ति के लिए जो धन राशि उसने ली है वह अनुचित नहीं है और उसमें से भी वह नगर को सुन्दर तथा विशाल बनाने के लिए खर्च करना चाहता है क्योंकि इमोला उसके हाल ही में जीते हुए राज्य की राजधानी है। अपने लिए एक महल, व्यापारियों के लिए एक सभास्थान तथा दरिद्रों के लिए एक अस्पताल—इन सबके मानचित्र भी वह बनवा रहा है। नगर में व्यवस्था भी है और अपराधों की संख्या कम हो गई है तथा न्याय शीघ्र और सस्ते में होता है, कानून के सामने धनी-निर्धन सब बराबर हैं। व्यापार उन्नति पर है और घूस तथा भ्रष्टाचार गायब हो गए हैं। ड्यूक को राज्य के कृषि-सम्बन्धी साधनों में भी विशेष रुचि है और उसने आदेश दिया है कि उपज बढ़ाने

के लिए सब कुछ किया जाय। सेना को नगर के बाहर रक्खा गया है और नगर को उसके पोषण के व्यय से मुक्त कर दिया गया है आदि-आदि। संक्षेप में नगर हर प्रकार से समृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है और हर आदमी संतुष्ट है।

"यह व्यवस्था चिरस्थायी हो मेरी यही कामना है" मैक्यावैली ने हँसकर कहा।

"किन्तु यदि सेनानायकों ने राज्य का तख्ता उलट दिया और नगर में घुस आये तो क्या अवस्था होगी?"

बार्थोलोमियो की हँसी फूट पड़ी और जांघ पर हाथ मारकर वह बोला, "वे लोग फूस के समान हैं क्योंकि वे जानते हैं कि ड्यूक के बिना उनकी कोई शक्ति नहीं। वे शीघ्र ही समझौता कर लेंगे। विश्वास रखिये वे सब शान्त हो जाएंगे।"

मैक्यावैली इस समय यह निश्चय नहीं कर सका कि बार्थोलोमियों ये बातें सच्चे दिल से कह रहा है अथवा अपने कथन पर स्वयं ही आश्वस्त होने के लिए, अथवा मैक्यावैली के हृदय पर अंकित करने के लिए कह रहा है। अभी तक वह यह भी निश्चय नहीं कर पाया था कि यह मनुष्य धूर्त था अथवा मूर्ख। यह असम्भव न था इस उदारता, उत्साह, निष्कपट भाव तथा उन पुलकित नेत्रों के पीछे कोई भेद भी छिपा हुआ हो। उसने बातचीत का रुख बदल दिया।

"आपने कहा था कि आप मेरी सहायता करेंगे। क्या आप मेरे, पीयरो तथा नौकरों के लिए ठहरने का कोई स्थान बतला सकते हैं?"

बार्थोलोमियों ने ज़ोर से हँसकर कहा, "इसके अतिरिक्त आप चाहे कुछ भी मांग लेते। ड्यूक के दरबार के पिछलग्गू कवि, चित्रकार, गृह निर्माता, यंत्रकार, अपने-अपने काम से आए हुए दूसरे प्रदेशों के लोग तथा रुपया बनाने के लोभ से आए हुए व्यापारीगण तथा नाना प्रकार के सौदागर इनके मारे कमरा तो क्या कोई कोना भी शहर में खाली नहीं बचा है।"

"मैं यहाँ आवश्यकता से अधिक नहीं ठहरूंगा। पर सरकार की आज्ञा पर तो निर्भर हूं ही। मैं अपना काम मठ में नहीं कर सकता। मेरे पीयरो तथा नौकरों के लिए स्थान मिलना बड़ा ही आवश्यक है।"

"मैं अपनी सास से पूछूंगा। वह इस विषय में मुझसे अधिक जानकारी रखती है। मैं उसको बुलाता हूँ।"

वह कमरे से चला गया और थोड़ी देर में लौटा तो उसने अपने अतिथियों को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा। वह अब उनको अपेक्षाकृत बड़े कमरे में ले गया जिसकी दीवारों पर चित्रकारी हो रही थी तथा जिसमें अंगीठी भी बनी हुई थी। वहां दो महिलाएँ आग के पास बैठी काम कर रही थीं। जब आगन्तुकों ने अन्दर प्रवेश किया तो वे उठकर खड़ी हो गईं और उनके प्रणाम के उत्तर में समुचित अभिवादन किया। उनमें से एक अधेड़ परन्तु सुन्दर महिला थी। बार्थोलोमियो ने दोनों का परिचय देते हुए कहा, "यह मेरी सास श्रीमती कैटरीना कैयेला हैं और यह मेरी पत्नी हैं।"

दूसरी स्त्री युवती थी और बार्थोलोमियो की पुत्री के बराबर जान पड़ती थी। उस समय की प्रथा के अनुसार उसके प्राकृतिक काले केश सुनहरे रँगे हुए थे। पर यह रंग इटालियन लड़कियों की साँवली देह पर फबता न था इसलिए उसके मुख, गर्दन तथा वक्षस्थल पर गाढ़ा सफेद पाउडर लगा हुआ था। उसकी काली आँखों के ऊपर सुनहले बाल बड़े सुन्दर जान पड़ते थे। उसकी भौंहें पतली रेखा के समान तथा उसकी छोटी नासिका सीधी थी। उसका मुख बड़ा आकर्षक था और वह हल्के स्लेटी रंग के वस्त्र पहिने हुए थी। घाघरा नीचा, आस्तीनें लटकती हुई थीं। कसी हुई चुस्तचोली का चौकोर गला नीचे तक कटा हुआ था जिसमें से उसका बर्फ-सा श्वेत वक्षस्थल तथा भरे हुए स्तन साफ झलक रहे थे। उसकी सुन्दरता में कौमार्य था किन्तु साथ ही एक परिपक्वता भी थी और दोनों का सम्मिश्रण बड़ा ही मनमोहक था।

यद्यपि मैक्यावैली की भावभंगिमा से यह बात व्यक्त न होती थी

परन्तु युवती को देखते ही उसके हृदय में एक विलक्षण हलचल सी पैदा हो गई थी। उसने मन ही मन कहा, "कैसी सुन्दर युवती है। इसके साथ सोने में तो बड़ा ही आनन्द रहेगा।"

जब तक दोनों स्त्रियां दोनों अतिथियों को बैठने के लिए कुर्सियां लाएं तब तक बार्थोलोमियो ने अपनी सास से मैक्यावैली की कठिनाई का वर्णन कर डाला और तब, जैसे कोई बात अचानक याद आ गई हो, कहने लगा, "पीयरो तो मेरा भांजा है जो आज ही पहली बार मिला है।"

रिश्ता जानकर दोनों स्त्रियों ने युवक की ओर देखा और मुस्कराई। मैक्यावैली ने लक्ष्य किया कि बार्थोलोमियो की स्त्री के दांत सुन्दर, छोटे, एकसे तथा सफेद हैं।

श्रीमती कैटरीना ने पूछा, "क्या ये लोग कुछ जलपान नहीं करेंगे ?"

उसने भी अपनी लड़की के समान ही काले वस्त्र पहन रखे थे परन्तु उसने बालों को रंगना तथा गालों पर पाउडर आदि लगाना सम्भ्रान्त स्त्री के लिए अनुचित समझकर उनका प्रयोग न किया था और वह बिल्कुल सादे वेश में थी। उसके नेत्र भी अपनी पुत्री ही की भांति काले थे और अपनी जवानी में वह भी अवश्य वैसी ही सुन्दर रही होगी।

मैक्यावैली ने कहा, "जलपान तो हम लोग कर चुके हैं।" परन्तु बार्थोलोमियो कम से कम एक गिलास शराब के लिए हठ करने लगा।

उसने अपनी पत्नी से कहा, "औरेलिया, कहो तो नीना मे जाकर।"

युवती चली गई तो बार्थोलोमियो ने अपनी सास से मैक्यावैली की आवश्यकता फिर दुहराई।

"यह तो एकदम असम्भव है। नगर भर में एक कोठरी तक खाली नहीं है। पर श्री मैक्यावैली कुलीन व्यक्ति हैं और पीयरो तुम्हारा

रिश्तेदार है, इससे सम्भव है सेराफीना इनको ठहरा ले। उसने आज तक कभी कोई किराएदार नहीं रखा। अभी हाल ही में मैंने उससे कहा भी था कि बड़ी लज्जा की बात है कि लोग थोड़े से स्थान के लिए पर्याप्त धन देने को तैयार है और तुम्हारा कमरा खाली पड़ा है।"

बार्थोलोमियो ने बतलाया, "मोना सेराफीना लेवोन्ट के मेरे एक आसामी की विधवा है और जिस मकान में वह रहती है मेरा ही है। उसका बड़ा लड़का सिमरना में मेरे दफ्तर में कर्मचारी है और दो बच्चे उसके पास है। एक लड़का है जो पादरी बनने का इच्छुक है और दूसरी चौदह वर्ष की बालिका है। कहीं वे बुरी संगत में न पड़ जाएं इसलिए किसी अनजान को घर में नहीं रखा है।"

"बेटा, यदि तुम उससे कहो तो वह तुम्हें कभी मना न करेगी।"

श्रीमती कैटरीना का उस मोटे आदमी को बेटा कहना अच्छा नहीं लगता था क्योंकि आयु में वह बहुत से बहुत उससे दो या तीन वर्ष बड़ी होगी।

बार्थोलोमियो ने कहा, "मैं तुम को साथ ले चलूंगा। मुझे दृढ़ विश्वास है कि सब प्रबन्ध हो जाएगा।"

औरेलिया वापस आ गई। उसके पीछे-पीछे एक दासी आ रही थी जिसके हाथ में एक थाल था। थाल में नक्काशीदार कांच के गिलास, शराब की बोतल तथा एक तश्तरी में कुछ मिठाई थी। औरेलिया बैठ गई और काम में लग गई।

बार्थोलोमियो ने उससे कहा, "सुनो, मि० निकोलो तुम्हारे लिए मलमल लाए हैं। अब तुम मेरी कमीज का काम शुरू कर दो।"

उसकी सास बोली, "सचमुच ही तुम्हें नई कमीजों की आवश्यकता भी थी।"

औरेलिया मुस्कराई किन्तु बोली नहीं।

"आइये आपको दिखाऊँ कि मेरी स्त्री कितनी सुन्दर कढ़ाई करती

है," बार्थोलोमियो ने उठकर वह वस्त्र अपनी स्त्री से ले लिया जिस पर वह कढ़ाई कर रही थी।

"बार्थोलोमियो, यह स्त्रियों के मतलब की चीजें हैं।"

"यदि मि० निकोलो ने स्त्री के हाथ की अदभुत कारीगरी पहले नहीं देखी थी तो आज देख ली।"

"श्रीमती औरेलिया, मैं विवाहित हूँ, "मैक्यावैली ने मुस्कराकर कहा जिससे उसका चेहरा आकर्षक हो गया।

"इस कढ़ाई की सुन्दरता तथा डिज़ाइन की उत्कृष्टता को देखिए।"

"क्या इसका रेखाचित्र भी इन्होंने बनाया है ?"

"सचमुच यह कलाकार है।"

"मैक्यावैली ने उसकी समुचित प्रशंसा की और वस्त्र लौटा दिया।

औरेलिया ने आंखों में ही मुस्कराकर धन्यवाद दिया।

खाने-पीने का काम समाप्त होने पर बार्थोलोमियो ने प्रस्ताव किया कि विधवा सेराफीना के पास चला जाय। उसने बताया कि उसका मकान बिल्कुल पिछवाड़े ही है।

मैक्यावैली और पीयरो उसके साथ-साथ सीढ़ी से नीचे उतर कर एक छोटे से चौक में पहुँचे जहां एक मुडेलीदार कूंआ था तथा अखरोट का एक वृक्ष था जिसकी पत्तियां पतझड़ के कारण झड़ गई थीं। वहां से वे एक छोटे से द्वार पर पहुँचे जो एक संकरी गली में खुलता था।

"बस आ पहुँचे हैं", बार्थोलोमियो ने कहा।

उजाड़ गली को देखकर मैक्यावैली ने सोचा कि उससे मिलने आने वालों को यहाँ कोई नहीं देख सकेगा।

बार्थोलोमियो ने द्वार खटखटाया और पलभर में ही एक दुबली किन्तु लम्बी स्त्री ने किवाड़ खोले। चिन्ता के कारण उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं, आँखें गढ़े में धँस गई थीं तथा बाल सफेद हो गए थे। जब उसने द्वार खटखटाने वालों को देखा तो उसकी आँखों के संदेह का स्थान

तुरन्त आदर ने ले लिया। वह उनसे अन्दर चलने के लिए अनुरोध करने लगी।

"यह मि० निकोलो मैक्यावैली हैं जो कि फ्लोरेन्स की प्रजातन्त्री सरकार के मुख्य मंत्री हैं तथा उसकी ओर से ड्यूक के पास राजदूत बनकर आए हैं और यह युवक मेरा रिश्तेदार है तथा मेरे मित्र और सम्बंधी विआजियो बुआनाकोर्सी का भांजा है।"

श्रीमती सेराफीना उनको अन्दर बैठक में लिवा ले गई तो बार्थोलोमियो ने अपने आने का उद्देश्य बतलाया। सुनकर सेराफीना का मुख फीका पड़ गया।

"आह, मि० बार्थोलोमियो आप तो जानते ही हैं मैं सबसे मना-करती रही हूं। आप स्वयं सोचें मेरे घर में दो अबोध बालक हैं, फिर उन लोगों के साथ कैसे रहना हो सकता है जिनके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं।"

"मैं जानता हूँ सेराफीना! किन्तु इन लोगों के लिए तो मैं जिम्मे-दारी ले सकता हूँ। पीयरो मेरा रिश्तेदार है। वह तुम्हारे लूगी के लिए अच्छा साथी रहेगा।"

"कुछ देर तक इसी प्रकार की बातचीत चलती रही। बार्थोलोमियो ने हँसी-हँसी में ही उस अनिच्छुक महिला को यह जता दिया कि मकान उसका है और यदि वह चाहे तो उसे निकाल भी सकता है। दूसरे उसका बड़ा लड़का बार्थोलामिया के यहाँ नौकर था और उसकी उन्नति भी बार्थोलोमियो की इच्छा पर ही निर्भर थी। किन्तु ये सब बातें उसने ऐसे विनोदपूर्ण ढंग से कहीं कि मैक्यावैली ने मन ही मन उसकी प्रशंसा की। वह मनुष्य सीधा अवश्य दिखाई देता है। किन्तु मूर्ख नहीं है।

सेराफीना ग़रीब थी और वह बार्थोलोमियो को अप्रसन्न नहीं कर सकती थी। उसने फीकी हँसी हँसकर कहा, "मैं सहर्ष आपकी तथा आपके मित्रों की सेवा के लिए तैयार हूँ।"

अंत में यह तय किया गया कि मैक्यावैली को एक कमरा और एक

बैठक दे दी जाय। पीयरो उसकी लूगी के साथ रह जाय और नौकरों के लिए बरसाती में गद्दे लगा दिये जायेंगे। जो भाड़ा उसने माँगा वह बहुत अधिक था और बार्थोलोमियो ने उसको टोका भी, पर मैक्यावैली ने मोल-तोल करना अपनी शान के विरुद्ध समझा और खुशी से उतना भाड़ा देने को तैयार हो गया। वह समझता था कि थोड़ा-सा ठगाए जाने से वह उसकी सहानुभूति पा लेगा। खिड़कियों में काँच की जगह तख्ते लगे हुए थे और चिकने काग़ज़ के पर्दे थे जो हवा अथवा प्रकाश की आवश्यकता पड़ने पर पूरे या कम खोले जा सकते हैं। रसोईघर में अँगीठी थी तथा बैठक को भी तसले में आग रखकर गरम किया जा सकता था। सेराफीना कमरा मैक्यावैली को देने तथा स्वयं अपनी लड़की के साथ निचली मंज़िल में रहने के लिए तैयार हो गयी।

[६]

ये सब बातें तय हो जाने पर बार्थोलोमियो ने उनका साथ छोड़ दिया और मैक्यावैली तथा पीयरो भी भोजन करने के लिए 'स्वर्ण-केसरी' चले गए। उन्होंने अभी भोजन समाप्त किया ही था कि स्कारपेरिया से दोनों नौकर, घोड़े तथा असबाब लेकर आ पहुँचे। मैक्यावैली ने पीयरो से उनको मठ का मार्ग दिखलाने के लिए कहा ताकि जो झोले वहाँ पड़े थे वे ले आवें।

"यह मलमल का थान लेकर बार्थोलोमियो के घर जाओ और दासी से कहना कि गृहस्वामिनी के पास पहुँचा दे। छोकरी देखने में बुरी नहीं थी। उससे बातचीत करके शायद तुम्हारा भी कुछ लाभ हो सके। तब सेराफ़ीना के घर जाना और मेरे आने तक प्रतीक्षा करना।" थोड़ी देर रुककर वह फिर कहने लगा, "वह औरत बातून है और गप्पी

भी है। उसके साथ रसोई में बैठना। वह तुम्हारी संगत से खुश हो जाएगी। तुम उसके बच्चों के बारे में और स्वयं अपनी माता के बारे में उससे बातचीत करना। बातों ही बातों में बार्थोलोमियो, उसकी सास और उसकी पत्नी के बारे में भी कुछ और जानकारी हासिल करने का प्रयत्न करना। सेराफीना उसके उपकार के बोझ से बहुत दबी हुई है, इसलिए वह उसकी बुराई जरूर करेगी और उसका क्रोध स्वाभाविक ही होगा। तुम्हारा चेहरा सीधा-सादा तथा नेक है और तुम अभी बच्चे ही हो इसलिए अगर तुम अपना विश्वास उसपर जमा सके तो वह सब कुछ उगल देगी। इस प्रकार तुमको इस बात का अभ्यास हो जाएगा कि मीठी-मीठी बातों से किस प्रकार दिल में दबा हुआ विद्वेष उभारा जा सकता है।"

"पर मि० निकोलो आपको यह कैसे यक़ीन हुआ कि वह उससे घृणा करती है?"

"मुझे पक्का यकीन तो नहीं है। यह भी संभव है कि वह बस मूर्ख और बातून हो। किन्तु इतना तो सच है ही कि यह ग़रीब है और बार्थो-लोमियो अमीर। साथ ही यह उसकी दया पर भी निर्भर है। दया का बोझ बड़ी कठिनता से उठाया जाता है। यकीन रखो कि शत्रुओं के अपराध तो क्षमा किए जा सकते हैं, मित्रों के उपकार नहीं।"

वह तीखी-सी हँसी हँसकर चला गया। फ्लोरेंस के प्रतिनिधि के साथ उसे जियासकोमो फेरीनेली नाम के अपने नगर-निवासी से मिलना था, जिसको मेडीसी के साथ ही निर्वासित कर दिया गया था परन्तु हिसाब-किताब में चतुर होने के कारण जिसको ड्यूक ने अपने यहाँ नौकर रख लिया था। किन्तु वह फ्लोरेंस लौट जाने का इच्छुक था ताकि उस को छीनी हुई सम्पत्ति फिर से मिल जाए। इस भांति वह मैक्यावैली को लाभप्रद सिद्ध हो सकता था। उसने भी बार्थोलोमियों की बातों की पुष्टि की। ड्यूक की नवीन प्रजा उसके शासन से संतुष्ट थी। शासन कठोर किन्तु व्यवस्थित था। जो लोग छोटे-मोटे राजाओं के अत्याचारों से

अत्यन्त पीड़ित रह चुके थे वे अत्याचार से छुटकारा पा गये थे। ऐसी स्वतन्त्रता तो उनको सदियों से नहीं मिली थी। ड्यूक ने अपने राज्य के प्रत्येक घर से एक-एक आदमी लेकर एक सेना बनाई थी जो भाड़े की सेना से अधिक विश्वसनीय थी। फ्रांस के सैनिकों अथवा गैस्कन सैनिकों को बादशाह कभी भी वापस बुला सकता था। स्विट्ज़रलैण्ड के सैनिक दूसरे राज्य से अधिक लालच मिलते ही तुरन्त साथ छोड़ देते थे और जर्मनी के सैनिक जिस प्रान्त में जाते उसको बर्बाद कर डालते थे और इसी से लोग उनसे भय खाते थे। ड्यूक के सैनिकों को अपनी लाल तथा पीली वर्दी का बड़ा मान था। उनको अच्छा वेतन मिलता था। अच्छी युद्ध-शिक्षा दी जाती थी और अच्छे हथियार दिए जाते थे। ड्यूक ने उनके दिलों में राजभक्ति के भाव जागृत कर दिये थे।

मैक्यावैली ने पूछा, "विटैलौज्जो और औरसिनी के क्या समाचार हैं ? उनकी कोई खबर नही थी। किसी को पता न था कि वे क्या कर रहे हैं।"

"महल में क्या अनुमान किया जा रहा है ?"

फैरीनेली ने उत्तर दिया, "कुछ पता नही चलता। ड्यूक बहुत भीतरी आदमी है और अपने भेद बहुत छिपाकर रखता है मंत्रियों से भी कोई ऐसा संकेत नही मिलता कि कोई चिन्ता की बात है। मैंने मि० एग्पीटो को कभी इतना प्रफुल्लित नहीं देखा।"

मैक्यावैली ने भौंहें चढ़ाई। वह उलझन में पड़ गया। यह तो साफ था कि दाल में कुछ काला है। फैरीनेली जो कुछ जानता था सब बताने को तैयार था। पर उससे मैक्यावैली कोई नई बात न जान सका। वह अपने स्थान को लौट आया जहाँ पीयरो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

उसने पूछा, "कपड़ा दे आए ?"

"जी हाँ, मि० बार्थोलोमियो घर पर ही थे। दासी मुझे ठहरने के लिए कहकर कपड़ा लेकर महिलाओं के पास चली गई। जब वह लौटकर

आई तो कहने लगी कि उन्होंने मुझे धन्यवाद देने के लिए बुलाया है। तब मैं ऊपर चला गया।"

"तो तुमने दासी से दोस्ती नहीं जोड़ी, जैसा कि मैंने तुमसे कहा था ?"

"कोई मौका ही नहीं मिला।"

"कम से कम उसकी चुटकी ही भर लेते। या कहते कि तुम बड़ी सुन्दर हो। इतना मौका तो था ही।"

"महिलाएँ मेरे ऊपर बड़ी दयालु थीं। उन्होंने मुझे फल और केक खिलाया और शराब पीने के लिए दी। आपके बारे में भी उन्होंने कई सवाल पूछे।"

"क्या पूछा ?"

"उन्होंने पूछा कि आपका विवाह कब हुआ और किससे हुआ। तब श्रीमती मेरियेटा कैसी लगती हैं ?"

"क्या तुमने सेराफीना से भी बातचीत की थी ?"

"जी, आपका विचार उसके बारे में बिल्कुल ठीक था। आप नहीं आते तो वह अभी तक बात करती रहती। मैंने तो सोचा कि उसकी बातें कभी खत्म ही नहीं होंगी।"

"मुझे बताओ क्या-क्या बातें हुई ?"

जब पीयरो सब कुछ बतला चुका तो मैक्यावेली प्रसन्नता से मुस्कराया। "तुमने बड़ा अच्छा काम किया है। मैं जानता था कि मेरा अनुमान ठीक है और तुम्हारी युवावस्था से वह बुढ़िया जरूर ही प्रभावित होगी और तुम्हारी भोली-भाली सूरत को देखकर ज़रूर तुम पर विश्वास कर लेगी।"

पीयरो को बहुत-सी बातें मालूम हो गई थीं। बार्थोलोमियो पर ड्यूक बड़ा कृपालु है। वह नगर का मुखिया है। साथ ही वह ईमानदार, दयालु, उदार और राजभक्त है। यह उसका तीसरा विवाह है। पहला विवाह उसके माँ-बाप ने किया था और आठ वर्ष बाद उसकी स्त्री

विसूचिका से मर गई थी। बहुत दिनों बाद उसने दूसरा विवाह किया, पर ग्यारह वर्ष बाद दूसरी पत्नी भी मर गई। दोनों ही काफ़ी दहेज लाई थीं। पर दोनों ही बांझ थी। उसके बाद वह तीन वर्ष तक विधुर रहा और तब सहसा औरेलिया से विवाह कर लिया। वह एड्रियाटिक बन्दर-गाह सिनीगेगलिया की रहने वाली थी तथा उसका पिता एक जहाज का स्वामी था जो दसमेशिया के नगरों को सामान पहुँचाया करता था। पर एक बार वह जहाज समेत तूफान में डूब गया और उसकी स्त्री विधवा तथा कंगाल हो गई। अब वह कपड़े सी-सीकर अपना निर्वाह करती थी। उसके तीन लड़कियाँ तथा एक लड़का था। लड़का तो पिता के साथ ही जहाज में डूब गया था। दो लड़कियों का विवाह हो चुका था। औरेलिया जब सोलह वर्ष की थी तब संयोगवश बार्थोलोमियो ने उसे देखा। वह उसकी अछूती सुन्दरता को देखकर मोहित हो गया। पर न वह इतनी कुलीन थी और न इतनी धनी कि ऐसे सम्पन्न मनुष्य से उसका सम्बन्ध हो सकता। नवयुवती होने पर भी उसमें ऐसी परिपक्वता थी जिससे लगता था कि वह बांझ नहीं होगी। यह बात बार्थोलोमियो के लिए महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि पुत्र पाने के लिए वह बहुत इच्छुक था। अपनी दोनों स्त्रियों के जीवित रहते उसने कई गरीब लड़कियां रखेल रखीं पर किसी से भी सन्तान नहीं हुई। श्रीमती कैटरीना के छः सन्तानें पैदा हुई थीं जिनमें से दो की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। इससे यह साफ़ था कि उनका कुल उपजाऊ तो है। पूछताछ करके बार्थोलोमियो ने यह भी मालूम कर लिया था कि औरेलिया की बड़ी बहिनों के भी तीन-चार बच्चे हो चुके हैं। वास्तव में वे हर वर्ष एक बालक को जन्म देती हैं जो एक स्वस्थ युवती के लिए उचित ही है। पर बार्थोलोमियो सावधान था। वह दो बांझ स्त्रियों से विवाह कर चुका था और यह नहीं चाहता था कि तीसरी स्त्री भी बांझ ही निकले। एक मध्यस्थ के द्वारा उसने कैटरीना के सामने प्रस्ताव रक्खा कि वह उसको तथा उसकी कन्या को भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन देकर इमोला के बाहर अपने किसी

मकान में रख लेगा और इस बात की प्रतिज्ञा की कि जो कोई सन्तान होगी उसको जायज मानेगा। उसने मध्यस्थ द्वारा यह भी कहलवा दिया कि लड़का पैदा हुआ तो वह विवाह भी कर लेगा। पर श्रीमती कैटरीना ने धार्मिक सस्कारों या दुनियादारी के कारण इस प्रस्ताव को रोषपूर्वक ठुकरा दिया। उसका मृत पति यद्यपि केवल एक छोटे-से जहाज का स्वामी था, पर वह इज्ज़तदार व्यक्ति था और उसकी अन्य दोनों लड़कियों का विवाह धनवानों से न होने पर भी सम्मानपूर्वक तो हुआ ही था। उसने कह दिया किसी सौदागर की रखेल बनाने के बजाय अपनी प्यारी बेटी को संन्यासिन बनाकर मठ में रखना अधिक पसन्द करूंगी। बार्थोलोमियो ने इमोला में जो विवाह योग्य लड़कियां देखी थीं उन सबसे औरेलिया अधिक आकर्षिक थी तथा लगता था कि वह अवश्य पुत्र को जन्म दे सकेगी जिसकी उसको बड़ी उत्कट लालसा थी। वह व्यापारी है और भलीभांति जानता है कि जो चीज ज़रूर लेनी है वह अगर अपने मनमाने दाम पर नहीं मिल सकती तो मुंह मांगा दाम देकर भी ले लेनी चाहिए। इसलिए उसने आदर के साथ विवाह का प्रस्ताव किया जो स्वीकृत हो गया। बार्थोलोमियो केवल व्यापारी ही नहीं है, वह चतुर भी है। औरेलिया उससे बीस वर्ष छोटी है इसलिए उसने यह उचित समझा कि कोई उस पर नजर रक्खे। इसीलिए उसने श्रीमती कैटरीना को भी अपनी बेटी के साथ रहने के लिए बुलवा लिया।

सैराफीना ने व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए कहा "वह मूर्ख बूढ़ा उसका बड़ा विश्वास करता है। परन्तु उसकी ओर देखते ही पता चल जाता है कि वह पतिव्रता स्त्री नहीं है। जब उसका पति जहाज लेकर चला जाता था तो वह जाने क्या-क्या किया करती थी।"

मैक्यावैली ने कहा, "ज़रूर वह कैटरीना से कुढ़ती है। पर क्यों ? शायद वह स्वयं बार्थोलोमियों से विवाह करना चाहती होगी, और उसकी यह भी इच्छा रही हो कि वह उसके बच्चों को गोद ले ले। या यह भी मुमकिन है कि बस द्वेष के कारण ही कुढ़ती हो। कारण जो भी हो,

मालूम अवश्य होना चाहिए।"

यह विवाह वैसे बड़ा सफल था। बार्थोलोमियो अपनी युवा पत्नी से प्रसन्न था। उसने उसे कीमती कपड़े और गहने दे रक्खे थे। वह भी कर्त्तव्यपरायण, आदर करने वाली और आज्ञाकारिणी थी, बल्कि यों कहिए कि पत्नी के सभी गुण उसमें मौजूद थे। किन्तु विवाह को हुए तीन वर्ष हो गए और उसके कोई बच्चा नहीं हुआ और न बच्चा होने के कोई लक्षण ही दिखाई देते थे। बार्थोलोमियो को अपने जीवन में यह सबसे बड़ा दुःख था और अब जबकि उसे पदवी भी मिल गई थी जो उसके बाद उसकी संतान को भी मिलती, तो संतान के लिए उसकी इच्छा और भी बढ़ गई थी।

"क्या श्रीमती सैराफीना ने कोई ऐसा इशारा भी किया था कि सुन्दरी औरेलिया का चरित्र अच्छा नहीं है ?" मैक्यावैली ने मुस्कराकर पूछा।

"नहीं, वह कभी बाहर नही निकलती। बस केवल गिर्जा जाती है और वह भी अपनी मां या दासी के साथ। अपने पति के साथ विश्वासघात करना सबसे बड़ा पाप मानती है।"

मैक्यावैली कुछ सोचकर कहने लगा, "महिलाओं से मेरे बारे में बातचीत करते समय क्या तुमने यह भी कहा था कि मेरी पत्नी के बच्चा होने वाला है ?"

लड़के ने शर्माकर उत्तर दिया, "मैंने ऐसा करने में कोई हानि नहीं समझी थी।"

"ठीक है। मुझे कोई शिकायत नहीं है कि उन्हें यह बात भी पता चल गयी है।"

मैक्यावैली की मुस्कान भेदभरी थी पर पीयरो इस भेद को नहीं समझ सका। ऐसा कहा जाता था कि मैक्यावैली ने मेरियेटा से प्रेम के कारण विवाह नहीं किया है। वह उसका आदर करता है, उसके गुणों की प्रशंसा करता है और अपने प्रति उसके एकान्त प्रेम का अनुमोदन

करता है । वह मितव्ययी और चतुर ग्रहिणी है जो उस जैसे साधारण आय वाले व्यक्ति के लिए महत्त्व की बात है । वह एक पैसा भी बेकार खर्च नहीं करती । वह उसके बच्चे की मां बनेगी और अच्छी मां । इन्हीं कारणों से वह उसका आदर करता था और प्रेम भी करता था । पर इससे यह विचार उसके मन में कभी नहीं आया था कि वह एक पत्नीव्रत धारण किए रहे, औरेलिया की सुन्दरता को देखकर वह स्तब्ध रह गया था । यही नहीं, औरेलिया के समान किसी स्त्री ने उसकी वासनाओं को इतनी प्रबलता से कभी नहीं उत्तेजित किया था । अदम्य लालसा से उसका जोड़-जोड़ दर्द करने लगा । उसने मन ही मन कहा, "प्राणों की बाजी लगाकर भी मैं इस स्त्री को प्राप्त करूंगा ।" वह स्त्री-चरित्र के विषय में बहुत कुछ जानता था और शायद ही कभी अपनी काम-वासना को तृप्त करने में असफल रहा हो । वह अपने को सुन्दर नहीं समझता था । वह अनेकों ऐसे लोगों को जानता था जो उससे कहीं सुन्दर थे तथा जो धन, मान आदि में भी उससे बढ़े-चढ़े थे । पर उसे अपनी आकर्षण शक्ति में पूरा विश्वास था । वह स्त्रियों का मनोविनोद कर सकता था, उनकी झूठी प्रशंसा करना जानता था । उसका व्यवहार ऐसा था कि वे शीघ्र ही उसके आगे खुल जाएं । सबसे बड़ी बात यह थी वह उनको इस बात की जानकारी करा देता था कि वह उन्हें पाना चाहता है जिससे वे उत्तेजित हो जाएं । उसने एक बार विम्राजियो से कहा था कि यदि स्त्री की रग-रग में यह बात समा जाय कि तुम उसे चाहते हो तो वह उसी अवस्था में तुम्हारी उपेक्षा कर सकती है जब कि वह किसी अन्य पुरुष से बहुत ही गहरा और तीव्र प्रेम करती हो ।

यह सोचना तो असम्भव ही था कि औरेलिया अपने मोटे अधेड़ पति से प्रेम करती है, जिससे उसका विवाह उसकी माँ ने केवल स्वार्थ-वश किया था । किन्तु बार्थोलोमियो अवश्य समझता होगा कि नगर में ऐसे युवक बहुत से हैं जिनका राजदरबार से सम्बन्ध है तथा जो बड़े चरित्रवान नहीं हैं और जिन्होंने यह भी देखा होगा कि औरेलिया वड़ी

सुन्दर है, इसलिए वह उनसे सावधान हो गया होगा। उसका नौकर सभी को संदेह की दृष्टि से देखता था। उसकी भौहें घनी, नाक मोटी, मुख निर्दय तथा चेहरा विषादपूर्ण था। शायद उसको युवती गृहस्वामिनी पर गुप्त दृष्टि रखने के लिए ही रक्खा गया हो और फिर उसकी माँ भी वहाँ थी। सेराफीना ने बताया था कि जवानी में वह भी उच्छृंखल थी। जो कुछ उसने कहा संभव है ठीक हो। उसके नेत्र संघर्ष में पड़ी स्त्री के समान बेधड़क तथा चंचल थे। सभव है कि वह इस बात का बुरा न माने कि उसकी लड़की किसी और से भी प्रेम करती है पर फिर भी राह कटीली थी। मैक्यावैली इस निश्चय पर पहुँचा था कि बार्थोलोमियो घोर अहंकारी व्यक्ति है और वह यह भी भली भाँति जानता था कि ऐसे आदमी को यदि यह मालूम हो जाय कि उसको चकमा दिया गया है तो उसके समान कोई प्रतिहिंसक नहीं हो सकता। इसीलिए मैक्यावैली का काम सरल न था किन्तु इससे वह विचलित नहीं हुआ कि उसको अपने ऊपर पूर्ण आत्मविश्वास था और मार्ग की कठिनता कार्य को अधिक रोचक बना रही थी। यह तो साफ़ था कि उसको अपना विश्वास भली प्रकार बार्थोलोमियो के हृदय में जमा देना है जिससे कि वह उस ओर से सतर्क न रहे। श्रीमती कैटरीना के साथ भी सम्बन्ध बना लेना लाभप्रद ही था। यह ठीक ही रहा कि पीयरो द्वारा उसने सैराफीना से प्रश्न करवाए। इससे उसको परिस्थिति का कुछ-कुछ ज्ञान हो गया था, पर वह इससे भी अधिक जानकारी चाहता था। वह जानता था कि उसकी तीक्ष्ण बुद्धि से कोई न कोई उपाय अवश्य निकल आएगा। साथ ही इस समय दिमाग़ खपाना व्यर्थ है। प्रेरणा की प्रतीक्षा करनी होगी।

उसने पीयरो से कहा, "चलो, खाना खा आयें।"

वे पैदल ही 'स्वर्णकेसरी' पहुँचे और भोजन करके अपने निवासस्थान को लौट आए। सैराफीना ने अपने बच्चों को सुला दिया था और स्वयं रसोईघर में मोज़े रफ़ू कर रही थी। मैक्यावैली ने पीयरो को सैराफीना के लड़के के कमरे में भेज दिया, जिसमें उसके रहने का प्रबन्ध किया

गया था और फिर वह स्वयं शालीनतापूर्वक आग तापने की आज्ञा के लिए निवेदन कर वहाँ बैठ गया। उसके मन में विचार उठा कि श्रीमती कैटरीना अवश्य उसके विषय में सैराफीना से पूछेंगी। वह चाहता था कि वह उसकी प्रशंसा करे। मैक्यावैली में इच्छा करते ही बड़ा आकर्षक बनने की क्षमता थी। इस समय उसने ऐसा ही किया। वह उसे फ्रांस के दरबार में दूतकार्य के बारे में बातें बताने लगा। कुछ तो इसलिए कि वह जानता था कि यह बातें उसको भली लगेंगी, पर मुख्यतया अपना प्रभाव जमाने के लिए उसने ये बातें कहीं। उसने बादशाह तथा धर्माध्यक्ष के बारे में इस प्रकार बातें कीं मानो उनसे उसका घनिष्ठ सम्बंध हो। इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठित महिलाओं के प्रेम तथा उनके 'दुराचरण की बड़ी-बड़ी मनोरंजक कहानियाँ सुनाईं। उसके बाद वह विषय बदल कर अपनी पत्नी के बारे में बातें करने लगा कि उसको गर्भवती अवस्था में छोड़कर आना कितना कठिन था और वह घर लौटने के लिए कितना उत्सुक था। मैक्यावैली ने सैराफीना के हृदय में यह विश्वास जमा दिया कि वह नेक पति तथा सच्चा और ईमानदार आदमी है। सैराफीना इतनी बुद्धिमती न थी कि उस पर संदेह कर सकती। उसने उसकी बातें बड़े चाव से सुनीं और अपने पति के रोग तथा उसकी मृत्यु के बारे में तथा अपने अच्छे दिनों के बारे में मैक्यावैली को बताने लगी। उसने यह भी बतलाया कि दोनों बच्चों का कितना उत्तरदायित्व उसके ऊपर था। सचमुच उसने मैक्यावैली को प्रसन्नचित्त, यशस्वी तथा दयालु व्यक्ति समझा। मैक्यावैली ने यह भी कहा कि उसकी पाचनशक्ति कमज़ोर है और 'स्वर्ण केसरी' का भोजन उसके लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि वह अपनी पत्नी के हाथ के सादे भोजन का अभ्यस्त है। इस बात पर सैराफीना के लिए यह कहना स्वाभाविक ही था कि यदि वह उचित समझे तो वह स्वयं उसके तथा पीयरों के लिए भोजन तैयार कर दिया करेगी। मैक्यावैली को यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया, क्योंकि इससे पैसे की भी बचत थी और समय की भी सुविधा थी। वह वहाँ से उठ बैठा। वांछित

प्रभाव सेराफीना के हृदय पर छोड़ कर, अपने कमरे में सोने के लिए चला आया और मोमबत्ती के उजाले में उस समय तक पुस्तक पढ़ता रहा जब तक उसे नींद ने आकर न धर दबाया।

[१०]

मैक्यावैली अगले दिन देर तक बिस्तर पर पड़ा रहा। उसने 'इनफरनो' का एक सर्ग पढ़ा। यद्यपि वह कविता उसे कण्ठस्थ थी तो भी पढ़कर सदा की भांति उसका हृदय विभोर हो गया। जब कभी वह इस पुस्तक को पढ़ता था तो उसके भाषा सौष्ठव से प्रभावित हुए बिना न रह पाता था। किन्तु उसके मस्तिष्क में उस समय भी कसीदा काढ़ती हुई औरेलिया का चित्र घूम रहा था। प्रायः वह पुस्तक को उठाकर रख देता और अश्लील विचारों में डूब जाता। वह यही सोच रहा था कि किस प्रकार उससे दोबारा मिला जाए। संभव है दूसरी बार वह उतनी मोहक न लगे। एक प्रकार से यह बात भी वरदान रूप ही होगी, क्योंकि प्रेम के झमेले में पड़ने के अतिरिक्त उसके पास और बहुत काम था। पर दूसरी ओर इसके गम्भीर राजनैतिक कार्यों के बीच मन-बहलाव का साधन निकल आने की संभावना थी। उसकी विचारधारा को उसके नौकर एन्टोनियो ने तोड़ा। उसने बताया कि नीचे बार्थोलोमियो उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उत्तर में उसने कहा "अभी आता हूं" और वह तुरन्त कपड़े पहन कर नीचे चला गया।

"काउन्ट, क्षमा कीजिए! आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी परन्तु मैं अपने शासकों को पत्र लिख रहा था।" मैक्यावैली ने सहज ही में झूठ बोला। बार्थोलोमियो ने कुछ ऐसा भाव दिखाया मानो काउन्ट के पद का कोई महत्व ही न हो परन्तु वह इस सम्मान प्रदर्शन से मन ही मन प्रसन्न ही

हुआ। वह एक समाचार लाया था। अर्बीनो का सबसे भीषण दुर्ग सान-लियो था। यह एक अलग सीधी चट्टान की चोटी पर बना हुआ था और दुर्भेद्य माना जाता था। जिस समय इसकी मरम्मत हो रही थी, उस समय सुअवसर जानकर शस्त्रों से सुसज्जित किसानों ने फाटक में प्रवेश करके ड्यूक की सेना को काट डाला। यह समाचार शीघ्र ही फैल गया जिससे और गांव भी विद्रोही हो गए। यह समाचार सुनकर इल-वैलेन्टीनो के क्रोध का पारा चढ़ गया था। यह तो स्पष्ट था कि विद्रोहियों को मैजियोन के षड्यन्त्रकारियों ने उकसाया था, जिससे प्रगट था कि उन्होंने आक्रमण करने का निश्चय कर लिया है। महल में हलचल मची हुई थी। मैक्यावैली ने बात काटकर पूछा, "इस समय भेजने को ड्यूक के पास कौनसी सेना है ?"

"चलो और स्वयं चलकर देख लो।"

"मुझे संदेह है कि ड्यूक मुझे इस बात की अनुमति देंगे।"

"मेरे साथ चलो। मैं छावनी जा रहा हूं। मैं तुमको वहाँ ले चलूंगा।"

मैक्यावैली के मन में तुरन्त यह विचार आया कि बार्थोलोमियो अपने आप इस घटना के समाचार देने नहीं आया है जो किसी प्रकार भी अधिक समय तक गुप्त नहीं रखे जा सकते थे। किन्तु शायद ड्यूक ने स्वयं उसको बुलाने का निमन्त्रण भेजा है। यह सोचकर मैक्यावैली उसी भांति चौकन्ना हो गया जैसे एक शिकारी किसी झाड़ी में से कुछ सरसराहट का शब्द सुनकर हो जाता है। पर वह प्रसन्नता से मुस्कराया।

"मित्र, तब तो तुम बड़े शक्तिशाली हो जो अपनी इच्छानुसार छावनी में आ जा सकते हो।"

बार्थोलोमियो ने कुछ विनम्रता से उत्तर दिया, "नहीं यह बात नहीं है। ड्यूक ने मुझे सेना को रसद पहुँचाने के लिए मुखिया चुना है।"

के बाद उसने पीयरो को बार्थोलोमियो के पास यह संदेशा लेकर भेजा कि वह रात्रि में ड्यूक से मिलने जा रहा है। वहाँ से निबटने के बाद यदि बार्थोलोमियो 'स्वर्ग केसरी' में मिल सके तो दोनों मिलकर कुछ साथ पीने का आनन्द उठाये। वह सोचता था कि संभव है कि पति द्वारा ही औरेलिया से बातचीत का अवसर मिले। इसीलिए वह बार्थोलोमियो से मित्रता जोड़ने का प्रयास कर रहा था।

बार्थोलोमियो उन मनुष्यों में से था जो दूसरों पर सहज ही में विश्वास कर लेते हैं। वह हँसना-हँसाना और अच्छी संगति चाहता था और जब प्रजातंत्र का दूत उसको अपना विश्वासपात्र बना रहा था तो उसको अवश्य मन में गर्व हुआ होगा।

मैक्यावैली अपने कमरे में गया और थोड़ी देर सोता रहा। फिर सोचा कि थोड़ी देर सैराफीना से भी बातें करले। उसको यकीन था कि वह पीयरो की अपेक्षा अधिक भेद निकाल लेगा। उसने उसके सामने बार्थोलोमियो की प्रशंसा की थी परन्तु हो सकता है उसने ऐसा सभ्यता प्रदर्शन के लिए किया हो। यदि उसको मानव स्वभाव का कुछ भी अनुभव था तो वह जानता था कि मिलने वाली कृपाओं के लिए उतनी कृतज्ञ न होगी जितनी कि वह अन्य न मिलने वाली कृपाओं के लिए असंतुष्ट होगी। मैक्यावैली को अपनी चतुराई पर भरोसा था कि वह उसके पेट का असली भाव उसके मुंह से अवश्य निकलवा लेगा।

जब वह जागा तो सीढ़ियों से नीचे इस प्रकार उतरा मानो बैठक में जा रहा हो और जाते-जाते फ्लौरेन्स के गीत की एक कड़ी कुछ ऊँचे स्वर से गाता गया। जब वह रसोईघर के सामने से निकला तो बोला, "श्रीमती सैराफीना क्या आप अन्दर हैं? मैंने तो समझा था आप बाहर गई हुई हैं।"

उसने कहा, "आपकी आवाज़ तो बडी अच्छी है।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद! क्या मैं एक मिनट को अन्दर आजाऊं?"

"मेरे सबसे बड़े लड़के का स्वर भी बड़ा मधुर है। मि० बार्थो-

लोमियो प्राय: उसे बुला लेते थे और दोनों मिलकर गाया करते। मि० बार्थोलोमियो महीन आवाज़ में गाते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि इतने डील-डौल के और ताकतवर आदमी की आवाज़ इतनी पतली है।"

मैक्यावैली ने अपने कान खड़े किए।

"मि० बार्थोलोमियो का भाई विम्राजियो मेरा मित्र है। वह और मैं साथ-साथ गाते हैं। खेद है कि मैं अपना ल्यूट साथ नही लाया। आपको कुछ गीत सुनाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती।"

"किन्तु मेरा लड़का अपना ल्यूट यहीं छोड़ गया है। वह उसे लेजाना चाहता था पर मैंने मना कर दिया क्योंकि यह ल्यूट मेरे पति को किसी सज्जन से एक सेवा के इनाम के रूप में मिली थी। वह सचमुच बहुत ही कीमती बाजा है।"

"क्या आप मुझे दिखायेंगी ?"

"तीन वर्ष से किसी ने उससे हाथ भी नही लगाया है। मुझे संदेह है कि कही उसका कोई तार न टूट गया हो।"

पर उसने तुरन्त ही ल्यूट लाकर मैक्यावैली के हाथ में रख दिया। वास्तव में वह बड़ा ही सुन्दर था। वह देवदार की लकड़ी का बना हुआ था और अन्दर की ओर उसमें हाथीदांत का काम हो रहा था। उसने तार मिलाये और धीमी आवाज में गाने लगा। गाने का उसे शौकभर ही न था बल्कि संगीत कला का उसे पूरा-पूरा ज्ञान था। उसने बहुत से गीत स्वयं रचे थे और अनेकों गीतों की धुनें लिखी थीं। जिस समय उसका गीत समाप्त हुआ तो उसने देखा कि सैराफीना की आँखें छलछला आयी हैं। उसने ल्यूट भूमि पर रख दिया और भावपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखने लगा।

"मैं आपको रुलाना नहीं चाहता था।"

"आपके गाने से मुझे अपने लड़के की याद आ गई है जो दूर देश में रहता है। उन परदेसियों के बीच न जाने कैसी तकलीफ़ में जिन्दगी बिताता होगा।"

"इससे उसका अनुभव बढ़ेगा और वह मि० बार्थोलोमियो के संरक्षण में उन्नति करेगा।"

उसने उसकी ओर कष्टपूर्ण दृष्टि डाली।

"दीन-दुखियों को धनवानों के फेंके हुए टुकड़ों पर संतोष करना पड़ता है।"

इस वाक्य को कहने के रूखे स्वर ने सिद्ध कर दिया कि मैक्यावैली ने उसके विषय में ठीक ही सोचा था।

उसने उत्तर दिया, "पर हमारे धार्मिक ग्रन्थ बतलाते हैं कि स्वर्ग में जाकर दोनों की अवस्था उलट जाएगी।"

वह व्यंग्यपूर्वक हँसी, "मेरे बच्चे को लेने के लिए वह अपनी आधी सम्पत्ति देने को तैयार है।"

"बड़े अचम्भे की बात है कि उसकी तीनों स्त्रियों में से एक के भी बच्चा नहीं हुआ।"

"पुरुष सदा स्त्री का ही दोष समझते हैं। श्रीमती कैटरीना को भी बड़ी चिन्ता लगी हुई है। वह जानती है कि यदि औरेलिया के शीघ्र ही बच्चा नहीं हुआ तो दोनों की मिट्टी ख़राब होगी। तब उनको न बढ़िया कपड़े मिलेंगे और न कीमती गहने। मैं बार्थोलोमियो को बचपन से जानती हूँ। बिना मतलब तो वह किसी को एक फूटी कौड़ी भी नहीं देता। श्रीमती कैटरीना की चिन्ता ठीक ही है। उसने फ्रा टिमोटियो को जाप करने के लिए धन दिया है कि औरेलिया गर्भवती हो जाए।"

मैक्यावैली ने पूछा, "यह फ्रा टिमोटियो कौन है?"

"उनका पुरोहित। बार्थोलोमियो ने औरेलिया के लड़का उत्पन्न होने के समय उसे मेरी तथा ईसा की मूर्ति देने का वचन दिया है। फ्रा टिमोटियो उनसे बहुत धन बटोर रहा है। वह उसको खूब ही लूटता है यद्यपि वह भी जानता है और मैं भी जानती हूँ कि बार्थोलोमियो नपुंसक है।"

मैक्यावैली को आशा से अधिक जानकारी मिल रही थी। उसे एक बहुत सुन्दर तथा सरल उपाय मन में सूझा और उसने सोचा कि वार्त्तालाप को इस समय खत्म कर देना ही उचित है। उसने सहज भाव से ल्यूट उठा लिया और उसके तारों को छेड़ने लगा।

"आप ठीक कहती थीं। यह बहुत ही सुन्दर यंत्र है। इसको बजाने में बड़ा आनन्द आता है। मुझे आश्चर्य नहीं कि आपने इसे समुद्र पार नहीं ले जाने दिया।"

वह बोली, "आप बड़े नेक हैं। यदि आपको इसे बजाना अच्छा लगता है तो जब तक आप यहाँ हैं, आप सहर्ष इसे अपने पास रखिये। मैं जानती हूँ आप इसे सावधानी से रक्खेंगे।"

मैक्यावैली को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कैसे वह इतनी कीमती चीज़ देने को तैयार हो गई। इसके लिए अब और अधिक प्रयत्न करने की सब परेशानी बच गई। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि औरतों को वश में करने में वह चतुर था। यह बुढ़िया ऐसी दुबली-पतली तथा पिचके गालों वाली न होती तो वह उससे भी थोड़ी-बहुत छेड़खानी किए बिना न रहता। उसने बुढ़िया को अनेकों धन्यवाद दिए।

"मेरी पत्नी को जो गीत अच्छे लगते हैं उनको गाकर मुझे कुछ चैन मिलेगा। हमारा विवाह हाल ही में हुआ है और वह गर्भवती है। उसको छोड़ना कितना कठिन था। किन्तु मैं विवश था। मैं तो जनतंत्र का नौकर हूँ। मैं कर्त्तव्य पालन को मन की इच्छा से श्रेष्ठ समझता हूँ।"

थोड़ी देर बाद जब वह वहाँ से चला तो वह सैराफीना को विश्वास दिला चुका था कि वह केवल उच्च कर्मचारी ही नहीं वरन नेक पति, सच्चा मित्र, और ईमानदार तथा विश्वास-पात्र मनुष्य है।

[११]

नियत समय पर ड्यूक का एक मंत्री कई मशालचियों के साथ मैक्यावैली को बुलाने आया। मैक्यावैली अपने एक नौकर को पीछे-पीछे आने के लिए कहकर महल की ओर चल पड़ा। जितने आदर और प्रेम के साथ आज उसमें मैक्यावैली का स्वागत किया, था उसे देखते हुए यह बड़ा आश्चर्यजनक था। वह इस समय बड़ा प्रसन्न जान पड़ता था। उसने सानलियो के दुर्ग के पतन का समाचार लापरवाही से कह सुनाया और ऐसा लगता था कि अर्बीनो की परिस्थिति को वश में करने में उसे तनिक भी संदेह नहीं है। फिर वह कुछ ऐसे आत्मीय तथा गोपनीय भाव से बात करने लगा कि यदि मैक्यावैली पर झूठी चापलूसी का कोई भी प्रभाव पड़ सकता होता तो वह अवश्य ही प्रसन्न होता। उसने मैक्यावैली को बतलाया कि उसने उसे ऐसे समाचार सुनाने के लिए बुलाया था जिसे जानने को प्रजातंत्र के शासक उत्सुक होंगे। उसने एक पत्र निकाला जो फ्रांस में पोप के प्रतिनिधि आर्ल्स के बड़े पादरी ने लिखा था। उसमें लिखा था कि बादशाह तथा उसका मंत्री धर्माध्यक्ष उसको प्रसन्न रखना चाहते हैं और यह जानकर कि उसे बोलोगना पर आक्रमण करने के लिए सेना की आवश्यकता है, उन्होंने मोश्योडिशौमों को आज्ञा भेज दी है कि वह तीन सौ नेज़ाधारी सैनिक मोश्यो डि लैन्कर्स के आधिपत्य में भेज दे और स्वयं ड्यूक की आज्ञानुसार तीन सौ अन्य नेज़ाधारियों के साथ पार्मा को कूच करे। ड्यूक ने मैक्यावैली को वह पत्र दिखला भी दिया जिससे उसकी बात की सचाई प्रमाणित हो जाए।

ड्यूक के आनन्दित होने का कारण प्रत्यक्ष था। अर्बीनो पर अधिकार कर लेने के बाद यदि वह फ्लोरैन्स की ओर नहीं बढ़ा था तो उसका यही कारण था कि फ्रांस ने फ्लोरैन्स की रक्षा के लिए सेना भेज दी थी और इससे उसने यह परिणाम निकाला था कि फ्रांस की सहायता की आशा व्यर्थ है। इसी भरोसे पर सेनापतियों ने भी विद्रोह

किया था। किन्तु यदि किन्हीं कारणों से, जिनके बारे में अनुमान ही लगाया जा सकता था, फ्रास उसकी सहायता को तत्पर है तो इसकी स्थिति बहुत कुछ सुधर जाती थी।

उसने कहा, "मेरी बात सुनिए। मैंने बोलोगना पर आक्रमण करने के लिए जो पत्र भेजा था उसके उत्तर में यह पत्र आया है। अब आप देख सकते हैं कि इन बदमाशों से रक्षा करने की मुझमें पर्याप्त शक्ति है। उनकी असलियत प्रगट होने का मेरे लिए इससे अधिक सुविधा जनक कोई अवसर नही। अब मैं भलीभाति जान गया हूँ कि किससे मुझे बचना चाहिए और कौन मेरे मित्र हैं। मैं आपको ये सब बातें इसलिए बतला रहा हूँ कि आप अपने शासकों को लिखे कि मैं इन विद्रोहियों के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा। मेरे अनेकों मित्र है और मैं चाहता हूँ कि आपके शासक भी उनमें से हों। पर यह तभी होगा जब वे शीघ्र ही समझौता कर लें। यदि वे ऐसा नही करेंगे तो सदा के लिए मेरा उनसे सम्वन्ध टूट जाएगा। उस दशा में यदि मैं कठिन से कठिन विपत्ति में पड़ जाऊंगा तब भी उनसे मित्रता न करूंगा।"

यद्यपि उसके ये शब्द धमकी भरे थे, पर उसके कहने का ढंग ऐसा शिष्टतापूर्ण और प्रसन्नता भरा था कि उसमें कटुता नहीं प्रतीत होती थी। मैक्यावैली ने कहा कि जो कुछ ड्यूक ने बताया था उसके समाचार वह तुरन्त ही अपने शासकों को भेज देगा। ड्यूक ने उसको सौजन्यता-पूर्वक विदा किया।

जब मैक्यावैली सराय में पहुँचा तो बार्थोलोमियो प्रतीक्षा कर रहा था। उसने तुरन्त शराब के लिए आदेश दिया। मैक्यावैली ने बार्थोलोमियो से गोपनता की सौगन्ध लेकर, जिससे उसकी बात का महत्त्व बढ़ जाए और यह विचार कर कि आगे-पीछे बार्थोलोमियो सब भेद जान ही जाएगा, ड्यूक ने जो समाचार बताए थे सब उसे बता दिए। अपनी ओर से भी उसने मिर्च-मसाला लगाया। उसने यह भी कहा कि ड्यूक तुमसे बहुत खुश है। जब उस मुटल्ले ने इस विषय में और जानना चाहा तो

मैक्यावैली ने झूंठ-मूंठ बातें गढ़ दीं। बार्थोलोमियो का चेहरा चमक उठा।

'मि० बार्थोलोमियो इमोला के सबसे प्रतिष्ठित आदमी तो आप बन ही गए हैं। अब यदि पोप जीवित रहा और ड्यूक की समृद्धि होती रही तो आप इटली के प्रतिष्ठित जनों में गिने जाने लगेंगे।'

"मैं तो केवल एक सौदागर हूँ। मेरा लक्ष्य इतना ऊंचा नहीं है।"

"कोसीयो डि मैडिसी भी तो एक सौदागर ही था। फिर भी वह फ्लोरैन्स का स्वामी बन बैठा था। उसके पुत्र तेजस्वी लोरेन्ज़ो का स्थान सम्राटों और राजाओं के बराबर है।"

बार्थोलोमियो के चेहरे से स्पष्ट था निशाना ठीक बैठा है।

"क्या यह सच हैं कि आपकी पत्नी के बच्चा होने वाला है?"

"मैं इस विषय में बहुत सुखी हूँ। अगले वर्ष में किसी समय वह प्रसव करेगी।"

बार्थोलोमियो ने आह भरकर कहा, "आप मुझसे अधिक भाग्यशाली हैं। मेरे तीन विवाह हुए और एक से भी कोई संतान नहीं हुई।"

"श्रीमती औरेलिया तो बहुत स्वस्थ और पुष्ट महिला हैं। यह असंभव है कि वह बाँझ हों।"

"और कारण क्या हो सकता है? हमारे विवाह को तीन वर्ष हो गए।"

"यदि उन्हें किसी कुण्ड में स्नान करा लाते तो······"

"मै उसे कुण्ड में स्नान को ले गया था। जब कुछ सफलता न मिली तो अल्वानियो में सेन्टामेरिया डिला मिसेरीकार्डिया के मन्दिर की यात्रा पर भी हम गए। वहां पर मरियम की विचित्र मूर्ति है जो बांझ स्त्रियों को भी गर्भवती बना देती है। पर उसका भी कोई परिणाम नहीं हुआ। आप तो सोच ही सकते है कि मेरे लिए यह कितनी लज्जा की बात है। मेरे शत्रु कहते हैं कि मैं नपुंसक हूँ। पर यह सब बकवास है। बहुत कम लोग मेरे जैसे मर्द होंगे। इमोला के चारों ओर दस मील के घेरे

के हर गाँव में मेरी जारज संतान मौजूद हैं।"

मैक्यावैली जानता था कि यह सब झूठ है।

"क्या आप किसी इतने अभागे आदमी की कल्पना कर सकते हैं कि उसके तीनों विवाह बांझ स्त्रियों से हों ?"

"मित्र, आप निराश न हों। चमत्कार सदा संभावित हैं और आप पर तो परमात्मा की विशेष दया होनी चाहिए।"

"यही बात फ्रा टिमोटियो भी कहते हैं। वह मेरे लिए नित्य प्रार्थना करते हैं।

"कौन फ्रा टिमोटियो ?" मैक्यावैली ने कुछ इस प्रकार पूछा जैसे उसे इस नाम से कोई सरोकार न हो।

"हमारे पुरोहित। वह हमसे भरोसा रखने के लिए कहते हैं।"

मैक्यावैली ने और शराब मंगवाई। वह बड़ी चतुराई से बार्थोलोमियो की चापलूसी करता रहा। उसने ड्यूक के साथ वार्ता को निभाने के बाद में उसकी सलाह मांगी। इससे वह बहुत ही प्रसन्न हो गया। इसके बाद मैक्यावैली ने बड़ी अश्लील कहानियां सुनाई जिनका उसके पास अनन्त भण्डार था और जिन्हें वह प्रभावपूर्ण ढंग से सुनाता था। हसी के मारे बार्थोलोमियो के पेट में बल पड़ गए और जब वे चलने लगे तो उसने सोचा कि मैक्यावैली से बढ़कर कोई मजेदार आदमी नहीं हो सकता। मैक्यावैली ने भी सोचा कि आज की शाम बेकार नहीं गई। वह संयमी व्यक्ति था और साथ ही स्थिर चित्त भी। जिस मदिरा ने बार्थोलोमियो को उन्मत्त कर दिया था उसका मैक्यावैली पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। जब वह अपने कमरे में लौटकर आया तो वह अपने शासकों को एक लम्बा पत्र लिखने लगा जिसमें उसने ड्यूक से भेंट का विस्तृत वर्णन किया और यह भी लिखा कि उसकी सैनिक शक्ति कितनी और क्या है। उसने वह पत्र बिना रुके और बिना काट-छांट के लिखा। तब उसे एक बार पढ़ा कि क्या लिखा है। पत्र संतोषजनक था।

[१२]

इल वैलेन्टीनो का स्वभाव अधिक रात्रि पर्यन्त काम करते रहने का था, अतएव वह सबेरे देर से सोकर उठता था। उसके मंत्री भी, जिनको वह हर समय काम में जुटाए रखता था, इसका लाभ उठाते थे और स्वयं भी देर से उठते थे। इसीलिए मैक्यावैली को भी दोपहर के भोजन से पहले कोई काम न था। प्रजातंत्र को वह पत्र भेज ही चुका था इसलिए उसने भी आराम करने की सोची। उसने लिवी की पुस्तक पढ़ी। उसे पढ़कर जो भाव उठे उन्हे लिखा और तब समय बिताने के लिए ल्यूट बजाने लगा। उसकी आवाज गूँजने वाली तथा मधुर थी। पहली बार ही बजाते समय अनुभव किया था कि वह उसकी हल्की आवाज़ के लिए बहुत उपयुक्त है। उस दिन धूप निकल रही थी और वह खिड़की खोलकर धूप का आनन्द लेने लगा। थोड़ी दूर पर ही कोई लकड़ी जला रहा था और उसकी सुगन्ध सौंधी लग रही थी। सैराफीना और बार्थोलोमियो के मकानों के बीच की गली इतनी सकरी थी कि एक गधा झाबा लेकर उसमें कठिनता से निकल सकता था। मैक्यावैली ने उसके छोटे से चौक में झांक कर देखा जिसमें कुआ तथा अखरोट का वृक्ष था। वह गाने लगा। उस दिन वह अच्छे स्वर से गा रहा था। और स्वर अच्छा लगने से वह बराबर गाता रहा। तभी उसने देखा कि सामने वाले मकान की खिड़की खुली। वह यह तो नहीं देख सका कि उसको किसने खोला है। वह कागज का चौखटा लगाने वाले हाथों को भी न देख सका। पर आनन्द की लहर उसके मन में दौड़ गई क्योंकि उसको विश्वास था कि यह अं रेलिया के सिवाय और कोई न होगा। उसने प्रेम के दो गीत गाये जो उसको सबसे अच्छे लगते थे। वह तीसरा गीत गा ही रहा था कि खिड़की एकदम बंद करदी गई मानो कोई दूसरा व्यक्ति उस कमरे में आगया हो। इससे वह कुछ खिन्न हो गया और उसे संदेह हुआ कि शायद दासी ही गाना सुन रही हो जो अपनी

स्वामिनी पर यह नहीं प्रगट होने देना चाहती कि काम-काज छोड़कर वह एक परदेसी का गाना सुनने के लिए वहां खड़ी है। किन्तु भोजन करते समय उसने बातचीत मे चतुराई से यह जान लिया कि वह खिड़की बार्थोलोमियो और उसकी नवयुवती पत्नी के सोने के कमरे की थी।

दिन के पिछले पहर वह महल पहुँचा पर वहाँ वह न तो ड्यूक से मिल सका और न उसके किसी सचिव से। तो वह वहाँ व्यर्थ ही घूमने वाले लोगों से वार्तालाप करने लगा और उनसे महल के समाचार पूछता रहा। उनको कुछ भी विशेष पता न था पर उनकी बात से भी मैक्यावैली पर यह प्रभाव अवश्य हुआ कि वे लोग भी इतना अवश्य जानते हैं कि कोई घटना घटी है। कुछ भी हो उसको गुप्त रखने का प्रयत्न किया जा रहा था। थोड़ी देर बाद उसे वहां बार्थोलोमियो मिल गया। उसने बताया कि ड्यूक ने उसे मिलने का समय दिया था परन्तु अब कहलाया है कि अवकाश नहीं है।

मैक्यावैली ने बार्थोलोमियो से स्निग्ध मैत्रीपूर्ण ढंग से कहा, "हम दोनों व्यर्थ ही यहाँ समय नष्ट कर रहे हैं। चलो सराय में चलकर कुछ पिया जाय। वहाँ ताश खेलेंगे और अगर आप जानते हों तो शतरंज खेलेंगे।"

"मैं भी शतरंज का प्रेमी हूं।"

'स्वर्ण केसरी' जाते हुए मार्ग में मैक्यावैली ने पूछा कि महल में हर आदमी किस काम में इतना व्यस्त है।

"मुझे कुछ पता नहीं। कोई मिलता ही नहीं जिससे पता लगे।"

बार्थोलोमियो के स्वर की चिड़चिड़ाहट से मैक्यावैली को निश्चय हो गया कि वह सच ही कह रहा है। वह अब तक अपने आपको बड़ा महत्वपूर्ण समझता था। अब उसे यह जानकर कि ड्यूक का उस पर पूरा विश्वास नहीं है, बड़ी ग्लानि हुई।

मैक्यावैली ने कहा, "मैंने सुना है कि ड्यूक जिस बात को गुप्त रखना चाहता है उसे अपने सबसे अन्तरंग से भी नहीं कहता।"

अगर आपको मेरे गरीबखाने पर आने में आपत्ति न हो तो जब समय मिले ज़रूर आइए। हम लोग थोड़ी देर तक श्रीमती सैराफीना को गाना ही सुनाएंगे।"

मछली इतनी चतुराई से डाले गये दाने को निगलेगी या नहीं ? पर इसका कोई संकेत नहीं मिला।

"ज़रूर ज़रूर। हमारी जवानी फिर लौटकर आएगी। जब मैं जवान था और स्मिरना में था तो इटली निवासियों के साथ दिनभर गाता रहता था।"

मैक्यावेली ने मन ही मन कहा, "धीरज रक्खो, धीरज।"

जब वह घर पहुँचा तो एक मैला ताश निकाल कर अकेला खेलने लगा। खेलते हुए वह उन बातों को मन ही मन दुहरा रहा था तो उससे बार्थोलोमियों ने या सैराफीना ने कही थीं। उसके मन में एक बढ़िया युक्ति थी। परन्तु उसके सफल होने में बड़ी चतुराई की आवश्यकता थी। वह जितना अधिक औरेलिया के विषय में सोचता था उतनी ही उसके मन की ज्वाला भड़कती जा रही थी। उसके मन में इस विचार से बड़ी गुदगुदी हो रही थी कि वह बार्थोलोमियो को अवश्य संतान प्रदान कर सकता है और वह भी लड़का जिसकी उसको बड़ी अभिलाषा है।

उसने सोचा, "ऐसा बहुत कम ही होता है कि दूसरे का उपकार हो और अपने को भी आनन्द मिले।"

यह स्पष्ट था कि उसे श्रीमती कैटरीना को खुश करना चाहिए, क्योंकि उसकी सहायता के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता था। पर प्रश्न यह था कि उससे इतनी घनिष्ठता कैसे हो कि वह उसकी सहायक बन सके। देखने में वह बहुत ही विषयासक्त स्त्री लगती थी। वह सोचने लगा कि शायद पीयरो उसके साथ सोने को तैयार हो जाय। पीयरो नवयुवक था। इसलिए इस बात में वह उसकी अवश्य कृतज्ञ होगी। पर फिर उसने यह विचार छोड़ दिया। पीयरो के नौकरानी से प्रेम करने से ही उसके कार्य में अधिक आसानी होगी। पर लोग तो

"मुझे आपसे बहुत ज़रूरी बात कहनी है।"

"बोलो।"

"यदि मैं प्रजातन्त्र के लाभ की बातें बतलाऊं तो क्या बदले में उपकार की आशा कर सकता हूँ?"

"निःसंदेह।"

"आज एक दूत घोड़े पर चढ़कर महल में आया है। विद्रोहियों ने समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। उन्होंने शपथ ली है कि वे बोलोगना की रक्षा के लिए वैन्टीबोगलियो के साथ रहेंगे, निर्वासित शासकों को फिर उनका राज्य दिलवाएंगे, और ड्यूक से अलग पत्र व्यवहार न करेंगे। उन्होंने सात सौ सशस्त्र सैनिक, सौ घुड़सवार और नौ सौ पैदल सिपाहियों को इकट्ठा करने का निश्चय किया है। वैन्टीवोगलियो इमोला पर आक्रमण करेगा तथा विटैलोज्जो और ओरसिनी अर्बीनो की ओर बढ़ेंगे।"

मैक्यावैली ने कहा, "समाचार वास्तव में महत्त्वपूर्ण है।"

वह आनन्द से उल्लसित हो गया। इन उथल-पुथल की घटनाओं ने उसको उत्साहित कर दिया और उसने सोचा कि शीघ्र ही उसको ड्यूक के संकट का सामना करने का नाटक देखने को मिलेगा।

"एक और समाचार है। विटैलोज्जो ने ड्यूक को कहला भेजा है कि यदि उसको स्टोलो वाली जागीर नहीं छीनी जाने का विश्वास दिला दिया जाय तो वह उससे मिल जाएगा।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"बस इतना ही काफी है कि मैं जानता हूं।"

मैक्यावैली परेशान हो गया। वह जानता था कि विटैलौज्जा चिड़-चिड़ा, बहमी तथा सनकी आदमी है। कभी वह शीघ्र ही क्रुद्ध हो जाता है और कभी बिल्कुल निराश। उसको उपदंश रोग था जिससे उसकी बुद्धि मारी गई थी। कौन जानता था कि वह दुष्ट षड्यंत्र नहीं रच रहा है? मैक्यावैली ने आलेखक को विदा किया।

"मि० निकोलो, मैं आपके विवेक पर भरोसा कर सकता हूँ ? यदि यह भेद प्रगट हो गया कि मैंने आपको बातें बतलाई हैं तो मेरा जीवन ही समाप्त समझिये।"

"मैं समझता हूँ। पर मैं उन लोगों में से नहीं जो सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को मारने का इरादा करें।"

[१३]

उस समय से हलचलें बढ़ती चली गईं। अर्बीनो में विद्रोह का समाचार सुनते ही ड्यूक ने अपने दो स्पेन निवासी सेनानायक डॉन यूगोडा मोन्काडा तथा डॉन मिशेल कौरैला को विद्रोह दबाने के लिए भेज दिया। उन्होंने क्रमशः परगोला और फ़ौसमब्रोन को अपना केन्द्र बनाया और आस-पास के प्रदेशों के नगरों को लूट लिया तथा वहां के अधिकांश निवासियों का वध कर डाला। फ़ौसमब्रोन में स्त्रियां अपने बच्चों सहित नदियों में कूद गईं जिससे वह सैनिकों के भीषण अत्याचार से बच सकें। ड्यूक ने मैक्यावैली को बुलाकर इस लूट-मार का हाल बड़े विनोदपूर्वक सुनाया।

उसने कटु मुस्कान से कहा, "वातावरण विद्रोहियों के अनुकूल नहीं जान पड़ता।"

पेरुगिया स्थित पोप के दूत द्वारा उसे अभी-अभी समाचार मिला था कि उसके वहां आगमन पर औरसिनी उसके पास पोप के प्रति उनकी भक्ति जताने गया था और संघ के अपराधों की क्षमा मांगी थी। मैक्यावैली को विटैलोज्जो के बारे में फैरीनेली की बात याद आयी।

उसने कहा, "पर समझ में नहीं आता कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।"

"ज़रा सोचिए। इसका यही अर्थ हो सकता है कि वे अभी पूरी तरह से तैयार नहीं हैं और समझौते का बहाना करके समय टालने की प्रतीक्षा में हैं।"

कुछ ही दिनों बाद विटैलौज्जो ने अर्बीनों पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया। ड्यूक ने मैक्यावैली को बुलवा भेजा। मैक्यावैली को आशा थी कि यह बुरा समाचार सुनकर ड्यूक बड़ा व्याकुल होगा, किन्तु उसने उस विषय की ओर संकेत भी नहीं किया।

"मैं सदा की भांति तुमसे उन बातों के विषय में मंत्रणा करना चाहता हूं जिनका सम्बन्ध तुम्हारे शासन और हमारे दोनों के हितों में है। सीयाना मैंने एक आदमी यो भेजा था। उसका यह पत्र है।"

पत्र उसने पढ़कर सुनाया। यह औरसिनी ने भेजा था जो उस उच्च तथा शक्तिशाली घराने का जारज पुत्र और ड्यूक का दास था। उसने विद्रोहियों के नेताओं से बातचीत की थी और उन्हाने ड्यूक से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने की इच्छा प्रगट की थी। और यदि वह बोलोगना पर आक्रमण करने का विचार छोड़कर तथा उनसे मिलकर फ्लोरेंस के प्रदेश पर आक्रमण करने को सहमत हो तो वे फिर से उसकी नौकरी को भी प्रस्तुत थे।

पत्र समाप्त करके वह कहने लगा, "आप सोच सकते हैं कि मैं आप पर कितना विश्वास करता हूं तथा मुझे आपके शासकों की भलमन-साहत पर कितना भरोसा है। इसके बदले में उनको भी मेरे ऊपर पहले की अपेक्षा अधिक भरोसा रखना चाहिए और मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं विश्वासघात नहीं करूंगा।"

मैक्यावैली यह निश्चय नहीं कर सका कि इसमें से कितना सच है। औरसिनी घराना फ्लोरैन्स का कट्टर शत्रु था और इस अवसर की ताक में था कि किसी तरह वह निर्वासित मेडिसी को राजगद्दी पर पुनः स्थापित कर सके। उनकी ओर से ऐसा प्रस्ताव असम्भव तो नहीं था। मैक्यावैली ने अनुमान लगाया कि ड्यूक ने फ्रांस के डर से उस प्रस्ताव को स्वीकार

नहीं किया है। और इसलिए यह भेद प्रगट कर रहा है कि प्रजातंत्र को आभारी बना उसे पुनः भाड़े की सेना का सेनानायक बनाना उनसे स्वीकार करवाले। यह बात वह कुछ समय पहले तलवार के ज़ोर पर प्रजातंत्र से मनवा चुका था पर संकट टलने पर उन्होंने अस्वीकार कर दिया था जिससे उसे बड़ा क्लेश हुआ था। उस वेतन में से सेना को वेतन देने के उपरान्त भी सेनानायक के पास बहुत कुछ बच जाता था।

दो दिन पश्चात् विद्रोही सेना ने ड्यूक की सेना पर, जो स्पेन-निवासी सेनानायकों के नेतृत्व में थी, आक्रमण कर दिया और उसको पराजित कर दिया। डॉनयूगो डा मोन्काडा बन्दी बना लिया गया और टॉन मिलेल डा कौरैला आहत होकर फौसमब्रोन के दुर्ग को भाग गया। यह साधारण पराजय न थी बल्कि सम्पूर्ण सत्यानाश था। यह समाचार इमोला में गुप्त रखे गए थे। जैसा कि मैक्यावैली ने फ्लोरेंन्स की प्रजातंत्र को लिखा था, जिस बात को फैलाना न हो उसके विषय में ड्यूक के दरबार में कोई बातचीत नहीं होती थी। किन्तु वह जानने योग्य बातें किसी न किसी उपाय से जान ही लेता था। जैसे ही इस घटना के समाचार उसके कानों तक पहुँचे तुरन्त वह महल में गया और ड्यूक से मिलने की प्रार्थना की।

मैक्यावैली तीव्र कौतूहल के साथ ड्यूक के पास पहुंचा था। वह यह जानने का इच्छुक था कि ड्यूक अब तक तो आत्मविश्वासी और अविचलित रहा था, पर इस समय जब विनाश उसके सामने मुंह बाए खड़ा है तो उसकी क्या मानसिक अवस्था है। वह अवश्य समझता होगा कि उसको शत्रुओं से किसी प्रकार की दया की आशा नहीं करनी चाहिए। पर मैक्यावैली ने देखा कि वह शान्त ही नहीं प्रसन्न भी है। विद्रोहियों के विषय में उसने अवहेलना पूर्वक बात की।

उसने कहा, "मैं आत्म-प्रशंसा नहीं करता, पर परिणाम बतला देगा कि वे किस धातु के बने हैं और मैं किस धातु का। मैं उनके सारे दल को जानता हूं और मैं उन सबकी जरा सी भी परवाह नहीं करता।

विटैलौज्जो का बड़ा नाम फैला हुआ है परन्तु मैंने उसको कभी कोई वीरता का काम करते नहीं देखा। उपदेश का तो केवल बहाना है। वास्तव में वह किसी योग्य नहीं है। वह केवल अरक्षित प्रदेशों पर आक्रमण करना तथा निर्बल मनुष्यों को लूटना जानता है। वह विश्वासघाती मित्र तथा कपटी शत्रु है।"

मैक्यावैली उस मनुष्य की प्रशंसा किए बिना न रह सका जो विनाश का सामना इतने धैर्य से कर रहा था। उसकी स्थिति निराशाजनक थी। बोलोना का स्वामी वैन्टीवोगलियो उसके उत्तर की ओर था, विजय से उन्मत्त विटैलौज्जो तथा औरसिनी दक्षिण की ओर से बढ़ रहे होंगे। दोनों ओर से शक्तिशाली शत्रु का आक्रमण होने पर वह विनाश से नहीं बच सकता था। वह फ्लोरैन्स के प्रजातंत्र शासन का मित्र न था और उसकी पराजय तथा मृत्यु से उनको मुक्ति ही मिलती किन्तु फिर भी मैक्यावैली अपनी इच्छा के विरुद्ध आकांक्षा कर रहा था कि वह कठिनाइयों से किसी प्रकार मुक्त हो जाएगा।

ड्यूक ने कुछ ठहरकर कहा, "मेरे पास फ्रांस से पत्र आए हैं जिससे मुझे पता चला है कि फ्रांस के बादशाह ने फ्लौरैन्स को हर प्रकार से मेरी सहायता करने की सूचना भेजी है।"

मैक्याबैली ने उत्तर दिया, "मैंने इस विषय में कुछ नहीं सुना है।"

"फिर भी यह सच है। आप अपने शासकों को लिखिए कि वे मुझे घुड़सवार सैनिकों के दस जत्थे भेज दें और उसमें यह भी लिख दीजिएगा कि ऐसा करने पर मैं उनसे अटूट और पक्का समझौता कर लूंगा और इससे मेरी समृद्धि तथा सद्भावना से जो लाभ प्राप्त हो सकते हैं वे उनको सुलभ हो जाएंगे।"

"मैं अवश्य आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।"

ड्यूक वहां पर अकेला नहीं था। उसके पास एगटो डा अमेलिया, एलना के बड़े पादरी, उसका चचेरा भाई तथा दूसरा मंत्री था। वहां

पर अशुभ सी निस्तब्धता फैली हुई थी । ड्यूक गंभीरतापूर्वक मैक्यावैली को ताक रहा था ।

मैक्यावैली के स्थान में कोई और कम धीरजवान व्यक्ति इस नीरवता और तीक्ष्ण दृष्टि से व्याकुल हो जाता । मैक्यावैली को भी शान्तचित्त बनाए रखने में बड़े आत्म-संयम की आवश्यकता पड़ी ।

अन्त में ड्यूक कहने लगा, "मुझे कई सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि आपके शासक बोलोना के सरदार से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह मुझपर आक्रमण कर दे। वे ऐसा या तो मुझे नष्ट करने के लिए कर रहे हैं अथवा वे संधि के लिए अच्छी शर्तों के लिए मुझे बाध्य करना चाहते हैं।"

मैक्यावैली ने अपने गंभीर और रूखे चेहरे पर जितनी मुस्कान आ सकती थी उतनी लाने का भरसक प्रयत्न किया ।

उसने उत्तर दिया, "श्रीमान्, मैं इस पर एक क्षरण के लिए भी विश्वास नहीं कर सकता क्योंकि मंत्रिमंडल ने जो पत्र मेरे पास भेजे हैं उन सब में पोप तथा आपसे मित्रता का ही वर्णन है ।"

"मैं भी इसपर विश्वास नहीं करता परन्तु मित्रता के वर्णन पर उस समय ठीक-ठीक विश्वास होता है जब कार्य भी उसी के अनुकूल हों ।"

"मुझे निश्चय है कि मेरी सरकार अपने इरादों की ईमानदारी ज़ाहिर करने में कोई कसर न उठा रक्खेगी ।"

"मगर वह जितनी टालू है उतनी ही समझदार भी हो तो अवश्य ही ऐसा करेगी ।"

अन्दर ही अन्दर मैक्यावैली सहम गया । उसने अपने जीवन में किसी आदमी की आवाज़ में ऐसी निष्ठुरता, क्रूरता का स्वर न सुना था ।

[१४]

इसके बाद कुछ समय तक मैक्यावैली अपने प्रतिनिधि, बार्टोलोमियो फैरीनेली तथा ड्यूक के निकटवर्ती लोगों से सूचनाएं संग्रह करने में लगा रहा। वह किसी पर भी पूर्ण भरोसा नहीं कर सकता था। और यह बात भली भाँति जानता था कि इलवैलैन्टीनो के अंतरंग उसको उतना ही बतलाते थे जितना वे चाहते थे कि वह जान जाय। जो बात उसको बड़ी उलझन में डाल रही थी वह थी विद्रोहियों की अकर्मण्यता। ड्यूक की सेना में भाड़े के सैनिक जहाँ मिलते वहीं से भरती किये जा रहे थे। पर वह उस समय तक नहीं आ पायी थी। यद्यपि उसके आधीन अब भी विद्रोही प्रदेशों में कुछ दुर्ग अवश्य थे तथापि वह सामूहिक आक्रमण का सामना करने में असमर्थ था। आक्रमण करने का यही अवसर था, पर फिर भी वे कुछ नहीं कर रहे थे। वह प्रयत्न करके भो न समझ पा रहा था कि वे लोग विलम्ब क्यों कर रहे हैं। फिर एक ऐसी घटना घटी जिससे उसकी उलझन और बढ़ गयी। औरसिनी ने ड्यूक के पास एक दूत भेजा था जो शाम को आया और दूसरे दिन चला गया। मैक्यावैली यत्न करके भी न जान सका कि उसके आने का क्या आशय था।

ड्यूक ने जो सैनिक सहायता फ्लौरेन्स से मांगी थी उसका उत्तर मैक्यावैली के पास आ चुका था। और इस विचार से कि शायद राज-दरबार से घटनाओं का कुछ संकेत मिले, उसने ड्यूक से मिलने की अनु-मति चाही। महल जाते हुए वह बहुत घबरा रहा था क्योंकि ड्यूक से उसे यह कहना था कि उसके शासक इस समय अपनी हार्दिक शुभेच्छाओं के अतिरिक्त कोई सैनिक सहायता भेजने में असमर्थ थे। मैक्यावैली देख चुका था ड्यूक क्रोध की अवस्था में कितना विकट बन जाता था। इस-लिए वह साहसपूर्वक विपत्ति का सामना करने के लिए कमर कसकर चला था। परंतु जब ड्यूक ने उसका समाचार उपेक्षापूर्वक सुना तो उसको अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

"मैं आपको कई बार बतला चुका हूँ और फिर बतला देना चाहता हूँ कि मेरे पास सहायता के अनेकों स्रोत हैं। फ्रांस की नेज़ाधारी तथा स्विट्ज़रलैण्ड की पैदल सेना शीघ्र ही यहाँ पहुँचने वाली है। आप स्वयं देख रहे होंगे कि मैं नित्य सैनिक भरती कर रहा हूँ। पोप के पास धन की कमी नहीं और बादशाह के पास आदमियों की। मेरे शत्रुओं को उनके विश्वासघात का प्रतिकार अवश्य मिलकर रहेगा।"

वह मुस्कराया और उसकी मुस्कराहट में व्यंग्य और दुष्टता थी।

"आपको पता है कि उन्होंने संधि की प्रार्थना की है?"

मैक्यावैली ने बरबस अपने विस्मय को दबाया।

"मि० एन्टोनियो तथा डा० वैनाफ्रो उनकी ओर से आए थे।"

स्पष्ट था कि यह वही आगन्तुक था जिसके विषय में मैक्यावैली ने सुन रखा था। वह सीयानो के अधिपति पैन्डोल्फो पैट्रूसी का विश्वास-पात्र सलाहकार था। जनश्रुति के अनुसार वही समस्त षड्यंत्र का संचा-लक था।

"उसने यह प्रस्ताव रखा कि हम फ्लोरेन्स के राज्य का तख्ता उलट दें। पर मैंने यही उत्तर दिया कि आपके राज्य ने मुझे कभी अप्रसन्न नहीं किया है और मै उससे संधि करने जा रहा हूँ। उसने कहा, 'किसी अवस्था में भी हस्ताक्षर मत कीजियेगा। एक बार मैं जाकर लौट आऊँ तब हम कोई उचित कदम उठाएंगे।' इस पर मैंने उत्तर दिया 'बातें उस अवस्था तक पहुँच चुकी हैं कि अब उनको लौटा लेना असंभव है।' और मैं आपको फिर बतला देना चाहता हूँ कि मैं इन लोगों की बातें सुनता रहूँगा तथा इनकी आँखों में धूल झोंकता रहूँगा। मैं आपके राज्य के विरुद्ध उस समय तक कुछ न करूँगा जिस समय तक मैं उसके लिए विवश न हो जाऊं।"

जिस समय मैक्यावैली ड्यूक से विदा ले रहा था उस समय ड्यूक ने बड़ी लापरवाही से एक ऐसा वाक्य कहा जिससे मैक्यावैली एकदम स्तब्ध रह गया। ड्यूक को उससे वैसी ही आशा थी।

"मैं प्रत्येक क्षण पागोलो ओरसिनी के आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

पीयरो महल तक मैक्यावेली के साथ आया था और ड्योढ़ी पर लालटेन लिए इस प्रतीक्षा में बैठा था कि उसके आने पर वह घर तक उसको मार्ग में रोशनी दिखाता चले। पीयरो चेहरे से ही अपने स्वामी के मन के भावों को पढ़ लेने का अभ्यस्त हो चुका था। उसने एक ही दृष्टि में ताड़ लिया कि वह बातचीत करने की दशा में नहीं है। दोनों निस्तब्ध चलते रहे। घर पहुँचने पर मैक्यावेली ने अपना लबादा तथा टोप उतार कर पीयरो को दवात कलम तथा कागज लाने का आदेश दिया और प्रजातंत्र को पत्र लिखने के लिए तुरन्त बैठ गया।

पीयरो ने पूछा, "क्या मैं सोने जाऊँ ?"

मैक्यावेली ने कुर्सी पर पीठ का सहारा लेते हुए कहा, "नहीं, ठहरो मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ड्यूक ने जो बाते कही थीं वे कहां तक सच हैं। उसने सोचा कि पत्र लिखने से पहले अपने विचारों को एक बार कह डालने से पत्र ठीक ठीक लिखा जा सकेगा।

"जिन व्यक्तियों से मेरा काम पड़ता है उनकी मक्कारी, झूठ तथा कपट ने मुझको भ्रम में डाल दिया है।"

जो कुछ ड्यूक ने उससे कहा था उसे मैक्यावेली ने अत्यन्त सक्षेप में पीयरो के आगे दुहरा दिया।

"इल वैलैन्टीनो जैसे उत्साही, भाग्यशाली और महत्त्वाकाँक्षी व्यक्ति के लिए यह कैसे संभव हो सकता है कि उन लोगों की कार्यवाहियों को क्षमा करदे जिन्होंने न केवल उसके नवीन राज्य को हस्तगत करने में बाधा पहुंचाई थी, बल्कि जिनके कारण हाथ में आए हुए प्रदेश भी निकल गए थे। सेनापतियों ने क्रान्ति केवल इसलिए की थी कि इसके पूर्व कि ड्यूक उनका विनाश करे, वे सब मिलकर उसका विनाश कर दें। तो फिर क्या कारण है कि उन्होंने आक्रमण में इतना विलम्ब कर

रक्खा है, जब ड्यूक इस समय केवल उनकी दया का पात्र रह गया है ?"

मैक्यावैली ने भौंहें चढ़ाकर पीयरो की ओर नज़र डाली पर पीयरो ने कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि उसने समझ लिया था कि प्रश्न केवल कहने के लिए ही है।

"अब उसने अपने दुर्गों को सुदृढ़ बना लिया है तथा महत्वपूर्ण स्थानों में रक्षक सेना भेज दी है। प्रतिदिन नए सैनिक दस्ते आ रहे हैं। पोप से उसे धन प्राप्त हो रहा है तथा फ्रांस से सैनिक। इसके अतिरिक्त उसको किसी से मंत्रणा नहीं लेनी पड़ती। सेनानायकों में संगठन केवल इस कारण हुआ है कि वे सब ड्यूक से घृणा करते हैं तथा उससे आतंकित हैं। उनका समझौता कच्चे धागे की तरह टूटने वाला है क्योंकि हर व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थों में लीन है। वे कोई क़दम शीघ्रता से नहीं उठा सकते क्योंकि उनको प्रत्येक कार्य के लिए सलाह करनी पड़ती है। एक की मूर्खता, अज्ञानता अथवा अयोग्यता सबके विनाश का कारण बन सकती है। अवश्य ही वे सब परस्पर ईर्ष्या रखते है। उनमें से कोई यह नहीं चाहता कि कोई भी एक इतना शक्तिशाली बन जाय कि उससे दूसरों के लिए ख़तरा बना रहे। सेना-नायकों को अवश्य पता होगा कि चारों ओर दूत घूम रहे हैं और हर एक अपने मन में डर रहा होगा कि कहीं सारी विपत्ति उसी के सिर न आ पड़े।"

मैक्यावैली बड़ी विकलता से अपना नाख़ून चबाने लगा।

"जितना अधिक मैं सोचता हूं उतना ही अधिक मुझे विश्वास होता जाता है कि विद्रोही ड्यूक को अधिक हानि नहीं पहुंचा सकते। उन्होंने अवसर खो दिया है। अब वे समझौता करने में ही अपना भला सोच रहे होंगे।"

मैक्यावैली ने अकारण ही पीयरो की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा। उस बेचारे ने तो एक शब्द भी न कहा था।

"क्या तुम जानते हो इसका क्या अर्थ है ?

"नहीं ।"

"इसका अर्थ है कि उनकी सेना ड्यूक की सेना में मिल जायगी और ड्यूक की सेना महाशक्तिशाली बन जाएगी । फिर यह निश्चय है कि उसको काम में लाया जाएगा । व्यर्थ में कोई भी सेना पर इतना व्यय नही कर सकता । इनका प्रयोग कैसे और किसके विरुद्ध होगा ? इसका निर्णय, मैं सोचता हूं, उस समय होगा जब ड्यूक तथा औरसिनी आमने-सामने होंगे ।"

[१५]

उस समय इटली में कोई ऐसा मूर्ख नहीं था कि किसी दूसरे पर अपनी आंखों से अधिक विश्वास करे और अभययात्रा के प्रमाण पत्र का मूल्य उस कागज़ से अधिक न था जिसपर वे लिखे जाते थे । इसलिए पोप का भतीजा धर्माध्यक्ष बोर्जिया औरसिनी के पास बन्धक के रूप में रह गया । इसके दो दिन पश्चात् गृहपति पागोलो दूत के वेष में इमोला पहुँचा । वह घमण्डी, वाचाल, कायर तथा मूर्ख था । उसकी अवस्था अधेड़, शरीर स्थूल तथा सिर गंजा था । उसका चेहरा गोल तथा चिकना था और उसका व्यवहार चपल तथा असंयत था । ड्यूक ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और उसके सम्मान में एक बड़ा भारी भोज दिया तथा एक नाटक करवाया । उन दोनो में बहुत समय तक मंत्रणा होती रही । पर साम, दाम किसी से भी मैक्यावैली मालूम न कर सका कि उन दोनों के बीच क्या-क्या बातें हुई थीं । ड्यूक जिन मंत्रियों को अपना शुभाकांक्षी मानता था वे सब जानबूझकर कन्नी काट गए । केवल एग्पीटो डा अमेलिया ने इतना बतलाया कि उनकी बातचीत की व्यवस्था

केवल इस कारण की गई थी कि शत्रु कोई कदम न उठाए। वास्तव में किसी ओर की भी सेना नहीं बढ़ी। इसके अतिरिक्त बोलोना की सेना ने ड्यूक के जिस प्रदेश पर अधिकार जमा रक्खा था वहां से भी पीछे हट गई।

मैक्यावैली इस दुविधा को सहन न कर सका। उसने हाल ही में फ्लौरेन्स से आने वाले पत्र का बहाना लेकर ड्यूक से मिलने की प्रार्थना की। ड्यूक उससे अपने शयनकक्ष में मिला और अपनी स्वाभाविक प्रसन्न मुद्रा से प्रजातंत्र की मित्रता की दुहाई की बातें सुनता रहा। फिर वह उस विषय पर आया जिसके लिए मैक्यावैली विशेषतया उत्सुक था।

वह कहने लगा, "मैं सोचता हूँ हमारा समझौता अवश्य हो जाएगा, क्योंकि वे केवल इतना ही चाहते हैं कि उनके प्रदेशों की सुरक्षा का आश्वासन दे दिया जाय। धर्माध्यक्ष औरसिनी समझौते की शर्तें तैयार कर रहे हैं। हम इस प्रतीक्षा में हैं कि देखें वे शर्तें क्या है। जहां तक आपका सम्बन्ध है विश्वास रखिए आपके शासकों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जाएगी। मैं उनको तनिक भी हानि न होने दूंगा।"

कुछ देर मौन रहने के पश्चात् वह जब फिर बोला तो कुछ ऐसे अलस भाव से जैसे किसी लाड़ली स्त्री के मन की मौज के बारे में बातें कर रहा हो।

"वेचारा पागालो रामीरो डि लोरक्वा से बहुत कुढ़ा हुआ है। वह उसपर प्रजा को सताने, ग़बन तथा औरसिनी के आश्रितों के साथ दुर्व्यवहार का आरोप लगाता है।"

रामीरो डि लोरक्वा ड्यूक का सबसे अधिक विश्वासी सेनापति था। फौसमब्रोन के युद्ध के अनन्तर ड्यूक की पराजित तथा तितर-बितर सेना को वापस लौटाने का श्रेय इसी व्यक्ति को था। उसने इस सेना को बचाकर दूसरे ही दिन उसे युद्ध के योग्य बना दिया था।

ड्यूक हंसकर कहने लगा, "लगता है कि कभी कोई नौकर उसके लिए शराब ला रहा था जो उससे मार्ग में फैल गई। इससे क्रुद्ध होकर

रामीरो ने उसे जीवित अग्नि में जला दिया। किसी कारण से पागोलो को उस युवक नौकर से लगाव था। मैंने बचन दिया है कि मै इस घटना की छानबीन करूंगा और यदि आरोप सत्य सिद्ध हुआ तो उसको न्याय करके संतुष्ट कर दूंगा।

किन्तु तभी कुछ ऐसा समाचार मिला जिससे प्रतीत होता था कि विद्रोही सेना-नायकों में परस्पर कोई समझौता नहीं हो सका है। समझदार लोग संधि करने के पक्ष में थे और लड़ाके युद्ध ही करना चाहते थे। बिटैलौज्जो ने फौलमब्रोन के दुर्ग पर अधिकार कर लिया और उसके दो दिन पश्चात् औलीवर्टो ने कैमरीनो के दुर्ग को जीत लिया। इल वैलेंन्टीनो ने पिछले युद्ध में जितने प्रदेश जीते थे वे सब हाथ से निकल गए। ऐसा विदित होता था कि वे दुष्ट समझौते की बातचीत को असफल बनाने के लिए कमर कसे हुए थे। पागोलो औरसिनी को उनपर बड़ा क्रोध आया। किन्तु ड्यूक शान्त बना रहा। वेंटीवोगलियो तथा औरसिनी उसके सबसे अधिक शक्तिशाली शत्रु थे। यदि उनके साथ उसका समझौता हो गया तो अन्य शत्रु उसके तलवे चाटेंगे। पागोलो बोलोना चला गया। जब वह लौटकर आया तो एग्पीटो डा अमेलिया ने मैक्यावैली को बतलाया कि समझौता हो गया है। केवल पागोलो के धर्माध्यक्ष भाई की अनुमति शेष थी।

मैक्यावैली के हृदय में भय उत्पन्न हो गया। यदि यह बात सच है, यदि ड्यूक विद्रोहियों को क्षमा करने के लिए तैयार है और यदि उन लोगों के मन से ड्यूक का भय जाता रहा है जिसके कारण उन्होंने शस्त्र ग्रहण किए थे, तब इसका कारण केवल एक ही हो सकता है और वह कारण है सबका मिलकर किसी अन्य राज्य पर आक्रमण। उनके आक्रमण का लक्ष्य वेनिस हो सकता था अथवा फ्लोरैन्स। किन्तु वेनिस शक्तिशाली था जबकि फ्लोरैन्स अत्यन्त अशक्त। उसके पास केवल फ्रांस की शरण बाकी थी जो अपार धन देकर प्राप्त की गई थी। किन्तु उसका खजाना खाली हो चुका था। यदि सीजरबोर्जिया उन सब सेनापतियों के

साथ जिनसे उसने समझौता कर लिया था सहसा आक्रमण करके फ्लोरेन्स के अरक्षित नगरों पर अधिकार कर ले तो फ्रांस क्या कर सकता था।

मैक्यावैली की राय फ्रांस के बारे में बड़ी हीन थी। अनुभव ने उसे सिखा दिया था कि फ्रांस केवल वर्त्तमान के हानि-लाभ को देखता है। उसको भविष्य की चिन्ता लेशमात्र भी नहीं है। जब उससे कोई सहायता मांगी जाती तो वह केवल अपने स्वार्थ की चिन्ता करता है। जहाँ तक उसके स्वार्थ की सिद्धि होती वहीं तक उस पर निर्भर किया जा सकता है। उधर पोप की जयन्ती के अवसर पर उसके कोष में अपार वृद्धि हुई थी। दूसरे जिन धर्माध्यक्षों की मृत्यु हो जाती थी उनकी सम्पत्ति भी पोप को ही मिल जाती है और उस समय इनकी मृत्यु-संख्या में भी पर्याप्त वृद्धि हो गई थी। इस प्रकार यदि फ्रांस का बादशाह लुई अपनी आज्ञा की अवहेलना से कुपित भी होता तो उसे प्रचुर धन देकर मनाया जा सकता था। वैलैन्टीनो के पास जो सेना थी वह अस्त्र-शस्त्रों से लैस तथा सुशिक्षित थी। फ्रांस का बादशाह भी उसके विरुद्ध शस्त्र उठाने में हिचकिचाता क्योंकि फिर भी वह उसका किराएदार तथा मित्र था। जितना ही मैक्यावैली विचार करता उतनी ही उसकी धारणा पक्की होती जाती कि लुई केवल तात्कालिक लाभ को दृष्टि में रखेगा और इस बात की तनिक चिन्ता न करेगा कि भविष्य में सीज़रवोर्जिया शक्तिशाली बन जाएगा। सारी परिस्थितियों को देखकर मैक्यावैली को पूर्ण विश्वास हो रहा था कि उसके प्राणों से भी प्यारे फ्लोरैन्स के लिए कोई आशा नहीं बची है।

[१६]

किन्तु मैक्यावैली केवल प्रजातन्त्र का परिश्रमी और कर्त्तव्यपरायण दास ही न था, साथ ही अपने शरीर की वासनाओं से भी वह इन दिनों बड़ा त्रस्त था। वह सरकार के पत्रों को ध्यानपूर्वक पढ़ता तथा उनको प्राय: नित्यप्रति पूरे तथा सही समाचार भेजता। सैराफीना के मकान पर वह कभी खुले रूप से और कभी गुप्त रूप से दूनों, गुप्तचरों तथा प्रतिनिधियों से मिलता। वह इधर-उधर कभी महल में, कभी बाज़ार में, कभी मिलने-जुलने वालों के पास जाता। वह प्रत्येक समाचार, प्रत्येक अफवाह, प्रत्येक गपशप को इकट्ठा करके उनसे सार•निकालता पर इन सब बातों के साथ ही औरेलिया को फँसाने का जो उसने उपाय विचारा था उसको भी पूरा करने का समय निकाल लेता था। उसमें सफलता पाने के लिए धन की आवश्यकता थी और धन उसके पास था नहीं। फ्लोरैन्स की सरकार महा कंजूस थी। उसका वेतन साधारण था और जो धन वह फ्लोरैन्स से लेकर चला था वह प्राय: समाप्त हो चला था। वह अमितव्ययी था और ठाठ से रहना पसन्द करता था। जो दूत उसके पत्र ले जाते थे उनको कुछ पेशगी भी देना पड़ता था तथा राज-दरबार के उन लोगों की भी खुश करना पड़ता था जो धन के बदले में उसको आवश्यक सूचनाएं देने को तत्पर रहते। सौभाग्यवश उस नगर में फ्लोरैन्स के कुछ व्यापारी अवश्य थे जो उसे उधार रुपया दे सकते थे। उसने विआजियो को पत्र लिखा कि उचित अथवा अनुचित उपाय से जैसे भी हो धन संचय करके उसे भेज दे। तभी एक विचित्र घटना घटी। जियाकोमो फैरीनेली नामक आलेखक जो उससे रात को भेष बदल कर बहुत गुप्त रूप से मिलता था जिससे उसको कोई पहिचान न ले, आज सहसा दिन दहाड़े द्वार पर आकर उसको बुलाने लगा। पहले उसका व्यवहार भययुक्त तथा संशकित रहता था किन्तु उस दिन खुला हुआ और मित्रतापूर्ण था। उसने अपने आने का कारण तुरन्त कह डाला।

"मुझे किसी व्यक्ति ने, जो आपका हितैषी है और जो आपकी योग्यता का भक्त और प्रशंसक है, भेजा है और साथ ही यह छोटी-सी भेंट आपकी सेवा में अपनी श्रद्धा के चिह्न रूप भेजी है।"

उसने अपने वस्त्रों में छिपी हुई एक थैली निकाली और मेज पर रख दी। मुद्राओं की झनकार मैक्यावैली के कानों में गूँज गई।

"यह क्या है ?" मैक्यावैली ने प्रश्न किया। उसके होठ भिचे हुए थे और नेत्रों में रुखाई थी।

फैरीनेली ने मुस्कराकर कहा, "पचास ड्यूकट्स (स्वर्णमुद्राएँ)।"

धन थोड़ा न था। उस समय मैक्यावैली को उसकी आवश्यकता भी अपार थी।

"ड्यूक को मुझे पचास स्वर्ण-मुद्राएं देने की आवश्यकता क्यों पड़ गई ?"

"जहाँ तक मैं सोचता हूँ ड्यूक का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। इसे तो आपके किसी शुभचिन्तक ने भेजा है जो गुप्त रहना चाहता है। इस बात पर विश्वास रखिये कि केवल आपका शुभचिन्तक और मैं ही इस भेद को जान सकेंगे, कोई अन्य नहीं।"

"जान पड़ता है कि मेरा शुभचिन्तक और तुम दोनों मुझे मूर्ख और साथ ही धूर्त भी समझते हो। यह धन वापिस ले जाओ और जिसने दिया है उससे कहना कि प्रजातन्त्र का राजदूत घूस नहीं लेता है।"

"किन्तु यह घूस तो नहीं है। यह तो एक मित्र का स्वेच्छापूर्वक दिया हुआ उपहारमात्र है जिसे उसने आपकी चतुरता तथा साहित्यिक ज्ञान की प्रशंसा स्वरूप भेजा है।"

मैक्यावैली ने रुखाई से उत्तर दिया, "मेरी समझ में नहीं आता कि यह उदार मित्र मेरे साहित्यिक ज्ञान की प्रशंसा किस आधार पर करता है।"

"जिस समय आप राजदूत बनकर फ्रांस गए थे उस समय जो पत्र आपने विदेश मंत्री को भेजे थे उनको देखने का अवसर इस व्यक्ति को

मि ा था। वह आपकी सूक्ष्म दृष्टि, चातुर्य, निपुणता तथा उत्तम लेखन शैली का महान प्रशंसक है।"

"यह असंभव है कि तुम्हारे इस व्यक्ति ने मंत्रिमंडल के कार्यालय के पत्रों को देखा हो।"

"हो भी सकता है। संभव है सचिवालय में किसी ने आपके पत्रों को मतलब का समझकर उनकी प्रतिलिपि उतार ली हो, और किसी उपाय से वे पत्र उस व्यक्ति के हाथ लग गए हों जिसके विषय में मैं आपसे बा कर रहा हूं। ापसे अधिक कौन इस बात को जान सकता है कि प्रजातंत्र अपने कर्मचारियों को कितना वेतन देता है।"

मैक्यावै ी की त्यौरियाँ चढ़ गई। वह मौन रहा और मन ही मन कहने लगा कि ऐसा कौनसा कर्मचारी हो सकता है जिसने ड्यूक के हाथ पत्र बेचे हों। यह सच है कि उनको बहुत कम वेतन मिलता था और कुछेक मेडिसी के गुप्त समर्थक भी थे। किन्तु संभवतया फैरीनेलीकी बात में कुछ भी सचाई नहीं है। ऐसी कथा सरलता से गढ़ी जा सकती थी।

फैरीनेली ने फिर कहना आरम्भ किया, "ड्यूक कदापि यह नहीं चाहेगा कि आप कोई ऐसा कार्य करें जिससे आपके मन को कष्ट हो अथवा जो फ्लोरेन्स के लिए हानिकारक हो। वह तो प्रजातंत्र तथा आप दोनों की भलाई चाहता है। शासन को आपके निर्णय पर विश्वास है और वह आपसे केवल इतना ही चाहता है कि आप उसका मामला इस भांति रखें कि समझदार व्यक्तियों के मन पर उसका प्रभाव पड़ सके।"

मैक्यावैली ने अपना मुँह बिगाड़कर व्यंग्य भरे स्वर से कहा, "अधिक कहना बेकार है। मुझे ड्यूक के धन की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं शासन को सदा वही सलाह दूंगा जो प्रजातंत्र के हित में होगी।"

फैरीनेली खड़ा हो गया और स्वर्णमुद्राओं की थैली को पुनः उसी स्थान पर रख लिया जहाँ से उसे निकाला था।

"फैरैरा के ड्यूक द्वारा सैनिक सहायता भेजने के प्रश्न पर निर्णय करने के लिए उसके दूत ने बिना किसी मिथ्या अभिमान के ड्यूक से

उपहार स्वीकार कर लिया था। यदि मोश्ये डि शोम्यों ने मिलान से फ्रांसीसी सेना को लाने में शीघ्रता की थी तो इसका कारण केवल यही था कि शाह की आज्ञा के साथ-साथ उसे ड्यूक से बड़ा भारी उपहार भी मिल चुका था।"

"यह सब मुझे अच्छी तरह मालूम है।"

जब मैक्यावेली अकेला रह गया तो वह बड़े ज़ोर से हंसा। यह सच है कि एक क्षण के लिए भी उसके मन में वह धन लेने का विचार न उठा था किन्तु यह सोचकर उसको बड़ा मज़ा आया कि वह धन उस समय उसके कितने काम का था। किन्तु एकाएक उसके मन में दूसरा विचार उठा जिससे वह फिर हँसने लगा। उसको विश्वास था कि जितने रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी वह बार्थोलोमियो से उधार ले सकता है। बार्थोलोमियों को उसपर उपकार करके प्रसन्नता ही होगी। और उसके धन की सहायता से उसी की बीवी को फँसाना अच्छा खासा मज़ाक भी रहेगा। इससे अच्छा और कौनसा मनोविनोद हो सकता था। जब वह फ्लोरैन्स लौटकर जाएगा तो लोगों को सुनाने के लिए यह बात ही मनोहर कहानी होगी। किसी सराय में जब उसके मित्र उसको घेरकर बैठेंगे तो शाम के समय वह उस कहानी को खूब रोचक बनाकर सुनाएगा। उस समय वे कितना खिलखिलाकर हंसेंगे! "अहा निकोलो क्या खूब दोस्त है! उसकी भांति कौन कहानी सुना सकता है? कैसा परिहास तथा कैसी वाक्पटुता है! उसकी कहानी सुनना नाटक देखने के समान है।"

दो दिन से बार्थोलोमियो से उसकी मुलाकात नहीं हुई थी। पर जब वह शाम को भोजन से पहले महल में कोई समाचार लेने गया तो मार्ग में बार्थोलोमियो से भेंट हो गई। स्वाभाविक शिष्टाचार के बाद मैक्यावेली ने कहा, "आज शाम को घर आइये। कुछ गाना-बजाना करेंगे।"

बार्थोलोमियों ने सहर्ष उत्तर दिया, "समय बिताने का उससे अच्छा ढंग और क्या हो सकता है।"

मैक्यावैली फिर बोला, "यह तो सच है कि कमरा छोटा-सा है और छत से आवाज़ गूँजती है पर ठंड से बचने के लिए एक अंगीठी रख लगे। दूसरे शराब का सहारा होगा तो ठंड हमारा क्या कर सकेगी। और फिर सब काम ठीक ही रहेगा।"

उसने भोजन समाप्त ही किया था कि बार्थोलोमियो का नौकर पत्र लेकर आया। उसने लिखा था कि महिलाओं का कहना है कि उनको संगीत से क्यों वंचित रखा जा रहा है। उसके भवन का विशाल कमरा सैराफीना की सर्द बैठक से कहीं आरामदेह है। उसमें अंगीठी भी बनी हुई है जिससे वे अपने को गर्म रख सकते हैं। यदि वह तथा पीयरो वहीं भोजन करें तो उसको बड़ी प्रसन्नता होगी। मैक्यावैली ने यह निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया।

उसने मन ही मन कहा, "बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा।"

मैक्यावैली ने दाढ़ी बनाई तथा बाल कटवाए। उसने बढ़िया कपड़े पहने। काली साटन का बिना बाहों का ट्यूनिक तथा ढीली मखमली बाहों की चुस्त जाकट पहनी। पीयरो ने भी अवसर के उपयुक्त ही कपड़े पहिने। उसका हल्का नीला कोट घुटनों से काफ़ी ऊपर ही रह गया था। कमर से बैंगनी पेटी बांधी तथा अपनी सुन्दर टांगों में नीले मौजे पहन लिए थे। उसकी जाकट भी गहरी नीली थी। घुँघराले बालों पर तिरछी करके बैगनी टोपी पहनी हुई थी।

मैक्यावैली ने उसकी ओर देखकर उसके कपड़ों की सराहना की और मुस्कराकर बोला, "पीयरो, उस दासी को ज़रा अच्छी तरह से प्रभावित करना। उसका क्या नाम बतलाया था तुमने ? नीना ?"

पीयरो ने हँसकर पूछा, "आप क्यों चाहते हैं कि मैं उसके साथ सोऊँ ?"

"मैं यह इसलिए चाहता हूँ कि तुम्हारी यह यात्रा एकदम व्यर्थ न जाए। दूसरे मेरा भी कुछ लाभ है।"

"कैसे ?"

"क्योंकि मैं उसकी स्वामिनी के साथ सोना चाहता हूं।"

"आप ?"

पीयरो के स्वर में इतना विस्मय था कि मैक्यावैली क्रोध से लाल हो गया।

"क्यों जनाब, इसमें क्या बुराई है ?"

पीयरो को ऐसा जान पड़ा मानो उसकी बात सुनकर मैक्यावैली घबड़ा गया हो। इसलिए उसने हिचकिचा कर उत्तर दिया, "क्योंकि आप विवाहित हैं और आयु में मेरे मामा के बराबर हैं।"

"तुम निरे मूर्ख हो जो इतना भी नहीं समझते कि एक समझदार युवती नादान छोकरे की अपेक्षा अनुभवी पुरुष को ही अधिक पसन्द करेगी।"

"मैंने तो स्वप्न में भी यह कल्पना न की थी कि वह आपके लिए आकर्षण की वस्तु है। क्या सचमुच ही आप उसे प्यार करते हैं ?"

"प्यार ? प्यार तो मैं अपनी माँ से करता था, अपनी पत्नी को भी मैं आदर की दृष्टि से देखता हूं तथा अपने बच्चों को मै प्यार करूँगा। किंतु औरेलिया के साथ तो मैं सिर्फ सोना चाहता हूं। तुम अभी बच्चे हो, अभी तुम्हें बहुत कुछ सीखना है। लो ल्यूट उठाओ और मेरे साथ चलो।"

यद्यपि मैक्यावैली का स्वभाव अत्यन्त क्रोधी था किंतु इस समय उसका क्रोध शीघ्र ही जाता रहा और वह प्यार से पीयरो के गालों को थप-थपाने लगा।

फिर मुस्कराकर बोला, "नौकरानी से कोई भेद छिपा रखना कठिन है। तुम अगर चुम्बनों द्वारा उसका मुँह बन्द रख सकोगे तो मेरा बड़ा उपकार होगा।"

उन्हें केवल एक तंग गली पार करनी पड़ी। द्वार खटखटाते ही एक नौकर ने आकर खोल दिया और बड़े आदर से उन्हें अन्दर ले गया। श्रीमती कैटेरीना ने काले रंग का एक सुन्दर गाउन पहन रक्खा

था। पर औरेलिया ने वेशकीमत जरी के कपड़े पहने थे । गहरे रंग की चोली में से उसके गोरे-गोरे उरोज़ और भी गोरे जान पड़ते थे तथा भड़कीले वस्त्रों से उसके केश और भी अधिक कान्तिमय हो उठे थे । मैक्यावैली ने यह देखकर संतोष की सांस ली कि औरेलिया सचमुच ऐसी सुन्दरी थी जिसकी उसने पहले कल्पना भी न की थी। उसका हृदय बरबस उसकी ओर खिंचा जा रहा था। वह सोच रहा था कि विधि की कैसी विचित्र विडम्बना है कि औरेलिया जैसी नारी एक गँवार वासनाहीन वृद्ध की पत्नी थी जिसकी जवानी सदा के लिए उससे बिदा माँग चुकी थी।

साधारण से शिष्टाचार के बाद वे भोजन के लिए बैठ गए। जिस समय मैक्यावैली ने पीयरो के साथ घर में प्रवेश किया था उस समय दोनों महिलाएं किसी कार्य में व्यस्त थीं।

वार्थोलोमियों ने बातचीत का सिलसिला आरम्भ करने की नीयत से कहना शुरू किया, "आपने फ्लोरैंस से जो मलमल लाकर दी थी उसी पर ये लोग कसीदा काढ़ रही हैं।"

मैक्यावैली ने औरेलिया से प्रश्न किया, "यह कपड़ा आपको पसन्द आया ?"

उसने संक्षेप में इतना ही कहा, "इमोला में तो ऐसा बढ़िया कपड़ा मिलना असंभव ही जान पड़ता है।"

यद्यपि उसने बड़े सरल स्वभाव से ही मैक्यावैली के प्रश्न का उत्तर दिया था किंतु उस अवसर पर एक क्षण के लिए उसके विशाल काले नेत्र मैक्यावैली की ओर स्थिर से जान पड़े जिससे मैक्यावैली के दिल की धड़कन सहसा बढ़ गई ।

वह मन ही मन कहने लगा, "इस रमणी के लिए तो मैं अपने प्राणों की भी बाज़ी लगा सकता हूं।" किंतु वास्तव में ऐसा करना उसके लिए संभव न था । उसके कहने का तात्पर्य वास्तव में केवल यही था कि उसे अपने सारे जीवन में ऐसी कोई सुन्दर नारी नहीं

मिली थी जिसके साथ उसके सहवास की लालसा उसके मन में इतनी प्रबल हो उठी हो।

कैटेरीना ने यह कहकर उसकी विचारधारा भंग की, "मैं और नीना तो केवल मोटा काम करती हैं, कपड़ों की कांट-छांट और उनकी सिलाई। किंतु कसीदे का काम तो मेरी लड़की ही करती है। मैं कसीदे की कोशिश भी करती हूं तो मेरी अंगुलियां निष्क्रिय हो जाती हैं। नीना भी बस मेरी जैसी ही है।"

गर्व से वार्थोलोमियो की छाती फूल उठी। वह बोला, "औरेलिया कभी भी किन्हीं दो वस्त्रों पर एक ही डिज़ाइन नहीं बनाती।" और फिर औरेलिया को सम्बोन्धित करके बोला, "ज़रा मि० निकोलो को वह कमीज़ तो दिखाओ जिस पर तुमने नया डिज़ायन डाला है।"

"ओह ! मुझे तो बड़ी शर्म लगती है।" उसका यह कहने का ढंग कैसा प्रिय था।

"इसमें लज्जा की कौनसी बात है। अच्छा लाओ मैं स्वयं ही दिखा दूंगा।"

बार्थोलोमियो ने मैक्यावैली को काग़ज का एक टुकड़ा दिखाते हुए कहा, "देखिए किस अनूठेपन से उससे मेरे नाम के अक्षर इसमें अंकित किए हैं !"

मैक्यावैली ने बड़े उत्साह का प्रदर्शन करते हुए उत्तर दिया, "सच-मुच शोभा और दक्षता से पूर्ण यह रचना बड़ी ही अनूठी है।"

वास्तव में उसे ऐसी रचनाओं से कोई भी दिलचस्पी न थी। पर उसने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "क्या ही अच्छा होता कि मेरी मेरिएटा को भी परमात्मा ने ऐसा ही गुण प्रदान किया होता जिससे वह भी ऐसी-ऐसी अपूर्व वस्तुएं तैयार कर लेती।"

बार्थोलोमियो फिर अपनी पत्नी की प्रशंसा में बोला, "यह मेरी बीवी जितनी ही नेक है उतनी ही परिश्रमी भी है।"

तत्काल ही मैक्यावैली के मन में यह विचार उत्पन्न हुए बिना न

रह सका कि उसे न तो औरेलिया की नेकी से ही कुछ लेना है और न उसके परिश्रमी स्वभाव से ही उसका कुछ मतलब है। उसने अपने मन में यह भी सोचा कि प्रायः पुरुष अपनी स्त्री के गुण बखान करने में भारी भूल करते हैं।

भोजन करते समय मैक्यावैली ने उपस्थित लोगों को अपनी लच्छेदार बातों से रिझाने का भरसक प्रयत्न किया। किस्से-कहानियां आदि सुनाने में वह बड़ा चतुर था और कुछ दिनों फ्रांस में भी रहने के कारण उसे बादशाह के दरबार के पुरुषों और महिलाओं की अनेकों मज़ेदार कहानियां याद थीं। इन कहानियों में अश्लीलता का अंश अधिक था जिससे औरेलिया शर्म से कुछ सकपकायी-सी लग रही थी किन्तु बार्थोलोमियो के पेट में हंसी के मारे बल पड़ गए और श्रीमती कैटेरीना तो इतनी प्रसन्न थी कि वह मैक्यावैली को और बढ़ावा दे रही थीं। मैक्यावैली को अनुभव होने लगा कि उसका जादू काम कर गया है और वह अत्यन्त ही आकर्षक अतिथि सिद्ध हो रहा है। बातचीत के दौरान में ही मैक्यावैली ने बड़ी चतुरता से ऐसा प्रसंग छेड़ दिया जिससे बार्थोलोमियो अपने घरेलू मामलों और अपनी सम्पत्ति आदि के विषय में बातचीत करने लगा। भोजन समाप्त हुआ और बातचीत का सिलसिला टूटा। तब मैक्यावैली ने प्रस्ताव रक्खा कि संगीत का भी आनन्द उठाया जाय और हर व्यक्ति अपना-अपना गीत सुनाए। सबसे पहले उसने ही अपनी ल्यूट के तार मिलाए और एक मनमोहिनी तान छेड़ दी। इसी प्रकार बारी-बारी से सबने गाना गाया और सबका ही मनोरंजन हुआ। अन्त में मैक्यावैली ने सुप्रसिद्ध कवि लारेंज़ो डि-मेडीसी के गीत गाए जिनमें पीयरो तथा बार्थोलोमियों ने भी उसका साथ दिया। गीत गाते हुए मैक्यावैली इस भांति औरेलिया की ओर देखता जाता था मानो वह उसी के लिए वे गीत गा रहा हो। जब कभी दोनों की आंखें चार होतीं तो औरेलिया लज्जा से अपने नेत्र नीचे झुका लेती। मैक्यावैली को अब विश्वास हो गया था कि औरेलिया

उसके मनोगत भावों को समझ रही है। प्रेम-प्रदर्शन में उसका यह पहला क़दम था। इस तरह किस्से कहानी और राग-रंग में ही संध्या बीत गई। बहुत दिनों से दोनों महिलाओं का जीवन नितान्त नीरसता में व्यतीत हो रहा था इसलिए आज के आमोद प्रमोद से उनका अत्यधिक मनोरंजन हुआ। औरेलिया के हृदय में आनन्द की जो लहरें उठ रही थीं उससे उसके नेत्रों में चमक पैदा हो गई थी और ऐसा जान पड़ता था मानो उसके मन का समस्त उल्लास आँखों में मूर्तिमान हो उठा हो। मैक्यावैली बड़े ध्यान से उसके मुख पर उसके मनोगत भावों को पढ़ने की चेष्टा कर रहा था। यद्यपि वह जानता था कि उस समय तक औरेलिया के हृदय में वासना जाग्रत नहीं हुई है किन्तु तो भी उसे निश्चय हो गया था कि धीरे-धीरे उसके हृदय में वासना उत्पन्न की जा सकती है। विदा होने से पूर्व मैक्यावैली बार्थोलोमियो से एक बात कहने के लिए आतुर था जिसे उसने अब तक अपने मन में छुपाए रक्खा था और उचित अवसर की प्रतीक्षा में था। अतएव मौका पाते ही वह बार्थोलोमियो से कहने लगा :

"आपने वचन दिया था कि आप मेरा कोई भी कार्य करने से इन्कार न करेंगे। अब मैं आपको एक कष्ट देना चाहता हूं।"

बार्थोलोमियो काफ़ी शराब पी चुका था। यह सच है कि वह नशे में चूर न था तो भी शराब अपना प्रभाव उस पर जमा चुकी थी। उसने तुरन्त उत्तर दिया, "फ्लोरैन्स के राजदूत की खातिर मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ। किन्तु अपने मित्र निकोलो के लिए तो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।"

"अच्छा, बात यह है कि हमारे विदेश मंत्री को एक ऐसे धर्मोपदेशक की तलाश है जो आगामी वर्ष गिर्जे में अपने अमूल्य उपदेश लोगों को सुना सके। चलते समय उसने मुझे यह आदेश दिया था कि मैं इमोला में ऐसे व्यक्ति की खोजबीन करूं जिसे यह महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य सौंपा जा सके।"

उतना ही कुशल भी है। अभी हाल ही की तो बात है कि मैं एक जहाज में लदा हुआ गर्म मसाला ख़रीदने वाला था परन्तु मेरे पुरोहित ने यह कहकर मुझे खरीदने से रोक दिया कि उसने स्वप्न में किसी देवता को देखा है जो उससे कह रहा है कि वह जहाज किसी चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जावेगा। इसलिए मैंने माल नहीं ख़रीदा।"

मैक्यावैली ने बड़ी जिज्ञासा से पूछा, "और क्या वह जहाज वास्तव में डूब गया।"

"डूबा तो, नहीं किन्तु गर्म मसाले से लदे हुए तीन बड़े-बड़े जहाज लिस्बन में उतरे जिससे मसालों की दर एक दम गिर गई। उस सौदे में मुझे बड़ी हानि उठानी पड़ती। बात एक ही हुई।"

"ज्यों-ज्यों मैं इस पादरी के विषय में सुनता हूँ त्यों-त्यों उसे देखने के लिए मेरी उत्कण्ठा बढ़ती जाती है।"

"सबेरे आप जाएँ तो वह अवश्य ही गिरजे में ही मिलेंगे और यदि न मिलें तो वहाँ जो व्यक्ति झाड़ू लगाता है उसके द्वारा बुलवा लीजियेगा।"

मैक्यावैली ने बड़ी नम्रता से प्रश्न किया, "क्या मैं उन्हें बतला दूँ कि मैं आपकी सिफ़ारिश से उनसे मिलने आया हूँ ?"

"फ्लोरेंन्स के राजदूत को इस छोटे से नगर के साधारण व्यापारी की सिफ़ारिश की आवश्यकता ही क्या है ?"

मैक्यावैली ने अब औरेलिया को संबोधित करके कहा, "फ्रा टिमोटियो के विषय में आपका क्या विचार है ? केवल बार्थोलोमियो जैसे पदाधिकारी सुदक्ष व्यक्ति और श्रीमती कैटेरीना जैसी अनुभवी और सावधान महिला की राय जान लेना ही काफी नहीं। बल्कि ऐसी महिला की राय जानना भी ज़रूरी है जिसमें उमंग है, यौवन है और दुनिया की बातों से अनभिज्ञता है और जिसे संसार तथा उसके संकटों से कोई परिचय नहीं हुआ है। विदेश सचिव के सामने मुझे ऐसे धर्मोपदेशक की सिफ़ारिश करनी है जो अपराधियों से प्रायश्चित कराने

में समर्थ होने के सिवाय इस योग्य भी हो कि धर्मात्माओं को भी ऐसा उपदेश सुना सके जिससे वे अपने पुण्य मार्ग से कभी विचलित न हों।"

मैक्यावैली का भाषण प्रभावशाली था। औरेलिया ने उत्तर दिया, "मेरा दृढ़ विचार है कि फ्रा टिमोटियो से कोई बुरा काम संभव नहीं। मैं तो हर मामले में उनके निर्देश पर चलने के लिए तैयार हूँ।"

बार्थोलोमियो ने अपनी पत्नी का समर्थन करते हुए कहा, "मैं तो फिर भी यही कहूँगा कि आप उनसे अवश्य ही परामर्श लें। वह कोई ऐसी राय नहीं देंगे जिससे आपका अहित हो।"

सभी बातें मैक्यावैली की योजना और आशा के अनुकूल हुई और वह उस रात को बड़ी शान्तिपूर्वक सो सका।

[१७]

अगले दिन हाट लगती थी। इसलिए बहुत सबेरे मैक्यावैली पीयरो को साथ लेकर बाज़ार गया और मोटे-ताज़े तीतरों से भरे हुए दो टोकरे ख़रीदे। दूसरी दुकान से उसने टोकरी भरे अंजीर ख़रीदे जो रिमनी नगर का विशेष उपहार था। वहां के अंजीर समस्त इटली में भेजे जाते थे।

उसने दोनों चीज़ें पीयरो को देकर कहा, "इन्हें बार्थोलोमियो के पास ले जाओ। पहले उनसे मेरा प्रणाम कहना और तब टोकरियाँ उनको दे देना।"

उन दिनों विदेशियों के आ जाने से इमोला की जनसंख्या बहुत बढ़ गई थी और खाने-पीने की चीज़ों के अभाव के कारण उनके दाम बहुत चढ़े हुए थे। इसलिए मैक्यावैली को पक्का यकीन था कि उसकी भेंट सहर्ष स्वीकार करली जाएगी। तब वह उस गिरजा-घर की ओर

मुड़ा जिसमें फ्रा टिमोटियो रहता था। यह गिरजा-घर बार्थोलोमियो के घर से अधिक दूर न था। गिरजा-घर की इमारत तो बड़ी विशाल थी किन्तु भवन-निर्माण-कला के कोई भी चिह्न उसमें दृष्टिगोचर नहीं हो रहे थे। जब मैक्यवैली वहाँ पहुँचा तो उस समय यह विशाल भवन सूनासा जान पड़ा। केवल दो-तीन स्त्रियाँ प्रार्थना भवन में आराधना कर रही थीं और एक नवागन्तुक व्यक्ति सहन में झाड़ू लगा रहा था। एक पादरी पूजागृह की वेदी के चारों ओर निरुद्देश्य-सा घूम रहा था। मैक्यावैली ने केवल एक उड़नी नज़र से भाँप लिया कि पादरी व्यस्त होने का ढोंग रच रहा है। उसने अनुमान लगाया कि अवश्य ही श्रीमती कैटेरीना ने उसके वहाँ आने की सूचना पहले से ही पादरी को दे रक्खी होगी।

मैक्यावैली पादरी के पास पहुँचकर अभिवादन-सा करता हुआ नम्र स्वर से कहने लगा, "मुझे क्षमा कीजिये, मैंने सुना है कि आप बड़े भाग्यशाली हैं जो कि आपके गिरजा में बड़ी विलक्षण देवी विराजती हैं। मेरी बड़ी लालसा है कि मैं उनकी वेदी पर दीपक जलाऊँ जिससे वह मेरी प्यारी पत्नी की प्रसव-पीड़ा को कुछ कम कर दें जो इस समय गर्भवती है।"

पादरी ने उत्तर दिया, "महाशय, यही हैं वह देवी। मैं अभी-अभी उनके वस्त्र बदल रहा था। यहां के सेवक तो इनको साफ़-सुथरा रखना ही नहीं जानते और तिस पर आश्चर्य करते हैं कि लोग इनकी उपासना को क्यों नहीं आते। मुझे वह दिन याद है जब इसी गिरजाघर में भक्त-जनों की भीड़ लगी रहती थी। आजकल तो बीस उपासक भी यहां कभी दिखाई नहीं देते। इसमें अपराध केवल हम लोगों का ही है। इन सेवकों को तो अपने कर्त्तव्य का लेशमात्र भी ध्यान नहीं।"

मैक्यावैली ने जलाने के लिए एक बड़ी-सी मोमबत्ती पसन्द की और बड़ी उदारता के साथ उसका मूल्य दो शिलिंग चुका दिया। जब पादरी

ने लोहे के एक दीपदान में उसे जलाया तो दत्तचित्त होकर उधर ही देखता रहा।

यह कार्य समाप्त होने के बाद वह पादरी से कहने लगा, "मैं आपको कुछ कष्ट देना चाहता हूँ। मैं एक अत्यावश्यक कार्य से फ्रा टिमोटिमो से एकान्त में मिलना चाहता हूँ। क्या आप कृपा करके यह बतला सकेंगे कि वह कहां होंगे।"

पादरी ने उत्तर दिया, "फ्रा टिमोटिमो मैं ही हूँ।"

"असम्भव! जान पड़ता है अवश्य ही इसमें दैव का ही हाथ है। कैसा चमत्कार है कि मैंने सबसे पहले जिसके दर्शन किए वही वह व्यक्ति निकला जिसकी मुझे तलाश थी।"

फ्रा टिमोटिमो ने कहा, "परमात्मा की इच्छा को कोई नहीं जान सकता।"

पादरी मंझोले क़द का आदमी था। वह स्वस्थ तो अवश्य दिखाई देता था किन्तु स्थूलकाय न था। मैक्यावैली ने उसे देखकर अनुमान लगाया कि यह पादरी उतने ही व्रत उपवास रखता होगा जितने धार्मिक उपचारों के लिए आवश्यक हों किन्तु उसमें पेटू होने का अवगुण भी नहीं हो सकता। उसके सिर की बनावट बड़ी सुन्दर थी। उसका सिर रूम के उस बादशाह के सिर की याद दिलाता था जिसकी सुन्दर आकृति भोग-विलास तथा असीमित अधिकारों के कारण विकृत तो नही हुई थी फिर भी उसमें क्रूर वासना की कुछ ऐसी झलक दृष्टिगोचर होती थी जो उस की निर्मम हत्या का कारण बनी थी। उसकी खोपड़ी कुछ ऐसी आकृति की थी जिससे मैक्यावैली भली-भांति परिचित था। उसके लाल होंठों, उसकी नुकीली नाक तथा उसके काले नेत्रों से महत्त्वाकांक्षा, मक्कारी और लालच के भाव स्पष्ट लक्षित हो रहे थे जो उसके भद्र आचरण और सरल भक्ति के आवरण में आच्छादित से थे। मैक्यावैली को यह समझते देर न लगी कि किस प्रकार इस व्यक्ति ने बार्थोलोमियो और उसके परिवार पर अपना अधिकार जमाया होगा। अपनी सहज बुद्धि से उसे निश्चय हो

को गया कि इस व्यक्ति से अपना काम निकालना कठिन नहीं है। मैक्यावैली को पादरियों से कुछ स्वाभाविक घृणा थी। वह उन्हें या तो धूर्त और लंपट समझता था या फिर निरा मूर्ख। संभवतः यह पादरी धूर्त था अतः उसके साथ सावधानी बरतने की ज़रूरत थी।

"बाबा, मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि मेरे मित्र मि० बार्थोलोमियो मारटैली ने आपकी बड़ी प्रशंसा की है। आपकी योग्यता और धार्मिकता के विषय में उनकी धारणा बहुत ऊँची है।"

"श्री बार्थोलोमियो हमारे गिरजा का प्यारा बेटा है। हमारा मठ अत्यन्त दरिद्र है और हम लोगों पर उसके दान का बड़ा भार है। किन्तु महाशय, क्या मैं जान सकता हूँ कि मैं किस से बात कर रहा हूँ?"

मैक्यावैली जानता था कि पादरी इस बात से अनभिज्ञ न था कि वह कौन है। फिर भी उसने इस भाव को दबाकर बड़ी गम्भीरता से कहा, 'मुझे अपना परिचय आपके पूछने से पहले ही देना चाहिए था। मेरा नाम निकोलो मैक्यावैली है और मैं फ्लोरेंस के मंत्रिमंडल के कार्यालय में सचिव के पद पर हूँ।"

पादरी ने झुककर अभिवादन करते हुए कहा, "मेरा अहोभाग्य है जो मैं ऐसे समृद्ध तथा वैभवपूर्ण राज्य के राजदूत से बातें कर रहा हूँ।"

"बाबा, आप तो व्यर्थ में ही मुझे बढ़ावा दे रहे हैं। मुझमें तो मानव जाति के समस्त अवगुण विद्यमान हैं। किन्तु हां, यह तो बताइए कि हम एकान्त में देर तक कहाँ वार्तालाप कर सकते हैं?"

"इसी स्थान पर क्यों नहीं? यह सेवक तो एकदम बहरा और जड़मूर्ख है तथा सामने जो तीन-चार स्त्रियां दिखाई दे रही हैं वे उपासना में इतनी संलग्न हैं कि हमारी बातचीत की ओर उनका ध्यान तनिक भी नहीं है। और यदि हो भी तो वे इतनी गँवार हैं कि हमारी बातचीत को समझ ही नहीं सकतीं।"

पूजागृह में प्रार्थना के लिए दो तिपाइयां पड़ी हुई थीं। उन्हीं पर वे दोनों बैठ गए। मैक्यावैली ने पादरी को बताया कि किस प्रकार सिन्यौरी ने उसे एक ऐसे धर्मोपदेशक को खोजने के लिए आदेश दिया है जो वहां के बड़े गिरजाघर में उपदेश दे सके।

मैक्यावैली के उपर्युक्त कथन से पादरी के चेहरे पर कोई भी भाव-परिवर्त्तन नहीं दिखाई दिया। पर जिस मनोयोग से वह उसके कथन को सुन रहा था उससे मैक्यावैली को विश्वास हो गया था कि गत रात्रि का सारा संवाद पादरी को पूरा-पूरा सुना दिया गया है।

मैक्यावैली ने सिन्यौरी की आवश्यकता से उसे अवगत कराते हुए कहना आरम्भ किया, "वे स्वभावतः ही बड़े व्यग्र हैं क्योंकि वे दुबारा वैसी भूल नहीं करना चाहते जो उन्होंने इस कार्य के लिए फ्रा गिरोलामो को नियुक्त करके की थी। यह तो ठीक है कि लोगों को उनके पापों का प्रायश्चित करने के लिए प्रेरणा दी जाय, किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि फ्लोरैन्स की समृद्धि उसके व्यापार पर ही निर्भर है। सिन्यौरी यह सहन नहीं कर सकती कि इस प्रायश्चित से देश की शांति और व्यापार में बाधा खड़ी हो। जिस प्रकार पापों की बहुलता देश के लिए हानिप्रद है उसी भाँति पुण्यों की बहुलता भी उसकी उन्नति में बाधक हो सकती है।"

"जहाँ तक मुझे स्मरण है अरस्तू का भी यही मत था।"

"ओह! आप तो बड़े विद्वान् हैं। पादरियों में विद्वत्ता का प्रायः अभाव ही पाया जाता है। यह तो बड़ी अच्छी बात है। फ्लोरैन्स वाले बड़े तार्किक और बाल की खाल निकालने वाले होते हैं। उपदेशक चाहे कैसा भी ओजस्वी वक्ता क्यों न हो किन्तु यदि वह विद्वान् नहीं है तो वहां की जनता उसे एक दिन भी कठिनता से टिकने देगी।"

फ्रा टिमोटियो ने बड़ी सावधानी से उत्तर दिया, "आपका कहना बिल्कुल सच है कि हमारे बहुत से भाई नितान्त मूर्ख हैं। कदाचित् आप इस विषय में मेरी सम्मति चाहते हैं कि क्या इमोला में आपके काम का

कोई व्यक्ति है या नहीं। किन्तु यह मामला विचारणीय है और इस पर अच्छी तरह गौर तथा पूछताछ किए बिना मैं कोई निर्णयात्मक उत्तर नहीं दे सकता।"

"मुझे बार्थोलोमियों तथा उस घर की महिलाओं से ज्ञात हुआ है कि आप बड़े कुशाग्रबुद्धि और ईमानदार व्यक्ति हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी सम्मति निष्पक्ष होगी।"

श्री बार्थोलोमियो के परिवार की महिलाएं तो बड़ी शीलवती हैं। यही कारण है कि उनकी मुझ पर असीम कृपा है।"

"मैं श्रीमती सेफेरीना के मकान में रहता हूं जो श्री बार्थोलोमियो के मकान के ठीक पिछवाड़े है। यदि आप अनुग्रह करके कल रूखा-सूखा भोजन हमारे घर पर ही करे तो इस विषय पर और भी बातें हो सकेंगी। मेरी नेक सेफेरीना को भी इस बात से बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप उसके घर में भोजन के लिए पधारे।"

फ्रा टिमोटियो ने शीघ्र ही उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। तब मैक्यावैली ने भी अपने घर की ओर प्रस्थान किया। किन्तु जाते हुए मार्ग में वह बार्थोलोमियो से मिलता गया।

उसने यह कहकर उससे कुछ धन उधार देने की मांग की कि अपने काम में मुझे धन पानी की तरह बहाना पड़ता है तथा आशा के विपरीत सिन्यौरी से अभी तक कुछ भी धन प्राप्त नहीं हुआ है। मैक्यावैली ने फ्लोरैन्स सरकार की कंजूसी की एक लम्बी सी कथा बनाकर सुना डाली और कहा कि केवल अपने पद की मान-मर्यादा रखने के लिए ही अपनी जेब से भी धन व्यय करना पड़ता है।

बार्थोलोमियो ने बीच ही में उसकी बात काटकर कहा, "प्रिय निकोलो, आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हमारे इस दरबार में बिना कुछ खर्च किए कोई भी समाचार मिलना कितना कठिन है। आपके लिए आप जो कुछ चाहें मैं हर्षपूर्वक देने को तैयार हूँ। कहिए आपको कितना धन चाहिए?"

"पच्चीस मुहरें।"

"बस इतनी ही। ठहरो मैं तुरन्त लाकर देता हूं।"

वह बैठक से बाहर निकला और कुछ ही क्षणों में मुहरें लाकर मैक्यावैली के हाथ पर रख दीं। अब मैक्यावैली को दुःख हुआ कि उसने अधिक धन क्यों न मांग लिया।

बार्थोलोमियो ने हंसकर कहा, "यदि आपको और भी धन की जरूरत पड़े तो निःसंकोच माँग लीजियेगा। इसमें सोच-विचार की कोई बात नहीं। मुझे अपना महाजन ही समझिये।"

मैक्यावैली जब धन लेकर घर की ओर चला तो सोचने लगा कि मूर्ख का धन शीघ्र ही उससे विदा हो जाता है।

[१८]

फ्रा टिमोटियो नियत समय पर भोजन करने के लिए उपस्थित हुआ। मैक्यावैली ने सैफेरीना को पहले से ही आदेश दे रखा था कि वह बाज़ार से अच्छी से अच्छी खाने पीने की वस्तुएँ ले आए तथा आग्रहपूर्वक पादरी को डटकर भोजन कराए। मैक्यावैली ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि पादरी का शराब का प्याला सदा भरा ही रहे। भोजन से निवृत्त होकर मैक्यावैली पादरी को अपनी बैठक में ले गया ताकि वे दोनों निर्विघ्न बातचीत कर सकें। मैक्यावैली ने बैठक में पहुंचते ही नौकर को आदेश दिया कि शराब की सुराही रख जाए।

"अच्छा तो अब काम की बातचीत होनी चाहिए," मैक्यावैली ने वार्ता-लाप का सिलसिला आरंभ किया।

टिमोटियो ने उसे बतलाया कि उसने पिछले दिन की बातचीत पर विशेष रूप से विचार किया है। उसने तीन ऐसे पादरियों के नाम बताए

जो अपने भाषणों के लिए प्रसिद्ध थे। उसने उनके गुणों का वर्णन ऐसी चतुराई से किया कि मैक्यावेली ने पादरी की बुद्धि की मन ही मन सराहना की। साथ ही उसने तीनों पादरियों का गुणगान करते हुए उनकी कुछ दुर्बलताओं को ऐसी सफाई से रखा कि उनके सारे गुणों पर पानी फिर जाय।

मैक्यावेली जोर से हँसा। "आपने सचमुच पादरियों का वर्णन बड़ी सचाई और निष्पक्षता से किया है। पर आपने जान-बूझकर एक ऐसे व्यक्ति की उपेक्षा की है जो विद्वता तथा पवित्रता में उन तीनों से कहीं बढ़कर है।"

"कृपा करके बतलाइए कि वे कौन महाशय हैं ?"

"फ्रा टिमोटियो।"

फ्रा टिमोटियो ने विस्मय के प्रदर्शन का बड़ा सुन्दर अभिनय किया।

मैक्यावेली मन ही मन कहने लगा, "कैसा पक्का अभिनेता है ! उपदेशक में अभिनेता के गुणों की ज़रूरत भी है। यदि सचमुच ही विदेश मंत्री ने मुझसे किसी धर्मोपदेशक को खोजने के लिए कहा होता तो अवश्य मैं इसी धूर्त पादरी की सिफ़ारिश करता।"

'श्रीमान्, आप तो हंसी कर रहे हैं।"

"आप ऐसा क्यों कहते हैं ? क्या यह संभव है कि मैं इतने महत्त्व-पूर्ण विषय पर व्यंग्य और हँसी से काम लूं ? मैं इतने दिनों से चुपचाप नहीं बैठा हुआ था। मुझे पता चला है कि इमोला के इतिहास में अपने उपदेशों से जनता को कभी किसी ने इतना प्रभावित नहीं किया जितना गत वर्ष आपने किया था। मैंने सुना है कि आपके वक्तव्य में अपूर्व लालित्य है और यह तो मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ कि आपकी वाणी में कितना मिठास है। आपकी आकृति तेजपूर्ण है और इस क्षणिक वार्तालाप से ही मैं इस परिणाम पर पहुँच गया हूँ कि आप सुदक्ष हैं, प्रवीण हैं तथा अनुभवी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपको जितना

ज्ञान धर्म का है उतना ही साहित्य का भी है।"

'श्रीमान्, आपने तो मुझे भ्रम में डाल दिया। आपकी सरकार को एक सुप्रसिद्ध पादरी की तलाश है, और मैं हूँ एक छोटे-से गिरजाघर का सामान्य पादरी और अत्यन्त दरिद्र। न तो मैंने ऊँचे कुल में ही जन्म लिया है और न मेरे ऐसे शक्तिशाली मित्र ही हैं जो वहां तक मेरी सिफ़ारिश पहुँचा सकें। मैं आपका बहुत ही आभारी हूँ जो आपने मुझे इतना मान दिया है। किन्तु जिस कार्य के लिए आप मुझे नियुक्त करना चाहते हैं उसके लिए में सर्वथा अयोग्य हूँ।"

"इसका निर्णय तो वही कर सकते है जो आपको आपकी अपेक्षा अधिक जानते हैं।"

मैक्यावैली मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। जो जाल वह अपने शिकार को फंसाने के लिए बिछा रहा था वह व्यर्थ ही नहीं जान पड़ा। शिकार धीरे-धीरे जाल की ओर बढ़ रहा था। उसने पादरी के शील और विनय की प्रशंसा की थी और अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से उसके अन्तर-तम के भावों को देखने का प्रयास किया था जहाँ उसे प्रत्यक्ष ही लालच और महत्वाकांक्षा की झलक दृष्टिगोचर हो रही थी। उसको निश्चय होता जा रहा था कि उसने पादरी को ऐसा लालच दिखाया है जिसके द्वारा वह उससे जो चाहे काम करा सकता है।

"पर मैं आपको यह स्पष्ट न बताकर पाप का भागी नही बनना चाहता कि फ्लोरैंस में भे एक साधारण स्थिति का व्यक्ति हूँ। मैं केवल अपनी सम्मति प्रगट कर सकता हूँ किन्तु अन्तिम निर्णय अध्यक्ष के हाथ में है।"

फ्रा टिमोटियो ने मुस्कराकर उत्तर दिया," मुझे तो विश्वास नहीं होता कि जिस व्यक्ति को अध्यक्ष ने राजदूत बनाकर इमोला भेजा है उसकी सम्मति की अपेक्षा की जा सकती है।

"हां, यह तो सच है कि नये अध्यक्ष पीयरो सौडरेनी मेरे मित्र हैं और यह बात भी मैं बिना अहंकार कह सकता हूँ कि उसका भाई,

वोल्टेरा के मुख्य पादरी, मेरी ईमानदारी और समझदारी में श्रद्धा रखते हैं।

वह बात कहकर मैक्यावैली फ्रा टिमोटियो को वह घटना सुनाना चाहता था जब सीज़र बोर्जिया के पास एक मिशन में मैक्यावैली भी मुख्य पादरी के साथ अरबीनो गया था। यह पादरी उस समय केवल विशप था और यह मिशन विटेलोज्जों के अरज्ज़ो पर आक्रमण के विरुद्ध गया था।

स्वभावत: ही इस घटना के साथ ही साथ उसने यह भी बता दिया कि उसने पीसा के युद्ध में किस प्रकार सक्रिय भाग लिया था और राजदूत बनकर फ्राँस गया था। इन घटनाओं में जानबूझकर वह अपना महत्व कम ही दिखाता रहा। पर साथ ही ऐसे संकेत भी वह देता रहा जिससे पादरी को यह अनुभव हो कि सब कामों में बड़ा हाथ उसी का था। उसने इस लच्छेदार ढंग से राजाओं, राजकुमारों, धर्माध्यक्षों और सेनापतियों के बारे में विनोद-पूर्ण बातें सुनायीं जिससे सुनने वाले पर यह असर पड़े कि उसकी बात इटली व फ्राँस में सर्वत्र सुनी जाती है। राज्य के कोई भी रहस्य उससे गुप्त नही हैं और केवल कोई मूर्ख ही इस बात में संदेह कर सकता है कि उसने जितना वृत्तान्त सुनाया है वह जानता उससे कहीं अधिक है। फ्रा टिमोटियो विस्मय से मुग्ध हो गया।

"श्रीमान्, आप अनुमान भी नहीं कर सकते कि मुझे आप जैसे विद्वान् और अनुभवी सज्जन के साथ वार्तालाप करने में कितना ग र्व हो रहा है। मैं तो मानो स्वर्ग का दर्शन कर रहा हूँ। हम कूप-मंडूक की भाँति हलचलों से विहीन इस छोटे से कस्बे में निवास करते हैं। इसलिए बाकी दुनिया की कोई जानकारी हमें नहीं होती। हम लोगों में थोड़ी बहुत प्रतिभा होती भी है तो उपयोग न होने के कारण प्राय: नष्ट हो जाती है। उस व्यक्ति को बड़े धैर्य से काम लेना पड़ता है जिसका सारा जीवन मूर्खों के बीच में रहकर ही व्यतीत होता हो।"

"जो कुछ मैं आपके विषय में जानता हूँ और जो कुछ मैंने सुना है उससे मुझे दुख होता है कि आप जैसा गुणवान व्यक्ति इस स्थान में अपना जीवन नष्ट करे। बुद्धि के विषय में बाइबिल में जो कथा आई है उसे आपको सुनाना सूरज को दीपक दिखाने के समान है।

"मेरे मन में भी ऐसी बातें कई बार आई हैं। मैंने अपनी ईश्वरदत्त प्रतिभा को मिट्टी में मिला दिया है और जब मेरा बनाने वाला मुझ से इसका कारण पूछेगा तो मेरे पास कोई उत्तर नहीं।"

"देखिये, एक व्यक्ति दूसरे के लिए केवल अवसर जुटा सकता है। फिर यह उस दूसरे व्यक्ति का काम रह जाता है कि वह उस अवसर से अधिकाधिक लाभ उठाये।"

"इस कोने में पड़े हुए पुजारी को कौन अवसर प्रदान करेगा ?"

"आप मुझे अपना मित्र ही समझें और मेरा जो भी थोड़ा-बहुत प्रभाव है आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत है। जब मैं आपका नाम वोल्टेरा के धर्माध्यक्ष को सुनाऊँगा तब आप भी कोने में पड़े न रहेंगे। आप जसे शील स्वभाव वाले व्यक्ति को स्वयं कुछ कहने में अवश्य ही संकोच होगा। इसलिए मैं ही अपने मित्र बार्थोलोमियो से इस विषय में चर्चा करूँगा और उसे इस बात पर सहमत कर लूंगा कि वह अपने फ्लोरेंस में सम्बन्धियों से आपकी सिफ़ारिश करने के लिए ज़ोर दे।"

फ्रा टिमोटियो के हाथों पर फीकी मुस्कान फैल गई। वह बोला, "हमारा प्रिय बार्थोलोमियो ! यह सच है कि वह नेक है। पर साथ ही यह भी कहना पड़ेगा कि वह आवश्यकता से अधिक सीधा है। उसमें बत्तख जैसा भोलापन तो है परन्तु सर्प जैसी कुटिलता नहीं है।"

इस प्रकार मैक्यावैली अपने वार्तालाप को उसी विषय पर खींच लाया जो उसका मुख्य उद्देश्य था। उसने खाली प्यालों में तेज़ शराब ढाली। अंगीठी से निकलती हुई बड़ी सुहावनी गर्मी से बैठक आरामदेह हो गयी थी।

"निसंदेह बार्थोलोमियो अत्यन्त योग्य व्यक्ति है। मुझे रह-रहकर

विस्मय होता है कि जो व्यक्ति अपने व्यवसाय में इतना सुदक्ष हो वह सांसारिक मामलों में इतना अनभिज्ञ कैसे रह गया है। पर इस बात से उसका आदर मेरे मन में कम नहीं हुआ है। उसको सदा सुखी और समृद्ध देखने के लिए मैं सब कुछ करने को तत्पर हूँ। आपका तो उस पर काफी प्रभाव है ?"

"यह उसका भलापन है कि वह मेरे उपदेशों का कुछ मूल्य समझता है।'

"इस बात से भी उसकी सज्जनता प्रकट होती है। कैसे दुःख की बात है कि ऐसे योग्य व्यक्ति की हार्दिक कामना पूरी न हो।"

फ्रा टिमोटियो ने मैक्यावैली को प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"यह तो मेरी तरह आपभी भली भांति जानते होंगे कि एक पुत्र के लिए वह अपनी आधी सम्पत्ति का भी त्याग कर सकता है।"

"सचमुच ही पुत्र की लालसा ने उसे पागल-सा बना डाला है। इसके अतिरिक्त दूसरी बात तो वह करता ही नहीं। हमने उसकी मनोकामना पूरी करने के लिए कई बार अपनी देवी से प्रार्थना भी की है किन्तु सफलता नही मिली। इस कारण वह मुझसे कुछ अप्रसन्न भी है कि देवी ने उसकी कोई सहायता नहीं की। पर वास्तव में उसका यह लांछन एकदम अनुचित है क्योंकि वह बिचारा स्वयं एकदम नपुंसक है।

"फ्लोरेन्स के समीप ही सेन कैसियानो में मेरी कुछ भूमि है। वेतन तो मुझे साधारण-सा ही मिलता है। इसलिए जीवन-यापन के लिए मैं कुछ तो जंगल की लकड़ी बेच लेता हूं और कुछ खेती करवा कर थोड़ा-सा धन कमा लेता हूँ। मेरे पास कुछ गायें भी हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि हम जो सांड मोल लेते हैं वह देखने में तो स्वस्थ और पुष्ट होता है पर किसी कारण से दुर्भाग्यवश वह हमारे मित्र बार्थोलोमियो की ही भांति सर्वथा अयोग्य सिद्ध होता है। ऐसी

अवस्था में उस साँड को कटवाकर उसका मांस बेच लेते हैं और उसके मूल्य से दूसरा सांड मोल ले लेते हैं।"

फ्रा टिमोटियो अब अपनी हंसी न रोक सका। वह बोला, "पर इंसान के बारे में तो यह बात लागू नहीं हो सकती।"

"आवश्यक भी नहीं। पर सिद्धान्त तो एकदम सत्य है।"

पादरी मैक्यावैली का अभिप्राय समझने के लिए कुछ क्षण के लिये सोच में डूब गया। पर उसका अभिप्राय समझते ही उसके होंठों पर फिर मुस्कराहट छा गई।

"श्रीमती औरेलिया एक सती-साध्वी संभ्रान्त स्त्री है। दूसरे उस पर उसके पति और मां का कड़ा पहरा है। बार्थोलोमियो में इतनी समझ तो बाकी है ही कि एक रूपवती और नवोढ़ा युवती नगर के आवारा युवकों के लिए आकर्षण का कारण हो सकती है। इसके अतिरिक्त श्रीमती कैटेरीना का सारा जीवन गरीबी और विपत्तियों में कटा है। अब जब उसे अपनी इस आयु में थोड़ा-सा आराम मिला है तो वह उसे अपनी लड़की की नासमझी के कारण खोना कभी पसन्द न करेगी।"

"फिर भी ऐसा प्रबन्ध हो सकता है कि उसकी नासमझी का कार्य ही सबसे अधिक समझदारी का कार्य सिद्ध हो। गोद में खिलाने के लिए एक नाती भी होने से कैटेरीना की स्थिति और भी सुदृढ़ हो जाएगी।"

"इस बात से तो मैं इन्कार नहीं कर सकता। ड्यूक ने जब से बार्थोलोमियो को जागीर तथा उपाधि प्रदान की हैं, तब से किसी उत्तराधिकारी के लिए उसकी लालसा और भी अधिक बढ़ गई है। दोनों महिलाओं को यह भेद मालूम हो गया है कि वह अपने भांजों को दत्तक पुत्र बनाना चाहता है। फोर्ली में उसकी एक विधवा बहिन रहती है जो इस शर्त पर अपने बच्चों को गोद देने के लिए तैयार है कि वह भी अपने बच्चों के पास ही रहेगी।"

"यह तो स्वाभाविक ही है कि माँ बच्चों से अलग रहना पसन्द न करेगी।"

"निस्संदेह। इसीलिए कैटेरीना और औरेलिया का भविष्य बड़ा अन्धकारमय दिखाई देता है। वे खूब समझ रही हैं कि उनकी स्थिति उस अवस्था में बड़ी भयंकर और विषम हो जाएगी। श्रीमती औरेलिया को दहेज में कुछ भी नहीं मिला था। बार्थोलोमियो मूर्ख और दुर्बल प्रवृत्ति का मनुष्य है। उसके दत्तक पुत्रों की माँ श्रीमती कौन्सटैन्ज़ा उसकी पत्नी के प्रभाव को कम कर देगी। उसको वह बड़े गर्व से बांझ कहेगी और शीघ्र ही घर की स्वामिनी बन जाएगी। श्रीमती कैटेरीना ने मुझसे कई बार विनती की है कि मैं बार्थोलोमियो को दत्तक पुत्र लेने से रोक दूं और उसकी बहिन की समस्त आशाओं पर पानी फेर दूं जो उसके तथा उसकी बेटी के लिए अभिशाप रूप सिद्ध होगी।"

"क्या बार्थोलोमियो ने भी इस विषय में आपका परामर्श लिया है?"

"यह तो बिल्कुल स्वाभाविक ही था।"

"और आपने क्या परामर्श दिया है?"

"मैंने अभी बात टाल दी है। उसकी बहिन का पुरोहित जो फ़ोर्ली में है डोमनिक शाखा का है और यदि वह यहाँ आई तो अपना पुरोहित भी उसी शाखा का बनाएगी। डोमनिकों से हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण नहीं है। हम बार्थोलोमियो की दया पर आश्रित हैं। इसलिए यह हमारा दुर्भाग्य ही होगा कि हमारे प्रयत्नों से निराश होकर श्रीमती कौन्सटैन्ज़ा, किसी और पर कृपावान हो जाएं।"

"मैं स्पष्ट समझ रहा हूं कि आपकी स्थिति कितनी नाज़ुक बन गई है। इसके निवारण का वही हल संभव है जिसका संकेत मैं पहले कर चुका हूं।"

पादरी ने मुस्कराते हुए कहा, "किन्तु ऐसा करने में घोर पाप भी तो लगेगा।"

"इसमें तो कोई संदेह नहीं कि थोड़े से पाप के आप अवश्य भागी

होंगे। पर क्या आपने उससे होने वाले सुपरिणाम की ओर ध्यान दिया है ? मुझे तो इसमें सबका कल्याण ही दिखाई देता है। इससे एक योग्य व्यक्ति की अभिलाषा पूरी होने से उसे तो परम आनन्द का लाभ होगा ही, साथ ही दो संभ्रान्त महिलाओं का भी संकट दूर होगा। तथा सबसे बढ़कर एक बड़े भारी दानी की कृपा आपकी शाखा के महन्तों पर बनी रहेगी। यदि मैं अंजील के एक दृष्टान्त की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूं तो यह मेरी केवल धृष्टता ही होगी। पर मैं यह कहने का साहस अवश्य करूंगा कि यदि स्मरिया की स्त्री ने व्यभिचार न किया होता तो हमारे धर्म के संस्थापक यीशुमसीह ने धैर्य और क्षमा का वह निर्देश न किया होता जो हम पापियों के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण आधार है।

"श्रीमान्, आपका तर्क अकाट्य है।"

"आखिर मैं भी इंसान ही हूँ। मै आपसे यह नहीं छिपाऊँगा कि श्रीमती औरेलिया की अपार सुन्दरता ने मेरे हृदय में ऐसी उत्कट वासना जाग्रत कर दी है कि उसे तृप्त करने के लिए मैं अपने प्राणों की भी बाज़ी लगा दूंगा।"

फ्रा टिमोटिमो ने इस बार बडी रुखाई से उत्तर दिया, "मैंने स्वप्न में भी कल्पना नही की थी कि बार्थोलोमियो तथा उन महिलाओं के कल्याण की बात के पीछे आपके हृदय की पाप वासना छिपी हुई थी।"

"आपका मठ निर्धन है और आपकी दया पर अनेकों व्यक्तियों का निर्वाह होता है। आपका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मैं आपको पच्चीस सुवर्ण मुद्राएँ दे सकता हूँ।"

लालच से पादरी के नेत्र चमक उठे।

वह बोला, "कब ?"

"अभी।" यह कहकर मैक्यावैली ने अन्दर की जेब से मुद्राओं की एक थैली निकाली और बड़ी लापरवाही के साथ मेज पर पटक दी। काठ से टकरा कर मुद्राओं से एक मधुर झंकार निकल कर गूंज गई।

"श्रीमान् जी, आपकी जादूभरी बातों तथा सद्व्यवहार ने मुझे मुग्ध कर दिया है। किन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं आपके किस काम आ सकता हूँ।"

"मैं आपसे कोई ऐसा काम करने के लिए नहीं कहूँगा जो आपकी अन्तरात्मा के प्रतिकूल हो। मैं केवल आपसे इतनी सहायता चाहता हूँ कि आप श्रीमती कैटेरीना से मेरे एकान्त में मिलने का प्रबंध कर दें।"

"इसमें तो कोई हानि नहीं है। पर आपको इससे कुछ लाभ न पहुँचेगा। बार्थोलोमियो मूर्ख अवश्य है, पर वह है पूरा व्यापारी। इसलिए वह कोई अनावश्यक खतरा उठाने के लिए तैयार न होगा। जब कभी उसे कार्य से कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ता है तो उसकी अनुपस्थिति में उसका नौकर लोगों की लोलुप दृष्टि से श्रीमती औरेलिया की रक्षा करता है।"

"यह तो मैं भी खूब समझता हूँ। पर फिर भी हमारे मित्र बार्थोलोमियो को आपके ऊपर पूरा भरोसा है। वह कई बार श्रीमती औरेलिया को लेकर कुंडों में स्नान करने के लिए जा चुका है तथा उन महात्माओं के आश्रमों की भी खाक छान चुका है जो बांझ स्त्रियों को पुत्रवती होने का वरदान देने के लिए प्रसिद्ध हैं। अब आपको केवल इतना सा ही कार्य करना है कि आप बार्थोलोमियो को यह विश्वास दिला दें कि यदि वह अपने नौकर को लेकर सान विटेल की समाधि पर जाकर, एक रात प्रार्थना करे तो श्रीमती औरेलिया अवश्य ही गर्भवती होंगी।"

"सान विटेल अवश्य ही एक पहुँचे हुए महात्मा थे तभी तो गिरजाघर ने उसके सम्मान में उसकी समाधि बनवाई है। किन्तु आपके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि सान विटेल की अस्थियों में इतना चमत्कार भरा है कि किसी की नपुंसकता को दूर करदे?"

"महात्मा का नाम ही उसके गुणों का द्योतक है और बार्थोलोमियो को महात्मा के चमत्कारपूर्ण गुणों का उससे अधिक ज्ञान नहीं जितना मुझे या आपको है। डूबते को तिनके का सहारा चाहिए। यह स्थान

इमोला से केवल २० मील के अन्तर पर है। क्या आप सोचते हैं कि हमारा मित्र अपनी हार्दिक इच्छा को पूरी करने के लिए इस सामान्य प्रस्ताव को ठुकरा देगा ?"

"अच्छा मैं आपकी ही बात मानता हूँ। पर क्या मैं आपसे एक और प्रश्न पूछ सकता हूँ ? आप किस आधार पर यह बात सोचते हैं कि औरेलिया जैसी नेक और धर्मभीरु स्त्री आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी ? क्या आपने उस पर अपनी अभिलाषा प्रगट की है ?"

'हम दोनों के बीच कोई विशेष वार्तालाप नहीं हुआ है। पर तो भी यदि वह अन्य स्त्रियों से एकदम ही भिन्न नहीं है तो जो दो एक बातें हम दोनों के बीच हुई हैं उनसे उसने अवश्य ही मेरे आन्तरिक भावों को ताड़ लिया होगा। प्रत्येक स्त्री में दो दोष अवश्य होते हैं, एक तो दूसरों के भेद जानने की उत्सुकता और दूसरे घमंड।"

"ये तो कोई बड़े दोष नहीं," पादरी ने बात काट कर कहा।

"तो भी प्रायः स्त्रियाँ वासना के कारण नहीं, इन्हीं प्रवृत्तियों के कारण धर्म के संकीर्ण पथ से डिग जाती हैं।"

पादरी ने उत्तर दिया, "सच तो यह है कि मुझे इस विषय में अधिक जानकारी ही नहीं है। इन मामलों में मुझे कोरा ही समझिये।"

"जब आप अपनी प्रतिभा के बल से अपने योग्य पद पर पहुँचेंगे तब आप यह जानेंगे कि मनुष्यों को वश में करना उनके पुण्य कार्य की प्रशंसा करने अथवा पाप-मार्ग में उन्हें बढ़ावा देने से उतना संभव नहीं जितना उनकी दुर्बलताओं के प्रति सहानुभूति प्रगट करने से संभव है।"

"आपकी योजना बड़ी चतुरतापूर्ण है और मुझे अब इस बात में भी संदेह नहीं रहा कि आप श्रीमती कैटेरीना को अवश्य ही अपनी सहायता के लिए राजी कर सकेंगे। वह किसी भी ऐसे कार्य के लिए तैयार हो जायगी जिससे बार्थोलोमियो दत्तक पुत्र लेने से रुक जाए। पर मैं औरेलिया के स्वभाव से भली-भांति परिचित हूँ। उसको न तो आप और न उसकी मां ही पाप की ओर खींच सकती है।"

"संभव है। पर बहुत सी बातें दूर से देखने पर विचित्र और भयावह जान पड़ती हैं, पर पास पहुँचने पर वे ही स्वाभाविक सरल और युक्ति-संगत लगने लगती हैं। कोई कारण नहीं कि औरेलिया अन्य स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती हो। क्या आप उसे इतनी-सी छोटी बात भी नहीं समझा सकते कि यदि किसी कार्य को करने से एक फल तो निश्चय ही कल्याणकारी मिलता है और दूसरा बुरा फल अनिश्चित् है तो क्या केवल उस बुराई से डरकर उस कार्य को न करना भूल नहीं है? निश्चय ही कल्याणकारी फल तो यह है कि वह गर्भवती होगी और इस प्रकार एक अमर आत्मा को जन्म देगी और अनिश्चित् बुराई यह है कि कहीं इस बात का पता न चल जाय। पर यदि सावधानी रखी जाए तो यह खतरा सहज ही दूर हो सकता है। जहां तक पाप का सम्बन्ध है, पाप आत्मा से होता है शरीर से नहीं। अपने पति का दिल दुखाना पाप है उसे सुख पहुंचाना पुण्य। इस कार्य से उसके पति को सुख और शान्ति ही मिलेगी। किसी कार्य के करते समय सदा उसके लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए। इस कार्य का परिणाम होगा अपने पति की मनोकामना पूरी करके स्वर्ग में स्थान प्राप्त करना।"

फ्रा टिमोटियो उत्तर दिए बिना मैक्यावैली की ओर एकटक देखने लगा। मैक्यावैली को ऐसा लगा मानो वह बड़े प्रयत्न से अपनी हँसी को रोक रहा हो। पादरी की दृष्टि तब मैक्यावैली से हटकर मेज़ पर पड़ी जहां स्वर्ण-मुद्राओं से भरी थैली तब भी रखी हुई थी।

अन्त में वह बोला, "महोदय, आपको इस काम पर ड्यूक के पास भेजने की सलाह किसी ने अध्यक्ष को ठीक ही दी होगी। मैं आपके इरादों को बुरा भले ही कहूं पर आपकी चतुरता की सराहना किए बिना नहीं रह सकता।"

मैक्यावैली ने उत्तर दिया, "प्रशंसा का मेरे ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ता है।"

"आप मुझे इस विषय में कुछ सोचने का अवसर दीजिए।"

"क्षण की प्रेरणा पर भरोसा करना सदा उचित होता है। पर क्षमा कीजिए, मैं ज़रा शौच से निवृत्त हो आऊँ। यहां की स्थानीय शराब बड़ा अपच करती है।"

मैक्यावैली ने लौटकर देखा पादरी उसी प्रकार बैठा हुआ है पर मुद्राओं की थैली अपने स्थान पर नहीं है।

"कैटेरीना शुक्रवार को प्रायश्चित कराने के लिए अपनी पुत्री को गिरजाघर में लाएगी। जिस समय औरेलिया प्रायश्चित में व्यस्त हो उस समय कैटेरीना से एकांत में बातचीत कर सकेंगे।"

[१६]

अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए मैक्यावैली को सुनहला अवसर मिल गया और उसने उसका पूरा उपयोग किया। कोई विवशता न हो तो वह देर से सोकर उठने का आदी था। जिस दिन फ्रा टिमोटियो से उसकी बातचीत हुई थी उसके अगले दिन जब वह सोकर उठा तो सूर्य आकाश में काफी ऊंचा चढ़ आया था। वह चारपाई से उठा और कपड़े पहिन कर रसोईघर में पहुँचा जहां सैराफीना ने उसे हल्का-सा नाश्ता दिया। फिर आंगन में जाकर उसने कुंए से जल खींचकर ठिठुरते हुए हाथ-मुंह धोया। तब वह आवश्यक कागजों को लाने के लिए ऊपर कमरे में गया। उसने बाहर का मौसम देखने के लिए खिड़की खोली। उसी समय अचानक उसको नीना दिखाई पड़ी जो बार्थोलोमियो की छत पर एक स्टूल और कुर्सी लिए हुए आ रही थी। कुछ दिनों से आकाश में बादल छाये थे और कभी-कभी बूंदा-बांदी भी हो जाती थी। पर उस दिन प्रातःकाल ही आकाश स्वच्छ हो गया था और चारों ओर सूरज का उज्ज्वल प्रकाश फैल रहा था। उसने नीना के वहां कुर्सी व स्टूल लाने के कारण का मन में अनुमान लगाया। उसी समय औरेलिया

भी वहां आ पहुँची। उसने अपने शरीर पर एक दुलाई लपेट रक्खी थी और उसके हाथ में चटाई का एक टोप था। मैक्यावैली का अनुमान ठीक था। धूप खिली हुई थी इसलिए औरेलिया ने अपने केश रँगने के लिए खुले हुए दिन का लाभ उठाया था। वह कुर्सी पर बैठ गई और नौकरानी ने उसके सुन्दर काले बालों को अपने हाथों में ले लिया और उनको टोप में बाहर निकालने लगी जिन पर चंदवा न था केवल चौड़ा छज्जा था। तब उसने टोप को औरेलिया के सिर पर रख दिया और बालों को टोप के छज्जे पर फैला दिया जिससे उनपर सूर्य की किरणें पड़कर रंग को अधिक चमकीला बनादें।

मैक्यावैली ने अपनी योजना बदल दी। उसने पत्रों को बाद में लिखने का निश्चय किया और ल्यूट लेकर मकान की सब से ऊपरी मंजिल पर चढ़ गया और एक खुले हुए बरांडे में जा बैठा। जिस समय वह उस स्थान पर पहुँचा नौकरानी काम करने अन्दर चली गई थी और औरेलिया वहां अकेली ही थी। अपने टोप का छज्जा अधिक चौड़ा होने के कारण वह मैक्यावैली को न देख सकती थी। दूसरे वह अपने केशों के रंग को ठीक बनाने में इतनी तल्लीन थी कि उसको और किसी वस्तु का ध्यान ही न था। किन्तु जब मैक्यावैली ने गाना प्रारम्भ किया तो वह सहसा चौंक पड़ी। उसने अपना टोप किंचित ऊंचा किया और उस सकरे मार्ग की ओर देखा जो दोनों घरों को अलग करता था। इससे पहले कि मैक्यावैली की आँखें उसकी आँखों से मिलें, उसने अपनी दृष्टि नीची करली।

मैक्यावैली एक छोटा-सा प्रेमगीत ऐसे गाने लगा मानो वह अपने को सुनाने के लिए गा रहा हो। गीत स्वभावतः ही प्रेम विषयक था जिसका भाव कुछ इस प्रकार का था कि किसी प्रेमी का हृदय प्रेमिका के नेत्र-बाणों से बिद्ध है। क्या ही अच्छा होता यदि एक क्षण के लिए भी वह अपनी प्रेमिका की याद भुला सकता। औरेलिया इस समय उसके वश में थी। वैसे वह लज्जा से उठकर और कहीं चली भी जाती

किन्तु बालों के रंग को पक्का करने के लिए धूप अत्यन्त आवश्यक थी। वह अच्छी तरह जानता था कि कोई भी स्त्री लज्जा के कारण अपने शृङ्गार-प्रसाधन को नष्ट न होने देगी। वह सोचने लगा अपने प्रति उसके भावों के बारे में अब तक चाहे औरेलिया को कुछ सन्देह भी रहा हो पर अब अवश्य ही वह दूर हो गया होगा। वह निश्चय ही अनुभव करने लगी होगी कि मैक्यावैली उस पर आसक्त है। उसने सोचा ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता है इसलिए उससे लाभ उठाना चाहिए। किसी समय उसने अपनी प्रेमिका फैनिसे के लिए एक गीत बनाया था जिसमें प्रेमिका को इस दुनिया में सुन्दरता की अद्वितीय मूर्ति बताया गया था। उस गीत में धुन बिगाड़े बिना ही फैनिसे के स्थान में औरेलिया रखना कठिन न था। ल्यूट के साथ मिला हुआ उसका स्वर हवा में मस्ती-सी फैला रहा था। औरेलिया स्थिर बैठी थी। उसका मुख चौड़े टोप तथा लटके हुए बालों से छिपा हुआ था पर मैक्यावैली को लगा मानो बड़ी तन्मयता से वह उसका गीत सुन रही है। वह बस यही चाहता था। पर अभी उसने सिर्फ दो ही पद गाए थे कि औरेलिया ने एक छोटी-सी घंटी बजाई जिसे अवश्य ही वह नौकरानी को बुलाने के लिए ले आई थी। मैक्यावैली ने गाना बन्द कर दिया। नीना आई और औरेलिया उससे कुछ कहकर कुर्सी से उठ गई। नौकरानी ने कुर्सी उठाकर छत के दूसरे भाग में रखदी। औरेलिया भी वहीं चली गई और नौकरानी स्टूल ले जाकर वहीं बैठ गई। दोनों में बातचीत होने लगी और मैक्यावैली मन में सोचने लगा कि वह नौकरानी को अब उसके उठने तक वहां से न जाने देगी। पर इस बात से उसको असंतोष नहीं हुआ। वह उठकर नीचे अपने कमरे में चला आया। बक्स का ताला खोलकर उसने काग़ज़ात निकाले और मंत्रिमंडल को पत्र लिखने में डूब गया।

[२०]

मैक्यावैली प्रायः गिरजाघर की पूजा में सम्मिलित नही होता था। उस दिन शुक्रवार को भी वह उस पुनीत स्थान में घुसने के पहले इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि कब सन्ध्या की प्रार्थना समाप्त हो और भीड़ छटे। वह ठीक उस समय अंदर पहुँचा जब फ्रा टिमोटियो प्रायश्चित भवन के अंदर जा रहा था। औरेलिया भी एक क्षण बाद महन्त के पीछे चली गई। कैटेरीना अकेली ही प्रार्थनागृह में बैठी थीं। मैक्यावैली उस के पास चला आया। उसे देखकर कैटेरीना को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैक्यावैली ने अनुमान लगाया कि महन्त ने उसे पहले से ही सूचना दे रक्खी होगी और वह उसी की प्रतीक्षा कर रही होगी। मैक्यावैली ने इधर-उधर की बात करना बेकार समझा और सीधे ही उससे कहा कि वह उसकी बेटी पर आसक्त है और उससे प्रार्थना की कि वह उसकी ओर से वकालत करदे।

कैटेरीना रुष्ट होने की बजाय प्रसन्न सी दीख पड़ी और बोली, "अनेकों व्यक्तियों ने इसके पूर्व मेरी पुत्री का सतीत्व डिगाने का प्रयत्न किया है पर कोई सफल न हुआ। मि. निकोलो, मैंने उस पर बड़ा कड़ा शासन रक्खा है। विवाह से पहले वह निष्कलंक कुमारी ही रही और जिस दिन से उसका विवाह बार्थोलोमियों से हुआ है वह सदा ही निष्ठावान तथा पतिव्रता रही है।"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ उसे कुछ करने का अवसर ही नहीं मिला।"

कैटेरीना ने हल्की पर निर्लज्ज हँसी के साथ उत्तर दिया, "मि० निकोलो, आप अनजान नही हैं। अगर कोई स्त्री अपने पति के साथ छल करना चाहे तो सात तालों मे बंद करके रखने पर भी उसे रोका नहीं जा सकता।"

"श्रीमती कैटेरीना, आपकी बात की सचाई का इतिहास साक्षी है।

आपकी बातचीत से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि आप जैसी महिला से सब बातें खुलकर की जा सकती हैं।"

कैटेरीना ने मैक्यावैली की ओर देखकर कहा, "मैने अपने जीवन में अनेकों कष्ट झेले है। मेरी जिन्दगी की नाव भयंकर आंधी में समुद्र पर डाँवाडोल होती हुई अब किनारे पर आ लगी है। मुझ में इतना साहस नही कि उसे एक बार फिर मुसीबतों के उसी समुद्र में छोड़ दूँ।"

"यह तो मैं अच्छी तरह समझता हूँ। पर क्या आपकी नौका का लंगर मजबूत है ? क्या आप समझती हैं कि आपका जीवन इसी भाति सुख-पूर्वक बीतता रहेगा ?"

कैटेरीना ने कोई उत्तर नही दिया पर मैक्यावैली उसकी मौन व्याकुलता को ताड़ गया और उसने फिर कहना आरम्भ किया, "क्या मेरा यह अनुमान असत्य है कि यदि थोड़े समय में ही औरेलिया के पुत्र नहीं हुआ, जिसके लिए उसका पति इतना व्यग्र है, तो वह श्रीमती कौस्टेन्जा के दोनों पुत्रों को गोद ले लेगा ?"

श्रीमती कैटेरीना तब भी मौन रही।

"श्रीमती जी, आप तो स्वयं अनुभवी हैं। मुझे यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि उस दशा में आपकी और आपकी पुत्री की क्या स्थिति होगी।"

दो बड़े-बड़े आँसू कैटेरीना की आँखों से निकल कर उसके गालों पर ढुलक पड़े। मैक्यावैली ने उसका हाथ थपथपा कर उसे ढाढ़स दिया।

"तीव्र परिस्थिति का इलाज भी तीव्र ही होना चाहिए।"

उसने निराश भाव से अपने कंधे उचकाए। "मैं किसी प्रकार औरे-लिया को तैयार भी करलूँ तो भी अवसर मिलना कठिन है।"

"क्या आपकी पुत्री मुझसे घृणा करती है ?"

श्रीमती कैटेरीना ने हँस कर उत्तर दिया, "आपकी बातों पर उसे हँसी आती है और स्त्री का मन जीतने के लिए विनोद की बातों का उतना ही प्रभाव पड़ता है जितना सुन्दर मुखड़े का।"

"श्रीमती जी, आपका हृदय भी मेरे जैसा ही है। अच्छा यदि ऐसा अवसर हाथ आजाए कि बिना आशंका के हम दोनों की मनोकामनाएँ पूर्ण हों सकें तो क्या आप मेरी सहायता न करेंगी ?"

"केवल उसके डर को ही तो दूर नहीं करना है, उसकी धार्मिक भावनाओं का भी तो प्रश्न है।"

"जितना आप कर सकें कीजियेगा। बाकी फ्रा टिमोटियो पर छोड़ देंगे। वह संन्यासियों को पसन्द नहीं करता।"

कैटेरीना को हँसी आगई, "मि० निकोलो, आप सचमुच बड़े अच्छे आदमी हैं। आप मुझे पसन्द करें तो मैं इन्कार नहीं करूँगी।"

मैक्यावैली ने मन ही मन कहा, "खूसट"। फिर प्रगट में प्यार से बोला, "यदि मैं आपकी पुत्री से इतना प्रेम न करता होता, तो आपकी बात अवश्य मान लेता।"

"औरेलिया आ रही है।"

"अच्छा मैं जाता हूँ।"

मैक्यावैली चुपचाप गिरजाघर से खिसक आया और एक सुनार की दुकान पर पहुँचा। उसने एक चाँदी का हार ख़रीदा क्योंकि सोने का खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त धन न था। पर हार बड़ा सुन्दर था और बनाने वाले ने कारीगरी की पराकाष्ठा कर दी थी। दूसरे दिन सबेरे ही उसने पीयरो को स्वादिष्ट पके हुए अंजीर लाने के लिए बाजार भेजा क्योंकि कैटेरीना को अंजीर बहुत पसन्द थे। उसने एक टोकरी में नीचे हार रख कर ऊपर से अंजीर रख दिये और पीयरों को देकर बोला, "इनको जाकर श्रीमती कैटरीना को देना और कहना कि इनके नीचे कोई वस्तु है जो मैक्यावैली ने आपके सम्मान स्वरूप भेंट की है।"

मैक्यावैली ने सोचा कि वह और कैटेरीना एक दूसरे के भावों को भली-भाँति समझ गए हैं। परन्तु वह यह भी जानता था कि मैत्री को दृढ़ करने के लिए छोटीसी भेंट से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं है।

[२१]

कुछ दिनों बाद बार्थोलोमियो ने प्रस्ताव किया कि किसी दिन शाम को फिर गाना-बजाना हो जिसमे कि उस दिन की तरह संध्या विनोद में कटे। वैसा ही प्रबन्ध किया गया और उस दिन की भांति ही समय आनन्द वर्धक वार्त्तालाप तथा मधुर संगीत में बीता। औरेलिया कभी भी अधिक न बोलती थी। पर उस दिन वह असाधारण रूप से चुप थी। किन्तु मैक्यावैली ने लक्ष्य किया कि जब वह औरों से प्रफुल्लित भाव से बात करता था तो वह उसकी ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखने लगती थी। मैक्यावैली को पूरा विश्वास था कि माँ-बेटी में उस विषय को लेकर अवश्य बातचीत हो चुकी है और औरेलिया उसके मनोगत भावों से परिचित हो गई है। इसलिए स्पष्ट ही उसकी जिज्ञासु दृष्टि यह आँकने का प्रयत्न कर रही है कि वह कैसा प्रेमी सिद्ध होगा। वह भली भांति समझता था कि औरतों को वह अपनी सुन्दरता से नहीं, वरन् अपनी चटपटी बातों के जादू से आकर्षित कर लेता है। इसलिए आज उसने अपने सबसे तेज़ अस्त्र का प्रयोग किया। वह जानता था कि औरतें न तो व्यंग पसन्द करती हैं और न ही श्लेपोक्तियां ही। किन्तु उनको तो साधारण मज़ाक और लच्छेदार कहानियाँ रुचिकर लगती हैं। इन दोनों चीजों का तो उसके पास असीम-भंडार था। उसकी ठठोलियों पर जो हंसी लोगों को आती थी उससे वह और उत्तेजित होता जाता था और उसने अनुभव किया कि इतना विनोद शील वह कभी नहीं रहा। साथ ही उसने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि लोग उसको केवल हँसोड़ ही नहीं बल्कि सरल स्वभाव का दयानिष्ठ व्यक्ति समझें, जिसके साथ आसानी से निभ सकती है तथा जिस पर पूरा विश्वास किया जा सकता है और साथ ही जिससे प्रेम करना भी कठिन नहीं होगा। क्या यह केवल उसकी कल्पना मात्र थी कि जब-जब औरेलिया से उसकी आँखें मिलती थीं, उनमें एक स्निग्धता

झलकती थी। इससे उसको लगता था कि वह उसकी ओर से उदासीन नही है ? उसने अन्य स्त्रियों की आंखो में भी वैसी ही झलक देखी थी। स्त्रियां बड़ी विलक्षण होती हैं। भावुकता के कारण वह उस आनन्द को अकारण ही झंझट भरा बना देती हैं जो आदि में पुरुष के स्वर्ग से निकाले जाने के फलस्वरूप दयालु परमेश्वर ने मनुष्य जाति को प्रदान किया है। पर कभी-कभी इस बात से लाभ भी हो जाता है। सहसा उसको अपनी पत्नी मैरिएटा का स्मरण हो आया जिसका विवाह उसके माता-पिता ने किया था। फिर भी वह मैक्यावैली को इतना प्यार करने लगी थी कि एक क्षण को भी उसे उसका दृष्टि से ओझल होना सहन न था। वह एक सदाचारिणी स्त्री थी और मैक्यावैली को उससे वास्तविक स्नेह था। पर साथ ही वह उसी के दामन से बंधकर नहीं रह सकता था।

इसके बाद कुछ दिनों तक अपने दूतकार्य में वह इतना व्यस्त रहा कि उसे पलक मारने का भी अवकाश न मिलता। किन्तु फिर भी उसने औरेलिया के पास पीयरो के हाथ गुलाब के इत्र की शीशी भेजी जिसे उसने लेवान्ह से हाल ही में आए हुए व्यापारी से सामर्थ्य के बाहर होते हुए भी ख़रीदा था। यह शुभ शकुन ही था कि उसने उसे लौटाया नहीं। उसने पीयरो की बुद्धि की बड़ी सराहना की कि उसने ऐसे गुप्त ढंग से यह भेंट औरेलिया को पहुंचायी कि किसी को पता भी नहीं चलने दिया। इसके इनाम में उसने पीयरो को पांच फ्रेंक दिए जिससे वह नीना के साथ अपना प्रेमालाप चालू रख सके।

"कहो, कैसी घुट रही है ? " उसने पूछा।

पीयरो ने उत्तर दिया, "मेरे विचार से तो वह भी मुझसे प्रेम करने लगी है। पर वह उस नौकर से डरती है। वह भी उसका प्रेमी है।"

"मुझे भी यही सन्देह था। पर निराश मत हो। यदि वह तुम से प्रेम करती है तो अवश्य कोई न कोई मार्ग ऐसा निकाल लेगी जिससे तुम्हारा मिलाप आसानी से हो जाए।"

एक दिन तीसरे पहर वर्षा हो रही थी। बार्थोलोमियो ने मैक्यावैली को शतरंज खेलने के लिए अपने घर बुलवाया। मैक्यावैली ने सोचा कि काम बाद में कर लिया जाएगा और वह चल दिया। बार्थोलोमियो ने उसे अपने पढ़ने के कमरे में बैठाया। यद्यपि कमरे में अंगीठी नहीं बनी हुई थी, पर एक चौड़े बर्तन में रखी हुई आग के कारण कमरा काफ़ी गर्म बना हुआ था।

बार्थोलोमियो ने कहा कि औरतों की बातचीत से खेल में विघ्न पड़ता अतएव उसने एकांत में ही खेलना उचित समझा।

मैक्यावैली तो औरेलिया को देखने की आशा से ही वहाँ गया था। इस कारण वह कुछ उदास तो अवश्य हुआ परन्तु उसने बड़ी शालीनता से उत्तर दिया, "स्त्रियां बोले बिना नहीं रह सकतीं और शतरंज ऐसा खेल है जो एकाग्रचित्त होकर ही खेला जा सकता है।"

वे खेल तो रहे थे किन्तु मैक्यावैली का चित्त इतना उचाट था कि बार्थोलोमियो उसको मात पर मात देता रहा। तब उसने शराब लाने का आदेश दिया। शराब आने पर जब मैक्यावैली अगले खेल के लिए शतरंज के मोहरे लगाने लगा तो बार्थोलोमियो ने कुर्सी पर पीठ का सहारा लेकर कहना आरम्भ किया, "प्रिय निकोलो, मैंने केवल शतरंज खेलने के लिए ही आपको यहां नहीं बुलाया है। किन्तु आपसे एक सलाह भी मुझे लेनी है।"

"मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत हूँ।"

'क्या आपने कभी सान विटाले का नाम भी सुना है?"

प्रश्न सुनकर मैक्यावैली ने संतोष की सांस ली। अवश्य ही फ्राटिमोटियो ने अपना काम पूरा कर दिया है।

"आश्चर्य है कि आप यह प्रश्न पूछ रहे हैं। रैवैना में जो गिरजाघर है उसी की बात कर रहे हैं न? वहां पर उस महात्मा की अस्थियां हैं। कुछ समय पहले फ्लोरस में सभी लोग उसी की चर्चा कर रहे थे।"

"किस सम्बन्ध में ?"

"मनुष्य जाति की मूर्खता की कोई सीमा नहीं। फ्लोरेंस वासियों को अपनी कुशाग्र बुद्धि पर बड़ा गर्व है। पर वे ऐसे अन्ध-विश्वासी हैं कि कोई हद नहीं।"

मैक्यावैली ने लक्ष्य किया कि बार्थोलोमियो की उत्कंठा सजग हो उठी है। इसलिए उसने उसको आतुर बनाए रखना ही ठीक समझा।

"किस्सा क्या है ?"

"अजी, यह कहानी ऐसी मूर्खता पूर्ण है कि मुझे तो कहने में भी लज्जा आती है। धर्मशास्त्रों की उपेक्षा न करते हुए भी मेरे नगर-निवासियों में एक ऐसी स्वस्थ अविश्वास की भावना मौजूद है जिसके कारण वे जब तक स्वयं अपनी आँख से देख न सकें अथवा स्पर्श न कर सकें अथवा सूंघ न सकें, सहज ही में किसी बात पर विश्वास नही करते।"

"इसी कारण तो वे पक्के व्यवसायी बने हुए हैं।"

"सम्भव है। पर कैसे आश्चर्य की बात है कि कभी-कभी वे अजीब विवेक-शून्य अन्ध-विश्वास के शिकार बन जाते है। सच तो यह है मैं इस तरह की कोई कहानी सुनाकर आपके सामने उनकी कलई नहीं खोलना चाहता।"

"मैं भी तो आधा फ्लोरेंस-निवासी ही हूं। इसलिए जब तक इस कहानी को सुन न लूंगा तब तक चैन नहीं आएगा। आपकी बातों में बड़ा आनन्द आता है और आज जैसे मनहूस दिन तो हँसने को बहुत तबियत करती है।"

"अच्छा तो सुनिए। फ्लोरेंस में जियूलियानो डेग्ली एलबर्टेली नामक एक धनी व्यक्ति है। वह जवान है, नगर में उसका बड़ा ही सुन्दर महल है और उसकी अनुपम सुन्दरी पत्नी भी है जिसे वह बहुत ही प्रेम करता है। पर सब प्रकार से सुखी होते हुए भी निस्संतान होने के कारण उसे बड़ा दुःख था। साथ ही वह अपने भाई से लड़ बैठा था और अब वह यह नहीं सहन कर सकता था कि उसके मरने के बाद

उसकी सारी सम्पत्ति का स्वामी उसका भाई अथवा उसके बच्चे-कच्चे हों। संतान के लिए वह अपनी स्त्री को कुंडों में स्नान कराने ले गया तथा बड़े-बड़े पवित्र तीर्थों में उसे लिए-लिए फिरा। उसने बड़े-बड़े डाक्टरों की दवा भी कराई तथा अनुभवी स्त्रियों की ऐसी जड़ी-बूटियों का भी प्रयोग करवाया जिनसे कहते हैं गर्भ रह जाता है। पर किसी से कुछ भी नहीं हुआ।"

बार्थोलोमियो लम्बी सांसें ले रहा था और इस प्रकार एकाग्रचित्त से सुन रहा था मानो उसी पर उसका जीवन निर्भर हो।

"तब एक दिन ऐसा हुआ कि कोई महन्त तीर्थ यात्रा से लौटा और उसने जियूलियानो को बतलाया कि घर लौटते समय वह मार्ग के रैवैना में ठहरा था जहाँ सान बिटाले का गिरजाघर है। उस संत में नपुंसक को पौरुष प्रदान करने की दैवी शक्ति है। यह सुनकर उसने वहाँ जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उसके मित्रों ने मना भी किया पर वह न माना। जब वह जाने ही लगा तो लोगों ने उसका बड़ा मज़ाक उड़ाया। व्यंग्य-काव्य लिख-लिखकर लोगों ने बाँटे। जब वह लौटकर घर आया तो लोग मुँह फेरकर उस पर हँसते थे। पर लौटने के ठीक नौ महीने बाद उसकी स्त्री ने नौ पौण्ड वज़न के स्वस्थ बालक को जन्म दिया। अब जियूलियानो के हँसने की बारी थी। समस्त फ्लोरैन्स निवासी दंग रह गए। भक्त लोगों ने कहा कि यह दैवी चमत्कार है।"

बार्थोलोमियो के मस्तक से पसीना छूट निकला। "यह दैवी चमत्कार नहीं है तो क्या है ?"

"प्रियमित्र, दैवी चमत्कारों का युग बीत चुका है। अब हम इतने पापी हो गए हैं कि उनके अधिकारी नहीं रहे। पर मैं स्वीकार करता हूँ कि इस घटना ने मुझे भी विचलित कर दिया है। मुझे भी तुम्हारी तरह से यही कहना पड़ता है कि यह दैवी चमत्कार नहीं है तो क्या है ? जो बात थी मैंने बतला दी। अब यह आप पर निर्भर है जैसा उचित समझें करें'।

बार्थोलोमियो ने शराब का लम्बा घूंट भरा और मैक्यावैली ने फ्रा टिमोटियो के गिरजाघर में एक और दीपक जलाने का निश्चय किया। उसका आविष्कार सफल हुआ था।

बार्थोलोमियो ने थोड़ी देर बाद कहा, "प्रिय निकोलो, मैं आपका विश्वास करता हूँ। मैं मनुष्यों के स्वभाव का पारखी हूँ और मुझे पक्का विश्वास है कि आप विवेकी व्यक्ति हैं। मैंने व्यर्थ ही में आपसे यह प्रश्न नहीं पूछा था कि क्या तुमने सान विटाले के विषय में कुछ सुना है। पर मुझे यह आशा न था कि जो सूचना मुझे मिलीं है उसका आप इतनी दृढ़ता से अनुमोदन करेंगे।"

"मित्र, आप तो पहेलियां-सी बुझा रहे हैं।"

"यह तो आप जानते ही हो कि मुझे एक पुत्र की बड़ी उत्कट लालसा है जिस पर मैं अपनी समस्त सम्पत्ति जायदाद इत्यादि छोड़ जाऊं तथा जो सम्पत्ति व पद मुझे ड्यूक से मिला है उसका वह उत्तराधिकारी बन सके। मेरी एक विधवा बहिन है जिसके दो लड़के हैं। मेरी अपनी कोई संतान न होने के कारण मेरा विचार था कि मैं उन्हें गोद ले लूं। यद्यपि यह उसके लाभ की बात थी, पर वह बच्चों से अलग नही रहना चाहती। वह भी उनके साथ इसी घर में रहना चाहती है। पर उसका स्वभाव भी मेरे जैसा, ही अधिकार जमाने वाला है। इसलिए घर में तीनों स्त्रियों में बड़ा कलह होगा जिससे घर की शान्ति नष्ट हो जाएगी। घर दिन-रात लड़ाई-झगड़े का मैदान बना रहेगा।"

"यह मैं समझ सकता हूँ।"

"मुझे भी एक क्षण को शान्ति नहीं मिलेगी।"

आपका जीवन घोर दुखमय हो जाएगा। वे सब मिलकर आपका जीना दूभर कर देंगी।"

बार्थोलोमियो ने आह भरी।

मैक्यावैली ने कहा, "क्या इसी समस्या पर आप मेरी सलाह लेना चाहते हैं?"

"नहीं। कल ही मैं फ्रा टिमोटियो के सामने अपनी कठिनाइयों का वर्णन कर रहा था। आश्चर्य है कि उसने मान विटाले का जिक्र किया। मुझे तो तनिक भी विश्वास नही होता कि मैं नपुंसक हूँ। पर यदि उस महात्मा की अस्थियों में सचमुच ऐसी ही चमत्कारिक शक्ति है तो एक बार रैवैना जाने में हर्ज ही क्या है। मुझे उधर व्यापार-सम्बन्धी कार्य भी है, इसलिए अगर मेरा अभीष्ट सिद्ध न भी हुआ तो भी यात्रा निष्फल न होगी।"

"फिर मेरी समझ में नहीं आता कि इसमें सोच-विचार की क्या बात है। सब भांति लाभ ही लाभ है। हानि तो है ही नही।"

"फ्रा टिमोटियो एक नेक और महात्मा व्यक्ति हैं। पर उन्हें सांसारिक बातों का ज्ञान नहीं। मैं सोचता हूं कि यदि उस महात्मा में ऐसी ही शक्ति है तो यह आश्चर्य की बात है कि उसका नाम दूर-दूर तक क्यों नहीं फैला।"

यह सुनकर मैक्यावैली हताश हो गया, पर केवल क्षणमात्र के लिए ही फिर वह बोला, "आप यह बात भूल जाते हैं कि पुरुष सदा अपनी कमी छिपाने के लिए सारा दोष स्त्री के मत्थे मढ़ देते हैं। इसलिए जो लोग वहां सत का वरदान प्राप्त करने जाते होंगे वे बहुत ही छिपकर जाते होंगे। और यह कभी प्रकट न होने देते होंगे कि उनकी स्त्री किस प्रकार गर्भवती हुई।"

"इस बात का तो मुझे ख्याल ही नहीं आया। पर इतना निश्चिय है कि लोगों को मेरी यात्रा का पता चल गया और मुझे सफलता न मिली तो हर आदमी मेरी हंसी उड़ाएगा। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाएगा कि मैं नपुंसक हूँ।"

"पर लोगों को पता कैसे लगेगा ? क्या फ्रा टिमोटियो ने आपको यह नहीं बताया कि आपको वहां क्या करना है ? जियूलियानो के अनुसार तो वहां संत की समाधि के आगे रातभर ध्यान लगाकर प्रार्थना करते रहना चाहिए।"

"पर यह किस प्रकार संभव है ?"

"कुछ भेंट देने से मठ रक्षक पट बन्द करते समय आपको अन्दर रह जाने देगा। आप सबेरे की पूजा में सम्मिलित होने के बाद ही व्रत खोलिएगा। उसके बाद अपना काम काज करके अपनी पत्नी के पास लौट आइयेगा।"

बार्थोलोमियो ने मुस्कराकर कहा, "यदि मैं यह प्रयोग करूं तो आप मुझे मूर्ख तो न कहेंगे ?"

"दैवी इच्छा जानी नहीं जा सकती। जो जियूलियानो के साथ घटना घटी मैंने बतला दी। मैं क्या कह सकता हूं कि वह दैवी चमत्कार था या कुछ और ?"

बार्थोलोलियो ने कहा, "यह मेरा आखिरी सहारा है। इसलिए मैं अवश्य प्रयत्न करूंगा और जब जियूलियानो को सफलता मिली तो कोई कारण नही कि मुझे भी न मिले।"

"कोई नही" मैक्यावैली ने अनुमोदन किया।

[२२]

अगले सप्ताह भर मैक्यावैली के हृदय में परस्पर-विरोधी भावनाएँ उठती रहीं और गिरगिट के समान रंग बदलती रहीं। किसी समय आशा का सुन्दर स्वरूप दिखाई देता तो दूसरे ही क्षण निराशा की कालिमा आँखों के आगे मूर्तिमती हो उठती। कभी भावी सुख का सुन्दर चित्र सामने आता तो कभी दुःख की काली घटा। कभी उत्साह की तरंगे हिलोरें लेने लगतीं तो कभी फिर वही निराशा आ घेरती। बार्थोलोमियो अभी कोई निश्चय नहीं कर पाया था। कभी तो वह जाने के लिए बड़ी उत्कण्ठा प्रकट करता और कभी उसका मन उचट

जाता। उसकी हालत उस आदमी के समान थी जो सट्टे में अपना धन लगाना चाहता है और धन खोने के डर तथा लाभ के लालच की दुविधा में फंस जाता है। एक दिन वह पक्का निश्चय कर लेता कि अवश्य जाऊँगा, पर दूसरे दिन जाना स्थगित कर देता। मैक्यावैली की पाचन शक्ति पहिले से ही मन्द थी, इस उलझन ने उसे और भी बिगाड़ दिया। इतने परिश्रम तथा धन खर्च करने के बाद मिलने वाले सुअवसर का अगर वह अपनी तबियत ख़राब होने के कारण उचित लाभ न उठा सका तो इससे बढ़कर ज्यादती और क्या होगी। उसने सिंघी लगवा कर अपना रक्त निकलवा दिया, विरेचक द्वारा पेट शुद्ध किया तथा खाने में केवल द्रव पदार्थ ही लेने लगा। और मुसीबत यह थी कि इसी समय उसे सदा से अधिक परिश्रम करना पड़ रहा था। ड्यूक और उसके विद्रोही नेताओं की वार्ता अन्तिम स्थिति में थी। मैक्यावैली को निरन्तर मन्त्रिमंडल को पत्र भेजने पड़ते, प्रतिनिधियों से मिलना पड़ता, समाचार संग्रह करने के लिए घण्टों राजमहल में बिताने पड़ते तथा जो प्रतिष्ठित लोग अन्य राष्ट्रों से इमोला आते उनसे भी मिलना पड़ता। पर अन्त में भाग्य की देवी मैक्यावैली पर प्रसन्न हुई। बार्थोलोमियो के पास रैवैना से उसके आदमी का एक पत्र आया जिसमें उसने लिखा था कि जिस सौदे की बातचीत बहुत दिनों से उससे चल रही थी उसका शीघ्र ही फैसला नहीं किया तो वह दूसरे से सौदा कर लेगा। यह पत्र पाकर बार्थोलोमियो का निश्चय दृढ़ हो गया।

मैक्यावैली की सारी बीमारियाँ दूर हो गईं। बार्थोलोमियो से वार्तालाप करने के अगले ही दिन वह फ्रा टिमोटियो से मिला था और उसने मैक्यावैली के कहे अनुसार बार्थोलोमियो को आदेश देना स्वीकार कर लिया था। औरेलिया की सद्भावना पाने के लिए वह एक ऐसे व्यापारी के पास गया जो आसानी से धन कमाने के लालच में इमोला आया था और उससे ज़री के काम के सुगन्धित दस्ताने ख़रीदे। ये उसे बहुत मँहगे मिले पर यह अवसर ऐसा न था जब रुपए का लोभ किया

जाय। उसने उनको पीयरो के हाथ यह समझाकर भेजा कि वह श्रीमती कैटेरीना से मिले जिससे नौकर यह समझे कि शायद उसके स्वामी ने कोई संदेशा भेजा है। साथ ही उसे श्रीमती कैटेरीना से यह कहने का आदेश दिया कि मैक्यावैली उनसे बात करना चाहता है और जब उन्हें फुर्सत हो तब वह गिरजा-घर में आकर मिल सकता है।

जब पीयरो ने लौटकर बताया कि कैटेरीना ने अपनी लड़की को बुलाया था और वह इस अमूल्य उपहार को पाकर बडी प्रसन्न हुई थी तो मैक्यावैली बड़ा प्रफुल्लित हुआ। उस प्रकार के दस्ताने बड़े मूल्यवान समझे जाते थे और फ्राँस की महारानी को भी ऐसा उपहार देना मंचुआ की डचैस ने अनुचित न समझा था।

"वह कैसी लग रही थी?" मैक्यावैली ने प्रश्न किया।

"कौन?"

"औरेलिया।"

"वह बहुत प्रसन्न थीं।"

"अरे पागल यह मतलब नहीं। वह सुन्दर भी लग रही थी?"

"जैसी वह सदा लगतीं है वैसी ही लग रही थीं।"

"मूर्ख! अच्छा श्रीमती कैटेरीना किस समय गिरजा-घर जायेंगी?"

"वह शाम को प्रार्थना के समय पहुँचेगी।"

जब मैक्यावैली कैटरीना से मिलकर लौटा तो वह प्रसन्न था। घर जाते हुए उसने मन ही मन कहा, "मनुष्य भी कैसा श्रेष्ठ जन्तु है! धृष्टता, कपट तथा धन की सहायता से वह क्या नहीं कर सकता?"

पहले-पहल तो औरेलिया बड़ी डरी थी और प्रस्ताव को सुनने से भी एकदम मना कर दिया था। पर धीरे-धीरे कैटेरीना ने तर्क द्वारा उसको समझाकर तैयार कर लिया था।

तर्क सचमुच ही अकाट्य थे, मैक्यावैली ने सोचा। और यह स्वाभाविक ही था क्योंकि वे मैक्यावैली के मस्तिष्क की उपज थे। फ्रा टिमोटियो के उपदेशों ने उन्हें और भी दृढ़ कर दिया था। औरेलिया

समझदार युवती थी। वह जानती थी कि यदि परिणाम लाभदायक हो तो छोटे से पाप-कर्म से झिझकना ठीक नहीं। सारांश यह कि यदि बार्थोलोमियो उसके मार्ग से दूर हो जाए तो वह मैक्यावैली की मनोकामना पूर्ण करने के लिए तैयार थी।

जब बार्थोलोमियो ने जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया तो उसने विलम्ब करना ठीक न समझा। दूसरे ही दिन दोपहर को वह एक नौकर तथा साईस को लेकर रैवैना के लिए चल पड़ा। मैक्यावैली शिष्टाचारवश उसको विदा करने गया और प्रार्थना की कि उसकी यात्रा सफल हो। नीना को रात भर के लिए उसके माँ-बाप के घर भेज दिया गया और जब वह चली गई तो मैक्यावैली ने एक टोकरी में ताज़ा मछलियाँ, दो मुर्गे, कुछ मिठाई व फल तथा सर्वोत्तम शराब की बोतल रखकर बार्थोलोमियो के घर पीयरो को भेजा। तै यह हुआ था कि दिन डूबने के बाद तीन घटे बाद तक प्रतीक्षा की जाय और रात के नौ बजे जब सैराफीना सो जाय तो वह चौक के द्वार पर पहुँच जाय। कैटेरीना उसको वहाँ से लिवा ले जायगी, तथा तब भोजन किया जायगा। उचित अवसर देखकर कैटेरीना अपने सोने के कमरे में चली जायगी और तब मैक्यावैली के पास केवल उसके प्रेम की देवी ही रह जायगी। कैटेरीना ने उससे प्रतिज्ञा कराली थी कि वह बहुत तड़के ही घर से बाहर चला जाएगा।

जब पीयरो टोकरी देकर लौटा तो कैटेरीना का पक्का संदेशा लाया। ज्योंही गिरजा के घटे मे नौ बजें मैक्यावैली को द्वार पर पहुँचना होगा। यह निश्चय करने के लिए कि द्वार पर वही है कोई और नहीं, वह दो बार जल्दी जल्दी द्वार खटखटाए, और थोड़ी देर बाद दो बार फिर खटखटाए। बस तुरन्त ही द्वार खोल दिया जाएगा और वह चुपचाप अन्दर चला जाएगा।

मैक्यावैली ने कहा, "एक अनुभवी स्त्री के साथ व्यवहार करने में कितनी सुविधा है। वह संयोग पर कुछ नही छोड़तीं।"

उसने नौकर के कमरे में एक बालटी गरम पानी मंगवा कर भली भांति स्नान किया। वह स्नान कभी नहीं करता था। मेरियेटा से विवाह के अवसर पर सुहागरात के पहिले दिन उसने स्नान किया था जिससे उसे जुकाम हो गया था और उसा के परिणाम स्वरूप मेरियेटा को भी जुकाम हो गया था। तब से वह डरता था। फिर उसने अपने अंगों पर सुगंधि मली जो वह औरेलिया के लिए गुलाब के इत्र के साथ ही उसी दिन लाया था। उसने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने। वह औरेलिया के घर भोजन करने के पहले अपनी भूख खराब न करना चाहता था। इसलिए जब सैराफीना ने उसको खाने के लिए कहा तो उसने यह कह कर टाल दिया कि वह फैरेरा के ड्यूक के प्रतिनिधि के साथ सराय में भोजन करेगा। उसने पढ़ने का प्रयत्न किया किन्तु व्यग्रता के कारण उसमें उसका चित्त न लगा। ल्यूट के तारों को छोड़ने की कोशिश की पर उस पर उसकी अंगुलियां न चलीं। फिर उसने प्लेटो के उस सम्वाद का ध्यान किया जिसमें उसने विषय-सुख के आनन्द को विवादयुक्त होने के कारण अपूर्ण सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। बात सारहीन नहीं है पर कभी-कभी तो परमात्मा का ध्यान भी निस्सार तथा नीरस ही प्रतीत होता है। जब उसने अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए मार्ग की कठिनाइयों तथा उनको दूर करने में अपनी विलक्षण पटुता का ध्यान किया तो उसे भीतर ही भीतर हँसी आ गई। उसने सचमुच ही आश्चर्य-जनक चतुरता दिखाई थी और उस जैसे स्वाभिमानी को इसका भास भी था। उसकी दृष्टि में कोई दूसरा ऐसा व्यक्ति नही था जो इस चतुराई से अन्य व्यक्तियों की भावनाओं, दुर्बलताओं तथा हितों का लाभ उठाकर उन्हें अपनी इच्छा के अनुकूल वश में कर सकता हो।

इसी समय गिरजा के घंटे ने आठ बजाए। अभी एक घंटा बाकी था। इस लम्बे समय को काटने के लिए उसने पीयरो को बुलाया और उसके साथ चौपड़ खेलने लगा। साधारणतया वह पीयरो को बड़ी आसानी से हरा देता था, पर इस समय उसका मन दूसरी ही जगह लगा हुआ था.

"जरा ठहरिये, मैं नौकर से कह दू कि उसको साथ चलने की आवश्यकता नही।"

"निस्संदेह, उसकी क्या आवश्यकता है ? हमारे आदमी आपको सुरक्षापूर्वक घर तक वापिस छोड़ जायेंगे।"

मैक्यावैली बैठक में चला गया तथा द्वार बंद करता गया।

"पीयरो, ध्यान से सुनो, ड्यूक ने मुझे बुलवाया है। मै यह कहकर कि मेरे पेट मे दर्द है बातचीत जल्दी ही समाप्त कर दूँगा। इधर श्रीमती कैटेरीना मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी इसलिए तुम,तुरन्त वहाँ चले जाओ। उनके कहे अनुसार द्वार खटखटा कर भीतर चले जाना और उनको सब समाचार बतलाकर कह देना कि मैं जल्दी से जल्दी लौटने का प्रयत्न करूँगा। उसके बाद उनसे आज्ञा लेकर तुम उनके चौक में ही मेरी प्रतीक्षा करना जिससे जब मैं द्वार खटखटाऊँ तो तुम फौरन खोल सको।"

"बहुत अच्छा।"

"और देखो, उनसे कहना कि मैं बहुत ही दुखी, विवश, पीड़ित तथा क्षोभित हूँ। मै आधे घण्टे में लौट आऊँगा।"

यह कहकर वह उन लोगों के पास चला गया जो उसे लिवाने आये थे और उनके साथ महल में जा पहुँचा। उसको एक कमरे में बैठाकर मंत्री ड्यूक को उसके आने का समाचार देने चला गया।

मैक्यावैली वहीं प्रतीक्षा करने लगा। समय बीतता जा रहा था। पाँच मिनट बीते फिर दस, पन्द्रह। तब मंत्री लौटकर आया और कहने लगा कि देर के लिए ड्यूक क्षमा चाहते हैं क्योंकि उसी समय पोप के पास के कोई दूत पत्र लाया है जिस पर विचार करने के लिए वह एलना के प्रधान पादरी तथा एगापीटो दा अमेलिआ से परामर्श में सलग्न हैं। पर जैसे ही अवकाश मिलेगा वह आपको बुलवा लेंगे।

एक बार मैक्यावैली फिर अकेला रह गया। उसके धैर्य की वह कठोरतम परीक्षा थी। वह बैचेनी से कुर्सी पर बैठा हुआ इधर-उधर

डोलने लगा। कभी वह उंगलियों के नख दांत से काटने लगता कभी कमरे में तेजी से इधर-उधर घूमने लगता था। उद्विग्नता, क्षोभ तथा क्रोध से अंग अंग फड़क रहा था। अन्त में अधीर होकर वह कमरे से बाहर निकला और मन्त्री को ढूंढ़-ढूँढ़कर उससे रूखे स्वर में पूछने लगा कि क्या ड्यूक उसको बुलाकर भूल गये हैं। उसने कहा, "मेरे पेट में पीड़ा हो रही है।यदि ड्यूक को मिलने का अवकाश नहीं है तो इस समय मैं घर जाता हूँ कल आ जाऊँगा।"

"बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि ऐसा हो गया। अगर बहुत ही आवश्यक काम में न लगे होते तो ड्यूक आपको इतनी देर तक प्रतीक्षा कभी न करवाते। मेरे विचार से जो संदेश वह आपको देना चाहते हैं वह राज्य के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए धीरज रखिये।"

मैक्यावैली अपने क्लेश को किसी प्रकार दबाकर पास ही पड़ी हुई एक कुर्सी पर धम से बैठ गया। मन्त्री ने उसे बातों में लगा लिया। मैक्यावैली उत्तर में केवल अस्पष्ट 'हाँ', 'हूँ' कहता और उसकी बातों को अनसुनी करता रहा, पर उसने अपनी बातों का सिलसिला जारी रक्खा और निराश न हुआ। मैक्यावैली ने बड़ी कठिनता से अपने आपको यह कहने से रोका कि वह अपनी व्यर्थ की बकवास बन्द करदे। वह मन ही मन कहने लगा, "यदि एक मिनिट के बाद भी आये होते तो मैं कभी न मिलता।"

अन्त में एगापीटो दा अमेलिया स्वय वहाँ पर आया और बोला कि ड्यूक अब उससे मिलने के लिए तैयार हैं।

मैक्यावैली एक घन्टे से प्रतीक्षा कर रहा था। एक विषादपूर्ण मुस्कान उसके होंठों पर फैल गई और वह सोचने लगा कि बेचारा पीयरो दरवाज़े पर उसकी प्रतीक्षा करता हुआ चौक में सर्दी से ठिठुर रहा होगा। सन्तोष बस इतना ही था कि कष्ट में वह अकेला ही नहीं है।

ड्यूक अपने भाई एलना के प्रधान पादरी के साथ बैठा हुआ था। उसने मैक्यावैली को शिष्टतापूर्वक बिठाया और व्यर्थ के दिखावे में

समय नष्ट न किया। "राजदूत, मैंने सदा आपसे स्पष्ट तथा निष्कपट बातचीत की है। मैं एक बार फिर अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। जो प्रीतिभाव आपके द्वारा आपके मंत्रिमंडल ने प्रगट किया है उससे मैं असंतुष्ट नहीं हूँ। पोप की किसी दिन भी मृत्यु हो सकती है। यदि मुझे अपना राज्य बनाये रखना है तो उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध भी आवश्यक है। फ्रांस के बादशाह मेरे मित्र हैं और मेरे पास अपनी निजी सेना भी है। पर इतना ही काफी नहीं है। इसी से मैं अपने पड़ौसियों से मित्रता चाहता हूँ। वे पड़ौसी हैं बौलोना, मन्टुआ, फ़ैरेरा और फ्लोरैन्स।

मैक्यावैली ने इस अवसर पर अपने राज्य के सद्भावनामूलक आश्वासनों को दुहराना उचित न समझा। अतएव वह मौन रहा।

"जहाँ तक फैरेरा का सम्बन्ध है उसकी मित्रता मुझे अपनी प्रिय बहिन श्रीमती लुक्रेजिया के साथ उसके विवाह द्वारा प्राप्त हो गई है। पोप ने दहेज में उसे बहुत सा धन दिया था और उसके भाई धर्माध्यक्ष पर भी बड़े उपकार किये थे। मन्टुआ के बारे में हम दो व्यवस्थाएँ कर रहे हैं। एक तो मारक्विस के भाई को धर्माध्यक्ष का पद दिलवाया जाय जिसके लिए मारक्विस तथा उसका भाई चालीस हज़ार अशर्फी जमा करेंगे। तब मैं अपनी लड़की का विवाह मारक्विस के लड़के के साथ कर दूंगा, और दहेज में वे अशर्फियाँ भी उसको दे दूंगा। यह बतलाने की कोई आवश्यकता नहीं कि मित्रता तभी निभती है जब दोनों पक्षों को परस्पर लाभ हो।"

"मैं आपकी बात मानता हूँ" मैक्यावैली ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "पर बोलोना ?"

बोलोना का स्वामी जियोवैनी वैन्टीवोगलियो विद्रोहियों में सम्मिलित हो गया था और यद्यपि उसकी सेनाएँ ड्यूक की सीमा से दूर हट गई थीं परन्तु फिर भी युद्ध में विराम नहीं हुआ था।

सीज़र बोर्जिया ने अपनी सुन्दर नुकीली दाढ़ी पर हाथ फेरा और कुटिल मुस्कान सहित उत्तर दिया, "मैं बोलोना पर अधिकार करना नहीं

चहता। मैं तो केवल उसका सहयोग चाहता हूँ। मैं जियोवैनी को तो उसके राज्य से बाहर करदूं किन्तु अपना अधिकार उस पर प्रतिष्ठित न रख सकूँ तो यह मेरे सर्वनाश का कारण बन जायगा। इसकी अपेक्षा जियोवैनी को अपना मित्र बनाना उचित है। दूसरे फैरेरा का ड्यूक भी तभी सहायता देगा जब मैं बोलोना से संधि कर लूं।"

"किन्तु श्रीमान्, वैन्टीवोगलियो ने तो विद्रोहियों के संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।"

"कम से कम इस बार तुम्हारी सूचना सही नहीं है, राजदूत," ड्यूक ने सहज भाव से कहा। जियोवैनी वैन्टीवोगलियो का विचार है कि संधिपत्र की धाराएँ उसके हितों को सुरक्षित नहीं करतीं, इसलिए उसने उसे अस्वीकार कर दिया है। मेरा उसके भाई मुख्य मंत्री से पत्र-व्यवहार जारी है और सब बातें संतोषप्रद ढंग से चल रही हैं। समझौता हो जाने पर मुख्य मंत्री को धर्माध्यक्ष का पद दे दिया जाएगा। या अगर घर-गृहस्थी में उसे दिलचस्पी होगी तो धर्माध्यक्ष बोर्जिया की सगी बहिन से, जो मेरी भी चचेरी बहिन है, उसका विवाह कर दिया जाएगा। इन चारों राज्यों की सेना को जब फ्रांस के बादशाह का संरक्षण प्राप्त होगा तब वह अजेय हो जायगी और तब तुम्हारे शासकों को ही मेरी आवश्यकता होगी, मुझे उनकी नहीं। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं उनका बुरा चाहता हूँ। पर परिस्थितियाँ न जाने क्या-क्या करा लेती हैं। यदि मैं वचनबद्ध नहीं हुआ तो मुझे स्वतन्त्रता रहेगी कि जैसा उचित समझूँ करूं।"

इस समय ड्यूक का वास्तविक रूप सामने था और बनावटी मुखौटा हट चुका था। मैक्यावैली क्षण भर के लिए सोच में पड़ गया। उसे लगा कि एगापीटो और एलना के मुख्य पादरी ध्यानपूर्वक उसी की ओर देख रहे हैं।

यथासंभव लापरवाही के भाव से उसने प्रश्न किया, "आप हमसे

क्या चाहते हैं ?" मैं समझता हूं आपने टिटेलोज्ज़ो और औरसिनी से तो समझौता कर ही लिया है।"

"अभी तक कोई हस्ताक्षर नहीं हुए हैं और जहां तक मेरा सम्बंध है मैं चाहता भी नहीं कि हस्ताक्षर हों। मैं औरसिनी को नष्ट करना नहीं चाहता क्योंकि पोप की मृत्यु के बाद मुझे रोम में मित्रों की आवश्यकता पड़ेगी ही। जब पेगोलो औरसिनी मुझसे मिला था तब उसे रामीरो डि लोकुआ के आचरण के विरुद्ध शिकायत थी। मैंने उसे आश्वासन दिया है कि मैं उसे सन्तुष्ट कर दूंगा और मैं अपने वचनों का पालन भी अवश्य करूंगा। किन्तु विटेलोज्जो की बात और है। वह तो काला नाग है और उसने औरसिनी को मेरे साथ भिड़ाने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी है।"

"श्रीमान्, यदि आप अपना मन्तव्य साफ़-साफ़ कह दें तो बड़ी कृपा हो।"

"अच्छी बात है। मैं चाहता हूं कि आप अपने शासकों को एक बात बता दें। आपके शासकों ने अकारण ही मुझे अपने राज्य की भाड़े की सेना के सेनापति पद से अलग कर दिया है। संभवतः फ्रांस के बादशाह उनसे यह कहें कि वह पद मुझे फिर दे दिया जाय और मैं सोचता हूं उनको यह आज्ञा माननी पड़ेगी। दबाव से काम करने की अपेक्षा स्वेच्छापूर्वक कार्य करना उनके हित में होगा।"

मैक्यावेली अपने विचारों को केन्द्रीभूत करने के लिए एक क्षण रुका। वह जानता था कि जो कुछ भी उसे कहना है बहुत सोच-समझकर कहना है। जब वह बोला तो उसका बातचीत का ढंग यथासंभव चाटुकारी से भरा था।

"श्रीमान्, अपनी सेना एकत्रित करने तथा सम्बन्ध जोड़ने में आप दूरदर्शिता से काम लेते हैं। पर जहां तक भाड़े की सेना के सेनापति-पद का प्रश्न है आपकी गणना उन भाड़े के नायकों में नहीं हो सकती जिनके पास थोड़ी-सी सेना के नेतृत्व के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

आप तो इटली की एक प्रमुख शक्ति हैं और आपको भाड़े पर नौकर रखने की अपेक्षा आपसे मित्रता करना कहीं अधिक श्रेयस्कर है।"

"मैं ऐसे पद की प्राप्ति सम्मानसूचक समझता हूं," ड्यूक ने नम्रता से उत्तर दिया, "देखो भाई, प्रयत्न करने पर हम ऐसा प्रबन्ध कर सकते हैं जो हम दोनों के लिए हितकर हो। मैं एक पेशेवर सैनिक हूं और तुम्हारे राज्य के प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा है। मेरी प्रार्थना अस्वीकार कर तुम्हारे शासकों ने मेरा अपमान किया है। पर मुझे पूरा विश्वास है कि मैं तुम्हारे राज्य की सेवा औरों से कुछ अधिक ही कर सकता हूं।"

"धृष्टता क्षमा करें, पर यदि तीन चौथाई सेना आपके अधिकार में हो भी तो शासन अधिक सुरक्षित नहीं रहेगा।"

"तो इसका मतलब है आपको मेरी ईमानदारी पर भरोसा नहीं।"

"यह बात नहीं है," मैक्यावैली ने बनावटी उत्साह से उत्तर दिया, "पर मेरे शासक नीति समझते हैं और वे सावधान रहना चाहते हैं। वे कोई ऐसा क़दम नहीं उठाना चाहते जिससे पीछे पछताना पड़े। सबके साथ शांतिपूर्ण व्यवहार ही उनका लक्ष्य है।"

"आप स्वयं बुद्धिमान हैं। मुझे यह जताने की आवश्यकता नहीं कि शान्ति स्थापित करने का केवल एक ही मार्ग है और वह है युद्ध के लिए हर समय तैयार रहना।"

"निस्संदेह, मेरी सरकार भी आवश्यकतानुसार उचित क़दम उठाएगी।"

"दूसरे सरदारों को अपनी सेना में रखकर," ड्यूक ने कर्कश स्वर में कहा।

मैक्यावैली इसी अवसर की ताक में था। वह जानता था कि इलवैलेन्टीनो क्रोध के आवेश में अपना आपा खो बैठता है और फिर उसे प्रगट करके जिस मनुष्य से क्रोधित हुआ हो उसे अपने सामने से

शीघ्र ही हटा देता है। मैक्यावैली को जाने की इतनी उतावली थी कि उसे ड्यूक के रुष्ट हो जाने की भी चिंता न थी।

"जहां तक मैं समझता हूं उनका यही लक्ष्य है।"

मैक्यावैली को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी बात सुनकर ड्यूक हँस पड़ा। वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और अंगीठी की ओर पीठ करके बड़े प्रसन्न भाव से कहने लगा, "क्या वे समझते हैं कि मौजूदा डांवांडोल हालत में वे तटस्थ रह सकते है ? निश्चय ही इतने ना-समझ वे नहीं है। जब दो राज्यों में युद्ध होता है तो जो राज्य आपसे मित्रतापूर्ण सम्बन्ध की आशा करता है वह समझता है कि उसके सुख-दुःख में आप साथ देंगे। और यदि आप उसे निराश करेंगे तो निश्चय ही उसे आपसे द्वेष हो जाएगा और दूसरा आपकी कायरता तथा जड़ता के कारण आपसे घृणा करने लगेगा। एक के लिए आप निरुपयोगी मित्र सिद्ध होंगे और दूसरे के लिए शक्तिहीन शत्रु।

"तटस्थ राज्य ऐसी स्थिति में होता है कि वह किसी भी एक प्रतिद्वन्द्वी की सहायता कर सकता है और अन्त में ऐसी परिस्थिति आ जाती है कि युद्ध में विवश होकर उसे सम्मिलित होना पड़ता है जिसमें कि आरम्भ में वह साहस तथा सम्मानपूर्वक सम्मिलित होने से विमुख था। यकीन मानिए, बिना झिझक एक न एक पक्ष ग्रहण करने में ही बुद्धिमानी है। क्योंकि दो में से एक न एक अवश्य ही विजयी होगा और तब आपको उसका कोपभाजन बनना पड़ेगा। उस दशा में कौन आपकी सहायता करेगा ? आप कोई ऐसा हेतु प्रस्तुत न कर सकेंगे जिसके लिए दूसरा कोई आपकी रक्षा करे तो और न कोई रक्षक मिलेगा ही। विजयी को ऐसे मित्रों से क्या लगाव जिनका वह भरोसा न कर सके। और पराजित किसी योग्य होने पर भी आपके लिए कुछ न करेगा। क्योंकि जब आपकी सेना संभवतया उसे बचा सकती थी तब उस आड़े समय में आपने उसका साथ नहीं दिया।"

मैक्यावैली उस समय तटस्थता पर व्याख्यान सुनने को उत्सुक न

था और वह सोच रहा था कि ड्यूक को जो कुछ कहना है कह चुका । पर उसने पीछा न छोड़ा ।

"युद्ध चाहे जितना संकट पूर्ण हो पर तटस्थता उससे कहीं बढ़कर है। वह आपको घृणा तथा तिरस्कार का पात्र बना देती है और उसके कारण कभी न कभी आपको ऐसे व्यक्ति के चक्कर में फँसना ही पड़ जाता है जो आपके विनाश में अपना हित मानता है। इसके विपरीत यदि आप अपनी पूरी शक्ति के साथ किसी एक पक्ष में सम्मिलित हो जायें और अन्त में वह विजयी हो जाय तो चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न बन जाए फिर भी आपके प्रति तो वह कृतज्ञ बना ही रहेगा, क्योंकि आपने उसे मित्रता के गाढ़े सूत्र में बाँध लिया है।"

"क्या आपका यह अनुभव है कि आदमी अपने ऊपर किए गए उपकारों के लिए इतना कृतज्ञ होता है कि अपना प्रभुत्व जमाने के लिए यदि आपका अहित करना पड़े तो उसे झिझक होगी ?"

"विजय कभी इतनी सम्पूर्ण नहीं होती कि विजयी अपने मित्रों की उपेक्षा कर सके। उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार ही उसके हित में होता है।"

"और यदि अपना पक्ष पराजित हो जाए तो ?"

"तब तो आप अपने मित्रराष्ट्र के लिए और भी मूल्यवान सिद्ध होंगे। वह भरसक आपकी सहायता करेगा और आप उसके भाग्य के साझेदार हो जायेंगे। यह तो सभी जानते हैं कि भाग्य फिर भी पलटा खा सकता है। इसलिए किसी भी दृष्टि से देख लीजिए तटस्थ रहने में मूर्खता ही मूर्खता है। बस मुझे और कुछ नहीं कहना है। जो कुछ थोड़ी-सी राजनीति की बातें मैंने आपसे कहीं हैं, यदि वे आप अपने शासकों को समझा सकेंगे तो इसमें आपका ही भला है।"

यह कहकर ड्यूक एक कुर्सी पर बैठ गया और हाथों को आग पर सेकने लगा।

मैक्यावैली ड्यूक को अभिवादन करके जाने ही वाला था कि ड्यूक

ने एगापीटो दा अमेलिया की ओर देखकर कहा, "क्या तुमने इन्हें बतला दिया कि इनके मित्र बुओनारोट्टी फ्लोरैन्स में रुक गये हैं और उनके आने में समय लगेगा ?"

एगापीटो ने सिर हिला कर मना किया।

मैक्यावैली ने कहा, "श्रीमान्, मैं इस नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता।"

"जरूर जानते हैं, वही शिल्पी !"

ड्यूक मैक्यावैली की ओर सस्मित दृष्टि से देख रहा था। सहसा मैक्यावैली को ध्यान आया कि ड्यूक किसके बारे में बात कर रहा है। उसने अपने मित्र बिआजियो को कुछ धन भेजने के लिए लिखा था जिसके उत्तर में उसने सूचित किया था कि रुपये वह माइकेल एंजिलो नामक शिल्पी के हाथ भेज रहा था; परन्तु ड्यूक के संकेत का आशय यह था कि सैराफीना की अनुमति से उसके सामान की तलाशी ली गई है। मैक्यावैली ने अपने भाग्य को सराहा कि महत्त्वपूर्ण पत्र सब उसने और कहीं सुरक्षित स्थान में रख छोड़े हैं। अपने कमरे में उसने केवल साधारण से ही पत्र रक्खे थे पर उसमें बिआजिओ का पत्र भी था।

मैक्यावैली ने शान्त भाव से उत्तर दिया, "श्रीमान्, फ्लोरैन्स में अनेकों शिल्पी हैं। मैं उन सब को तो जानता नहीं।"

"किन्तु यह माइकेल एंजिलो प्रतिभाहीन व्यक्ति नहीं है। उसने संगमर्मर की कामदेव की मूर्ति बनाकर पृथ्वी में गाड़ दी थी। इसलिए जब वह खोदकर बाहर निकाली गई तो समझा गया कि मूर्ति प्राचीन है। जोर्मियो का धर्माध्यक्ष उसको खरीद ले गया पर जब उसको छल का पता लगा तो उसने उस मूर्ति को लौटा दिया। अन्त में वह मूर्ति मेरे हाथ लग गई। मैंने उसे मन्टुआ की रानी के पास उपहारस्वरूप भेज दिया है।"

इल वैलेन्टीनो का स्वर परिहासपूर्ण था और मैक्यावैली को न जाने क्यों यह लगा कि उसे मूर्ख बनाया जा रहा है।

मैक्यावैली भावुक होने के कारण शीघ्र ही उत्तेजित हो जाता था। इस समय भी वह धैर्य खो बैठा। वह अपनी प्रेयसी के पास पहुँचने की स्वाधीनता पाने के लिए ड्यूक को रुष्ट करने को भी तैयार था। उसने एक अत्यन्त तीव्र व्यंग्य बाण ड्यूक पर छोड़ा। "क्या श्रीमान्, उससे ऐसी मूर्ति बनवाना चाहते हैं जो मिलान के डयूक के लिए ल्योनार्डो द्वारा निर्मित मूर्ति की स्पर्धा कर सके ?"

बाण छूट चुका था। मंत्रीगण चौंक कर ड्यूक की ओर देखने लगे कि उस पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। फ्रांसेस्को स्फोर्जा की विशाल अश्वारूढ़ मूर्ति को, जिसको बहुत से लोग ल्योनार्डो की श्रेष्ठ रचना समझते थे, मार्शल ट्रेवेलजियो के सैनिकों ने नगर पर अधिकार करते समय ध्वंस कर दिया था और फ्रांसेस्को का पुत्र लोडोविको इल मोटो, जिसने वह मूर्ति बनवाई थी, और जो सीज़र बोर्निया की भांति ही अपहरण द्वारा राज्याधिकारी बन बैठा था, नगर से निकाल दिया गया था और इस समय लोशे दुर्ग में बन्दी था। मैक्यावैली इस संकेत द्वारा इल वैलेन्टीन को यह जताना चाहता था कि उसकी स्थिति कितनी भयावह है और यदि उसका भाग्य पलट जाय तो किस गड्ढे में जाकर वह गिरेगा।

पर ड्यूक ज़ोर से हँसा।

"नहीं, मेरे पास माइकेल एंजिलो से मूर्ति गढ़वाने के सिवाय और ज़रूरी काम हैं। इस नगर के बचाव के मौजूदा साधन बेकार हैं और मैं इसको सुदृढ़ करने के लिए मानचित्र बनवाना चाहता हूँ। पर तुम ल्योनार्डो की बात कर रहे थे। उसने मेरे भी कुछ चित्र बनाये हैं, जो मैं तुमको दिखाना चाहता हूँ।"

यह कह कर उसने एक मंत्री को संकेत किया जो तुरन्त कमरे से चला गया और चित्रों का एक बंडल लेकर लौट आया। बंडल उसने मैक्यावैली के हाथ में दे दिया और उसे एक के बाद दूसरा चित्र दिखाने लगा।

मैक्यावेली ने उन चित्रों को देखकर ड्यूक से कहा, "यदि श्रीमान् ने पहले ही यह न बता दिया होता कि ये चित्र आपके हैं तो मुझे पता ही नहीं चलता कि ये किसके हैं।"

"बेचारा ल्योनार्डो ! उसमें ठीक ठीक बनाने की क्षमता नहीं है किन्तु केवल कला की दृष्टि से ये गुणहीन नहीं हैं।"

"संभव है। पर मुझे दुःख है कि ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति केवल मूर्त्ति गढ़ने अथवा चित्र अंकित करने में ही अपना समय नष्ट करता रहे।"

"विश्वास रखिए कि मेरी सेवा में रहकर वह ऐसा नहीं कर सकेगा। मैंने उसे पीयोमबीनो की दलदल की नाली काटकर सुखाने के लिए भेजा था। और हाल ही में वह केसीना और केसेनाटीको में नहर काटने तथा बन्दरगाह बनाने के लिए दौरा करके आया है।"

उसने उन चित्रों को मंत्री को लौटा दिया और बड़े अनुग्रह के भाव से मैक्यावेली को विदा किया। मैक्यावेली ने बड़ी कड़वाहट के साथ अनुभव किया कि यह अनुग्रह फ्रांस के बादशाह के समान राजसी था। एगापीटो दा अमेलिया उसके साथ-साथ ड्यूक के कमरे से बाहर आया। इमोला में महीने भर से मैक्यावेली मुख्य-मंत्री का विश्वास प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करता रहा था। उसका सम्बन्ध रोम के प्रख्यात कोलोना घराने से था जो औरसिनी के परम शत्रु थे। इसीसे वह फ्लोरेंस वालों का मित्र माना जा सकता था क्योंकि वे भी औरसिनी के शत्रु थे। समय-समय पर वह मैक्यावेली को अनेकों सूचनाएं देता रहा था जिन्हें वह अपनी बुद्धि से संभव अथवा असंभव समझकर सत्यासत्य मान लेता था।

जब दोनों दरबार के केवल औपचारिक अवसरों पर काम आने वाले उस कमरे से निकल आए तो एगापीटो ने मैक्यावेली का हाथ पकड़ कर कहा, "मेरे कमरे में चलिए। आपसे एक आवश्यक बात कहनी है। मैं आपको आपके मतलब की एक चीज़ भी दिखलाना चाहता हूँ।"

"अब देर हो रही है। दूसरे मेरी तबियत भी ठीक नहीं है। मैं कल आऊंगा।"

"जैसी आपकी इच्छा। मैं तो आपको वह संधि-पत्र दिखलाना चाहता था जो ड्यूक और विद्रोहियों के बीच लिखा गया है।"

मैक्यावैली का दिल बैठ गया। वह जानता था कि दस्तावेज़ इमोला में पहुँच चुका है और उसको केवल एक नज़र देखने के लिए उसके सारे प्रयत्न विफल हो गए थे। ड्यूक तथा विद्रोहियों के बीच समझौते की शर्तें जानना फ्लोरेंस के शासकों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण था और वे मैक्यावैली की उपेक्षा के लिए खेद प्रकट कर चुके थे। उसका केवल इतना लिख भेजना उनकी दृष्टि में निस्सार था कि सभी ज्ञात समाचार वह वहां भेज चुका है और साथ ही ड्यूक के दरबार में हर एक भेद बहुत गुप्त रक्खे जाने के कारण जब तक ड्यूक अपने विचारों को क्रियात्मक रूप न दे किसी को उसके अभिप्राय का पता नहीं चल सकता।

उसी समय किसी घड़ी का घंटा बजा। औरेलिया को उसकी प्रतीक्षा करते-करते अब तक दो घंटे बीत चुके थे। तली हुई मछलियां नष्ट हो गई होंगी और मुर्गों का भुर्ता तो जलकर राख हो गया होगा। उसको भूख भी बड़ी ज़ोर की लगी हुई थी क्योंकि उसने सुबह से कुछ नहीं खाया था। सभी जानते है कि प्रेम तथा भूख मानव की जन्मजात मूल प्रवृत्तियां है और यदि उनके आधीन वह हो जाए तो उसमें उसका क्या दोष? मैक्यावैली ने आह भरी। प्रश्न फ्लोरेंस की सुरक्षा तथा स्वतन्त्रता का था।

उसने कहा, "अच्छा चलो।"

बड़े दुःख के साथ मैक्यावैली सोचने लगा कि शायद ही कभी अपने देश के लिए किसी को इतना महान त्याग करना पड़ा हो।

एगापीटो उसको सीढ़ी से ऊपर ले गया और एक छोटे से कमरे का ताला खोलकर अन्दर पहुंचा। कमरे में एक तरफ एक बिस्तर बिछा हुआ था और तेल के दीपक का धुंधला प्रकाश कमरे में फैल

रहा था। उसने दीपक से मोमबत्ती जलाई और मैक्यावैली को बैठने के लिए कुर्सी देकर स्वयं एक मेज़ के समीप बैठ गया जिसपर कागज़ बिखरे थे, और पीछे की ओर झुक कर टांग पर टांग रखली। उसका भाव ऐसा था मानो समय का उसके आगे कोई मूल्य न हो।

"मैं उस दस्तावेज़ की नकल न तो आपको पहले दे सका और न फेरेरा के ड्यूक के प्रतिनिधि तथा किसी और को ही। इसका एक कारण था। ड्यूक और पागोलो ओरसिनी ने संधिपत्र का जो मसौदा बनाया था उस पर दोनों सहमत थे। पागोला इस संधिपत्र को सेना-नायकों के पास इस शर्त पर लेकर गया था कि यदि वे उससे सहमत होंगे तो वह ड्यूक की ओर से स्वीकृति दे देगा क्योंकि ड्यूक ने उसको अपना अधिकृत प्रतिनिधि बना दिया था। पर जब वह चला गया तो ड्यूक ने उस दस्तावेज़ की पुनः जांच की और सोचा कि फ्रांस के हितों की रक्षा के लिए एक शर्त और उसमें जोड़नी चाहिए थी।"

मैक्यावैली अब तक बड़ी अधीरता से यह भाषण सुन रहा था क्योंकि वह संधिपत्र को देखना चाहता था और संभव हो सके तो उसे अपने साथ लेकर चला जाना चाहता था। पर अब वह एकाग्र मन से उसकी बातें सुनने लगा।

"उस शर्त का मसौदा बनाकर ड्यूक ने मुझे आज्ञा दी कि मैं घोड़े पर चढ़कर पागोलो के पीछे-पीछे जाऊं और उससे कह दूं कि जब तक वह धारा स्वीकृत न हो तब तक वह हस्ताक्षर न करे। मैं शीघ्र ही उसके पास पहुँच गया पर उसने इस शर्त को मानना एकदम अस्वीकार कर दिया। बहुत वाद-विवाद के बाद उसने इतना कहा कि वह उसे औरों को दिखा देगा पर उसे विश्वास है कि दूसरे सेनानायक भी उसे नहीं मानेंगे। इसलिए मैं वहां से चला आया।"

"उस धारा का विषय क्या है?"

एगापीटो ने जिस स्वर में उत्तर दिया उसमें हंसी की ध्वनि स्पष्ट थी।

"यदि वह धारा स्वीकृत हो गयी तो हमें ऐसा रास्ता मिल जायगा जिससे संधिपत्र के बन्धन हमारे लिए शिथिल हो जाएं और यदि वह स्वीकृत नहीं होती तो भी हम सम्मानपूर्वक उससे मुक्त हो सकते हैं।"

"इससे तो ऐसा जान पड़ता है कि शान्ति-स्थापना की अपेक्षा ड्यूक की इच्छा उन लोगों से बदला लेने की ही अधिक है जिन्होंने उसके राज्य को संकट में डाला है।"

"यकीन कीजिए ड्यूक की कोई इच्छा उसके स्वार्थ के विरुद्ध नहीं होती।"

"आपने मुझे संधिपत्र दिखाने का वचन दिया था।"

"लीजिए यह रहा।"

मैक्याबेली ने उसे बड़ी उत्कंठा से पढ़ा। संधिपत्र के अनुसार ड्यूक तथा सेनानायकों में यह करार हुआ था कि भविष्य में वे शान्तिपूर्वक तथा मिल-जुलकर रहेंगे। उसके सेनापति के पद तथा वेतन पहले की भांति ही उसके अधीन रहेंगे और सदेच्छा के प्रतीक स्वरूप प्रत्येक सेनानायक अपना एक-एक औरस पुत्र ड्यूक के पास बंधक के रूप में रक्खेगा। पर उसमें यह भी निर्दिष्ट था कि किसी भी समय में ड्यूक के पास एक से अधिक सेनानायक न रहेगा और वह भी तभी तक जब तक वह सहज ही रह सके। अपनी ओर से उन्होंने उसे अरबीनो तथा कैमरीनो का प्रदेश देना स्वीकार किया था और ड्यूक ने पोप और फ्रांस के बादशाह के सिवाय अन्य किसी भी राष्ट्र के आक्रमण से उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी। यही वह धारा थी जिसे ड्यूक अवश्य ही जोड़ना चाहता था। एक बालक भी देखकर बता सकता था कि इस धारा के जुड़ने से वह संधिपत्र व्यर्थ हो जाता है। बोलोना का वैण्टीवोगलियो और सायना का पैट्रूसी पोप के साथ अलग संधि कर रहे थे। मैक्यावेली ने त्योरी चढ़ाकर दूसरी बार उस संधिपत्र को पढ़ा।

"वे ड्यूक से कैसे यह आशा कर सकते हैं कि वह उन्हें सारी क्षतियों के लिए क्षमा कर दे ?" वह पढ़ना समाप्त करके बोला। "और

जिस भयावह स्थिति में उन्होंने ड्यूक को डाल दिया है उसे ड्यूक ही कैसे भुला सकता है ?"

एगापीटो ने सस्मित उत्तर दिया 'शठे शाठ्येन समाचरेत ।'

"क्या मैं यह संधिपत्र नकल करने के लिए ले जा सकता हूं ?"

"मुझे दुःख है कि मैं इसे ले जाने नहीं दे सकता ।"

"मैं वचन देता हूं कि मैं इसे कल ही लौटा दूंगा ।"

"यह असम्भव है । ड्यूक किसी क्षण भी मुझसे इसे माँग सकता है ।"

"ड्यूक फ्लौरेंस के लिए अपनी निष्कपट मित्रता का आश्वासन देते नहीं थकता । इसलिए यह बहुत ही आवश्यक है कि मेरे शासकों को इस संधिपत्र की जानकारी हो जाय । विश्वास रखिए वे इस उपकार को भुलायेंगे नहीं ।"

"राजकाज का अब तक मुझे काफी अनुभव हो चुका है और मैं राजाओं तथा शासकों की कृतज्ञता का कोई भरोसा नहीं करता ।"

जब मैक्यावैली ने अधिक आग्रह किया तो एगापीटो बोला, "यह तो आप जानते ही हैं कि आपका उपकार करने के लिए मैं बहुत कुछ करने को तैयार हूँ । मैं जितना आपके विवेक का आदर करता हूँ उतनी ही आपकी ईमानदारी की भी प्रशंसा करता हूँ । पर इसमें सचमुच बड़ी आशंका है, फिर भी इतना कर सकता हूँ कि आपको यहीं इसकी प्रतिलिपि कर लेने दूँ ।"

मैक्यावैली ने ज़ोर से आह भरी । प्रतिलिपि में आधा घंटा लगेगा और समय बीतता जा रहा था । शायद ही कभी कोई प्रेमी ऐसी विषम स्थिति में पड़ा हो । पर उधर उसकी बात मानने के सिवाय कोई चारा भी तो न था । एगापीटो मेज के पास से उठ आया और उसको काग़ज़ तथा नई कलम दे दी । वह स्वयं बिस्तरे पर जा लेटा और मैक्यावैली जल्दी-जल्दी सन्धिपत्र की नकल करने लगा । अन्तिम वाक्य लिखते

लिखते उसने चौकीदार की आवाज़ सुनी। उसी समय गिरजे का घंटा भी बजा। ठीक आधी रात थी।

एगापीटो उसके साथ-साथ नीचे उतरा और जब वे उस चौक में पहुँचे जिसके चारों ओर वह महल बना हुआ था तो उसने दो पहरेदारों को आज्ञा दी कि वे मैक्यावैली को प्रकाश दिखाते हुए उसके घर तक छोड़ आयें। उस समय वर्षा हो रही थी और ठंड भी कड़ाके की पड़ रही थी। घर पहुँचने पर मैक्यावैली ने सिपाहियों को इनाम देकर विदा किया और दरवाज़े का ताला खोला। वह वहीं द्वार के पीछे खड़ा हो गया और जब उन पैरों की आवाज़ डूब गयी तो बाहर आकर द्वार बन्द कर दिया और वहाँ से खिसक गया। गली पार करके वह बार्थोलोमियो के द्वार पर पहुँचा और पूर्व-निश्चित संकेत के अनुसार खटखटाने लगा। पर कोई उत्तर नहीं मिला। उसने फिर द्वार खटखटाया। पहले दो बार फिर ठहर कर एक बार, फिर ठहर कर दो बार, और फिर प्रतीक्षा करने लगा। सँकरी गली में से कटीली ठंडी हवा आ रही थी और वर्षा के थपेड़े उसके मुख पर पड़ रहे थे। उसने काफी कपड़े पहन रक्खे थे और तीखी हवा से बचने के लिए नाक पर भी मफ्लर लपेट रखा था। पर फिर भी वह ठंड से काँप रहा था। शायद घर की महिलायें उसकी प्रतीक्षा करते करते ऊब गई होंगी। पर पीयरो को क्या हुआ? उसे तो अपने पहुँचने तक मैक्यावैली ने चौक में ठहरने के लिये कह दिया था। पीयरो ने इससे पहले कभी उसकी आज्ञा की अवहेलना भी नहीं की थी। पीयरो ने उन्हें समझा तो दिया ही होगा कि उसे देर क्यों हो रही है। और फिर कारण भिन्न होने पर भी उन दोनों महिलाओं का हित भी तो इसी में था कि मौका हाथ से न चला जाय। महल से आते हुये उसने देखा था कि मकान में से प्रकाश नहीं आ रहा है। अब उसने सोचा कि देखें पिछवाड़े की ओर भी रोशनी है या नहीं। फिर एक बार व्यर्थ ही द्वार खटखटा कर वह अपने घर लौट आया और अपने सोने के कमरे में जाकर बार्थोलोमियो के चौक और सामने वाली खिड़कियों की ओर देखने लगा।

पर उसे कुछ दिखलाई न दिया। उस गहरे अंधकार में कुछ भी देखने का प्रयत्न बेकार था। उसने सोचा कि संभव है पीयरो एक प्याला शराब पीने के लिये चला गया हो जिससे उसे गर्मी आ जाय। शायद इस समय तक वह अपने स्थान पर लौट आया हो। वह उस भयंकर रात में एक बार फिर बाहर निकला। वह द्वार खटखटाता, फिर प्रतीक्षा करता, फिर खटखटाता फिर प्रतीक्षा करता। यहाँ तक कि उसके हाथ और पाँव बर्फ की भाँति जम गये और उसके दाँत बजने लगे।

उसने बड़बड़ा कर कहा, "आज रात मैं ठंड से मरा नहीं तो गुद की पीड़ा से तो किसी तरह न बच सकूँगा।"

घर में वह भोजन की खोज में रसोई घर में गया था पर वहाँ उसको कुछ नहीं मिला क्योंकि सैराफीना खाने की वस्तुयें रोज सबेरे ही बाज़ार से लाती थी और जो कुछ बच जाता था उसे ताले में बन्द कर देती थी।

"इस ठंड से तो अवश्य मेरी मृत्यु होजायगी।" सहसा वह क्रोध से उत्तेजित हो उठा और वह दरवाज़े को दोनों घूँसों से तोड़ने ही वाला था कि उसको ध्यान आया कि यदि पड़ौसी जाग गये तो उसके सब किये-कराये पर पानी फिर जाएगा। इसलिए उसने अपने आप को ऐसा करने से रोक लिया। अंत में उसको निश्चय हो गया कि वे लोग उसकी आशा छोड़ कर सो गए। वह अत्यन्त दुःखी होकर घर लौट आया। भूख और ठंड से पीड़ित होकर वह विषाद और निराशा में डूब गया।

बैठक में से अँगीठी भी हटा दी गई थी इसलिए वहाँ भी बड़ी ठंड हो रही थी। मैक्यावैली को इतना भी चैन न मिला कि वह अपने पलंग पर लेट जाता। उसे उसी समय ड्यूक के साथ अपने वार्तालाप का पूरा विवरण लिखना था। इसमें उसे बहुत अधिक समय लगा क्योंकि अधिक आवश्यक भाग उसे सांकेतिक भाषा में लिखना पड़ता था। पत्र के साथ भेजने के लिए संधिपत्र की भी एक सुलेख प्रतिलिपि करनी पड़ी। काम समाप्त होते-होते रात्रि समाप्त हो आई थी। वह पत्र इतना

आवश्यक था कि फ्लोरेंस की ओर जाने वाले दूत की प्रतीक्षा न कर सकता था जो एक दो फ्लौरिन के बदले में पत्र पहुँचा दे। इसलिए ऊपर चढ़कर वह उस छोटी सी दुछत्ती में पहुँचा जहाँ उसके दोनों नौकर सो रहे थे। उसने उनको जगाया और इन दोनों में से जो अधिक विश्वास-पात्र था उसको आदेश दिया कि वह घोड़े पर ज़ीन कस कर शीघ्र ही तैयार होजाय और नगर के फाटक खुलते ही तुरंत पत्र लेकर फ्लोरेस के लिए रवाना हो जाय। जब तक वह आदमी कपड़े पहिन कर तैयार हुआ तब तक मैक्यावैली वहीं खड़ा रहा और उसके बाहर जाने पर द्वार बंद करके आकर अपने पलंग पर लेट गया। टोपे से कानों को भली-भांति ढकता हुआ वह भुनभुनाया, "और यह है प्रणय की रात्रि।"

[२३]

सोते में उसको बैचेनी रही। सुबह वह बहुत देर से उठा और जिस बात से डरता था वही उसके आगे आई। उसको ठंड लग गई थी और जब वह पीयरो को बुलाने के लिए द्वार पर आया तो उसकी आवाज़ फटे बांस जैसी थी।

पीयरो सामने आया तो मैक्यावैली ने कराह कर उससे कहा, "मेरी तबियत खराब है। मुझे ज्वर भी है और ऐसा जान पड़ता है मानो मेरी जान ही निकल जायगी। तुम मेरे लिए कुछ गरम शराब और कुछ खाने की चीज़ ले आओ। क्योंकि मैं ज्वर से नहीं भी मरा तो भूख से अवश्य मर जाऊँगा। और एक अँगीठी भी रख जाना। ठंड के मारे मेरा अंग-अंग अकड़ गया है। रात को तुम किस जहन्नुम में चले गए थे?"

पीयरो कुछ कहने ही वाला था कि मैक्यावैली ने उसे रोक कर कहा, "अच्छा छोड़ो उस बात को। पीछे उत्तर देना, पहिले शराब लाओ।"

जब उसने शराब पी ली तथा कुछ नाश्ता भी कर लिया तो उसकी तबियत काफ़ी सँभल गई। उसने बड़े उदासीन मन से सुना कि पीयरो उसके आदेशानुसार एक घंटे से अधिक चौक में उसकी प्रतीक्षा करता रहा, यद्यपि मेंह उसके शरीर में बिंध गया था। श्रीमती कैटेरीना के अन्दर बुलाने पर भी वह बाहर ही खड़ा रहा।

"क्या तुमने उसको सारी बात बता दी थी?"

"जो कुछ आपने कहा था वही मैंने ज्यों का त्यों दुहरा दिया था।"

"और उन्होंने क्या कहा?"

"उन्होंने खेद प्रगट किया।"

"उन्होंने खेद प्रगट किया!" मैक्यावैली क्रोध से गुर्रा उठा, "हे प्रभु! और कहते हैं कि स्त्री की रचना पुरुष की सहगामिनी के रूप में की गयी। 'उन्होंने खेद प्रगट किया।' हेक्टर की मृत्यु और ट्राय की पराजय पर वे क्या कहतीं?"

"अंत में उन्होंने मुझे ढके हुए स्थान में बैठने के लिए विवश कर दिया। ठंड के मारे मेरी दांती बज रही थी। उन्होंने कहा कि वे रसोईघर से आपके द्वार खटखटाने का शब्द सुन लेंगी। उन्होंने मेरा कोट उतरवा लिया जिससे मैं आग के सामने अपने को सुखा सकूं।"

"और मछलियों तथा मुर्गों का क्या हुआ?"

"हमने उनको बहुत देर तक गरम रक्खा। अन्त में श्रीमती कैटेरीना ने कहा कि वे ख़राब हो जाएँगे, इसलिए उनको खा लेना ही ठीक होगा। हम भूखे भी थे।"

"और मेरा तो भूख से दम ही निकल रहा था।"

"हमने आपके लिए भी बचा रक्खा था, थोड़ी सी मछलियाँ और आधा मुर्गा।"

"बड़ी कृपा की।"

"एक घंटा बीता और फिर दूसरा। तब श्रीमती औरेलिया सोने के लिए चली गयीं।"

"क्या ?" मैक्यावैली ने बीच में टोका।

"हमने बहुत प्रयत्न किया कि वह थोड़ी देर और प्रतीक्षा करें। हमने कहा कि आप बस आने ही वाले होंगे। पर वह बोलीं कि किसी भी आदमी के लिए दो घंटे प्रतीक्षा करना काफी है। कहने लगीं कि यदि आपको आनन्द की अपेक्षा कर्त्तव्य अधिक प्यारा है तो आप के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने में भी खास आनंद की आशा करना बेकार है।"

"इसका यह परिणाम निकालना एकदम अनुचित है।"

"वह कहने लगीं कि यदि आप सचमुच उससे वैसा ही बेहद प्रेम करते हैं जैसा आप कहते रहते हैं तो आप ड्यूक से बातचीत बंद करने का कोई बहाना जरूर निकाल सकते थे। हमने उनके साथ बहुत बहस की।"

"जैसे औरतों से भी बहस की जा-सकती है !"

"पर वह कुछ भी सुनने के लिए तैयार ही न थीं। लाचार होकर श्रीमती कैटेरीना ने कहा कि और ज्यादा प्रतीक्षा करने से कोई लाभ नहीं। उन्होंने मुझे एक प्याला शराब और पिलाई और वहीं से मुझे बाहर भेज दिया।"

मैक्यावैली को याद आया कि पीयरो के पास ताले की कुंजी नहीं थी।

"तुमने रात कहाँ काटी ?"

पीयरो ने कुटिल, पर संतोषभरी मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "नीना के साथ।"

"तब तो तुम्हारी रात अच्छी ही बीती," मैक्यावैली ने क्षोभ-पूर्वक कहा, "पर मैंने तो सुना था कि वह अपने माँ के घर चली गयी थी।"

"उसने श्रीमती कैटेरीना से यही कहा था। पर हमने मिलकर पहले ही प्रबन्ध कर लिया था। उसने ला बारवैरीना से उसके मकान में एक कोठरी माँग ली थी और मुझ से कह दिया था कि जैसे ही छुट्टी मिले वहाँ पहुँच जाऊँ।"

ला बारवैरीना एक कुटनी थी जिसका व्यवसाय इमोला में खूब जमा हुआ चल रहा था। कुछ देर तक मैक्यावैली चुप रहा किन्तु वह हार मान लेने वाला व्यक्ति न था।

उसने खूब सोच-विचार कर कहा, "देखो पीयरो, वह मूर्ख बार्थोलोमियो रात होने से पहले ही लौट आएगा। हमें शीघ्र ही कोई कार्यवाही करनी चाहिए। देवता को प्रसन्न करने के लिए भेंट देना आवश्यक होता है। तुम उसी दुकानदार ल्यूका कैथेली के पास जाओ जिससे मैंने श्रीमती औरेलिया के लिए दस्ताने ख़रीदे थे और जो ज़री के काम वाला रेशमी नीला दुपट्टा उसने मुझे दिखलाया था, वह ले आओ। उससे कह देना कि फ्लोरेंस से शीघ्र ही मेरा रुपया आने वाला है और आते ही मैं दाम दे दूँगा। उसे लेकर तुम कैटेरीना से मिलने के लिए जाना और उससे कह देना कि यह दुपट्टा औरेलिया के लिए है। साथ ही यह भी कहना कि मैं औरेलिया के विरह और बाहर प्रतीक्षा करते-करते लगी ठंड के कारण पीड़ित हूँ। पर जैसे ही मेरी तबियत ठीक होगी मैं उससे अवश्य मिलूँगा और ऐसा उपाय ढूँढूगा जिससे हम दोनों की कामना पूरी हो।"

पीयरो उसकी आज्ञानुसार उसी समय चला गया और मैक्यावैली बड़ी बेचैनी से उसके समाचार लाने की प्रतीक्षा करने लगा। पीयरो ने लौटकर बताया, "श्रीमती औरेलिया ने दुपट्टा बहुत पसंद किया। उन्होंने कहा कि यह बहुत सुन्दर है और मुझ से उसका मूल्य भी पूछा। मूल्य बताने पर तो वह उसे और भी पसंद आया।"

"यह तो स्वाभाविक ही है। फिर क्या हुआ ?"

"मैंने जब उनको बतलाया कि किस प्रकार आपका महल से

लौटना असंभव हो गया था, तो उन्होंने कहा कोई हर्ज नहीं, उस बात को अब आप भूल जायें।"

"क्या कहा?" मैक्यावैली क्रोध में भर कर बोला, "सचमुच स्त्रियाँ बहुत नादान होती हैं। क्या वह भूल गयी कि इस पर उसका सारा भविष्य निर्भर है। क्या तुमने उसको बतलाया था कि मैं एक घंटे तक वर्षा में खड़ा रहा था?"

"हाँ! पर वह बोली कि आपने बड़ी नासमझी का काम किया।"

"प्रेमी में समझ-बूझ की आशा करना ही व्यर्थ है। यह तो ऐसी बात है कि कोई भयंकर तूफान में गरजते समुद्र से एकदम शान्त हो जाने के लिए कहे।"

"और श्रीमती कैटेरीना ने कहलवाया है कि आप अपने स्वास्थ्य की ओर से सावधान रहें।"

[२४]

मैक्यावैली कई दिनों तक चारपाई पर पड़ा रहा। पर बराबर जुलाब तथा दस्त लेने से धीरे-धीरे वह ठीक हो गया। स्वस्थ होकर पहला काम जो उसने किया वह था फ्रा टिमोटियो से मिलना। उसने उसे अपनी दुःख-गाथा सुनाई। पुजारी ने सुनकर बड़ी सहानुभूति प्रकट की।

फिर मैक्यावैली कहने लगा, "अच्छा, अब हम दोनों मिलकर कोई ऐसा उपाय सोचें जिससे एक बार फिर बार्थोलोमियो यहाँ से टल सकें।"

"श्रीमान्, जहाँ तक मुझसे हो सका मैंने किया। अब अधिक मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"गुरुदेव, जब हमारे तेजस्वी ड्यूक ने फोरली नगर पर ग्राक्रमण किया था तो पहले उसको पीछे हटना पड़ा था पर इसी से घबड़ाकर उसने अपना घेरा तो नहीं हटा लिया था। उसने जो भी युक्ति सूझी उसका प्रयोग किया और अन्त में उसे विजय मिली।"

"मैं मि० बार्थोलोमियो से मिल चुका हूँ। उसने मेरे कहे अनुसार सारे काम किए हैं। उसको विश्वास हो गया है कि सेंट विटेल की कृपा से उसका मनोरथ पूरा हो गया है। उसे पक्का यकीन है कि जिस दिन रेवेना से लौटा उसी रात औरेलिया गर्भवती हो गयी है।"

"वह मूर्ख है।"

"गृहस्थ न होने पर मैं भी इतना तो अवश्य जानता हूँ कि नियत समय बीतने पर ही उसकी बात ठीक या गलत होने का पता चलेगा।

मैक्यावेली मन ही मन बहुत कुढ़ा। उसको पुजारी से जितनी आशा थी उतनी सहायता वह नहीं कर रहा था।

"छोड़िये इन बातों को। मुझे भी मूर्ख मत समझिये। उन महात्मा की अस्थियों में और चाहे जो चमत्कार हो पर उसमें कम से कम नपुंसक को अच्छा करने की शक्ति नही है। सारी कहानी मेरे दिमाग़ की उपज थी और आप भी जानते हैं उसमें सचाई का अंश लेशमात्र भी नहीं है।"

फ्रा टिमोटियो के चेहरे पर हलकी सी मुस्कान फैल गई। जब वह बोला तो उसकी आवाज़ में स्निग्धता थी। "परमात्मा की लीला अपरम्पार है। उसकी गतिविधि कौन जान सकता है? क्या आपने हंगरी की तपस्विनी एलिजाबेथ की कहानी नहीं सुनी? उसके निर्दयी पति ने आदेश दे रक्खा था कि वह दीन-दुखियों की सहायता न करे। एक दिन जब वह भूखों के लिए एक टोकरी में कुछ रोटियाँ लेकर जा रही थी तो मार्ग में उसका पति मिल गया। उसको संदेह हुआ कि उसकी पत्नी ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। उसने पूछा कि टोकरी में क्या है। मारे डर के वह कह उठी कि उसमें गुलाब के फूल हैं। पति ने टोकरी छीन ली और जब खोल कर देखा तो सचमुच उसमें गुलाब के

फूल ही थे। रोटियों ने दैवी चमत्कार से सुगंधित गुलाब के फूलों का रूप ले लिया था।"

मैक्यावैली ने नीरसता से कहा, "कहानी शिक्षाप्रद अवश्य है पर आपका तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आया।"

"क्या यह नहीं हो सकता कि संत विटेल ने स्वर्ग में भक्त बार्थोलोमियो की विनती सुनली हो और करुणा से आर्द्र हो कर यह चमत्कार उन्होंने पूरा कर दिखाया हो ? क्या हमारे धार्मिक ग्रन्थ हमको यह शिक्षा नही देते कि सच्ची श्रद्धा द्वारा संसार में कठिन से कठिन काम पूरे हो जाते हैं।"

मैक्यावैली में असाधारण संयम शक्ति न होती तो इस समय वह अवश्य आपे से बाहर हो जाता। वह भली-भाँति जानता था कि पुजारी उसकी सहायता से क्यों मुँह मोड़ रहा है। पच्चीस मोहरों के बदले में उसने वायदे अनुसार काम पूरा कर दिया था। यदि काम नहीं बना तो इसमें उसका क्या दोष ? अब वह और धन चाहता था और मैक्यावैली के पास धन अब नहीं था। कैटेरीना के लिए हार और औरेलिया के लिये दस्ताने तथा गुलाब का इत्र खरीदने में उसका सब पैसा खत्म हो गया था। इसके अलावा बार्थोलोयिमो तथा अन्य व्यापारियों का कर्ज भी उस पर हो गया था। सरकार से जो वेतन उसे मिलता था वह उसके रोज़मर्रा के खर्च भर को काफी हो पाता था। अब देने के लिए उसके पास बस वायदे ही थे। और वह जानता था कि कोरे वायदे पुजारी को संतुष्ट करने के लिए काफी नहीं हैं।

"आपकी वाक्पटुता तथा आपकी धर्मनिष्ठा इस बात के प्रमाण हैं कि आपके बारे में जो मैंने सुन रखा है वह सही है। यदि मेरे शासकों पर मेरी सिफारिश का इच्छित प्रभाव पड़ा तो मुझे विश्वास है कि फ्लोरेंस निवासियों का बड़ा आध्यात्मिक हित होगा।"

पुजारी ने गम्भीरतापूर्वक सिर झुकाया। पर मैक्यावैली समझ गया कि इस बात से वह विचलित नहीं हुआ है।

उसने फिर कहा, "बुद्धिमान आदमी एक ही पतवार के सहारे नहीं रहता। यदि एक योजना असफल हो जाय तो दूसरी का प्रयत्न करना चाहिये। हम यह बात तो नहीं भूल सकते कि बार्थोलोमियो की आशा पूरी न होने से वह अपने भांजों को गोद ले लेगा। इससे उसकी पत्नी और सास को तो मुसीबत उठानी ही पड़ेगी, साथ ही आपके मठ को भी हानि पहुँचेगी।"

"यह ऐसे दुर्भाग्य की बात होगी जिसको धैर्यपूर्वक सहने के लिए सभी लोगों को साहस दिलाना मेरा धार्मिक कर्त्तव्य हो जाएगा।"

"कहावत है कि परमात्मा उन्हीं की सहायता करता है जो स्वयं स्वावलम्बी हैं। देखिये मैं पहिले भी अनुदार न था और आगे भी नहीं रहूँगा। इसमें आपका भी भला है तथा दोनों महिलाओं का भी कि बार्थोलोमियो की आशा पर पानी न फिरे।"

मैक्यावैली को लगा जैसे एक क्षण के लिए पुजारी के मुख पर एक हलकी-सी मुस्कान छा गई हो।

"श्रीमान्, यह तो आप जानते ही हैं कि आप जैसे श्रेष्ठ व्यक्ति का भला करने को मैं बहुत कुछ तैयार हूँ। पर मान लीजिये कि बार्थोलोमियो की आशा विफल हो जाती है, तो फिर अपनी सहायता स्वयं करके आप परमात्मा से किस सहायता की आशा करते हैं?"

सहसा मैक्यावैली को एक बात सूझी जिससे वह स्वयं इतना प्रभावित हुआ कि बरबस उसे हँसी आ गई।

"सुनिये, दूसरे लोगों की भाँति आप भी कभी-कभी जुलाव अवश्य लेते होंगे और आपने अनुभव किया होगा कि रात को जुलाब की दवा लेकर यदि सबेरे थोड़ा क्षार खा लिया जाय तो उसका परिणाम अधिक संतोषप्रद होता है। क्या आपके ध्यान में यह बात नहीं आई कि संत विटेल की यात्रा को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए बार्थोलोमियो को अब रिमनी की यात्रा करनी चाहिए। इससे उसे एक बार फिर चौबीस घंटे के लिए यहाँ से बाहर रहना पड़ेगा।"

"श्रीमान्, उपाय खोजने में आप इतने चतुर हैं कि मैं आपकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। पर अब तो समय निकल गया। संभव है बार्थोलोमियो मूर्ख हो, पर उसे वास्तव से अधिक मूर्ख मानना तो मेरी मूर्खता होगी।"

"आपका उसके ऊपर बड़ा प्रभाव है।"

"इसीलिए तो और भी मैं ऐसा कोई कार्य नही करना चाहता जिससे वह जाता रहे।"

"तब मैं आपसे सहायता की आशा न करूँ ?"

"यह तो मैं नही कहता। महीने भर ठहर जाइये, फिर इस विषय पर बात करेंगे।"

"एक प्रेमी के लिए एक मास सौ वर्ष के समान है।"

"पर हमें यह नही भूलना चाहिये कि महात्मा जैकब ने रैशल के लिए सात वर्ष प्रतीक्षा की थी।"

मैक्यावेली समझ गया कि पुजारी उसकी हँसी उड़ा रहा है। जब तक उसको भरपूर दक्षिणा नही मिल जाती तब तक उससे कुछ भी आशा रखना व्यर्थ है। वह मन ही मन बहुत कुढ़ रहा था, पर साथ ही जानता था कि क्रोध प्रगट करने से सब किया-कराया मिट्टी हो जाएगा।

उसने अपने मन पर संयम किया और प्रसन्न भाव से पुजारी से विदा माँगी। उसने बार्थोलोमियो की आशा पूरी करने के लिए देवी की मूर्ति के आगे दीपक जलाकर एक फ्लोरिन भी महन्त को दिया। अपने आप हार मान लेने में वेदना की कसक न थी।

[२५]

अब औरेलिया को प्राप्त करने का उसके पास एक ही उपाय बाकी रह गया और वह था कैटेरीना की सहायता। स्पष्ट ही जिस बुरी तरह

उसकी योजना असफल हो गई थी उसके कारण कैटेरीना को उससे भी अधिक चिन्ता होगी। मैक्यावैली के लिए तो केवल एक सुन्दरी के साथ भोग का प्रश्न ही था पर उस स्त्री का तो सारा भविष्य ही दाँव पर लगा हुआ है। वह पुजारी के ऊपर भरोसा न कर सकता था, पर कैटेरीना ऐसी साझेदार थी जिसका निजी स्वार्थ भी इस कार्य से जुड़ा हुआ था और जिस पर विश्वास भी किया जा सकता था। स्त्रियों की चतुराई में उसका अटल विश्वास था। छल उनका जीवन है। योजना को सफल बनाने में कोई बात उठा न रखने में ही उसकी भलाई थी। इसलिए अब उसने कैटेरीना से मिलने का निश्चय किया। जैसा एकाकी जीवन दोनों महिलाएं बिताती थीं, उसमें उनसे मिलना सरल काम न था। पर भाग्यवश मध्यस्थ का काम करने को पीयरो मौजूद था। उसने मन ही मन अपनी दूरदर्शिता को सराहा कि उसने उस छोकरे को नीना के साथ प्रेम करने के लिए उकसाया था।

दूसरे दिन उसने बाज़ार से एक बढ़िया मछली खरीदी और उसे पीयरो के हाथ बार्थोलोमियो के घर ऐसे समय पर भेजा जब वह जानता था कि मोटा नगर में अपने कारोबार में लगा होगा। वह चिन्तित था कि यदि पीयरो कैटेरीना से अकेले में मिलकर मिलने का समय निश्चित न कर सका तो बड़े दुर्भाग्य की बात होगी। पर पीयरो ने अपनी सहज चतुराई से अपना काम पूरा किया और लौटकर मैक्यावैली को बताया कि बड़ी दुविधा के साथ वह तीन दिन के बाद संत डोमनिक के गिरजाघर में मिलने को तैयार हुई है। मिलने के स्थान का चुनाव बड़ी चतुराई का था। स्पष्ट है कि अपनी सहज नारी-बुद्धि से वह समझ गई होगी कि फ्रा टिमोटियो पर अब विश्वास नहीं किया जा सकता और भलाई इसी में है कि अब उसे उनके मिलने का पता भी न चले।

मैक्यावली संत डोमनिक के गिरजाघर में पहले से कुछ सोचे बिना ही जा पहुँचा। पर वह उद्विग्न न था। उसे विश्वास था कि कैटेरीना कोई न कोई उपाय अवश्य निकाल लेगी। उसे केवल इस बात का रड

था कि कहीं बहुत धन ही आवश्यकता न पड़े। पर और कोई उपाय न सूझा तो अधिक से अधिक उसे बार्थोलोमियो से और कर्ज लेना पड़ेगा। वैसे भी यह न्याय की ही बात थी कि मैक्यावैली की सेवाओं का मूल्य वही चुकाए।

गिरजाघर उस समय निर्जन था। मैक्यावैली ने कैटेरीना को उस रात का सारा हाल कह सुनाया कि किन कारणों से वह निर्दिष्ट समय पर न पहुँच सका था तथा किस प्रकार वह वर्षा में भीगता हुआ द्वार खटखटाता रहा था, जिससे उसे अंत में सर्दी लग गई थी।

कैटेरीना बोली, "मुझे सब पता है। पीयरो ने सब समाचार बतलाए थे और हमको बड़ा दुःख हुआ था। औरेलिया बराबर कहती रही कि बेचारे भलेमानुष को कुछ हो गया तो उसका पाप मुझ पर लगेगा।"

मैक्यावैली ने कहा, "मरने की तो मेरी इच्छा नही थी और यदि ऐसा होता भी तो औरेलिया की याद मुझे स्वर्ग से भी खींचकर यहाँ ले आती।"

"यह सब हमारा ही दुर्भाग्य था।"

"जो बीत गया उस पर पछताना व्यर्थ है। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मेरी सारी शक्ति लौट आई है। अब हमें भविष्य पर विचार करना चाहिए। आप तो बहुत ही चतुर महिला हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि आप अवश्य ही कोई ऐसा मार्ग निकाल लेंगी जिससे हम दोनों की कामना पूरी हो।"

"मि० निकोलो, मेरा आज यहाँ आने का विचार नहीं था। पीयरो के बहुत कहने पर ही मैं यहाँ आई हूँ।"

"उसने कहा था आपने बड़ी मुश्किल से आना मंजूर किया है। पर इसका कारण मेरी समझ में नहीं आया।"

"बुरी खबर ले जाना कोई नहीं चाहता।"

मैक्यावैली ने एकाएक ज़ोर से पूछा, "क्या मतलब? यह तो असंभव है कि बार्थोलोमियो को कुछ भी संदेह हुआ हो।"

"नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। झंझट औरेलिया डाल रही है। मैंने उसे बहुत समझाया-बुझाया, घुटने टेककर उससे विनती की, पर वह किसी प्रकार राज़ी नही होती। आह ! मित्र ! अब लड़कियां पहले जैसी नहीं रही हैं। जब मै युवती थी उस समय कोई लड़की अपने मां-बाप की आज्ञा नहीं मानने का विचार भी अपने मन में नहीं ला सकती थी।"

बेकार की बातें बन्द करो। अपना असली मतलब समझाकर कहो।"

"औरेलिया किसी प्रकार नहीं मानती। वह आपकी इच्छा पूरी करने को तैयार नही।"

"इसका क्या परिणाम होगा यह बताया आपने उसे ? क्या आपने उसे नहीं समझाया कि बार्थोलोमियो ने दत्तक पुत्र ले लिया और कोस्टेन्जा इस घर की मालकिन हो गई तो आपकी और उसकी क्या दशा होगी ?"

"मैंने सब कुछ कहा ?"

"तो फिर इसका कारण ? स्त्री कोई काम कारण के बिना नहीं करती।"

"उसका कहना है कि भगवान ने ही पाप से उसकी रक्षा की है।"

"पाप ?" मैक्यावैली चीख़कर बोला। उत्तेजना में वह उस पवित्र स्थान के नियमों को भी भूला जा रहा था।

"मि० मिकोलो, मुझसे नाराज़ न हों। कोई माँ अपनी लड़की को आत्मा के विरुद्ध काम करने को मजबूर नहीं कर सकती।"

"श्रीमती जी क्षमा कीजिए, पर आपकी बातें एकदम बेमतलब, निरर्थक और बकवास मात्र हैं। आप अनुभवी स्त्री हैं और वह एक नादान छोकरी। उसे यह समझाना आपका कर्त्तव्य है कि जब दोनों ओर पाप हो तो विवेक तथा धर्म दोनों ही उनमें से छोटे पाप को चुनने की सलाह देते हैं। कौन समझदार व्यक्ति बड़ा पुण्य पाने के लिए एक छोटा-

सा पाप करने में हिचकेगा, और विशेषकर जब उसमें आनन्द भी भरपूर मिलने वाला हो ?"

"देखिए ऐसे मामलों में बहस बेकार होती है। मैं अपनी बेटी को जानती हूँ; वह टट्टू की तरह अड़ियल है। जब उसने एक बार मन में कोई बात ठानली तो मेरी कुछ भी नहीं चलेगी। उसने आपके लिए यह संदेश भेजा है कि आपके प्रेम की सुखद स्मृति में वह आपके दिए हुए सुन्दर दस्तानों तथा रेशमी दुपट्टे को बहुत सम्भालकर रखेगी पर अब वह कोई उपहार आपकी ओर से स्वीकार न करेगी। उसकी इच्छा है कि अब आप कोई उपहार भेजें भी नहीं। उसकी यह भी इच्छा है कि आप प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में उससे मिलने का भी भविष्य में प्रयत्न न करें। जहां तक मेरा अपना सम्बन्ध है, मैं आपकी कृपा के लिए सदा आभारी रहूँगी और मेरी यही कामना है कि आपकी निराशा का कोई न कोई उपाय कर सकूं।"

वह एक क्षण के लिए रुकी किन्तु मैक्यावैली ने कोई उत्तर नहीं दिया।

वह फिर कहने लगी, "आप जैसे चतुर और अनुभवी व्यक्ति को यह समझाना बेकार है कि स्त्री-स्वभाव बड़ा चंचल और अनिश्चित होता है। यदि अवसर उचित हो तो लाजवंती भी प्रेमी के सीने से लिपट जाती है और यदि मौका निकल जाय तो कुलटा भी इन्कार कर देती है। मेरी शुभ कामनाएं आपके साथ हैं।"

कैटेरीना ने उसका इस ढंग से अभिवादन किया जिसे देखने वाला अपनी भावना के अनुसार तिरस्कार, क्रोध अथवा शिष्टाचार चाहे जो मान सकता था। फिर वह चली गई और मैक्यावैली किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रह गया।

[२६]

अगले महीने में सारे प्रयत्नों के बावजूद मैक्यावैली को औरेलिया के दर्शन तब हुए जब वह इमोला से चलने लगा। सौभाग्य से काम में वह इतना व्यस्त रहा कि अपनी विफलता पर सोचने के लिए उसे समय ही न मिला। विद्रोहियों में आपस में फूट पड़ गई थी। और अंत में जिस संधिपत्र को एगापीटो ने मैक्यावैली को दिखाया था उस पर पैरूगिया निवासी गैंग्लीयोनी के अतिरिक्त सभी ने हस्ताक्षर कर दिए थे। गैंग्लीयोनी ने पहले तो सबको समझाया कि ऐसे दस्तावेज पर हस्ताक्षर करना महा मूर्खता होगी। पर जब उसने देखा कि वे लोग चाहे जो हो संधि कर लेने पर आमादा हैं तो वह गुस्से में जिस गिरजा-घर में उनकी सभा हो रही थी वहां से निकल आया। ड्यूक ने पैगोलो औरसिनी को अरबीनों का गवर्नर नियुक्त किया। संधिपत्र की शर्तों के अनुसार वह प्रान्त उसको मिल गया था। इसके अतिरिक्त ड्यूक ने उसे सब विद्रोहियों से संधिपत्र पर हस्ताक्षर कराने के पुरस्कार स्वरूप पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं भी प्रदान कीं। विटोलोज्जो ने विनयपूर्ण पत्रों द्वारा अपने कामों के लिए क्षमा मांगी।

"इस देशद्रोही ने पहले तो हमारी पीठ में छुरा भोंका", एगापीटो ने कहा,"और अब मीठे शब्दों से घाव भरना चाहता है।"

पर ड्यूक बहुत प्रसन्न मालूम होता था। ऐसा लगता था कि वह बीती को बिसारने और पछतावा करने वाले विद्रोहियों को अपना विश्वासपात्र बनाने को तैयार है। मैक्यावैली को उसकी सौजन्यता बनावटी जान पड़ी और उसने अपने शासकों को लिखा कि ड्यूक के मन की बात जान लेना असंभव है बल्कि इसका अनुमान लगाना भी कठिन था।

अब उसके आधीन एक शक्तिशाली सेना थी और यह स्पष्ट था कि वह इसका प्रयोग करेगा। जन-साधारण में चर्चा थी कि वह इमोला

से कहीं और जाने की तैयारी में लगा हुआ है पर यह कोई नहीं जानता था कि वह दक्षिण में नैपिल्स के राज्य पर आक्रमण करेगा अथवा उत्तर में जाकर वेनिस से युद्ध करेगा। इस समाचार ने मैक्या-वैली को और भी चिन्तित कर दिया कि पीसा से कुछ प्रभावशाली व्यक्ति अपना नगर समर्पण करने के लिए आए हुए हैं। फ्लोरेंस ने उस पर फिर से अधिकार प्राप्त करने के लिए समय, धन, तथा अनेकों व्यक्तियों के जीवन का बलिदान किया था, क्योंकि फ्लोरेंस के व्यापार के लिए उस पर अधिकार होना आवश्यक था। अब यदि ड्यूक का उस पर अधिकार हो गया तो आर्थिक तथा सामरिक दोनों दृष्टियों से फ्लोरेंस की स्थिति संकट-ग्रस्त हो जाएगी। लूसा का प्रदेश उससे लगा हुआ था और बातचीत में ड्यूक ने संकेत किया था कि वह प्रदेश बड़ा समृद्धिशाली और हड़पने लायक है। मैक्यावैली के विचार में यह प्रान्त किसी अशुभ घटना का सूचक था। यदि पीसा को लेने के बाद उसने लूसा पर भी अधिकार कर लिया तो फ्लोरेंस को उसकी दया पर निर्भर रहना पड़ेगा। एक बार ड्यूक ने मैक्यावैली से बातचीत में फिर फ्लोरेंस से भाड़े की सेना के सेनापति पद का प्रसंग उठाया था। ड्यूक को वह पद देने में शासकों को जो संकोच था उसे प्रगट करने में बेचारे मैक्वावैली को बड़ी कठिनाई हुई थी क्योंकि वह ड्यूक को रुष्ट भी न करना चाहता था। वास्तव में उसकी सरकार ने निश्चय कर लिया था कि वह सेना की बागडोर ऐसे व्यक्ति को नहीं सौंपेगी जो पूरी तरह स्वार्थी है तथा जिस पर अविश्वास करने के उनके पास पर्याप्त कारण थे। उधर ड्यूक के सुन्दर सिर के भीतर चाहे कैसी ही कुटिल योज-नाएं घूम रही हों, पर यह स्पष्ट था कि वह फ्लोरेंस वालों को अपनी मांगें स्वीकृत कराने के लिए छिपी धमकियां देने से अधिक कुछ करने को तैयार न था। इसलिए उसने मैक्यावैली की बातें काफी शान्ति-पूर्वक सुनीं। अन्त में उसने कहा कि वह अपनी सेना को लेकर कैसीना जा रहा है और वहां पहुंचकर जैसा उचित होगा करेगा।

वह १० दिसम्बर को फोर्ली होता हुआ १२ तारीख को कैसीना पहुंच गया। मैक्यावैली ने उसका अनुसरण करने का प्रवन्ध किया। उसने एक नौकर के साथ पीयरो को आगे भेज दिया जिससे वह ठहरने का स्थान खोज ले। फिर वह उन लोगों से विदा होने के लिए गया जिनके उपकारों का वह आभारी था। ड्यूक तथा उसके दरबारियों और मुसाहिबों के चले जाने से इमोला सूना हो गया था। अन्त में मैक्यावैली बार्थोलोमियो से विदा लेने को पहुंचा। वह घर पर ही मिल गया तथा उसने अपने पढ़ने के कमरे में मैक्यावैली को बैठाया। सदा की भांति मोटे ने उसका खिलखिलाकर स्वागत किया। उसको मैक्यावैली के जाने के निश्चय का समाचार पहले ही मिल चुका था और उसने विदाई के इस अवसर पर चुने हुए शब्दों में खेद प्रदर्शित किया। उसने कहा कि ऐसे विशिष्ट व्यक्ति का परिचय प्राप्त कर उसे बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ था। और बड़े दुःख की बात है कि अब न वह उसके साथ शतरंज खेल सकेगा और न अपने यहां के रूखे-सूखे भोजन से उसका सत्कार ही कर सकेगा।

उत्तर में मैक्यावैली ने भी अपनी कृतज्ञता प्रगट की और तब बड़ी झिझक के साथ वह उस विषय पर आ गया जो बड़ी देर से उसके मस्तिष्क में चक्कर लगा रहा था।

"प्रिय मित्र! मैं केवल आपके उपकारों का धन्यवाद देने के लिए ही नहीं आया हूं, पर आपसे एक और दया की भीख मांगने आया हूं।"

"आपके कहने भर की देर है।"

मैक्यावैली के होंठों पर तीखी-सी मुस्कान फैल गई। "मुझे आपकी पच्चीस स्वर्ण मुद्राएं देनी हैं, पर इस समय देने में मैं असमर्थ हूं। मेरी बस इतनी ही प्रार्थना है कि आप कुछ दिन और ठहर जाएं।"

"यह तो बहुत ही मामूली बात है।"

"पर पच्चीस स्वर्ण मुद्राएं काफ़ी भारी रकम है।"

"हां, हां, कोई चिंता नहीं, बल्कि यदि कुछ असुविधा हो तो देने की भी कोई आवश्यकता नहीं। समझ लीजिएगा कि एक मित्र का उपहार था कर्ज नहीं।"

"ऐसा तो कोई कारण नहीं कि आप मुझे भेंट दें। आपका इतना बड़ा उपकार मैं कभी भी ग्रहण नहीं कर सकता।"

बार्थोलोमियो कुर्सी पर टिक गया और ज़ोर से हँसने लगा।

"पर क्या आप अभी तक नहीं समझ सके कि यह रुपया मेरा नहीं है ? ड्यूक बड़ा चतुर व्यक्ति है। वह जानता था कि चीज़ों के दाम बढ़ जाने के कारण तथा आपके काम के लिए ज़रूरी खर्चों को देखते हुए आप बड़ी असुविधाजनक परिस्थिति में हैं। यह तो सभी जानते हैं कि आपकी सरकार बड़ी मक्खीचूस है। मुझे यह आदेश मिला था कि आपको जितने भी धन की आवश्यकता हो सरकारी कोष से दिला दिया जाय। यदि आप पच्चीस की जगह दो सौ मुद्रा भी मांगते तो मैं आपको अवश्य देता।"

मैक्यावैली यह सुनकर पीला पड़ गया। वह निस्तब्ध सा रह गया।

"यदि मैं जानता कि यह रुपया ड्यूक ने दिया है तो मैं कभी स्वीकार न करता।"

"ड्यूक आपकी धर्मभीरुता से परिचित था तथा आपकी ईमानदारी का प्रशंसक। वह आपकी कोमल भावनाओं का आदर करता है। ये सब बातें आपको बताकर मैं उसके साथ विश्वासघात कर रहा हूं, पर मैं नहीं चाहता कि आप उसके इस निस्वार्थ तथा उदार कार्य से अनभिज्ञ रहें।"

मैक्यावैली ने जीभ पर आई हुई गाली को प्रयत्नपूर्वक दबाया। उसे न तो ड्यूक की दया पर विश्वास था और न उसकी निस्वार्थता

पर। मैक्यावैली के पतले होंठ एक दूसरे से इतने सटे हुए थे कि उसका मुख केवल एक सीधी रेखा जैसा जान पड़ता था।

बार्थोलोमियो ने मुस्कराते हुए पूछा, "आपको आश्चर्य हुआ ?"

"ड्यूक के किसी कार्य से मुझे आश्चर्य नहीं होता।"

"वास्तव में वह एक महान् व्यक्ति है और जिनको भी उसकी सेवा का सौभाग्य मिला है, वे लोग आने वाली पीढ़ियों द्वारा याद किए जायेंगे।"

मैक्यावैली बोला, "प्रिय मित्र बार्थोलोमियो ! ख्याति किसी व्यक्ति को उसके महान् कार्यों द्वारा नहीं वरन् साहित्यिकों की लच्छेदार भाषा में उन कार्यों के वर्णन से मिलती है । यदि थ्यूसिडाइडीज ने अपना विख्यात भाषण पैरीक्लीज़ के नाम पर न लिखा होता तो पैराक्लीज़ को कोई आज न जानता होता।" यह कहते-कहते वह उठ खड़ा हुआ।

"आप महिलाओं से मिले बिना न जायें। विदा के समय आपका अभिवादन करने का अवसर न मिला तो उन्हें दुःख होगा।"

मैक्यावैली उसके साथ-साथ बैठक में गया। उसका गला रुँधा जा रहा था और उसके दिल की धड़कन बहुत बढ़ गई थी। महिलाओं को किसी के आने की आशा न थी इसलिए वे बहुत ही साधारण वस्त्र पहने बैठी थी। मैक्यावैली को देखकर उनको अचम्भा हुआ और उसके आने से वे विशेष प्रसन्न न हुईं। पर उन्होंने खड़े होकर उसका अभिनंदन किया। बार्थोलोमियो ने उन्हें बताया कि मैक्यावैली कैसीना जा रहा है।

सुनकर कैटेरीना ने दुःखभरे स्वर में कहा, "आपके जाने से तो यह स्थान सूना हो जाएगा।"

मैक्यावैली भली भांति जानता था कि उसके पीछे भी वे मौज से दिन बितायेंगी। इसलिए केवल रूखी-सी मुस्कान उसके चेहरे पर आयी।

औरेलिया कहने लगी, "मि० निकोलो को तो यह स्थान छोड़ते

हुए हर्ष ही हो रहा होगा क्योंकि यहां विदेशी के मनबहलाव के लिए कुछ भी सामान नहीं है।"

मैक्यावैली को ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके स्वर में रोष की झलक है। उसके बाद वह अपने काम में लग गई। मैक्यावैली ने लक्ष्य किया कि जो कपड़ा वह फ्लौरेंस से लेकर आया था उसी की कमीज़ पर वह कसीदा काढ़ने में अभी तक व्यस्त है।

उसने कहा, "श्रीमती औरेलिया, सचमुच में बड़े असमंजस में हूं कि मैं आपके धैर्य की सराहना करूं अथवा परिश्रम की।"

वह बोली, "बेकार लोगों के लिए काम शैतान ढूंढता है।"

"कभी-कभी वह काम बड़ा आनन्ददायक भी होता है।"

"पर खतरनाक भी।"

"और इसी से बहुत आकर्षक।"

"तो भी वीरता से विवेक अधिक सराहनीय है।"

मैक्यावैली को अपनी बात का मुंहतोड़ उत्तर पसन्द नहीं आया और यद्यपि वह मुस्करा रहा था पर उसके उत्तर में व्यंग्य बड़ा ही कटु था।

"कहावतें जनसमूह की बुद्धि की उपज हैं और जनसमूह सदा ही भूल करता है।"

औरेलिया आज बहुत सुन्दर नहीं लग रही थी। कुछ दिनों से मौसम ख़राब हो रहा था और उसको अपने बालों को रंगे हुए बहुत दिन हो गए थे। उनकी जड़ें काली दिखाई दे रही थीं। ऐसा लगता था कि उस दिन उसने अपना शृङ्गार जल्दी में किया है क्योंकि प्रसाधन से उसकी त्वचा का गेहुँआ रंग पूरी तरह नहीं छिप सका था।

मैक्यावैली ने मन में सोचा कि चालीस वर्ष की होते-होते तो अपनी मां जैसी भी न रहेगी।

कुछ देर बाद उसने बिदा ली। जाते-जाते औरेलिया के दर्शन मिलने से वह प्रसन्न था। उसके हृदय में उसकी चाह अब भी बनी हुई थी, पर

अब उसमें पहले जैसी तीव्रता न थी। वह उन लोगों में से न था जो मोहनभोग न मिलने पर सामने आई हुई थाली की रूखी रोटियां न खायें। जब उसने देख लिया कि औरेलिया का पीछा करना व्यर्थ है तो उसने समय-समय पर साधारण तथा कम खर्चीली स्त्रियों से अपनी काम-वासना तृप्त करली जिनका परिचय उसे ला बारबेरीना द्वारा प्राप्त हो गया था। गंभीरतापूर्वक विचार करने पर वह अनुभव करता था कि औरेलिया द्वारा मानभंग होने का उसे उतना ही दुःख था जितना कि अतुष्ट प्रेम का। अंत में वह इस परिणाम पर पहुँचा कि औरेलिया मूर्ख है वरना वह सिर्फ तीन घंटे की प्रतीक्षा के कारण क्रोध में आकर सोने न चली जाता। और न सब कुछ हो जाने के पहले उसे यह ध्यान ही होता कि वह कोई पाप कर रही है। यदि उसको मैक्यावैली की भांति संसार का काफी अनुभव होता तो वह जानती कि हमें प्रलोभनों के वशीभूत होने का नही बल्कि उनके प्रतिकार करने का ही पश्चात्ताप होता है।

'अच्छी बात है यदि बार्थोलोमियो ने अपने भांजों को गोद रख लिया तो उसे अपने किए का फल मिल जाएगा। तब उसे पता चलेगा कि वह कितनी मूर्ख थी।' उसने मन में सोचा।

[२७]

दो दिन बाद वह कैसीना पहुँच गया। ड्यूक का तोपखाना नगर में पहुँच रहा था। उसकी सेना अत्यन्त शक्तिशाली थी और उसके पास धन की भी कमी न थी। यह तो साफ था कि कोई घटना घटने वाली है। पर यह कोई नहीं बता सकता था कि वह घटना क्या होगी। इन सब हलचलों के होते हुए भी वहां के वातावरण में ऐसी निस्तब्धता थी जैसी विस्फोट से पहले छा जाती है। उस समय मनुष्यों को अनजाने ही

कारण सहज ही विश्वास नहीं किया जा सकता था। क्या ड्यूक फ्रांस के शाह को अपना यह आत्मविश्वास दिखलाना चाहता है कि उसको उसकी सहायता की कोई आवश्यकता नहीं ?

फ्रांसीसी चले गए और थोड़े ही दिन बाद एक दूसरी घटना घटी जो मैक्यावैली जैसे राजनीति तथा मानव स्वभाव के विद्यार्थी के लिए असाधारण रूप से कौतुकप्रद थी। रामीरो डि लोरक्वा को कैसीना बुलवाया गया। वह ड्यूक के प्रति स्वामिभक्त रहा था और वह अच्छा सैनिक तथा योग्य अधिकारी सिद्ध हुआ था। कुछ समय तक वह रोमाग्ना का राज्यपाल रह चुका था। पर उसकी निर्दयता और बेईमानी के कारण लोग उससे घृणा करने तथा भय खाने लगे थे। अन्त में जब उसके अत्याचार असह्य हो उठे तो उन्होंने अपने प्रतिनिधि भेजकर ड्यूक से न्याय की प्रार्थना की। जब रामीरो वहाँ पहुँचा तो वह बंदी करके कारागार में डाल दिया गया।

बड़े दिन का त्यौहार था। पीयरो ने बड़े तड़के ही उस दिन मैक्यावैली को सोते से जगा दिया। उस समय किसी आवेश से उसकी आँखें चमक रही थी। वह बोला, "श्रीमान् शीघ्र ही चौक चलिये। वहाँ आपको बड़ा अजीब दृश्य दिखाई देगा।"

"बात क्या है ?"

"यह नहीं बताऊँगा। बड़ी भीड़ इकट्ठी हो रही है। प्रत्येक व्यक्ति विस्मित हो रहा है।"

मैक्यावैली ने झटपट वस्त्र पहिन लिए। उस दिन बर्फ पड़ रही थी और कड़ाके की ठड थी। चौक में बर्फ पर पड़ी एक चटाई के ऊपर बहुमूल्य वस्त्र पहिने हुए, अपने सारे आभूषणों तथा हाथों के दस्तानों सहित रामीरो का धड़ सिर से अलग पड़ा हुआ था। थोड़ी ही दूर पर उसका सिर बर्छी पर लटका हुआ था। इस बीभत्स दृश्य को मैक्यावैली न देख सका और धीरे-धीरे अपने स्थान को लौट आया।

पीयरो पूछने लगा, "श्रीमान् आप इसका क्या मतलब निकालते हैं ?

वह ड्यूक का सबसे पराक्रमी सेनानायक था। लोग कहते हैं कि ड्यूक को उस पर इतना भरोसा था, जितना किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं।"

मैक्यावैली ने अपने कंधे उचकाए, "ड्यूक को यही अभीष्ट था। साफ है कि ड्यूक अपनी इच्छा से किसी भी व्यक्ति को उसके गुण या अवगुण के अनुसार बना या बिगाड़ सकता है। शायद अब ड्यूक को उसकी आवश्यकता न रही होगी, इसलिए अपने न्याय द्वारा प्रजा पर यह जाहिर करना चाहता है कि उनके हितों का उसे कितना ध्यान है।

प्रायः यह विश्वास किया जाता था कि रामीरो ल्यूक्रेज़िया बोर्जिया का प्रेमी था और सीज़र बोर्जिया की बहिन का पति अथवा प्रेमी होना अत्यन्त विपत्तिजनक था। वह स्वयं उससे प्रेम करता था। उसके पहले पति जियोवानी स्फोर्जा का जीवन केवल इस कारण बच गया था कि सीज़र बोर्जिया के उसके बध के आदेश देने की खबर लग गयी थी। वह तुरन्त घोड़े पर सवार होकर अपनी जान लेकर भागा और पैसारो में जाकर शरण ली। गेन्डिया के ड्यूक को जब टाइबर नदी से बाहर निकाला गया तो उसके अंग पर नौ घाव थे। जनसाधारण ने उसकी मृत्यु का आरोप सीज़र बोर्ज़िया पर ही लगाया क्योंकि वह भी ल्यूक्रेज़िया से प्रेम करता था। स्पेन-निवासी तथा पोप के गृह-प्रबन्धक पेड्रो केल्ड्रोन का भी बध सीज़र की आज्ञा से इसी कारण किया गया कि वह श्रीमती ल्यूक्रेज़िया की प्रतिष्ठा के लिए कोई अनुचित कार्य कर बैठा था। कहा यह भी जाता था कि सीज़र बोर्जिया द्वारा उसको गर्भ था। उसका दूसरा पति विसैग्ली का ड्यूक एलफ़ोन्ज़ो भी उतना ही अभागा निकला। विवाह के एक वर्ष बाद एक दिन जब वह पोप के महल से निकल रहा था तो उसे कुछ सशस्त्र सैनिकों ने घेर लिया और उसे बुरी तरह घायल कर डाला। इस समय उसकी आयु सिर्फ उन्नीस वर्ष की थी। उसको पोप के महल में ले जाया गया जहाँ वह एक महीने तक जीवन और मृत्यु के बीच झूलता रहा। अंत में जब वह घावों के कारण नहीं मरा तो किसी ने सूर्यास्त से एक घंटे बाद गला घोंट कर उसे मार डाला। विसैग्ली का

ड्यूक एलफ़ौंज़ो रोम का सबसे सुन्दर युवक था और ल्यूक्रेज़िया उसे बहुत प्रेम करती थी। इटली में किसी को संदेह नहीं था कि उसकी मृत्यु सीज़र बोर्जिया की ईर्ष्या के कारण हुई।

मैक्यावैली की स्मरण शक्ति तीव्र थी और वह उस बात को नहीं भूला था जो ड्यूक ने उससे इमोला में कही थी। पागोलो ओरसिनी ने रामीरो की क्रूरता की शिकायत की थी और ड्यूक ने उसे आश्वासन दिया था कि वह उसके साथ न्याय करेगा। यह तो संभव नहीं था कि वह पागोलो जैसे व्यक्ति की शिकायत की विशेष चिन्ता करता जिससे वह मन ही मन घृणा करता था। पर क्या यह संभव न था कि उसके इस कार्य से विद्रोहियों के हृदय में उसकी ओर से सारे संदेह दूर हो जाएं? अब वे उसकी सद्‌भावना पर कैसे अविश्वास कर सकते थे? उनमें से एक की इच्छा पूर्ण करने के लिए उसने अपने सबसे योग्य और विश्वासी नायक को मरवा दिया था। मैक्यावैली मन ही मन हँसा। एक तीर से कई शिकार की बात इलबैलैन्टीनो को अवश्य जँची होगी। एक ओर तो रोमाग्ना की क्रुद्ध जनता शान्त हो जाएगी, दूसरी ओर कपटी मित्रों के हृदय में उसका विश्वास जम जाएगा और अंत में ल्यूक्रे-ज़िया के प्रेमी से वह अपना बदला भी ले सकेगा।

"ख़ैर, जो हुआ अच्छा हुआ", मैक्यावैली ने हँसकर पीयरो से कहा। "हमारे ड्यूक ने पृथ्वी को एक और दुष्ट से तो छुटकारा दिलाया। चलिये किसी सराय में चलकर कुछ शराब पियें जिससे हड्डियों में बसी हुई यह ठण्ड ज़रा दूर हो।"

[२८]

मैक्यावैली को ड्यूक की योजनाओं का पता न चल सकने का एक कारण यह था कि वास्तव में वे अभी पक्की न हो पायी थीं। कुछ न

कुछ करना तो अवश्य था क्योंकि उपयोग किये बिना इतनी बड़ी सेना रखना अर्थहीन था। पर यह निश्चय करना कि क्या किया जाय सरल न था। सेनानायकों ने अपने प्रतिनिधि ड्यूक से मंत्रणा के लिए कैसीना भेजे पर वे किसी निर्णय पर न पहुँच सके, इसलिए कुछ दिन बाद उन्होंने औलीवेरोटोडिफरमो को ड्यूक के पास ठोस प्रस्ताव लेकर भेजा।

यह औलीवेरोटो एक युवा था जो हाल ही में बहुत ख्याति प्राप्त कर चुका था। बचपन में ही उस पर से उसके पिता की छाया उठ गई थी, और उसका पालन-पोषण उसके मामा ने किया था, जिसका नाम जियोवानी फौगलियाटी था। वयस्क होने पर उसे सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए माओलोविटैली के पास भेज दिया गया। माओलो की हत्या के पश्चात् वह उसके भाई विटेलोज्जो के पास चला गया। अत्यन्त वीर और चतुर होने के कारण उसकी गणना शीघ्र ही उसके योग्यतम अधिकारियों में होने लगी। पर वह महत्त्वाकांक्षी था। उसने सोचा जब वह स्वयं शासन करने के योग्य है तो किसी की सेवा करना हीनता है। इसलिए उसने अपनी उन्नति के लिए एक बहुत चतुरतापूर्ण उपाय रचा। उसने अपने उपकारी मामा को एक पत्र लिखा कि उसको वहाँ से आए हुए कई वर्ष बीत गए हैं इसलिए उन्हें तथा अपनी जन्मभूमि को देखने का इच्छुक है साथ ही वह अपनी पैतृक सम्पत्ति का भी निरीक्षण कर लेगा। उसने यह भी लिखा कि वह बड़ी शान से अपने साथ सौ अश्वारोही लेकर आना चाहता है, जिनमें उसके मित्र तथा चाकर सभी होंगे, जिससे उसके नगर-निवासी यह जानलें कि उसने इतना समय व्यर्थ ही नहीं गँवाया। उसने अपने मामा से यह भी प्रार्थना की कि उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया जाय जिससे न केवल उसकी ही प्रतिष्ठा बढ़ेगी बल्कि उसके मामा की भी जिसका वह पोष्य पुत्र था।

ज्योवानी को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसके भान्जे ने, जिसका स्नेह तथा सावधानी के साथ उसने पालन-पोषण किया था, उसको भुलाया न था। और जब औलीवेरोटो फर्मो पहुँचा तो स्वभावतया

उसने उसे अपने घर पर ही ठहराया। किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् ओलीवेरोटो अपने निजी मकान में चला गया क्योंकि वह अपने मामा के ऊपर भार बनकर नहीं रहना चाहता था। वहाँ उसने एक बड़ी भारी दावत में अपने मामा तथा फर्मो के समस्त प्रतिष्ठित नागरिकों को आमंत्रित किया। भोजन तथा आमोद-प्रमोद से निवृत हो चुकने पर ओलीवेरोटो ने ऐसा प्रसंग छेड़ा जिसमें सभी की अभिरुचि थी। वह पोप तथा उसके पुत्र सीजर की महानता तथा उसके कार्यों का वर्णन करने लगा पर सहसा यह कह कर कि ये ऐसी बातें हैं जो एकान्त में करने योग्य हैं वह उठ उड़ा हुआ और अतिथियों को एक दूसरे कमरे में ले गया। पर ज्योंहीं वे वहां आकर बैठे कि गुप्त स्थानों से सैनिक निकल पड़े और उन सबका वध कर डाला। इस भाँति उसने नगर पर अधिकार कर लिया। सभी सम्भावित विरोधी मारे गए थे और उसने जो नागरिक तथा फौजी नियम बनाए वे उत्तम थे। इसलिए एक वर्ष ही में वह न केवल फर्मो में ही जम गया वरन पड़ौसी राज्यों के लिए परेशानी का कारण बन गया। इसी व्यक्ति को सरदारों ने ड्यूक के पास भेजा था। वह यह प्रस्ताव लाया था कि उन सब की सम्मिलित सेना टस्केनी पर आक्रमण करे और इसमें यदि उसको कुछ बाधा हो तो सिनीगेगलिया पर अधिकार किया जाय। टस्केनी की विजय बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। सायना, पीसा, लूसा तथा फ्लोरेंस के अधिकृत होने से सभी युद्ध भागियों को पर्याप्त लूट का माल मिलता और फ्लोरेंस से तो विटेलोज्जो तथा औरसिनी को पुराना वैर चुकाना था। किन्तु सायना तथा फ्लोरेंस फ्रांस के बादशाह के संरक्षण में थे और ड्यूक ऐसे मित्रराष्ट्र को रुष्ट नहीं करना चाहता था जिसकी सहायता की उसे शायद अभी आवश्यकता थी। इसलिए उसने ओलीवेरोटो को कह दिया कि टस्केनी के आक्रमण में तो वह भाग नहीं लेगा पर सिनीगेगलिया पर अधिकार करने को वह सहर्ष प्रस्तुत है।

सिनीगेगलिया छोटा सा प्रदेश होने पर भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था,

क्योंकि वह समुद्र के तट पर बसा हुआ था और वहाँ अच्छा बन्दरगाह था। उसकी शासिका अरवीनो के अभागे ड्यूक की विधवा बहिन थी। उसने लामैंजिओन में सेनाध्यक्षों के साथ संधि करली थी। पर फिर से समझौता होने के बाद जिसमें वह सम्मिलित नहीं हुई, वह जिनेवा निवासी ऐन्ड्रिया डोरिया को दुर्ग की रक्षा के लिए छोड़ कर अपने पुत्र को लेकर वेनिस भाग गई। औलीवेरोटो ने सेना के साथ नगर को प्रस्थान किया और किसी विरोध के बिना उस पर अधिकार कर लिया। विटेलोज्जो और औरसिनी अपनी-अपनी सेना सहित आगे बढ़े और उन्होंने नगर के समीप ही डेरे डाल दिए। समस्त कार्यवाही में केवल एक बाधा उपस्थित हुई कि ऐन्ड्रिया डोरिया दुर्ग केवल स्वयं इलवैन्टीनो के हाथों समर्पण करना चाहता था किसी दूसरे को नहीं। यह दुर्ग सुदृढ़ था और उस पर आक्रमण करने में समय, सेना तथा धन सभी नष्ट होते। इसलिए उन्होंने समझ से काम लिया। ड्यूक ने अपनी फ्रांसीसी सेना हटा दी थी अतएव सेनाध्यक्ष उससे भयभीत न थे। उन्होंने ऐन्ड्रिया डोरिया की इच्छा जतलाते हुए उसको सिनीगेगलिया आने के लिए आमंत्रित किया।

जब उसके पास यह प्रार्थनापत्र पहुँचा तो वह सैसीना से चल पड़ा था और फैनो में ठहरा हुआ था। उसने अपना एक विश्वासी सचिव सेनाध्यक्षों के पास भेजा और उनसे कहला भेजा कि वह शीघ्र ही सिनीगेगलिया पहुँचेगा और उनसे प्रार्थना की कि वे सब वहीं पर ठहरें। जब से सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हुए थे सेनाध्यक्षों ने ड्युक से मिलने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की थी। उनकी उपेक्षा से प्रकट होने वाले उनके अविश्वास को दूर करने की इच्छा से प्रेरित होकर उसने अपने सचिव को उन्हें मित्रतापूर्ण ढंग से यह सूचित करने का आदेश दिया कि जो भेदभाव वे लोग अब तक बरतते रहे हैं उनसे सन्धिपत्र बेकार हुआ जा रहा है। जहाँ तक उसका सम्बन्ध है उसकी यही इच्छा है कि वह उनकी सेना तथा सम्पत्ति का उपयोग करे।

मैक्यावैली यह सुनकर कि ड्यूक ने सेनाध्यक्षों का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है, स्तम्भित रह गया। उसने संधिपत्र का गूढ़ अध्ययन किया था और स्पष्टतया दोनों में से एक भी पक्ष को परस्पर तनिक भी विश्वास न था। जब उसको यह ज्ञात हुआ कि सेनाध्यक्षों ने ड्यूक को केवल इसलिए सिनेगेगलिया बुलाया है कि दुर्ग का रक्षक ड्यूक के अतिरिक्त किसी और को दुर्ग सौंपने के लिए प्रस्तुत नहीं है, तो उसने समझ लिया कि ड्यूक को फंसाने के लिए जाल फैलाया गया है। ड्यूक ने अपने फ्रांसीसी सैनिक निकाल दिए थे जिससे उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी। सेनाध्यक्षों की समस्त सेना सिनेगेगलिया अथवा उसके आेर-पास थी। यह साफ़ था कि दुर्गरक्षक ने यह शर्त उनकी परोक्ष सम्मति से लगाई है। जब ड्यूक अपने अश्वारोहियों को लेकर नगर में पहुँचेगा तो सहसा उस पर आक्रमण करके उसके तथा उसके साथियों के टुकड़े उड़ा दिये जायेंगे। इसलिए इस बात पर विश्वास नहीं होता था कि वह प्रायः अरक्षित ही प्राणघातक शत्रुओं के बीच में जाकर अपने को संकट में डालेगा। इसका केवल एक ही अर्थ हो सकता था कि उसको अपने भाग्य पर बड़ा भरोसा है और वह मदान्ध होकर सोच रहा है कि वह अपनी आत्मशक्ति तथा व्यक्तित्व द्वारा उन क्रूर व्यक्तियों को त्रस्त कर देगा। वह जानता था कि वे उससे भय खाते हैं किन्तु वह यह भूलता था कि डर कायरों को भी वीर बना देता है। यह ठीक है कि भाग्य उस समय तक ड्यूक का साथ दे रहा था, किन्तु भाग्य का क्या भरोसा ! वह तो स्वभाव से ही चंचल है। घमण्डी का सिर नीचा होता है। मैक्यावैली मन ही मन हंसा। यदि ड्यूक इस जाल में पड़कर नष्ट हो गया तो फ्लोरैन्स का इसमें विशेष लाभ है क्योंकि असली शत्रु वही है। सेनाध्यक्ष तो उसके भय से ही संगठित थे, जिनको बड़ी सरलता से फूट डलवा कर अलग-अलग किया जा सकता है। और तब इस भांति एक-एक को पृथक्-पृथक् पराजित किया जा सकता है।

मैक्यावैली की हँसी असामयिक थी। ड्यूक को जाल में फांसने की आशा से इधर तो औरसिनी ने दुर्ग के अधिकारी को इस बात के लिए धन का लालच दिया कि वह ड्यूक के अतिरिक्त और किसी को दुर्ग सौंपने से इन्कार करदे। उधर उसके पास ठीक इसी कार्य के निमित्त ड्यूक की ओर से भी पर्याप्त धन आ चुका था। उसने सेनाध्यक्षों की योजनाओं का अनुमान लगा लिया था और यह भी उसने सोच लिया था कि उसको अपने बीच बुलाने के लिए वे लोग क्या चाल चलेंगे। वह अपना भेद बिल्कुल गुप्त रखता था और कार्यान्वित करने से पहले अपनी योजनाओं के बारे में बातचीत करना उसके स्वभाव के विरुद्ध था। फैनो से प्रस्थान करने से पहले दिन रात्रि को उसने अपने आठ अत्यन्त विश्वस्त कर्मचारियों को बुलाया और उनसे कहा कि जब सेनाध्यक्ष उससे मिलने आवें तो प्रत्येक के दोनों ओर एक-एक व्यक्ति खड़ा हो जाय और जो उसके निवास के लिए निर्धारित महल तक उनके साथ-साथ इस भांति चलते रहें मानो उनके सम्मान में चल रहे हों। वहां पहुंचने पर वे सब उसकी दया पर निर्भर होंगे। उनमें से एक भी बचकर जीवित न जा सकेगा। उसने अपनी सेना को नगर के ओर-पास बिखेर रक्खा था जिससे किसी को अनुमान न हो सके कि उसकी शक्ति कितनी है। अब उसने आदेश दिया कि सबेरा होते ही सारी सेना उस नदी के किनारे इकट्ठी हो जाय जो सिनेगेगलिया से छः मील की दूरी पर मार्ग में पड़ती थी। अपनी सद्भावना जताने के लिए उसने अपना असबाब गाड़ियों में भरकर पहले ही भिजवा दिया। उसको यह सोचकर बड़ी हँसी आई कि लूट की आशा में सेनाध्यक्ष ओंठ चाट रहे होंगे।

सारा कार्यक्रम निश्चित करके वह आराम के साथ सो गया। प्रातःकाल उसने समय रहते प्रस्थान कर दिया। उस दिन सन् १५०२ के दिसम्बर मास की इकत्तीस तारीख थी। फैनो और सिनेगेगलिया में १५ मील का अन्तर था और मार्ग समुद्र तथा पर्वतों के बीच से होकर जाता था। आगे-आगे लोडोविसो के अधीन १५०० अंग रक्षकों की सेना जा

रही थी। उसके पीछे एक सहस्त्र के लगभग गैस्कन तथा स्विस सैनिक थे। उनके पीछे शस्त्रों से सुसज्जित तथा बहुमूल्य साजवाले घोड़े पर ड्यूक जा रहा था। अन्त में उसकी शेष अश्वारोही सेना थी। मैक्यावैली में कलात्मक भावनाओं का संस्कार न था किन्तु उसे भी प्रतीत हुआ कि इससे पहले उसने हिमाच्छादित पर्वतों तथा नील समुद्र के बीच में मंद गति से चलती हुई उस सेना से अधिक मनोहर दृश्य कभी नहीं देखा है।

सेनाध्यक्ष सिनेगेगलिया से तीन मील दूर एक स्थान पर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। विटेलोज्जो विटेली फ्रांस में बीमारी के कारण स्वास्थ्य गिरने के पहले सुगठित तथा सुपुष्ट पर देखने में कृशकाय व्यक्ति था। भूरा चेहरा, दाढ़ी मूँछ सफ़ा, छोटी पर उठी हुई नाक और पीछे की ओर दबी हुई ठोड़ी। मोटी पलकें उसके नेत्रों पर गिरकर उनको कुछ विचित्र चितवन की मुद्रा प्रदान करती थी। वह क्रूर, निष्ठुर, लालची तथा साहसी होने के साथ-साथ अच्छा सैनिक भी था और योरुप भर में सर्वोत्तम तोपची गिना जाता था। उसको अपनी सम्पत्ति पर बड़ा गर्व था। सिटा डिकास्टैलो तथा अन्य अनेकों भवनों की दीवारों पर बहुत से चित्र बने हुए थे तथा उनमें काँसे और संगमरमर की मूर्त्तियाँ एवं बहुमूल्य परदे सजे हुए थे जिन्हें उसने तथा उसके घरवालों ने संग्रह किया था। उसे अपने भाई पाओलो से बहुत प्रेम था जिसे फ्लोरेंस वालों ने मरवा डाला था। इसीलिए वह उनसे अत्यन्त घृणा करता था। इतने दिनों बाद भी वह घृणा कम नहीं हुई थी। किन्तु डाक्टरों द्वारा पारा दिए जाने के कारण उसको प्रायः स्नायुदौर्बल्य के दौरे आ जाते थे और अब उसका शरीर ढांचा मात्र रह गया था। संधि-चर्चा की वार्ता के दौरान में जब पागोलो औरसिनी एकत्रित सेनानायकों के सम्मुख इलवैलन्टीनो की शर्तें लेकर आया तो पैरूगिया के स्वामी जियान पाओलो बैग्लीयोनी ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। कुछ समय तक, ड्यूक के प्रति अविश्वास के कारण, विटेलोज्जो ने उसका साथ दिया

पर उसमें इतनी शक्ति न रह गई थी कि वह औरों के तर्कों का सामना कर पाता और अन्त में उसने हस्ताक्षर करने की स्वीकृति दे दी। पर उसने हस्ताक्षर अपनी धारणा के विरुद्ध किये थे। यह ठीक है कि उसने सीज़रबोर्जिया को क्षमाप्रार्थना तथा अनुनय के पत्र लिखे थे और उत्तर में ड्यूक ने भी उसको विश्वास दिलाया था कि उसने पहली बातें भुला दी हैं तथा उसको क्षमा कर दिया है परन्तु उसका हृदय बेचैन था। उसका अन्तर्मन रह-रह कर उससे कह रहा था कि न तो ड्यूक ने पहली बातें ही बिसारी हैं और न उसने उसे क्षमा ही किया है। संधिपत्र में एक शर्त यह भी थी कि ड्यूक की सेवा में एक समय में केवल एक सेनानायक डेरे में रह सकेगा। किन्तु यहाँ वे सब के सब एक स्थान पर इकट्ठे थे। पागोलो औरसिनी ने उसको समझाने का प्रयत्न किया। वह ड्यूक से कई बार मिल चुका था और उससे आमने-सामने बहुत सी बातें स्पष्ट रूप से और बिना भेद-भाव के हुई थीं। उसकी सद्भावना पर विश्वास न करना असम्भव था। उसकी सच्चाई का इससे बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता था कि उसने फ्राँसीसी सैनिकों को बरख़ास्त कर दिया था और अब वह केवल उनकी सहायता पर ही निर्भर था। और रामीरो डि लोरका को फांसी पर लटकाने का इसके सिवाय और क्या कारण हो सकता था कि वह उनकी मांगों पर विचार करने को प्रस्तुत है।

"विश्वास रक्खो हमारे विद्रोह ने उस छोकरे को अच्छा पाठ पढ़ाया है और ऐसा विश्वास करने का पर्याप्त कारण है कि भविष्य में हमें वह अप्रसन्न होने का अवसर नहीं देगा।" पर ड्यूक के साथ उसकी और जो एक वार्ता हुई थी उसको बताना औरसिनी ने आवश्यक नहीं समझा। पोप सत्तर साल पार कर चुका था। उसका स्वास्थ्य ख़राब था और ऐसा जर्जर हो गया था कि किसी भी क्षण उसको मृत्यु का झटका लग सकता था। इलवैलेन्टीनों के अधिकार में स्पेन के धर्माध्यक्षों तथा उन धर्माध्यक्षों के मत थे जिन्हें उसके पिता ने इस पद पर नियुक्त किया था। इस वचन के बदले में कि उसका राज्य पर अधिकार सुरक्षित

रहेगा वह पागोलो के भाई कार्डीनल औरसिनी का पोप के पद के लिए चुनाव निश्चित कराने के लिए प्रस्तुत था। यह आकर्षण वास्तव में बड़ा ज़बरदस्त था। औरसिनी को ड्यूक पर यों भी विश्वास था क्योंकि वह समझता था कि जितनी आवश्यकता उसको ड्यूक की है उतनी ही ड्यूक को भी उसकी है। सबसे पहले विटैलोज्जो ने ड्यूक का स्वागत किया। वह निरस्त्र था तथा एक काली जाकट पहने हुए था जिस पर हरी धारी वाला काला लबादा था। उसका चेहरा पीला तथा बेचैन था और उसके नेत्रों से ऐसा भाव झलक रहा था मानो उसको अपना भाग्य प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा हो। इस समय उसको देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह वही व्यक्ति है जो फ्रांस के बादशाह को इटली से बाहर निकालने का अकेला साहस रखता था। वह एक खच्चर पर सवार था और उतरने का प्रयत्न कर ही रहा था कि ड्यूक ने उसे रोक दिया और प्यार से उसके कंधे पर झुक कर अपना हाथ रक्खा तथा उसके दोनों कपोलो का चुम्बन लिया। थोड़ी ही देर पश्चात् पागोलो औरसिनी तथा ग्रेवीना का ड्यूक अपने अनुचरों सहित वहां पहुँचे और सीज़र बोर्जियो ने उनके पद तथा कुल के अनुरूप उनका स्वागत किया और इतने प्रेम से मिला मानो बिछुड़े हुए मित्र बहुत दिनों पश्चात् मिले हों। किन्तु उसने लक्ष्य किया कि औलीवेरोटो वहां उपस्थित नहीं है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह नगर में हां उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसने डान मिचल को उस नवयुवक को लाने के लिए भेज दिया और स्वयं अन्य सेनानायकों से इधर-उधर की बातें करने लगा। अपना मतलब सिद्ध करने के लिए वह बहुत ही विनोद-प्रिय बन जाता था। उस समय उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसका कभी भी इन तीनों सेनाध्यक्षों के साथ कोई बिगाड़ हुआ होगा। वह अपने पद के अनुरूप गम्भीर तो था पर दर्पहीन भी, जिससे उसके व्यवहार में कोई अहमन्यता का भाव नहीं झलकता था। वह धीर, शिष्ट तथा जागरूक था। उसने पहले विटैलोज्जो से उसके स्वास्थ्य के विषय

में पूछा और कहा कि वह उसकी चिकित्सा के लिए अपना निजी सर्जन भेज देगा। मधुर मुस्कान के साथ उसने ग्रेवीना के ड्यूक को उसके प्रेम-सम्बन्ध के विषय में मीठी झिड़की दी। उसने पागोलो औरसिनी के एल्बान पहाड़ी पर निर्मित विशाल भवन का वर्णन दत्तचित्त होकर सुना।

डान मिशेल ने औलीवेरोटो को नगर की सीमा के बाहर नदी पार सेना को कबायद कराते पाया। डान मिशेल ने उससे कहा कि वह अपने सैनिकों को अपने-अपने स्थानों पर कब्ज़ा करने का आदेश दे दे नहीं तो ड्यूक के सैनिक उसको झपट लेंगे। सलाह नेक थी और औलीवेरोटो ने उसकी सूझ के लिए धन्यवाद देकर तुरन्त उसके ही अनुकूल कार्य किया। अपनी सेना को आवश्यक आज्ञा देकर वह मिशेल के साथ उस स्थान की ओर चला जहां अन्य लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। ड्यूक ने उसका भी स्वागत उसी प्रकार किया जैसा उसने अन्य सेनाध्यक्षों का किया था। जो मुजरा वह करने को प्रस्तुत था ड्यूक ने वह उसे न करने दिया और वह उससे अपने मातहत की तरह नहीं बल्कि बराबर के साथी के समान मिला।

ड्यूक ने अब आगे बढ़ने का आदेश दिया।

विटैलोज्जो भय से कांप उठा। उसने देखा कि एक विशाल सेना ड्यूक का अनुसरण कर रही है। उसको पूरा निश्चय हो गया कि ड्यूक के विरुद्ध बनाया हुआ सेनानायकों का कुचक्र कदापि सफल न हो सकेगा। वहां से थोड़ी ही दूर पर उसकी सेना डेरा डाले हुए थी। उसने सोचा कि वह अपनी सेना में चला जाय। उसकी अस्वस्थता वहां से खिसक जाने का अच्छा बहाना था। किन्तु पागोलो ने उसे नहीं जाने दिया। उसने कहा कि यह ऐसा समय नहीं है जब ड्यूक को किसी आशंका का अवसर दिया जाए। विटैलोज्जो का आत्मविश्वास जा चुका था। उसकी आत्मा उसको सचेत कर रही थी कि उसके बचने का यह

बड़ा अच्छा अवसर है, पर उसे कर सकने की दृढ़ता उसमें न थी। उसने पागोलो के आग्रह को मान लिया।

वह कहने लगा, "मुझे पूरा विश्वास है कि साथ चलने में मेरी मृत्यु निश्चित है। पर जब तुम हठपूर्वक भाग्य को अजमाना ही चाहते हो तो चाहे जीऊँ अथवा मरूँ मैं भी उन सबके साथ होनी का सामना करूँगा, जिनसे भाग्य ने सम्बन्ध जोड़ दिया है।"

आठ आदमी, जिनको ड्यूक ने सेनाध्यक्षों के साथ रहने का आदेश दिया था, इन अभागों के अगल-बगल चल रहे थे। अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेनानायक आगे-आगे जा रहा था और उसके सैनिक घोड़ों पर सवार पीछे-पीछे उसका अनुसरण करते हुए नगर की ओर बढ़ रहे थे। ड्यूक के लिए पहले से निर्धारित महल पर पहुँचकर सेनाध्यक्षों ने ड्यूक से विदा माँगी। पर उसने अपने स्वाभाविक खुले भाव से उनको अन्दर आने को कहा जिससे कि जो योजना वह उनके सामने रखना चाहता था, उस पर तभी विचार हो जाय। उसने कहा कि वह उनके हित की बहुत सी बातें उन्हें बतलाना चाहता है। समय अमूल्य था इसलिए जो कुछ भी निर्णय हो वह शीघ्र हो जाना चाहिए। वे सब सहमत हो गए। द्वार पार करके सीढ़ियों से होते हुए वे एक विशाल कक्ष में पहुँच गए। वहाँ उनको सम्मानपूर्वक बिठाकर ड्यूक ने निवेदन किया कि वह निवृत्त होने तनिक बाहर जाना चाहता है। ज्योंही वह बाहर निकला कि सशस्त्र सैनिकों ने तुरन्त वहाँ प्रवेश करके सबको बन्दी कर लिया। इस प्रकार उसने वही षड्यंत्र रचा जो कृतघ्नी औलीवेरोटो ने अपने मामा तथा फर्मो के प्रतिष्ठित लोगों को मारने के लिए रचा था। विशेषता यह थी कि ड्यूक को दावत का खर्च भी नहीं करना पड़ा था। पागोलो औरसिनी ने ड्यूक के इस विश्वासघात का प्रतिरोध करते हुए उसको बुलवाया किन्तु ड्यूक तो पहले ही महल से रफूचक्कर हो चुका था। उसने आज्ञा दी कि चारों सेनानायकों के सैनिकों को निरस्त्र कर दिया जाए। औलीवेरोटो के सैनिक समीप ही थे। उनपर अचानक आक्रमण हो गया

और जिन्होंने विरोध किया उनकी हत्या कर दी गई। पर जो कुछ दूर पर डेरे डाले हुए थे वे भाग्यशाली निकले। उनको किसी प्रकार अपने स्वामियों की दुर्गति की गंध मिल गई जिससे वे सब संगठित हो गए और लड़ते हुए सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए हालांकि उनको क्षति बहुत भारी उठानी पड़ी। सीजर बोर्जिया को ओरसिनी तथा विटैलोज्जो के साथ के आए हुए सैनिकों को ही मार कर संतोष करना पड़ा।

पर ड्यूक के सैनिक केवल ओलीवेरोटो के सेनिकों को लूटकरही संतुष्ट नहीं हुए। उन्होने नगर को लूटना आरम्भ कर दिया। यदि ड्यूक शक्ति से काम न लेता तो उन्होंने कुछ भी बाक़ी न छोड़ा होता। वह लुटे हुए नगर का अधिकार नहीं बल्कि ऐसा समृद्धिशाली प्रदेश चाहता था जो उसे कर दे सके। उसने लूटमार करने वालों को फांसी पर लटकवा दिया। नगर में अशांति फैली हुई थी। दुकानदारों ने अपनी दुकानों में ताले लगा दिए थे और घरों में जा छिपे थे। सैनिक शरावख़ानों में घुसकर तलवार के ज़ोर से उनके स्वामियों को शराब के लिए बाध्य कर रहे थे। गलियों में चारों तरफ लाशें पड़ी थीं और कुत्ते उनका लहू चूस रहे थे।

[२९]

मैक्यावैली भी ड्यूक के पीछे-पीछे सिनेगेगलिया गया था। वह दिन भर चिन्ता-मग्न रहा। उस दिन निरस्त्र अकेले बाहर निकलना विपत्ति-जनक था इसलिए जब उसे उस रद्दी सराय के बाहर जाना ही पड़ा तब उसने पीयरो तथा नौकरों को साथ ले लिया। नशे में चूर गैस्कन सिपाहियों के हाथ मरने की उसकी क़तई इच्छा न थी।

उस दिन रात को आठ बजे ड्यूक ने उसको बुलवाया। इससे पहले जब कभी भी मैक्यावैली ड्यूक से मिलता था तो सचिव, धर्मा-

धिकारी अथवा अन्य राजकर्मचारी उपस्थित रहते थे। किंतु उस दिन उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके कमरे में पहुँचते ही जो अधिकारी उसके साथ आया था बाहर चला गया और वह अकेला ही ड्यूक के सामने रह गया।

उस दिन ड्यूक बहुत प्रसन्न था। सुनहरे बाल, साफ-सुथरी दाढ़ी, लाल-लाल गाल तथा चमकती हुई आँखों के कारण वह अत्यन्त सुन्दर दीख रहा था। उसके व्यवहार में गंभीरता तथा शालीनता थी। दुष्ट पादरी के जारज पुत्र होने पर भी उसकी चाल-ढाल राजसी थी।

सदा की भांति उसने किसी भूमिका के बिना कहना प्रारम्भ किया, "देखा, मैंने शत्रुओं का संहार करके तुम्हारे स्वामियों की कितनी सेवा की है। अब मैं चाहता हूँ कि तुम उनको लिख दो कि वे अपनी पैदल तथा घुड़सवार सेना तुरन्त भेज दें जिससे हम कैस्टेलो अथवा पैरूगिया की ओर कूच कर सकें।"

"पैरूगिया ?"

ड्यूक के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई।

"बैगलियोनी ने सब के साथ संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया और यह कहकर चल दिया 'यदि सीज़र बोर्जिया को मुझ से मिलना हो तो सशस्त्र पैरुगिया आ जाय।' और मैं ऐसा ही करना चाहता हूँ।"

मैक्यावैली ने मन में सोचा कि जिन लोगों ने हस्ताक्षर किए हैं, उन्हीं को क्या लाभ हुआ। किंतु ऊपर से वह केवल मुस्करा कर रह गया। "बिटैलोज्जो और औरसिनी को खत्म करने में तुम्हारी सरकार को अपार धन व्यय करना पड़ता और फिर भी इतनी खूबी के साथ काम पूरा न पड़ता। मेरे विचार से उन्हें मेरा कृतज्ञ होना चाहिए।"

"मुझे भी ऐसा ही विश्वास है, श्रीमान्।"

ड्यूक के ओठों पर उस समय भी मुस्कराहट फैल रही थी किंतु उसकी पैनी दृष्टि मैक्यावैली पर जमी हुई थी।

"तब उनको चाहिए कि वे इस कृतज्ञता को प्रकट करें। उन्होंने तो अभी तक तिनका भी नहीं हिलाया है और मैंने जो कुछ उनके लिए किया है उसका मूल्य लाखों के बराबर है। नियमित रूप से न सही पर परोक्ष में तो उनका उपकार हुआ ही है और जितनी जल्दी वे ऋण चुकाना शुरू कर दें उतना ही अच्छा है।"

मैक्यावैली जानता था कि वैसी माँग मे उसकी सरकार आग बबूला हो उठेगी और वह इस संदेश का वाहक न बनना चाहता था। भाग्यवश उसको बच निकलने का मार्ग सूझ गया।

"श्रीमान्, आपको यह बताने में कोई हर्ज नहीं कि मैंने अपनी सरकार को लिख दिया है कि वह मुझे वापस बुलाले और मेरे स्थान में दूसरा ऐसा दूत भेजे जिसको पूरे अधिकार मिले हों। यदि श्रीमान् इस आगामी दूत से इस विषय में बात करें तो ज्यादा ठीक होगा।"

"तुम ठीक कहते हो। मैं तुम्हारी सरकार की टालमटोल की नीति से परेशान हो गया हूँ। पर अब इस बात के निर्णय का समय आ गया है कि वे मेरे मित्र बनकर रहना चाहते हैं या मेरे विरोधी। मै तो आज ही यहाँ से चल देता, पर मेरे पीछे यह नगर बरबाद हो जाता। ऐन्ड्रिया डोरिया कल सबेरे मुझे दुर्ग सौंप देगा और तब मै कैस्टेलो और पैरुगिया के लिए कूच कर दूँगा। वहाँ का काम निपटाकर फिर सायना की ओर अपना ध्यान दूँगा।"

"किंतु क्या फ्राँस का सम्राट् आपको उन नगरों को लेने की अनुमति दे देगा जो उसके संरक्षण में हैं ?"

"अनुमति वह नहीं देगा और मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि ऐसा समझूँ कि वह अनुमति दे देगा। मैं तो उन पर मठ की ओर से ही अधिकार करूँगा। अपने लिए तो मैं केवल अपना प्रदेश रोमागना ही लेना चाहता हूँ।"

मैक्यावैली ने आह भरी। इस व्यक्ति के अदम्य उत्साह तथा इच्छित वस्तु को पाने के लिए अपनी शक्ति में उसके इतने अटल

विश्वास को देखकर मैक्यावैली का हृदय अनिच्छित प्रशंसा से भर गया ।

"इसमें किसी को संदेह नहीं कि भाग्य श्रीमान् का साथ दे रहा है ।"

"भाग्य उन्हीं का साथ देता है जो अवसर से लाभ उठाना जानते हैं । क्या तुम यह समझते हो कि यह घटना आकस्मिक थी कि दुर्ग के अधिपति ने केवल मुझी को दुर्ग सौंपना चाहा ?"

"ऐसा अविचार मैं कैसे कर सकता हूँ ? जो कुछ घटना घटी है उससे तो यही ज्ञात होता है कि यह सब आपका ही चलाया हुआ चक्र था ।"

ड्यूक हँसने लगा । राजदूत, "मैं तुम को बहुत पसन्द करता हूँ । तुम्हारे जैसे व्यक्ति के साथ बातचीत करने में समय आसानी से कट जाता है । मुझे तुम्हारी याद आएगी ।"

यह कहकर ड्यूक कुछ देर के लिए चुप हो गया और अपलक नेत्रों से मैक्यावैली को देखता रहा । फिर कहने लगा, "मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम मेरे यहाँ नौकरी कर लेते ।"

"यह श्रीमान् का अनुग्रह है किंतु मैं फ्लोरेंस की ही सेवा से संतुष्ट हूँ ।"

"इससे तुम को क्या लाभ है ? तुम को वहाँ से इतना कम वेतन मिलता है कि अपने निर्वाह के लिए तुम्हें अपने मित्रों से ऋण लेना पड़ता है ।"

इससे मैक्यावैली कुछ विचलित हुआ किंतु तुरन्त ही उसको स्मरण हो आया कि ड्यूक अवश्य इस बात को जानता होगा कि उसने बार्थोलोमियो से पच्चीस ड्यूकाट उधार लिए थे ।

उसने हँसकर उत्तर दिया, "मैं रुपयों के बारे में कुछ लापरवाह-सा हूँ और फिजूल-खर्च भी । यह मेरा ही अपराध है कि कभी-कभी मैं आमदनी से अधिक खर्च कर देता हूँ ।"

"यदि तुम मेरे अधीन होते तो कोई कठिनाई तुम्हारे सामने न

आती। किसी सुन्दर स्त्री की कृपा प्राप्त करनी हो तो उसको उपहार में अंगूठी, कपड़ा अथवा अन्य आभूषण दे सकना बड़ा अच्छा लगता है।"

"मैंने नियम बना लिया है कि मैं ऐसी स्त्रियों से ही संतोष कर लूँ जो सहज ही फिसल जाएँ और जिनके नखरे न हों।"

"यह नियम तो अच्छा है, पर मनुष्य की सारी इच्छाएँ तो उसके वश में नहीं होतीं। कौन कह सकता है कि प्रेम उसे क्या-क्या खेल खिलाए? क्या तुम ने कभी अनुभव नहीं किया कि किसी सदाचारिणी स्त्री से प्रेम हो जाने पर कितना खर्च करना पड़ता है?"

ड्यूक व्यंग्य-पूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देख रहा था और कुछ क्षणों के लिए मैक्यावैली के हृदय में यह विचार उठा कि कहीं ड्यूक को औरेलिया वाले मामले का पता तो नहीं चल गया। परन्तु यह सोचकर तत्काल उसने यह विचार त्याग दिया कि ड्यूक को अनेकों महत्वपूर्ण कार्य रहते हैं। उसको इतना समय कहाँ कि वह फ्लोरेंस के दूत की प्रेम-गाथा सुनता फिरे।

"मैं आपकी बात मानता हूं पर ऐसा आमोद-प्रमोद तथा ऐसा अपव्यय मैने दूसरों के लिए छोड़ रक्खा है।"

ड्यूक उसकी ओर अपलक नेत्रों से देखता हुआ विचार-धारा में डूब गया। ऐसा लगता था मानो वह मालूम करना चाहता हो कि मैक्यावैली कैसा व्यक्ति है। किसी उद्देश्य के बिना केवल कौतूहल वश, ठीक उसी भाँति जैसे किसी प्रतीक्षा-गृह में खड़े किसी अज्ञात व्यक्ति के बारे में कोई यह सोचने का प्रयत्न करे कि अमुक व्यक्ति क्या करता होगा, उसका स्वभाव कैसा होगा तथा उसका आचरण कैसा होगा।

ड्यूक ने फिर कहना आरम्भ किया, "मेरे विचार से तुम्हारे जैसे मेधावी व्यक्ति को जीवन भर इतने तुच्छ पद से संतुष्ट नहीं होना चाहिए।"

"मैंने अरस्तू से सीखा है कि बुद्धिमानी इसी में है कि ऊँची उड़ान न भरी जाय।"

"क्या यह संभव है कि तुम्हारी कोई महत्वाकांक्षा नहीं ?"

मैक्यावैली ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "श्रीमान्, यह बात नहीं है। मेरी यही कामना है कि मैं भरसक अपने देश की सेवा में लगा रहा हूँ।"

"यही तो दुनिया नहीं करने देती। तुम्हें यह तो ज्ञात ही है कि गणराज्य में विद्वानों को शंकित दृष्टि से देखा जाता है। ऊंचे पदों पर वही व्यक्ति पहुँच पाता है जिसकी हीन बुद्धि उसके साथियों के भय का कारण न बने। यही कारण है कि लोक राज्य का शासन योग्य व्यक्तियों के हाथ में न होकर उन लोगों के हाथ में होता है जिनकी हीनता से किसी को आतंकित नहीं होना पड़ता। क्या तुम जानते हो लोक-राज्य के घुन क्या हैं ?"

उसने मैक्यावैली की ओर इस प्रकार देखा मानो उससे कुछ उत्तर पाने की आशा हो। किन्तु मैक्यावैली मौन रहा।

"ईर्ष्या और भय। साधारण अधिकारी अपने सहकारियों से ईर्ष्या करते हैं। इस डर से कि कोई व्यक्ति विशेष ख्याति प्राप्त न कर ले वह उसे कोई ऐसा कार्य ही न करने देंगे जिस पर राष्ट्र की सुरक्षा व समृद्धि अवलम्बित हो। और उन्हें डर यह जानने के कारण होता है कि उनके चारों ओर ऐसे व्यक्ति हैं जो झूठ तथा छल-कपट द्वारा उनका स्थान ग्रहण करने को लालायित हैं। और इसका परिणाम क्या होता है ? यही कि सही काम करने की भावना से अधिक ग़लत काम करने का ड़र उनके मन में समा जाता है। जो लोग कहते हैं कि कोई व्यक्ति अपने वर्ग को हानि नहीं पहुंचाता, वे शायद लोकराज्य से परिचित नहीं होते।"

मैक्यावैली निस्तब्ध खड़ा रहा। वह अनुभव से जानता था कि ड्यूक का कथन अक्षरशः सत्य है। उसको याद था कि उसके साधारण

से पद के लिए भी चुनाव में कितना संघर्ष हुआ था और उसके पराजित प्रतिद्वन्द्वियों को अपनी पराजय से कितना क्षोभ हुआ था। वह जानता था कि उसके सहकारी पग-पग पर उसकी ओर लोलुप दृष्टि लगाए हुए हैं जिससे कहीं उसका पैर फिसले और वे सरकार से उसकी शिकायत करके उसे पदच्युत करा दें। ड्यूक ने अपना कथन जारी रखा।

"मेरी स्थिति वाला कोई भी राजा अपने सैनिकों को केवल उनकी योग्यता के बल पर चुनने को स्वतंत्र है। वह किसी अयोग्य व्यक्ति को केवल इसलिए उस पद पर नियुक्त न करेगा कि उसकी सिफारिश की आवश्यकता है अथवा उसकी पीठ पर ऐसा दल है जिसे मान्यता देना आवश्यक है। वह किसी प्रतिद्वन्द्वी से भयभीत नहीं होता क्योंकि वह सर्वोपरि है। इसलिए उस हीनत' की अपेक्षा जो गणतंत्र का अभिशाप है, वह प्रतिभा, क्रियाशीलता, मौलिकता तथा मेधा की खोज करता है। यदि तुम्हारे राज्य की अवस्था उत्तरोत्तर हीन हो रही है तो इसमें विस्मय की बात नहीं क्योंकि वहाँ किसी पद पर नियुक्ति के लिए व्यक्ति की योग्यता का महत्त्व सबसे कम है।"

मैक्यावैली के होंठों पर फीकी हँसी आ गई।

"श्रीमान् जी, आप मेरी धृष्टता क्षमा करें पर आप यह भी न भूलें कि राजाओं की कृपा अस्थायी होती है। वे जिसे चाहें आकाश पर चढ़ा दें और जब चाहें उसे विनाश के गहरे गढ़े में धकेल दें।"

ड्यूक विनोदपूर्ण हँसी हँसा।

"तुम रामीरो डि लोरका के विषय में सोच रहे होगे? राजा को पुरस्कृत करना भी जानना चाहिए और दण्ड देना भी। उसकी उदारता असीम होनी चाहिए और उसका न्याय कठोर। रामीरो डि लोरका ने ऐसे अमानुषिक कार्य किए थे जिसका दण्ड केवल मृत्यु था। फ्लोरैंस में उसके साथ क्या व्यवहार किया जाता? वहाँ ऐसे भी लोग होते जो उसकी मृत्यु से रुष्ट होते। ऐसे भी लोग उसकी सिफारिश करते जिनको

उसके कुकृत्यों से लाभ पहुँचा हो। शासन कदाचित् उलझन में पड़ जाता और उसे राजदूत बनाकर फ्रांस के शाह के पास अथवा मेरे पास भेज दिया जाता।"

मैक्यावैली अपनी हँसी नहीं रोक सका, "श्रीमान् विश्वास रखें अब जो राजदूत वहाँ से आ रहे हैं वह हर तरह से कलंक हीन व्यक्ति हैं।"

"वह शायद व्यर्थ ही मेरी जान खोयेगा। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारा अभाव मुझे खटकेगा।"

तब जैसे सहसा कोई विचार उसके मन में उठा हो, वह मैक्यावैली की ओर देखकर मुस्कराया और बोला, "तुम मेरी नौकरी क्यों नहीं कर लेते? मैं तुमको ऐसा काम दूंगा जिससे तुम्हारी तीक्ष्ण बुद्धि और असीम अनुभव को विकास का अवसर मिले। वेतन के मामले में भी तुम मुझे अनुदार न पाओगे।"

"जो मनुष्य धन के लिए अपने देश के साथ विश्वासघात कर सकता है उस पर आप कैसे भरोसा रख सकते हैं?"

"मैं यह नही कहता कि तुम देश के साथ विश्वासघात करो। मेरी सेवा में रहकर तुम अपने देश की सेवा उससे भी अच्छी तरह से कर सकते हो जितनी तुम विदेश मंत्रालय के उपसचिव की हैसियत से कर सकते हो। कई फ्लोरेंस निवासियों ने मेरी सेवा में रहना स्वीकार किया है और मैं समझता हूँ कि उन्हें पछताना नही पड़ा है।"

"मैडीसी के अनुयायी ने जो अपने स्वामी के निकाले जाने पर भाग गए थे और जीविका के लिए कुछ भी करने को तैयार थे?"

"केवल वे नहीं। ल्योवार्डो तथा माइकेल ऐंजिलो तक ने मेरी नौकरी करने में हेठी न समझी।"

"कलाकार? उनको जहां पैसे मिलें वहीं काम कर सकते हैं। वे कोई जिम्मेदार व्यक्ति नहीं।"

ड्यूक की आँखों में अब हंसी खेल रही थी। मैक्यावैली की ओर

ध्यान से देखते हुए उसने उत्तर दिया, "इमोला के समीप ही मेरी एक जागीर है, जिसमें अंगूर की बेलें हैं, खेती तथा चरागाह के योग्य भूमि है तथा बन हैं। इसकी आय, जो तुम्हारी मामूली सी भूमि सेनकैसियानो में है, उससे दस गुनी होगी।"

इमोला ! सीज़र बोर्जिया को उसी नगर का विचार क्यों आया किसी अन्य का क्यों नहीं ? एक बार मैक्यावैली को फिर संदेह हुआ कि ड्यूक शायद उसके औरेलिया से विफल प्रेम के हाल से परिचित है।

उसने कुछ रूखाई से उत्तर दिया, "सेनकैसियानो की वह थोड़ी-सी भूमि तीन सौ बरस से मेरे पूर्वजों की चली आती है। मैं इमोला की जागीर लेकर क्या करूँगा ?"

"महल नया है और अच्छा तथा सुन्दर बना हुआ है। ग्रीष्मकाल में नगर से दूर अवकाश स्थान के रूप में वह तुम्हें भला लगेगा।"

"श्रीमान्, आपकी बातें मुझे पहेली सी लगती हैं।"

"मैं एगापीटो को अरबीनों का गवर्नर बनाकर भेज रहा हूँ। उसके स्थान पर मेरे पास तुम्हारे जैसा कोई योग्य व्यक्ति नहीं है जो मुख्य सचिव के पद पर काम कर सके। पर मैं समझता हूँ कि जो फ्लोरेन्स से दूसरा राजदूत तुम्हारी जगह आ रहा है उससे बातचीत में झिझक-सी रहेगी। इसलिए मैं तुम्हें इमोला का राज्यपाल बनाने के लिए तैयार हूँ।"

मैक्यावैली को ऐसा जान पड़ा मानो उसके दिल के सारे तार एक साथ झनझना उठे हों। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण पद था जिसकी उसको कभी स्वप्न में भी आशा न थी। फ्लोरेंस के अधिकार में बहुत-से नगर आए थे, विजय अथवा संधि द्वारा। किंतु वहाँ पर जो राज्यपाल भेजे जाते थे वे उच्च कुल के होते थे और उनके सम्बंधी महत्वपूर्ण पद पर होते थे। यदि वह इमोला का गवर्नर बन गया तो औरेलिया उसकी प्रेमिका बनने में अपना गौरव समझेगी तथा तब उसे बार्थोलोमियो को

नगर से बाहर भेजने के बहुत से बहाने मिल सकेंगे।

यह असम्भव था कि सारी परिस्थितियों को जाने बिना ही ड्यूक ने यह प्रस्ताव किया हो। किन्तु उसको उनका पता कैसे लगा? मैक्यावैली को यह सोचकर संतोष ही हुआ कि इतने बड़े प्रलोभन का भी उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"श्रीमान्, मुझे अपनी जन्म-भूमि अपने प्राणों से भी अधिक प्यारी है।"

इलवैन्टीनो को अधिक उत्तर-प्रत्युत्तर सुनने का अभ्यास न था। मैक्यावैली ने मन में सोचा कि अवश्य ही ड्यूक क्रुद्ध होकर उसको विदा दे देगा। किन्तु यह देखकर उसके विस्मय की सीमा न रही कि वह मिचल को कोई आज्ञा देकर उसी की ओर ध्यान-मुद्रा में मग्न है।

कुछ रुककर उसने कहा, "राजदूत, मैंने सदा तुमसे साफ बातें की हैं। मैं जानता हूँ कि तुमको धोका देना सरल नहीं। अब बेकार कोशिश करके मैं अपना समय नष्ट नहीं करूंगा। मैं सब बात खोलकर कहता हूँ। जब मैं तुम्हें कोई योजना बताता हूँ तो यह नहीं कहता कि तुम इसे गुप्त रखना। पर मुझे विश्वास है कि तुम गुप्त रहस्य प्रगट करके मेरे साथ विश्वासघात न करोगे। दूसरे, तुम्हारी बात का कोई विश्वास भी नहीं करेगा। क्योंकि विदेश-मंत्री सोचेंगे कि तुम अपनी शान जमाने के लिए ही ये सब बातें कह रहे हो।"

ड्यूक ने कुछ क्षण रुक कर फिर कहना आरम्भ किया—"रोमागना और अरवीनो पर मेरा अधिकार पक्का हो गया है। जल्दी ही कैस्टलो, पैरूगिया और सायना पर भी मेरा अधिकार हो जाएगा और पीसा तो माँगते ही मुझे मिल जाएगा तथा लूसा मेरे कहते ही आत्मसमर्पण कर देगा। उस समय फ्लोरैंन्स की क्या अवस्था होगी जब वह चारों ओर से मेरे द्वारा अधिकृत प्रदेशों से घिर जाएगा?"

"निस्संदेह बड़ी डरावनी सम्भावना है। पर फ्रांस से उसकी संधि है।"

मैक्यावैली के उत्तर से ड्यूक हँसा।

"दो देशों में संधि का अर्थ है कि दोनों का परस्पर स्वार्थ। पर यदि उससे कोई लाभ न दिखाई पड़े तो बुद्धिमान देश उस समय संधि तोड़ देगा जब देखेगा कि उससे कोई लाभ नहीं। बताओ, जब मैं फ्लोरैन्स लेने के बाद फ्रांस के शाह से कहूँगा कि हम मिलकर वेनिस पर आक्रमण करें, तो वह क्या उत्तर देगा ?"

मैक्यावैली भय मे काँप गया। वह भली भाँति जानता था कि फ्रांस का बादशाह अपने स्वार्थ के लिए अपने वायदों को तोड़ने से न चूकेगा। वह कुछ देर तक चुप रहा।

फिर दृढ़ता के साथ बोला : "श्रीमान्, यदि आप यह सोचते हैं कि फ्लोरैन्स आसानी से जीता जा सकता है तो भूल करते हैं। अपनी स्वतंत्रता के लिए हम प्राणों की बाजी लगा देंगे।"

"कैसे ? आपके देशवासियों को तो धन कमाने से ही इतनी फुरसत नहीं है कि अपने देश की रक्षा के लिए अपने आपको सुशिक्षित करें। उन्होंने भाड़े के सैनिक रक्खे हुए हैं जिससे उनके व्यापार में बाधा न पड़े। भाड़े के सैनिक बस थोड़े से चाँदी के टुकड़ों के लिए लड़ते हैं। उनके लिए वे अपनी जान नहीं गँवायेंगे। जो देश स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता उसका विनाश निश्चित है और इसका केवल एक ही उपाय है कि वह अपने निवासियों को युद्ध की शिक्षा देकर उन्हें विदेशियों से अपनी रक्षा करने के योग्य बनाये, क्या फ्लोरैंस निवासी इतना त्याग कर सकेंगे ? मुझे विश्वास नहीं होता, आपके शासक व्यवसायी लोग हैं, और उनका काम है किसी न किसी दाम पर सौदा करना, चाहे थोड़ा ही लाभ हो पर हो तुरन्त। वे मान-सम्मान तथा विपत्तियों की भी परवाह न करके शान्ति चाहेंगे। आपकी प्रजा शान्त स्वभाव की है। आपके राज्य में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। उसका विनाश अवश्य ही होगा।"

मैक्यावैली के मुख पर विषाद की गहरी कालिमा फैल गई। वह निरुत्तर था।

ड्यूक ने अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए कहा, "स्पेन में एकता हो गयी है। फ्राँस इंगलैंड से अलग होकर शक्तिशाली बना हुआ है। ऐसी हालत में छोटे-छोटे प्रदेश अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कभी नहीं कर सकते। उनकी स्वतंत्रता दिखावटी है, क्योंकि उसकी नींव कमज़ोर है। जब तक बड़े राज्य चाहते हैं कि उनकी स्वतंत्रता बनी रहे तभी तक वे स्वतंत्र हैं। चर्च की रियासतें मेरे अधिकार में हैं। बोलोना पर शीघ्र मेरी विजय होगी। फ्लोरेंस का भाग्य अन्धकार पूर्ण है ही। तब मैं दक्षिण में नेपिल्स से लेकर उत्तर में मिलानीज़ तथा वेनिस तक का स्वामी हो जाऊँगा। मेरे पास मेरा अपना तोपखाना होगा तथा विटैली का तोपखाना होगा। मैं फिर ऐसी योग्य सेना तैयार करूँगा जैसी मेरी रोमागना की है। तब मैं तथा फ्राँस का शाह मिलकर परस्पर वेनिस के प्रदेश को बाँट लेंगे।"

मैक्यावैली ने विषादपूर्ण मुख से उत्तर दिया, "पर क्या सभी कुछ आपकी इच्छा के अनुकूल हो सकेगा? ज्यों-ज्यों आपकी विजय होगी त्यों-त्यों फ्राँस की शक्ति बढ़ती जाएगी। तब स्वाभाविक स्पर्धा उसमें तथा स्पेन में होगी। दोनों में से कोई एक आपके राज्य को पूरी तरह कुचल देगा।"

"यह सच है। पर अपनी सेना तथा धन के साथ मैं एक शक्तिशाली मित्रराष्ट्र बनूंगा और जिसकी ओर मैं रहूँगा उसकी विजय निश्चित होगी।"

"तब भी आप विजेता के पीछे-पीछे ही रहेंगे।"

"राजदूत, आप तो फ्रांस में रह चुके हैं और उनके सम्पर्क में आए हैं। उनके विषय में आपके क्या विचार हैं?"

मैक्यावैली ने घृणा से अपने कंधे उचकाते हुए उत्तर दिया, "वे निकम्मे और गैर-जिम्मेदार हैं। जब भी कोई दुश्मन उनके आक्रमण

का दृढ़ता से मुकाबिला करता है तो उनके पांव उखड़ जाते हैं और वे साहस छोड़ बैठते हैं। वे न तो विपत्तियों को सहन कर सकते हैं और न कठिनाइयों को। थोड़े समय में ही वे लापरवाह हो जाते हैं और तब उनकी लापरवाही से कोई भी लाभ उठा सकता है।"

"मैं जानता हूँ। जब सर्दी में वर्षा होती है तो एक-एक करके वे सब अपने डेरों से खिसक जाते हैं और तब वह बलवान शत्रु की कृपा के अधीन हो जाते हैं।"

"किन्तु दूसरी दृष्टि से देखने पर वह देश धन-धान्य से भरा-पूरा तथा उपजाऊ है। शाह ने छोटे-छोटे ज़मीदारों की शक्ति को नष्ट कर दिया है जिससे उसकी अपनी शक्ति बढ़ गई है। वह कुछ मूर्ख अवश्य है किन्तु उसके मंत्री उतने ही चतुर हैं जितने इटली के।"

ड्यूक ने सम्मतिसूचक भाव से सिर हिलाया।

"अच्छा अब बताइये कि स्पेन वालों के विषय में आपका क्या विचार है।"

"मेरा उनसे बहुत थोड़ा सम्पर्क रहा है।"

"तब मैं बतलाऊंगा। वे वीर, सुसंगठित, दृढ़-निश्चयी तथा गरीब है। उनके पास नष्ट होने के लिए कुछ नहीं, पाने के लिए सब कुछ है। यदि उनमें एक कमजोरी न होती तो उनसे संघर्ष करना भी कठिन हो जाता। उनको अपनी सेना तथा अस्त्र-शस्त्र समुद्र पार करके लाने पड़ेंगे। यदि एक बार उन्हें इटली से बाहर निकाल दिया जाय तो उनको वापिस लौटने से रोकना बहुत ही आसान होगा।"

अब दोनों मौन थे। ड्यूक हथेली पर ठोड़ी रखकर किसी गहरे विचार में डूब गया। मैक्यावैली सरसरी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। ड्यूक के नेत्र कठोरता से चमक रहे थे। वे भावी कुचक्र तथा भयंकर युद्ध का चित्र देख रहे थे। उस दिन अपनी चालों की दुर्दमनीय विजय से उल्लहित उसका हृदय कठिन से कठिन और भयानक से भयानक घटनाओं को भी पार कर जाने के लिए तैयार था। कौन

कह सकता था कि वह कितनी ऊँची अभिलाषाओं, और महत्त्वाकांक्षाओं के स्वप्न देख रहा है ? उसके होठों पर मुस्कराहट थी।

"मे·ी सहायता से फ्रांस स्पेन को नेपिल्स तथा सिसली से बाहर निकाल सकता है और स्पेन फ्रांस को मिलेनीज़ के दूर भगा सकता है।"

"पर जिसकी आप सहायता करेंगे वही इटली का और आपका स्वामी बनेगा।"

"यदि मैं स्पेन की सहायता करूंगा तो अवश्य पर यदि फ्रांस की सहायता करूंगा तो कभी नही। हमने एक बार उनको इटली से भगा दिया था। हम फिर भी उनको भगा सकते हैं।"

"वे उचित अवसर की प्रतीक्षा करेंगे और फिर वापस लौट आएंगे।"

"मैं उसके लिए तैयार रहूंगा। वह बूढ़ा खुर्राट बादशाह फर्डीनेंड बीती बात पर पछताने वालों में नही है। यदि फ्रांस मुझ पर आक्रमण करेगा तो उसे बदले का अवसर मिल जाएगा और उसकी सेनाएं फ्रांस में घुस बैठेंगी। उसकी पुत्री का विवाह इंगलैण्ड के बादशाह के पुत्र के साथ हो चुका है। इंगलैण्ड अपने पुराने शत्रु से युद्ध करने के अवसर को हाथ से न जाने देगा तब फ्रांस को मुझ से कहीं अधिक डरना पड़ेगा।"

"किन्तु श्रीमान्, पोप बूढ़ा है। उसकी मृत्यु से आपकी शक्ति आधी रह जाएगी और आपके प्रभाव को भी काफ़ी धक्का पहुँचेगा।"

"क्या आप सोचते हैं कि मैं यह सब नहीं समझता ? मेरे बाप के मरने पर जो होगा उसका प्रबन्ध मैंने कर लिया है। मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार हूं। दूसरा पोप वही बनेगा जिसको मैं चुनूंगा। मेरी सेना उसकी रक्षा करेगी। नहीं, मैं पोप की मृत्यु से नहीं डरता। इससे मेरे कार्यक्रम में कोई बाधा नहीं पड़ेगी।"

सहसा ड्यूक कुर्सी से उठ बैठा और कमरे में टहलने लगा।

"आज चर्च ही के कारण देश विभक्त है। वह इतनी शक्तिशाली कभी नहीं हुई कि समूचे इटली पर अधिकार कर सके पर साथ ही उसने किसी दूसरे को भी इतना सशक्त नहीं होने दिया कि सारे इटली पर उसका अधिकार हो जाय। जब तक इटली संगठित होकर एक नहीं होता तब तक उसका भविष्य अंधकार में है।"

"यह सच है कि हमारे देश के जंगली लोगों तथा अत्याचारियों के आक्रमणों से जर्जर रहने का कारण केवल यह है कि उस पर बहुत से ज़मीदारों और राजाओं का कब्जा है।"

इलवैन्टीनो चलते-चलते रुक गया। उसके होंठों पर व्यंगपूर्ण मुस्कान थी और उसकी आंखें मैक्यावैली की आंखों से मिल रही थीं।

"राजदूत, इसका इलाज हमें अपने धर्मशास्त्र में मिलेगा। जिसमें कहा गया है कि राजा की चीज़ राजा को दो और भगवान् की चीज़ भगवान् को।"

ड्यूक के कहने का मतलब साफ स्पष्ट था। मैक्यावैली ने भय तथा विस्मय की सांस ली। इस व्यक्ति ने उसे एकदम स्तंभित कर दिया था। उसने किसी भावावेश के बिना ऐसी भयङ्कर बात कह डाली थी जिसे सुनकर सारे ईसाई देश कांप उठते।

पर वह शान्तिपूर्वक कहता रहा, "राजा को चर्च के आध्यात्मिक अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे प्रजा नेक और सुखी रहेगी। और मेरे विचार में इन आध्यात्मिक अधिकारों को पुनर्जीवित करने का उपाय केवल यही है कि उसके भौतिक अधिकारों को समाप्त कर दिया जाय।"

मैक्यावैली को ऐसी भयंकर आस्थाहीनता की बात का कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। किन्तु किसी ने बाहर से द्वार खटखटाकर उसकी रक्षा कर ली। इस बाधा से अत्यन्त कुपित होकर ड्यूक ने पूछा, "कौन है यह?"

उसको कोई उत्तर नहीं मिला। पर द्वार खुला और डोन मिचल

ने वहां प्रवेश किया। इसी व्यक्ति ने उस अभागे सुन्दर लड़के का गला घोंटा था जिसका नाम एलफौन्सो विसेगली था। और जिससे ल्यूक्रेज़िया प्रेम करती थी। मिचल बड़े डीलडौल वाला आदमी था जिसके सारे शरीर पर बड़े-बड़े बाल थे। शरीर सुदृढ़, भौंहें घनी, नेत्र कठोर तथा नाक छोटी और चपटी थी। आदमी देखने में बड़ा ही डरावना था।

ड्यूक ने भाव बदलकर कहा, "अच्छा तुम हो।"

"मर गए," उसने स्पेनिश भाषा में कहा।

मैक्यावैली स्पेनिश भाषा नहीं समझता था। पर इस बात का अर्थ वह तुरन्त समझ गया। वह व्यक्ति द्वार पर ही खड़ा था और ड्यूक बढ़कर उसके पास पहुँचा। उनमें धीमे स्वर में कुछ बातें हुई जिन्हें मैक्यावैली नहीं सुन सका। ड्यूक ने दो-एक प्रश्न किए और उसने विस्तार से कोई हाल सुनाया।

इलवैन्टीनो के मुख पर प्रसन्नता झलक रही थी और उसकी उन्मुक्त हँसी से मैक्यावैली को लगा कि ड्यूक को न केवल प्रसन्नता ही हुई थी बल्कि कुछ मनोरंजन भी हुआ था।

"विटेलोज्जो तथा औलीवर्टो मर चुके हैं। जैसे वीर वे थे वैसी वीरगति उनकी नहीं हुई। औलीवर्टो ने दया की प्रार्थना की। उसने इस विश्वासघात का दोषी विटेलोज्जो को ठहराया और कहने लगा कि उसी ने मुझे फंसा दिया है।"

"और पागोलो औरसिनी तथा ग्रेवीना के ड्यूक का क्या हुआ?"

"मैं उनको कल अपने साथ लेता जाऊंगा। मैं उनको तब तक बंदी रक्खूगा जब तक पोप की आज्ञा न मिले।"

मैक्यावैली ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा तो ड्यूक भी उसकी ओर ताकने लगा॥"

"इन दुष्टों को बन्दी करते ही मैंने अपना दूत पोप के पास भेज दिया था ताकि वह धर्माध्यक्ष औरसिनी को भी बंदी बना ले। जब तक यह कार्य पूरा न हो जाएगा तब तक पागोलो और उसके भतीजे को उनके

अपराधों का दंड नहीं दिया जाएगा।"

एकाएक ड्यूक उदास हो गया और ऐसा जान पड़ा मानो किसी दुश्चिन्ता का काला बादल उसकी आंखों के आगे छागया हो। वह मौन हो गया था और मैक्यावैली ने समझा कि उनकी बातचीत समाप्त हो गई है। इसलिए वह जाने के लिए उठने लगा पर ड्यूक ने उसको बैठने का संकेत किया। जब वह फिर बोला तो उसका स्वर मंद था पर उसकी आवाज में क्रोध, कठोरता तथा दृढ़ता थी।

इन छोटे-छोटे अत्याचारियों के कुशासन से प्रजा पीड़ित रहती है पर इनका अन्त कर देने से ही कुछ नहीं होगा। हम जंगली जातियों के शिकार हो रहे हैं। लोम्वर्डी को लूट लिया गया है। टस्केनी और नेपिल्स को कर देना पड़ रहा है। इन भयानक भेड़ियों का वध सिर्फ मैं ही कर सकता हूं। मैं ही इटली को स्वतन्त्र कर सकता हूं।"

"इटली की यह पुकार परमात्मा तक पहुंच चुकी है कि ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो जो उसकी परतन्त्रता की बेड़ियों को काट डाले।"

"अब इस बात का समय आ गया है। जो लोग इस संग्राम में भाग लेंगे वे यशस्वी होंगे और अपने देशवासियों का भला करेंगे।"

उसने अपनी पैनी और चमकदार दृष्टि से मैक्यावैली को घूरा मानो वह अपनी शक्ति से उसकी आत्मा को वश में कर लेना चाहता हो, "आप लोग भी कैसे पीछे रह सकते हैं? निश्चय ही कोई भी इटली निवासी ऐसा नहीं होगा जो मेरा साथ न दे।"

मैक्यावैली ने निष्प्रभ नेत्रों से ड्यूक की ओर देखा। वह गहरी सांस लेकर बोला, "मेरे हृदय की सबसे बड़ी कामना यही है कि आक्रमण करके हमारा विनाश करने वाले इन जंगलियों के पंजों से अपने देश को स्वतन्त्र करूं। वे हमारी धरती को उजाड़ देते हैं, हमारी स्त्रियों की लज्जा का अपहरण करते हैं तथा नागरिकों की सम्पत्ति लूट लेते हैं। हो सकता है परमात्मा ने आप ही को इसके उद्धार के लिए चुना हो। किन्तु आपके साथ मिलकर मुझे क्या मूल्य चुकाना पड़ेगा, ऐसा करके

मैं उस देश की स्वतन्त्रता को नष्ट करूंगा जिसने मुझे जन्म दिया है।"

"आप चाहे जिधर रहें, फ्लोरैन्स की स्वतन्त्रता अवश्य नष्ट होगी।"

"तब उसके अन्त के साथ ही मेरा भी अन्त होगा।"

ड्यूक ने कुपित होकर अपने कन्धे हिलाए। "आप एक प्राचीन रोमन की भांति बातें करते हैं, समझदार व्यक्ति की भांति नहीं।"

उसने बड़े अहंकार के साथ हाथ का संकेत किया जिससे स्पष्ट था कि बातचीत समाप्त हो गई। मैक्यावैली उठा, उसने झुककर प्रणाम किया और सदा की तरह उसका सम्मान किया। पर वह द्वार तक ही पहुँचा था कि ड्यूक की आवाज़ सुनकर रुक गया। एक चतुर अभिनेता की भांति उसकी सम्पूर्ण आकृति बदल चुकी थी और उसकी आवाज़ में मिठास तथा आत्मीयता आ गई थी।

"राजदूत, आपके विदा होने से पहले मैं एक विषय पर आपकी सम्मति लेना चाहता हूं। इमोला में बार्थोलोमियो के साथ आपकी मित्रता थी। मैं ऐसे व्यक्ति की तलाश में हूं जो मौन्टपैलिअर जाकर उनके व्यापारियों से बातचीत कर सके। और इसमें विशेष सुविधा रहेगी कि उसको पेरिस भेजा जाय जिससे वहां वह मेरे लिए और भी काम करता रहे। बार्थोलोमियो से जितना आपका परिचय है उससे क्या आप बता सकते हैं कि उसको इस कार्य के लिए भेजना उचित होगा या नहीं?"

उसने यह बात ऐसे साधारण ढंग से पूछी थी मानो उसके पीछे कोई गुप्त रहस्य न हो। पर मैक्यावैली उसके पूछने का मतलब समझ गया। ड्यूक बार्थोलोमियो को ऐसी यात्रा पर भेजने का प्रस्ताव कर रहा था जहां से वह शीघ्र वापिस नहीं लौट सकता था। अब इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि औरेलिया के साथ उसका प्रेम ड्यूक से छिपा न था।

"जब श्रीमान ने मुझसे यह प्रश्न पूछने की कृपा की है तो मैं यही

कहूंगा कि जनता को शान्त करने में बार्थोलोमियो सदा आपका हाथ बटाता रहेगा। इसलिए उसको बाहर भेजना ठीक न होगा।"

"शायद तुम ठीक ही कह रहे हो। वह यहीं रहेगा।"

मैक्यावैली फिर प्रणाम करके वहां से चला गया।

पीयरो तथा एक नौकर मैक्यावैली की प्रतीक्षा कर रहे थे। सड़कें अंधेरी तथा सुनसान थीं। नंगी लाशें मुख्य बाज़ारों में लटकी हुई थीं जिससे दूसरों को शिक्षा मिले। वे चलकर सराय में पहुँचे। उसके भारी किवाड़ बन्द थे तथा अन्दर से आगल भी लगी हुई थी। पर उनके द्वार खटखटाने पर छेद में से देखकर सराय वालों ने द्वार खोल दिए और उनको अन्दर ले लिया। उस रात कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी और रसोईगृह की आग से अपने अंगों में गर्मी महसूस करके मैक्यावैली को बड़ी प्रसन्नता हुई। कुछ लोग शराब पी रहे थे, कुछ चौपड़ या ताश खेल रहे थे और कुछ बेंचों पर या फर्श पर सोए पड़े थे। एक बड़े बिस्तरे पर सराय के स्वामी के बीवी-बच्चे सो रहे थे। उसके पास ही उसने मैक्यावैली तथा पीयरो के लिए चटाई का बिस्तरा बिछा दिया। वे अपना-अपना लबादा लपेट कर पास-पास पड़ गए। पीयरो को सवेरे से ही घोड़े पर सफ़र करना पड़ा था तथा दिन भर वह उत्तेजित करने वाली घटनाएँ देखता रहा था। इसके अतिरिक्त उसे महल के बाहर बहुत देर तक मैक्यावैली की प्रतीक्षा भी करनी पड़ी थी। इसलिए थक जाने के कारण पहले ही उसे गहरी नींद आ गयी। पर मैक्यावैली की आंखों में नींद न थी। अनगिनती विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

यह तो साफ था कि इलवैन्टीनो यह जान गया है कि उसने औरेलिया के लिए क्या षड्यन्त्र किया था तथा उसमें वह असफल रहा था। शायद उसने सोचा हो कि इस प्रलोभन से वह प्रजातन्त्र की नौकरी छोड़ देगा। ड्यूक की इस नासमझी पर मैक्यावैली व्यंग्य से मुस्कराया। मैक्यावैली उसको इतना नादान नहीं समझता था। इस बात की कल्पना

भी उसे कैसे हुई कि कोई समझदार व्यक्ति किसी स्त्री के प्रेम में इतना अंधा हो सकता है कि वह अपने जीवन के प्रमुख कर्त्तव्य को ठुकरा दे। स्त्रियों की कमी न थी। यही नहीं, वेनिस की पैदल सेना के कप्तान की पत्नी डोरोटी केरासियोलो को ड्यूक ने उड़ा लिया था। पर जब उसे लौटाने के लिए वेनिस ने अपना राजदूत ड्यूक के पास भेजा तो उसने उससे यही प्रश्न किया था कि क्या रोमागना की स्त्रियां उसके लिए ऐसी अप्राप्य है कि वह अस्थायी स्त्री को उडाता फिरे। चलते समय विदा लेने के अलावा मैक्यावेली ने औरेलिया को कई सप्ताह से नहीं देखा था। अब भी उसके हृदय में उसके लिए चाह वासना की तीव्रता के कारण नही थी, बल्कि केवल इसलिए थी कि वह अपने षड्यन्त्र में हार स्वीकार नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि ऐसी छोटी-छोटी वासनाओं के वशीभूत हो जाना कैसी मूर्खता है। पर वह यह जानने को बड़ा उत्सुक था कि उसके प्रेम के रहस्य का ड्यूक को कैसे पता चला। पीयरो से तो यह असंभव था, क्योंकि वह पीयरो की परीक्षा ले चुका था और उसको हमेशा सच्चा पाया था। तब क्या सैराफीना द्वारा? पर उसकी ओर से तो वह बहुत सावधान रहा था और यह असंभव था कि उसको तनिक भी कोई पता लगा हो। कैटेरीना तथा औरेलिया तो इस षड्यन्त्र में स्वयं ही सम्मिलित थीं और उनका विश्वासघात करना भी सम्भव न था। नीना? नहीं, उससे भी सावधानी बरती गई थी।। सहसा मैक्यावेली ने अपने माथे को पोट लिया। कैसा मूर्ख हूं मैं भी! जो बात दिन की भांति प्रत्यक्ष थी और जिसे उसे आरम्भ में ही सोच लेना चाहिए था यह दिमाग में ही नहीं आई। फ्रा टिमोटियो! उसको अवश्य ड्यूक से वेतन मिलता होगा। सैराफ़ीना से मिलकर तथा वार्थोलामियो के घर पर पूरा प्रभाव होने से वह फ्लोरेंस के दूत के हर काम पर नज़र रख सकता था। उसी के द्वारा ड्यूक को सारा हाल मिलता रहा होगा कि कौन-कौन उससे मिलने आता है, कब वह फ्लोरेंस पत्र भेजता है तथा कब वहां से उत्तर आता है। यह सोचकर

मैक्यावैली बड़ा व्यग्र हुआ कि उस पर कड़ी दृष्टि रक्खी गई थी। पर इस विचार ने उसकी आंखें खोलकर रख दीं। यह आकस्मिक घटना नहीं थी कि जिस समय वार्थोलोमियो सेन विटेल की अस्थियों के सामने प्रार्थना कर रहा था, इलवैन्टीनो ने ठीक उसी समय उसके बुलाने के लिए आदमी भेजे जिस समय उसे औरेलिया का द्वार खटखटाना था, फ्रा टिमोटियो को सब बातों की सूचना पहिले से ही थी और उसी ने ड्यूक को सावधान कर दिया होगा। मैक्यावैली को ऐसा क्रोध आया कि यदि वह धूर्त महन्त इस समय उसके सामने होता तो वह उसकी गर्दन मरोड़ देता। ड्यूक ने मन में सोचा होगा कि इस भांति निराश होने से मेरी वासना और भी तीव्र हो उठेगी और तब वह मुझसे प्रलोभन देकर चाहे कुछ करा सकेगा। यही कारण था कि फ्रा टिमोटियो ने उसे और सहायता देना अस्वीकार कर दिया था। और अवश्य उसी ने औरेलिया को भड़काया होगा कि परमात्मा ने ही उसके धर्म की रक्षा की है इसलिए वह फिर इस पाप से अपने आप को बचाए।

"पता, नही, मेरी पच्चीस मुद्राओं के अतिरिक्त उसको और कितना धन प्राप्त हुआ होगा," मैक्यावैली बड़बड़ा उठा। वह भूल गया कि यह धन उसने वार्थोलोमियो से कर्ज लिया था और ड्यूक ने वार्थोलोमियो को दिया था।

इतना सब कुछ होने पर भी उसको मन में इस बात से संतोष था कि ड्यूक ने उसे अपनी सेवा में लेने के लिए अनेकों प्रयत्न किए। उसको बड़ा हर्ष था कि ड्यूक ने उसका इतना बड़ा मूल्य समझा। फ्लोरेंस में विदेशी मंत्री उसको विनोदी व्यक्ति समझते थे और प्रायः उसके पत्रों की हंसी उड़ाया करते थे। उनको उसकी बुद्धि पर विश्वास न था और उसकी सलाह पर वे कभी काम न करते थे।

उसने ठंडी आह लेकर कहा, "घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध।"

वह समझता था जितनी बुद्धि उन सब में मिलाकर है उतनी तो उसकी छोटी उँगली में है। मंत्रीमण्डल का प्रधान मंत्रि पायरो सोडरिनी दुर्बल, अदूरदर्शी तथा आनन्दी जीव था। बाकी मंत्री डरपोक, साधारण तथा अस्थिर बुद्धि वाले थे। उनकी नीति आगा-पीछा करने की, अनिश्चित तथा टालमटोल वाली थी। प्रजातंत्र का मंत्री मारसीलो वरजीलियो मैक्यावैली से एक दर्जे ऊंचे पद पर था पर उसको यह पद केवल इस कारण मिला था कि वह सुन्दर था तथा उसका भाषण लच्छेदार होता था। मैक्यावैली की उससे घनिष्ठता थी पर योग्यता की दृष्टि से वह उसे बहुत तुच्छ समझता था। उन मूर्खों को यह सुनकर कितना विस्मय होता कि जिस प्रतिनिधि को उन्होंने इलवैन्टीनो के पास केवल इसलिए भेजा था कि उसका पद कोई महत्व नहीं रखता, उसको ड्यूक ने इमोला का गवर्नर बना दिया और वह ड्यूक का सबसे अधिक विश्वासपूर्ण मंत्री है। मैक्यावैली की यह तनिक भी आन्तरिक इच्छा न थी कि वह ड्यूक के दिए हुए पद को स्वीकार करे पर इस विचारमात्र से उसका हृदय उल्लसित था, विशेषकर जब वह यह सोचता कि मंत्रीमंडल से उसको कुछ भी प्रोत्साहन नहीं मिलता और उसके विपक्षी उससे कुपित हैं।

और इमोला तो उन्नति की पहली सीढ़ी ही है। यदि सीज़र बोर्जियो इटली का बादशाह बन जाय तो वह प्रधान मंत्री अवश्य बनेगा और तब उसको उतने ही अधिकार होंगे जितने फ्रांस में रुएन के धर्माध्यक्ष को थे। क्या यह संभव है कि बोर्जिया द्वारा इटली का उद्धार होगा? यद्यपि निजी महत्वाकांक्षा ही उसको प्रेरित कर रही थी किंतु उसका लक्ष्य बहुत ऊँचा था और उस जैसी महान् आत्मा के योग्य ही था। वह चतुर तथा तेजस्वी था। उसकी प्रजा उससे प्रेम भी करती थी तथा डरती भी थी, उसकी सेना उसका आदर करती थी तथा उस पर विश्वास रखती थी। इटली यद्यपि उस समय दासता और अपमान की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, तो भी उसकी पुरानी वीरता एकदम खत्म नहीं हुई थी। शक्तिशाली

शासक के राज्य में प्रजा संगठित होकर सुरक्षित रहेगी तथा सुखी और समृद्धिशाली बनेगी। कोई व्यक्ति यदि अपनी पीड़ित मातृभूमि का उद्धार करके सदा के लिए वहाँ शान्ति स्थापित कर सके तो उससे बढ़कर और कौन यशस्वी होगा?

पर सहसा मैक्यावैली किसी तीखे विचार से ऐसा चौंक पड़ा कि पास सोये हुए पीयरो ने भी बड़ी बेचैनी से करवट बदली। उसको ध्यान आया कि कहीं ड्यूक उसके साथ मजाक तो नहीं कर रहा है। वह भली-भांति जानता था कि ऊपर से अच्छे व्यवहार के बावजूद ड्यूक अन्दर से उससे क्रुद्ध था क्योंकि वह विदेश मंत्री को ड्यूक को सेनापति पद देने के लिए सहमत नहीं कर सका था जिससे उसका सम्मान तथा शक्ति दोनों बढ़ जाते। संभव है उसी का बदला उसने लिया हो। मैक्यावैली के सारे शरीर में कांटे-से चुभने लगे। उसे लगा कि जितने दिन वह इमोला में रहा, ड्यूक, एग्पीटो तथा अन्य सब लोग उसकी चालों को चतुरता से भांपते रहे और ऐसा उपाय करते रहे जिससे वे सब व्यर्थ हो जायें। फिर वह सोचने लगा कि यह विचार व्यर्थ है और उसे भुला देना चाहिए। पर वह कुछ भी निश्चित नहीं कर पाता था इसी से बहुत व्यग्र था। सारी रात्रि उसने छटपटाते ही बीती।

[३१]

दूसरे दिन सबेरे ही ड्यूक थोड़ी सी सेना नगर की रक्षा के लिए छोड़ बाकी लेकर पैरुगिया की ओर चल पड़ा।

वह नये वर्ष का पहला दिन था।

मौसम बड़ा खराब था। सड़कें जो शान्ति काल में भी ख़राब रहती थीं, इस समय घोड़ों की टापों से, सामान से भरी हुई गाड़ियों और

सैनिकों के चलने से धूल से भरी हुई थीं। सेना रास्ते के एक छोटे से कस्बे में ठहरी जहाँ इतने लोगों के ठहरने के लिए काफी जगह नहीं थी। वे बड़े भाग्यशाली थे जिनके सर पर छत की छाया मिल सकी थी। मैक्यावैली आनन्दी जीव था। पर वहाँ उसको भी किसी किसान की झोंपड़ी में खाली धरती पर सोना पड़ा और वहां भी इतनी भीड़ थी कि कोई अपना बदन तक नहीं हिला सकता था। इसलिए उसे बड़ा क्रोध आया। भोजन भी उसे वही करना पड़ा जो कुछ वहां मिल सकता था। इससे मैक्यावैली को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि उसका हाज़मा पहिले से ही ठीक न था। सैसोफैरैटो में समाचार मिला कि विटैली पैरूगिया भाग गया। ग्वाल्डो में समाचार मिला कि कैस्टलो के नागरिक ड्यूक को आत्म-समर्पण के लिए उत्सुक हैं। तब एक दूत ने आकर संवाद दिया कि ओरसिनी, विटैली तथा उनके सैनिक, पैरूगिया की रक्षा की सब उम्मीदें छोड़ कर सायना की ओर भाग गए हैं। इस पर वहां की जनता सजग हो गई और उसने आत्मसमर्पण के लिए अपने प्रतिनिधि ड्यूक के पास भेजे। इस प्रकार युद्ध किए ही बिना दो महत्त्वपूर्ण नगर ड्यूक के हाथ लग गये। तब वह असीसी पहुँचा। वहां पर सायना से दूत यह पूछने के लिए आया कि वह सायना पर किस उद्देश्य से आक्रमण करना चाहता है। ड्यूक ने उत्तर दिया कि उसको उनके नगर से कोई शत्रुता नहीं है। पर वह पैंट्रसी को नगर से बाहर निकाल देना चाहता है। इस-लिए यदि वे स्वयं ही उसको निकाल दें तो अच्छा है। वरना इसके लिए उसको सेना सहित पहुँचने को विवश होना पड़ेगा। इसके बाद उसने सायना की ओर कूच कर दिया, पर लम्बा रास्ता लिया जिससे वहां की जनता को फैसला करने का अवसर मिल जाय। मार्ग में वह बहुत से दुर्गों तथा ग्रामों पर अधिकार करता गया। सैनिकों ने प्रदेश को खूब लूटा। वहाँ के निवासी भयभीत होकर वहाँ से भागने लगे। कुछ वृद्ध स्त्री-पुरुष जो भागने में असमर्थ थे वहीं रह गए। उनको हाथ-पाँव बाँध कर लटका दिया गया तथा नीचे आग जलाकर पूछा गया कि मूल्यवान

आरामदायक मिल गया था। ड्यूक ने अपनी सेना को थोड़ा आराम देने के लिए वहाँ कुछ दिन ठहरना चाहा। मैक्यावैली ने सोचा कि जब तक ड्यूक वहाँ से प्रस्थान करेगा उस समय तक उसकी जगह दूसरा दूत ग्याकोमो सेलवियाटी, वहाँ पहुँच जाएगा। घोड़े पर लम्बी यात्रा करने से वह पूरी तरह थक गया था और विपरीत भोजन से उसके पेट में बड़ी पीड़ा हो रही थी। मार्ग में ठहरने के स्थान इतने रद्दी थे कि रात में नींद आना कठिन होता था।

दो तीन दिन बाद मार्ग की थकावट दूर करने के लिए उसे आराम का मौका मिला। पर दुश्चिन्ताओं के कारण नींद उससे कोसों दूर थी। यद्यपि विदेश मंत्री के जानने योग्य सब बातें उसने पत्र में लिख दी थीं किन्तु सिनगेगलिया में ड्यूक से उसकी जो बातें हुई थीं उसका बहुत सा अंश उसने छिपा लिया था, विशेषकर वह अंश कि इलवैन्टीनो ने उसे धन तथा पद दोनों देने चाहे थे। यह अवसर बड़ा भारी था और विदेश मंत्री को स्वाभाविक ही यह भ्रम होता कि वह ऐसे ऊंचे पद का प्रलोभन नहीं छोड़ सकेगा। वे लोग ओछे विचार के आदमी थे और उनके सलाहकार भी वहमी तथा ओछी प्रकृति के थे। वे अपने मन में विचार करते कि ड्यूक द्वारा उनके दूत को इतना बड़ा लालच देने का क्या कारण हो सकता है। इससे तो उसकी सारी जिन्दगी पर कलंक का धब्बा लग जाता। तब उस पर विश्वास करना कठिन हो जाता और उनको उसे पदच्युत करने का बहाना मिल जाता। मैक्यावैली ने मन ही मन कहा कि वे यह न सोचेंगे कि मैं फ्लोरैन्स के हित को अपने स्वार्थ से बड़ा समझूंगा जब कि मैं जानता हूँ कि ड्यूक उसके देश की स्वतंत्रता में बाधा नहीं पहुँचा रहा है। इसलिए चुप रहने में ही बुद्धिमानी थी। पर यदि किसी प्रकार विदेश मंत्री को इसका पता चल गया कि ड्यूक ने उसे महत्त्वपूर्ण पद देना चाहा था तो चुप्पी के लिए उसको डाँट खानी पड़ेगी। स्थिति बड़ी परेशानी की थी। पर तभी उसकी विचारधारा एकाएक किसी की जोर की आवाज सुनकर टूट गई। कोई

मकान मालकिन से पूछ रहा था कि क्या मि० निकोलो मैक्यावैली यहीं ठहरे हुए हैं।

पीयरो दरवाजे पर ही बैठा हुआ कोई पुस्तक पढ़ रहा था। वह चिल्ला उठा, "मि० बार्थोलोमियो।",

मैक्यावैली चिड़चिड़ा कर उठ बैठा और कहने लगा, "वह शैतान क्या चाहता है?"

क्षण भर में ही वह बड़े डील-डौल वाला आदमी कमरे में आगया। उसने अपनी बाहों में मैक्यावैली को भर लिया और उसके दोनों गालों को चूमकर बोला, "बड़ी कठिनता से आपको ढूंढ पाया है। मैं तो हर द्वार पर आपको पूछता फिरा।"

मैक्यावैली ने उसकी बाहों को हटाते हुए पूछा—

"आप यहाँ कैसे आ पहुँचे?"

"किसी काम के सिलसिले में ड्यूक ने मुझे इमोला से बुलवाया था। मुझे फ्लोरैन्स होकर आना पड़ा। वहाँ के राजदूत के नौकरों के साथ मैं यहाँ आ पहुँचा। राजदूत भी कल तक यहाँ आ जायेंगे। मेरे प्यारे मित्र निकोलो, आपने तो मेरी ज़िन्दगी बचा ली।"

यह कहकर उसने फिर मैक्यावैली को कसकर हृदय से लगा लिया और उसके दोनों गालों को चूमा। मैक्यावैली इस बार भी अपने आप को छुड़ाकर कुछ रुखाई से कहने लगा—

"मि० बार्थोलोमियो, आपको देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।"

पर बार्थोलोमियो ने बीच ही में टोक कर कहा—

"चमत्कार! चमत्कार!! और उसके लिए मैं आपका ही आभारी हूँ। औरेलिया गर्भवती हो गयी है।"

"क्या!"

"मेरे प्यारे निकोलो, सात महीने पश्चात् मैं एक हँसते हुए बच्चे का बाप बन जाऊंगा और यह सब आपकी ही कृपा का फल होगा।"

यदि घटना दूसरे ढंग से घटी होती तो वह यह बात सुनकर घबड़ा जाता। पर उस परिस्थिति में वह इससे चकित रह गया।

उसने कुछ चिड़-चिड़ाकर कहा, "बार्थोलोमियो, ज़रा शान्त हो जाइए। मुझे बतलाइये कि आपका आशय क्या है! आप मेरे आभारी क्योंकर हुए?"

"अब मैं शान्त कैसे रहूँ? अब मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा पूरी होने वाली है। बल्कि अब मैं शान्ति के साथ मर सकता हूँ। अब मैं अपना पद, अपनी सम्पत्ति अपने औरस पुत्र को छोड़ जाऊँगा। मेरी बहिन कौस्टेन्जा तो क्रोध से पागल हो गई है।"

वह आनन्द से अट्टहास कर उठा। मैक्यावैली ने चकित होकर पीयरो की ओर देखा। घटना का सिर-पैर कुछ भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था और उसने देखा कि पीयरो भी उसी की भांति विस्मित है।

"सचमुच यह आपकी ही दया का फल है। यदि आप नहीं कहते तो मैं कभी रेवेना में जाकर उस सर्दियों की रात में सेन विटेल की अस्थियों के सामने प्रार्थना नहीं करता। यह सच है कि प्रस्ताव फ्रा टिमोटियो ने किया था जो नेक और धर्मशील व्यक्ति है। पर पुरोहितों के बारे में सावधान ही रहना पड़ता है। इस बात का पूरा भरोसा कभी नहीं होता कि उनका उपदेश निस्वार्थ है। मैं उनको दोष भी नहीं देता। वे तो पवित्र मठ के आज्ञाकारी सेवक हैं। पर यदि आपने ग्यूलियानो की कहानी न बतायी होती तो मैं जाने में अवश्य आनाकानी करता। मुझे आप पर पूरा विश्वास था क्योंकि आप मेरे शुभचिन्तक हैं, मेरे मित्र हैं। मैंने मन में सोचा कि जो बात किसी फ्लोरेंस निवासी के साथ हो सकती है वह मेरे साथ ही क्यों न होगी। मैं इमोला का नेक नागरिक हूँ। जिस रात को मैं रेवेना से लौटा उसी रात को औरेलिया के गर्भ रह गया।"

उत्तेजना और लम्बे भाषण के कारण उसे पसीना आ गया था।

वह बाहों से अपने माथे का पसीना पोंछने लगा। मैक्यावैली ने परेशान होकर उसकी ओर देखा। उसकी दृष्टि में रूखापन तथा क्रोध था।

उसने तीखे स्वर में प्रश्न किया, "क्या आपको पूरा विश्वास है कि औरेलिया गर्भवती है ? स्त्रियाँ प्रायः इस विषय में भूल कर बैठती हैं।"

"मुझे पूरा निश्चय हो गया है। हम को सन्देह तो उस समय भी था जब आपने इमोला से प्रस्थान किया था और मैं आपको बतलाना भी चाहता था। पर कैटेरीना तथा औरेलिया कहने लगीं कि जब तक पूरा यकीन न हो जाय तब तक नही बतलाना चाहिए। क्या आपने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि जब आप विदा लेने गए थे तो उस समय वह कैसी सादा दिखाई पड़ रही थी ! बाद में वह मुझ से नाराज भी हुई थी। वह नहीं चाहती थी कि आप उसको उस दीन अवस्था में देखें। उसे भय था कि आप भी कुछ संदेह करेंगे और वह पूरा यकीन होने तक किसी पर नहीं प्रकट होने देना चाहती थी। मैंने उससे तर्क भी किया। पर आप तो स्वयं जानते हैं कि जब स्त्रियाँ गर्भवती होती हैं तो उनके विचार भी अनोखे हो जाते हैं।"

मैक्यावैली ने कहा, "मुझे तो कुछ भी संदेह नहीं हुआ था। सच तो यह है कि मेरे विवाह को अभी कुछ ही महीने हुए हैं। और मुझे भी इन बातों का विशेष अनुभव नही है।"

"मेरी तो हार्दिक इच्छा थी कि यह बात आप ही को सबसे पहले बतायी जाय, क्योंकि आपके बिना मुझे पिता का सौभाग्य कभी नहीं मिलता।"

उसने बार-बार मैक्यावैली को अपनी बाहों में लपेटना चाहा। पर मैक्यावैली उसे दूर हटाता रहा।

"मैं आपको दिल से बधाई देता हूँ। पर यदि हमारे राजदूत कल ही पहुँचने वाले हैं तो मैं समय नष्ट नहीं करना चाहता। इसकी सूचना ड्यूक को तुरन्त पहुँचाना आवश्यक है।"

"मैं इस समय आपको जाने दूंगा। पर आज रात आपको मेरे

साथ अवश्य भोजन करना पड़ेगा। आप तथा पीयरो दोनों आइये जिससे हम इस उत्सव को भली प्रकार मनायें।"

मैक्यावैली ने खिन्नता के साथ उत्तर किया, "यहाँ ऐसा करना कठिन होगा क्योंकि न तो यहाँ कुछ खाने का सामान ही मिल सकता है और न शराब ही। जो मिलता भी है वह वैसा ही निकृष्ट है जैसा रास्ते में सब जगह मिलता आया है।"

बार्थोलोमियो ने अपनी बड़ी भारी तोंद पर हाथ फेर कर हँसते हुए कहा, "यह तो मैं पहले से ही जानता था। मैं फ्लोरेंस से शराब, एक ख़रगोश तथा एक सुअर का बच्चा साथ लाया हूँ। मेरी अपनी प्रथम संतान के स्वास्थ के लिए दावत अवश्य की जायगी।"

अब तक मैक्यावैली के हृदय का सारा उत्साह खत्म हो चुका था। पर जिस दिन से उसने इमोला छोड़ा था तब से आज तक एक दिन भी अच्छा भोजन नसीब नहीं हुआ था। इसलिए ऐसे स्वादिष्ट भोजन का लालच वह नहीं त्याग सका और हँसने का भरसक प्रयत्न करते हुए उसने वह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

बार्थोलोमियो ने कहा, "मैं आपको यहीं से बुला ले जाऊंगा। पर जाने से पहले मैं आपसे कुछ राय लेना चाहता हूँ। आपको याद होगा मैंने फ्रा टिमोटियो को बचन दिया था कि मेरी इच्छा पूरी हुई तो देवी के सामने एक चित्र बनवाऊँगा। और यद्यपि मुझे मनवांछित वर सेन विटेल से मिला है, तो भी मैं उसे अप्रसन्न नहीं करूँगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि चित्र में मेरी की मूर्ति हो, वह सिंहासन पर बैठी हों तथा गोद में उनका बच्चा हो। उनके चरणों के समीप मैं तथा औरेलिया घुटने टेके हुए प्रार्थना की मुद्रा में अंकित हों।"

उसने दोनों हाथ जोडकर आकाश की ओर इस भाँति देखा मानो वह बड़े भक्ति भाव से परमात्मा की आराधना में लीन हो।

"मेरी इच्छा है सिंहासन के एक ओर सेन विटेल की मूर्ति हो और जैसा फ्रा टिमोटियो ने प्रस्ताव किया है, दूसरी ओर सैंट फ्राँसिस

की। क्या आपको यह विचार पसन्द है ?"

मैक्यावैली ने कहा, "आपकी पसन्द बहुत अच्छी है।"

"आप फ्लोरैंस निवासी हैं और सब बात जानते हैं। बताइये इसको किससे बनवाया जाय।"

"वास्तव में मैं किसी को नहीं जानता। ये चित्रकार पूरे ठग और गैर जिम्मेदार होते हैं। मेरा उनसे कभी वास्ता भी नही पड़ा है।"

"मैं आपको दोष नहीं देता। पर किसी का नाम तो बताइए।"

मैक्यावैली ने अपने कंधे उचकाकर कहा, "पिछली गर्मियों में मैं जब अरबीनो में था तो लोग किसी युवक की चर्चा करते थे वह पैरुगीनो का शिष्य था और लोगों का कहना था कि वह चित्रकारी में अपने गुरु से भी अधिक निपुण हो गया है और उनको आशा थी कि आगे चलकर वह बहुत उन्नति करेगा।"

"उसका क्या नाम है ?"

"मुझे याद नहीं। उन्होने बतलाया भी था, पर मैंने तो एक कान से सुना दूसरे से निकाल दिया। पर शायद मै पता लगा सकूं, और मेरे विचार से वह अधिक पैसे भी नही मांगेगा।"

बार्थोलोमियो ने बड़ी लापरवाही से कहा, "पैसे की कोई चिंता नहीं। मैं व्यापारी आदमी हूँ और समझता हूँ कि अच्छी चीज़ का दाम भी अच्छा देना पड़ता है। और मुझे तो अच्छी से अच्छी चीज़ ही चाहिए। उसके लिए जो भी देना पड़ेगा, मैं दूंगा।"

मैक्यावैली ने बड़ी अधीरता से उत्तर दिया, "अच्छी बात है, फ्लोरैंस पहुँचकर मैं खोज करूँगा।"

जब वह चला गया तो मैक्यावैली बिस्तर के एक छोर पर बैठकर चकित दृष्टि से पीयरो की ओर देखने लगा।

उसने कहा, "क्या तुमने ऐसी बात पहले भी सुनी है ? वह मर्द बन गया।"

पीयरो ने कहा, "यह तो सचमुच ही चमत्कार है।"

बेकार बकवास मत करो। हम मानते हैं कि हमारे ईसा मसीह और उनके शिष्यों ने चमत्कार दिखलाए थे। हमारे धर्म ने उन सॅन्यासी महात्माओं के किए हुए चमत्कारों को सच भी माना है। पर अब तो चमत्कारों का युग चला गया है। दूसरे सेन विटेल को क्या पड़ी थी जो उस मूर्ख मोटी तोंद वाले आदमी के लिए प्रकृति के नियम में बाधा देता ?"

पर यह कहते-कहते उसे फ्रा टिमोटियों की बात का ध्यान आया। उसने कहा था कि सेन विटेल की चमत्कारिक शक्ति की कथा मन-गढ़न्त होने पर भी बार्थोलोमियो को उस पर श्रद्धा थी कि उसको आशातीत फल मिलेगा तब क्या यह सचमुच सम्भव है ? उस समय उसने सोचा था कि फ्रा टिमोटियो ने केवल बहाना बनाया है क्योंकि वह और धन लिए बिना सहायता नहीं देना चाहता।

पीयरो ने कुछ कहना चाहा।

मैक्यावैली ने उसे रोक दिया, "चुप रहो। मैं कुछ सोच रहा हूँ।"

वह अपने आपको सच्चा रोमन कैथोलिक नहीं मानता था। वह अक्सर सोचा करता था कि ओलिम्पस निवासी ग्रीक देवता अब भी वहीं रहते हों। ईसाई धर्म ने लोगों को सत्य और मुक्ति का मार्ग तो दिखलाया था पर उसने कुछ करने की बजाय सहन करने का ही अधिक उपदेश दिया। उसने संसार को दुर्बल बना दिया जिससे लोग धूर्तों के शिकार हो गए; क्योंकि अधिकतर लोगों ने स्वर्ग जाने के लिए बुराइयों का सामना करने के बदले उनके सहने में ही अपना हित समझा। उसने लोगों को शिक्षा दी कि उनका भला नम्रता, सहनशीलता तथा सांसारिक वस्तुओं की उपेक्षा करने में ही है। प्राचीनकाल का धर्म मनुष्य को आत्मा की महानता, साहस तथा शक्ति की शिक्षा देता था।

किंतु इस विचित्र घटना ने उसे विचलित कर दिया। बुद्धि संगत न होने पर भी उसके मन में संशय हो गया था कि कहीं वैसा चमत्कार संभव न हो। उसके मस्तिष्क ने विरोध किया था पर उसके रोम-रोम में

संदेह की धारा बह रही थी। ऐसा लगता था कि उसके सारे पूर्वज जो, पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के समर्थक थे, उसकी आत्मा को बरबस अपनी ओर खींचकर उसको वशीभूत कर रहे हैं।

सहसा वह बोल उठा, "मेरे दादा को भी पेट की पीड़ा रहती थी।"

पीयरो कुछ भी नहीं समझ सका कि वह क्या कह रहा है। मैक्यावैली ने एक सर्द आह भरी।

"संभव है मनुष्य के कोमल हो जाने का कारण यही हो कि अपने निकम्मेपन में धर्म की व्याख्या ही उसने इस प्रकार की कर ली है। वह यह भूल गया है कि धर्म हमें देश-प्रेम की भी शिक्षा देता है। हमें उसकी रक्षा करने के लिए योग्य तथा बलवान बनना चाहिए।"

पीयरो के चेहरे का शून्य भाव देखकर उसे हँसी आ गई।

"मेरे बच्चे, कोई चिंता मत करो। जो कुछ मैं बक रहा हूँ उसपर ध्यान मत दो। मैं जल्दी ही तैयार हो लेता हूँ ताकि जाकर ड्यूक को दूसरे राजदूत के आने का संवाद दे सकूं। और कम से कम आज रात को तो उस मूर्ख बुढ़ऊ से बढ़िया दावत वसूल की ही जायगी।"

[३३]

दावत उन्होंने आनन्दपूर्वक ही खाई। मैक्यावैली को इमोला छोड़ने के बाद से आज स्वादिष्ट भोजन मिला था और उस पर फ्लोरैन्स की खुशबूदार शराब ने तो उसके दिल की सारी उदासी धो डाली थी। उसने भद्दे मज़ाक किए, गंदी कहानियां सुनाईं और अश्लील बातें करता रहा। वह स्वयं हँसा और दूसरों को भी हँसाता रहा। बार्थोलोमियो का तो हँसी के मारे बुरा हाल था। हँसते-हँसते उसका जोड़-जोड़ दर्द

करने लगा था। तीनों ही थोड़े-थोड़े नशे में धुत हो रहे थे।

मिनगेगलिया की घटनाओं ने इटली मे हलचल पैदा कर दी थी। इटली के कल्पनाप्रेमी लोगों ने तरह-तरह की मनगढ़न्त कहानियां बना ली थीं। बार्थोलोमियो सचाई जानने के लिए आंखों देखी घटनाएं सुनना चाहता था। मैक्यावैली उस समय मौज में था इसलिए उसने सारी घटना सुनाना स्वीकार कर लिया। उसने अपने समाचार विदेश मंत्री के पास तीन बार लिख कर भेजे थे। इसका कुछ तो कारण यह था कि एक पत्र तो वहां तक पहुंच ही नही सका था दूसरे वे विशेष महत्वपूर्ण भी थे। उसने भिन्न-भिन्न घटनाओं पर मनन किया था। ड्यूक का जिन व्यक्तियों से घनिष्ट सम्बन्ध था उनकी सहायता से एक-एक करके उसने सारा वृत्तांत विस्तार से जान लिया था। बहुत-सी बातें जो उसे परेशान किए हुए थीं उनकी भी तह में वह पहुंच गया था। इसलिए उसने उस घटना का बड़ा ही रोचक वर्णन किया।

"जब विटेलोज्जो ने कैस्टलो से सिनगेगलिया के लिए प्रस्थान किया तो अपने संबंधियों तथा मित्रों से इस भांति विदा मागी जैसे वह अन्तिम भेंट हो। अपने मित्रों की देखभाल में उसने मकान तथा सारी सम्पत्ति छोड़ी और अपने भतीजों को उपदेश दिया कि वे अपने पूर्वजों की नेकी याद रखें।"

वार्थोलोमियो ने पूछा "यदि उसको विपत्ति का आभास पहले ही मिल गया था तो वह किस लिए घर छोड़ कर वहां गया ?"

"कर्म-लेख को कौन मिटा सकता है ? हम सोचते हैं कि हम आदमी को अपने वश में कर सकते है, घटनाओं को अपने अनुकूल बना सकते हैं। हम प्रयत्न करते हैं, परिश्रम करते हैं तथा पसीना बहाते है। पर अन्त में हम भाग्य के हाथों की कठपुतली सिद्ध होते हैं। जब सेनानायक वंदी हो गए और पागोलो औरसिनी ड्यूक के विश्वासघात की शिकायत करने लगा तो विटेलोज्जो ने केवल इतना ही कहा, "अब तुम्हें अपनी

भूल जान पड़ी। तुम्हारी मूर्खता से, मैं तथा मेरे मित्र किस घोर संकट में पड़ गए।"

बार्थोलोमियो ने कहा, "वह बड़ा धूर्त था और इसी योग्य था। मैंने एक बार उसको कुछ घोड़े बेचे थे और जब मूल्य मांगा तो बोला कैस्टलो आना वही ले लेना। मैंने सोचा बुद्धिमानी इसी में है कि मैं वह हानि उठा लूँ।"

"आपने बुद्धिमानी की।"

मैक्यावैली मन ही मन सोचने लगा कि जब उस अत्याचारी, बूढ़े दुर्बल रोगी को बंदी करके और औलीवर्टो के साथ-साथ कुर्सी से बांधकर मिचेलोटो के निर्दयी हाथों ने उसको गला घोंटकर मारा होगा तो उसके मन में क्या विचार उठ रहे होंगे। मिचेलोटो बड़ा मिलनसार व्यक्ति था। जब वह किसी के साथ बैठकर शराब पीता तो बड़ा अश्लील परिहास करता तथा गिटार पर ऐसी धुने बजाता जिनमें अपने देश के दुखों की टीस रहती। उस समय कोई नहीं कह सकता था कि वह इतना क्रूर तथा हत्यारा व्यक्ति है। अपने अत्याचारो में उसको पता नहीं किस भयानक संतोष की अनुभूति होती थी? मैक्यावैली सोचने लगा कि इनके बाद ड्यूक को मिचेलोटो को मरवा देने में भी उसी तरह दया नहीं आएगी जैसे रामीरो जैसे भक्त तथा विश्वासी कर्मचारी को मरवाते समय नहीं आई थी। इस विचार से उसके चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी।

उसने प्रकट में कहा, "बड़ा विचित्र व्यक्ति है, शायद महान् भी है।"

बार्थोलोमियो पूछने लगा कि कौन।

"ड्यूक ही तो। और कौन? उसने अपने शत्रुओं का जिस कूटनीति से विनाश किया, उसकी सराहना किए बिना कोई भी दर्शक नहीं रह सकता। चित्रकार रंग और कूँची की सहायता से जो रंग-बिरंगे चित्र बनाते हैं उन पर कितना गर्व करते हैं। पर जिनकी शिल्पकला के चित्र जीते जागते मनुष्य हैं और रंग तथा कूँची उनकी चतुरता तथा मक्कारी है उनकी तुलना में ये चित्रकार कितने तुच्छ हैं। ड्यूक कर्मठ तथा साहसी

व्यक्ति है। किसी को विश्वास भी नहीं हो सकता कि वह अपनी चालों को सफल बनाने के लिए समय तथा अवसर की किस धैर्य तथा सावधानी से प्रतीक्षा करता है। चार महीने तक वह ढील छोड़े रहा जिससे वे उसके दिल के भावों के बारे में अटकल लगाते रहें। उसने उनके भय से तथा उनके परस्पर द्वेष का लाभ उठाया। अपनी मक्कारी से उन्हें किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना दिया। झूठे वचनों से उनको मूर्ख बनाया, बड़ी चतुरता से उनमें फूट डलवा दी, जिससे बोलोगना के बैन्टीवोगलियो तथा पैरूगिया के बैगलिओनी ने इनका साथ छोड़ दिया। आप तो जानते ही हैं बैगलिओनी को कितना बुरा परिणाम भोगना पड़ा। बैन्टी-वोगलियो की बारी भी अब आने ही वाली है। अवसर के अनुरूप ही कभी उसने मित्रता का व्यवहार किया कभी नम्र, कठोर तथा भयंकर बन गया और अंत में सबको अपने फैलाए हुए जाल में फँसा लिया। उसकी धोखाधड़ी इतने ऊँचे दर्जे की है कि योजना की सफाई और सफलता की सम्पूर्णता की दृष्टि से आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए अध्ययन की वस्तु होने योग्य है।"

बार्थोलोमियो बड़ा बातूनी था और वह कुछ कहने ही वाला था। पर मैक्यावैली की बात अभी खत्म नहीं हुई थी।

"उसने इटली का बहुत से छोटे-छोटे अत्याचारियों से उद्धार कर दिया जो देश के लिए कलंक रूप थे। अब वह आगे क्या करेगा? उससे पहले कितने ही व्यक्ति शुरू में परमात्मा के भेजे हुए जान पड़े पर काम के बीच में ही भाग्य ने उनका त्याग कर दिया।"

सहसा वह उठ खड़ा हुआ। वह उस दावत से थक सा गया था और बार्थोलोमियो का भाषण नहीं सुनना चाहता था। उसने उसे उस आमोद-प्रमोद के लिए धन्यवाद दिया और वफादार पीयरो को लेकर अपने निवास स्थान पर चला आया।

[३४]

दूसरे दिन बार्थोलोमियो का काम समाप्त हो गया और तुरन्त पैरूगिया के लिए चल पड़ा जो उसके घर के मार्ग ही में पड़ता था। इसके बाद मैक्यावैली, पीयरो, अपने दोनों नौकरों तथा ड्यूक के बहुत से दरबारियों के साथ फ्लोरैन्स के राजदूत से रास्ते में ही मिलने गया। जब ग्याकोमो सेलवियाटी ने यात्रा के कपड़े बदल कर फ्लोरैन्स की बढ़िया पोशाक पहन लीं तो वह मैक्यावैली को लेकर दुर्ग में अपना परिचय-पत्र देने के लिये पहुँचा। मैक्यावैली अब शीघ्र ही घर लौटने के लिए बड़ा उत्सुक था। पर नवागन्तुक राजदूत की जान-पहचान सभी आवश्यक व्यक्तियों से कराये बिना वह वहाँ से नहीं जा सकता था। ड्यूक के दरबार में प्रेम द्वारा कुछ भी संभव न था। इसलिए मैक्यावैली को उसे बताना पड़ा कि किस-किस काम के लिए किस-किस व्यक्ति को उसे क्या देना पड़ेगा। उसने यह भी बतलाया कि किस पर विश्वास करना चाहिए और किस पर नहीं। यद्यपि राजदूत ने मैक्यावैली के जो उसने विदेश मंत्री को भेजे हुए सब पत्र पढ़े थे, तो भी उसने बहुत सी बातें नहीं लिखी थीं क्योंकि उसको भय था कि मार्ग में कोई उसके पत्रों को पढ़ न ले। इसलिए अब वे सब बातें विस्तार से जबानी ही उसने बतादीं जिनका जान लेना नये राजदूत के लिए बहुत जरूरी था।

कहीं छः दिन बाद उसको घर जाने के लिए छुट्टी मिली। मार्ग लम्बा, दुर्गम तथा संकटपूर्ण था। इसलिए रात होने के पहले ही अधिक से अधिक दूर पहुँच जाने के विचार से उसने बड़े तड़के चलने का निश्चय कर लिया। वह पौ फटने के पहले ही उठ बैठा और जल्दी से कपड़े पहिन लिए। बिस्तर आदि तो रात में ही बाँध कर तैयार कर लिए गए थे। नौकरों ने सामान बाहर निकाला और थोड़ी ही देर में गृह-स्वामिनी यह सूचना देने आई कि यात्रा के लिए सब कुछ तैयार है।

"क्या पीयरो घोड़ों के साथ है?"

"नहीं तो !"

"फिर वह कहाँ है ?"

"वह तो कहीं बाहर चला गया है ।"

"बाहर ! कहाँ ? किसलिए ? बड़ा तंग करता है । क्या वह अभी तक नहीं जान सका कि मुझे प्रतीक्षा से चिढ़ है ? उसको खोजने के लिए अपने किसी नौकर को शीघ्र ही भेज दो ।"

वह उसका आदेश पालने के लिए जल्दी से चली गई पर उसने अभी दरवाजा बंद किया ही था कि वह फिर से खुल गया और पीयरो ने भीतर प्रवेश किया ।

मैक्यावैली ने बड़े विस्मय से उसकी ओर देखा । क्योंकि उसने यात्रा के पुराने कपड़ों की बजाय ड्यूक की सेना के लाल-पीले कपड़े पहन रक्खे थे । उसके होंटों पर दुष्टता-भरी मुस्कान थी पर उसमें आत्म-विश्वास अधिक न था ।

"मि० निकोलो, मैं आप से विदा माँगने आया हूँ । मैं ड्यूक की सेना में भर्ती हो गया हूँ ।"

"यह तो मैं भी समझता हूँ कि तुमने ये भड़कीले कपड़े सिर्फ तमाशे के लिए ही नहीं पहने हैं ।"

"आप मुझसे नाराज न हों । आपके साथ तीन माह से ऊपर रह कर मैंने भी दुनिया का कुछ अनुभव किया है । मैंने बड़ी-बड़ी घटनाएं देखी हैं और उनसे संबंधित व्यक्तियों से बात-चीत का अवसर भी मुझे मिला है । मैं बलवान् हूँ, युवा हूँ तथा स्वस्थ हूँ । मैं अब विदेश मंत्री के छोटे कार्यालय में जीवनभर कलम घिसने के लिए फ्लोरैन्स वापिस नहीं लौटना चाहता । मैं इसी के लिए उत्पन्न नहीं हुआ । मैं जीना चाहता हूँ ।"

मैक्यावैली ने उसकी ओर विचारपूर्ण दृष्टि से देखा । शंका की मुस्कान उसके रेखा जैसे पतले मुख पर दौड़ गई ।

"तुमने अपना विचार मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?"

"मैंने सोचा कि आप मुझे ऐसा करने से रोकेंगे।"

"मैं तुम्हें यह बतलाना तो अवश्य ही अपना कर्तव्य समझता कि सैनिक का जीवन कठोर तथा संकटों से भरा होता है। उसका वेतन कम होता है। जीवन की बाजी वह लगाता है पर यश सेनापति को मिलता है। उसको भूख, प्यास, गर्मी, सर्दी, आँधी ये सब सहन करने पडते हैं। शत्रु का बंदी हो जाय तो वह तन के कपड़े तक उतरवा लेता है; यदि घायल हो जाय तो उसे मरने के लिए रणभूमि में ही छोड़ दिया जाता है। यदि अच्छा भी हो गया पर युद्ध करने के योग्य नहीं रहा, तो केवल गलियों में भीख माँगने के सिवाय उसके पास दूसरा साधन नहीं रह जाता। उसका जीवन कठोर, हत्यारे तथा अन्यायी लोगों के बीच बीतता है, जिससे उसका आचरण हीन होकर आत्मिक ह्रास होता है। मैं तुम्हें यह बतलाना भी अपना कर्तव्य समझता कि प्रजातंत्र के विदेश कार्यालय में तुम्हें सम्मान का पद तुरन्त ही मिल जाता और परिश्रम तथा समझ से काम करते रहने से तुम्हारा वेतन भी काफी हो जाता जिससे तुम अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत कर सकते। यदि कुछ वर्ष भी तुम ईमानदारी और परिश्रम से काम करते रहते और भाग्य साथ देता तो बहुत उन्नति कर सकते थे। पर ये सब बातें बता देने के बाद मैं तुम्हारे मार्ग में बाधा न डालता। तुम अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने के लिए स्वतंत्र थे।"

पीयरो कुछ निश्चित भाव से हँसा। क्योंकि मैक्यावैली का भक्त और प्रशंसक होने पर भी मन ही मन उससे डरता भी था।

"तब आप मुझसे क्रुद्ध नहीं हैं।"

"नहीं, मेरे प्यारे बच्चे। तुमने मेरी खूब सेवा की है और मैंने तुम्हें सदा ईमानदार, स्वामिभक्त तथा उत्साही पाया। इस समय ड्यूक के भाग्य का सितारा बुलन्द है और तुमने उससे संबंध स्थापित कर लिया उसके लिए मैं तुम्हें दोष नहीं देता।"

"तब आप मेरी माँ तथा मामा को भलीभाँति समझाकर संतुष्ट कर दीजियेगा।"

"तुम्हारी माँ का तो दिल ही टूट जाएगा। वह सोचेगी कि मैंने ही उसके बच्चे को वहकाया है और वह मुझे ही दोष देगी। पर व्याजियो समझदार है। मै उसे समझाने का प्रयत्न करूंगा। अच्छा प्यारे बच्चे, अब मैं जाता हूँ।"

उसने पीयरो को अपनी बाहों में लपेटकर उसके दोनों गालों को चूमा। पर उसी समय पीयरो की कमीज़ पर उसकी नजर गयी। उसने कमीज के भारी कसीदे वाले कालर को खींचकर बाहर निकाल लिया।

"तुम्हें यह कमीज कहाँ से मिली ?"

पीयरो लज्जा ने धरती में गड़ गया।

"नीना ने दी थी।"

"नीना !"

"जी हां, श्रीमती औरेलिया की नौकरानी।"

मैक्यावैली ने उस बढ़िया कपड़े को पहचान लिया। यह वही कपड़ा था जिसे वह बार्थोलोमियो के लिए फ्लोरैन्स से लाया था। वह कुछ झल्लाहट के साथ उस पर कढ़ाई के काम को देखता रहा। तब उसने पीयरो की ओर देखा। लड़के के माथे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदें झलक आयी थी।

"श्रीमती औरेलिया के पास अपनी जरूरत से ज्यादा कपड़ा था इसलिए थोड़ा सा उन्होंने नीना को भी दे दिया था।"

"और क्या यह इतनी सुन्दर कढ़ाई भी नीना ने की है ?"

"जी हाँ।"

यह तो सफेद झूठ था।

"उसने कितनी कमीजें तुम्हें दी हैं ?"

"सिर्फ दो। ज्यादा के लिए कपड़ा न था।"

"तब तो ठीक है। जब एक धुलने जायगी तब दूसरी पहन सकोगे। तुम तो बड़े तकदीर वाले ज़ान पड़ते हो। जब मैं स्त्रियों के साथ सोता हूँ तो वे मुझे कोई भेंट नहीं देतीं। उल्टे मुझी से भेंट पाने की आशा रखती हैं।"

"मैंने सब कुछ आप ही के काम के लिए किया था। आप ही ने तो कहा था कि मै उससे प्रेम करूं" कहते-कहते पीयरो के मुख पर लुभावनी मुस्कान छा गई।

मैक्यावैली भली भाँति जानता था कि औरेलिया ने इतना कीमती कपड़ा नीना को कभी नहीं दिया होगा और न नीना वैसी बढ़िया कढ़ाई ही उस पर कर सकती है। कैटेरीना ने स्वयं बतलाया था कि सिर्फ औरेलिया ही बढ़िया कसीदाकारी जानती है। तो फिर अवश्य औरेलिया ने ही यह कमीज़ें इस लड़के को दी हैं। पर उसने ऐसा क्यों किया? क्या इसलिए कि वह उसके पति का दूर का चचेरा भाई है? सब झूठ है। एकाएक सारी सच्चाई उसके सामने प्रकट हो गई। उस रात जब ड्यूक ने मैक्यावैली को बुलवा लिया था, पीयरो नीना के संग नहीं वरन् उसकी स्वामिनी के साथ सोया था। तब औरेलिया का गर्भ सेन विटेल के चमत्कार का नहीं, एक स्वस्थ युवक के प्रयत्नों का स्वाभाविक फल है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि औरेलिया से मिलने के लिए दूसरे अवसर की माँग पर कैटेरीना ने क्यों उससे बहाना किया था और क्यों औरेलिया ने भविष्य में उससे मिलना अस्वीकर कर दिया था। मैक्यावैली क्रोध से लाल-पीला हो गया। तब तो उन तीनों ने मिलकर उसको खूब मूर्ख बनाया, दो साधारण सी स्त्रियों तथा उस लड़के ने जिसको उसने अपना मित्र बनाया था। पीयरो को ग़ौर से देखने के लिए वह कुछ कदम पीछे हट गया।

मैक्यावैली ने कभी पुरुष की सुन्दरता को कोई विशेष महत्व नहीं दिया था। आनन्ददायक व्यवहार, आकर्षक वार्तालाप तथा साहसपूर्ण प्रेमप्रदर्शन के द्वारा उसने आज तक जिस स्त्री को चाहा एकदम प्राप्त

कर लिया था इसलिए इन बातों के आगे वह पुरुष की सुन्दरता को गौण समझता था। और यह जानकर भी कि पीयरो देखने में सुन्दर और आकर्षक है, उसने ध्यान-पूर्वक कभी उसकी ओर नही देखा था। अब उसने गिद्ध दृष्टि से उसको घूरा। उसका कद लम्बा तथा अगों की बनावट सुन्दर थीं। उसके कन्धे चौड़े, कमर पतली तथा टाँगे बड़ी सुडौल थीं। सैनिक वेश में तो वह और भी सुन्दर लग रहा था। उसके बाल सुनहले तथा घुँघराले थे और सिर पर टोपी के समान जान पडते थे। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें गोल तथा भूरी थीं जिन पर बड़ी सुन्दर भौहें थीं। उसका रंग चम्पई तथा त्वचा बालिकाओं जैसी कोमल थी। उसकी नाक लम्बी, पतली तथा लाल थी। उसका मुख और कान आकर्षक थे तथा उसका चेहरा वीर, निर्भीक, चतुर तथा मोहक था।

मैक्यावैली ने मन ही मन कहा, "सचमुच वह ऐसा सुन्दर है कि मूर्ख स्त्रियाँ उससे अवश्य प्रभावित हो सकती हैं। मैंने पहले इस पर ध्यान नहीं दिया वरना मैं अधिक सतर्क रहता।"

उसने अपने आपको बहुत कोसा कि वह इतना मूर्ख कैसे बन गया। पर वह कैसे संदेह करता कि औरेलिया एक लड़के की ओर आकर्षित हो जायगी जो उसके पति का दूर का भाई होने पर भी अभी स्कूल से निकला हुआ इधर-उधर समाचार लाने-लेजाने वाला नया छोकरा ही तो था। मैक्यावैली ने उसको इधर-उधर भेजने के लिए, सामान लाने-लेजाने के लिए रक्खा था। वह उसके इशारे पर नाचने वाला था। और यदि मैक्यावैली उससे कुछ भी स्नेह करता था तो यह उसके मामा व्याजियो के कारण था। उस स्नेह की वजह से ही तो उसको अब पछताना पड़ा था। पीयरो बुद्धिहीन नही था पर उसमें वे सब खूबियाँ नहीं थीं जो संसार के अनुभव से ही आती हैं। स्वयं अपने बारे में तो पीयरो कह ही क्या सकता था क्योंकि अपने से बड़ों के आगे वह अधिकतर चुप ही रहता था। मैक्यावैली अपने आपको स्त्रियों को

रिझाने में निपुण समझता था। उसे अपने ऊपर गर्व था कि स्त्रियों को वश में करने की विद्या उसे कोई नहीं सिखा सकता। पीयरो तो अनाड़ी नौसिखिया ही था। कौन समझदार आदमी कल्पना कर सकता था कि औरेलिया अपने पैरों पर पड़े एक प्रसिद्ध सांसारिक ज्ञान से परिपूर्ण तथा मिष्टभाषी व्यक्ति को छोड़ कर पीयरो पर नज़र भी डालेगी। बात एकदम वे-सिरपैर की थी।

पीयरो अपने स्वामी की तीखी पैनी दृष्टि के आगे शान्त स्थिर भाव से खड़ा रहा। उसकी घबड़ाहट दूर हो चुकी थी और उसके व्यवहार में ऐसी सावधानी थी जिससे लगता था कि वह सतर्क है।

'मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ। लोडोवीसो एलविसी का नौकर सिनगेगलिया से आते समय मार्ग में बीमार होगया। उसको वापिस रोम लौटना पड़ा। और उसने उसकी जगह मुझे रख लिया।" पीयरो का स्वर शांत था पर उससे यह भाव स्पष्ट था कि वह इस सौभाग्य के योग्य ही है।"

"वहाँ तक तुम्हारी पहुंच कैसे हुई ?"

"मि० बार्थोलोमियो ने ड्यूक के कोषाध्यक्ष से कह दिया था। और उसीने सब प्रबन्ध कर दिया।"

मैक्यावैली की भौंहें हलकी सी ऊपर उठ गयीं। छोकरे ने न केवल बार्थोलोमियो की स्त्री पर ही हाथ साफ़ किया वरन् उसके द्वारा ही ड्यूक के एक कृपापात्र अधिकारी के नीचे इतना अच्छा पद भी प्राप्त कर लिया। यदि वह स्वयं इस घटना से संबंधित न होता तो वह बड़ी ही हास्यपूर्ण जान पड़ती।

उसने कहा, "भाग्य वीरों का तथा नवयुवकों का ही साथ देता है। तुम अवश्य उन्नति करोगे। पर मैं तुम्हें कुछ सलाह देना चाहता हूँ। ध्यान रक्खो, मेरी भाँति चतुर होने की ख्याति मत पैदा होने देना, वरना लोग तुम्हें बुद्धिमान नहीं समझेंगे। इसकी बजाय तुम लोगों के मन की रुझान को पहचानने और उसी के अनुकूल बनने का प्रयत्न करना। जब लोग प्रसन्न हों तो उनके साथ हँसना, जब गम्भीर

हों तो तुम भी गम्भीर चेहरा बना लेना। मूर्खों की सभा में बुद्धिमानी दिखलाना और विद्वानों की सभा में मूर्खता दिखलाना ठीक नहीं। सदा सब की हाँ में हाँ मिलाते रहना ही उचित है। सबसे नम्र व्यवहार करना, इसमें गाँठ से कुछ नहीं जाता और लाभ अधिक होता है। किसी के साथ भलाई करो तो इस प्रकार करो कि वह भी यह जान जाय। दूसरों की प्रसन्नता में ही अपनी प्रसन्नता समझो। याद रक्खो कि तुम लोगों की बुरे कामों में सहायता करके ही लोगों को अधिक प्रसन्न कर सकोगे, उनको अच्छे कामों के लिए बढ़ावा देकर नहीं। किसी से इतनी मित्रता न करो कि शत्रु बनने पर वह तुम्हें हानि पहुँचा सके और न शत्रु के साथ ऐसा बुरा व्यवहार करो कि वह कभी तुम्हारा मित्र न बन सके। सदा नपे-तुले शब्द बोलो। मुँह से निकला हुआ शब्द और कमान से छूटा हुआ तीर वापिस नहीं लौटता। इसलिए बोलते समय सदा सावधान रहो। सच्चाई बड़ा ख़तरनाक हथियार है। उसके प्रयोग में सदा सतर्क रहो। वर्षों से मैं वह बात कभी नहीं कहता जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, और जो कुछ कहता हूँ उस पर कभी विश्वास नहीं करता। यदि मुझे कभी सच बोलना पड़ता है तो मैं उसे इतनी झूठी बातों में लपेट कर बोलता हूँ कि उसको पाना कठिन हो जाता है।"

किन्तु मुंह से ये साधारण रोजमर्रा की बातें कहते समय मैक्यावैली के विचार अधिक महत्वपूर्ण बातों में उलझे हुए थे और अब जो उसने कहा उसे उसने स्वयं भी नहीं सुना। वह जानता था कि सरकारी अफ़सर भ्रष्ट, अयोग्य, निर्दयी, प्रतिहिंसक, अस्थिर बुद्धि, स्वार्थी, दुर्बल तथा मूर्ख होने पर भी राज्य में सब से ऊंचे पद पर पहुँच सकता है। पर यदि वह हास्यास्पद हो तो उसकी खैर नहीं। बदनामियों का वह विरोध कर सकता है, गालियों का वह उत्तर दे सकता है। पर उपहास का वह कोई प्रतिकार नहीं कर सकता। यह बड़ी विचित्र बात है कि पूर्णता प्राप्त व्यक्ति परिहास नहीं समझता और शैतान उसकी उन्नति में बाधा डालने

के लिए इसी अस्त्र का प्रयोग करता है। उसके देशवासी उसका आदर करते थे और वह इसकी बहुत क़द्र करता था। उसको अपनी समझ पर विश्वास था और किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी पाने की आकांक्षा रखता था। वह यह भली प्रकार समझता था कि औरेलिया वाली घटना में उसकी स्थिति बड़ी हास्यास्पद बन गई थी। यदि यह वृत्तान्त फ़्लौरेंस वालों को पता चल जाएगा तो सब उसकी हँसी उड़ायेंगे, उस पर ताने कसेंगे और व्यंग-बाणों से उसे घायल कर देंगे। फ्लोरेंस निवासी दूसरों की खिल्ली उड़ाने में बड़े हर्षित होते हैं। उनके बीच वह उनके उपहास का कारण बनेगा। इस विचार मात्र ने उसके रोम-रोम को कँपा दिया। उसका मित्र व्याजियो भी, जिसका वह सदा मज़ाक उड़ाता रहता था, उस पर व्यंग-बाण छोड़कर पिछला बदला लेगा। उसको पीयरो का मुंह तो बन्द करना ही पड़ेगा, वरन वह बरबाद हो जाएगा। मित्र की भाँति उसने लड़के के कंधे पर हाथ रक्खा और हर्ष से मुस्कराया। पर उसकी छोटी-छोटी, पैनी, कठोर तथा रूखी आँखें पीयरो को अपलक देख रही थीं।

"प्यारे बच्चे, बस मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। भाग्य अस्थिर और चंचल है। वह तुम्हें शक्ति, धन और यश भी प्रदान कर सकता है, साथ ही तुम्हें दुर्बल, निर्धन, और अपयशी भी बना सकता है। ड्यूक भी दैव के हाथों का खिलौना है जो एक क्षण में ही उसे मिट्टी में मिला सकता है। तब तुम्हें फ्लोरेंस में मित्रों की आवश्यकता होगी। प्रजातंत्र की सरकार उन लोगों को संदेह की दृष्टि से देखती है जो उसको छोड़कर उन लोगों की नौकरी कर लेते हैं जिन पर वह विश्वास नहीं रखती। किसी ने यदि तनिक भी उसके कान भर दिए तो तुम्हारी सारी सम्पत्ति छींन ली जाएगी। तुम्हारी माँ को घर से निकाल दिया जाएगा। तव उसे अपने रिश्तेदारों की दया की भिखारिणी बनना पड़ेगा। सरकार की शक्ति बड़ी भारी है। वह किसी गैस्कन को थोड़ा सा धन देकर तुम्हें मरवा भी सकती है। ड्यूक के

हाथों में कोई पत्र ऐसा पड़ जाय जिससे वह तुम्हें फ्लोरेंस का गुप्तचर समझने लगे तो तुम्हें कष्ट दे देकर तुमसे यह बात स्वीकार करवाली जाएगी और तब तुमको साधारण लुटेरे की भाँति फाँसी पर लटका दिया जाएगा। इससे अवश्य ही तुम्हारी माँ को अपार दुःख होगा। इसलिए तुम यदि अपना भला चाहते हो तो मैं तुम्हें भेद अपने मन में ही रखने की सलाह दूँगा। अपने मन की बात सबसे कह देना बुद्धिमानी नहीं है।"

मैक्यावैली ने पीयरो की चमकती हुई भरी आँखों को घूर कर जान लिया कि वह सब कुछ समझ गया है।

"श्रीमान, किसी बात की चिन्ता न करें। मैं सब बात समाधि की भाँति गुप्त रक्खूंगा।"

मैक्यावैली फीकी हँसी हँसा।

"मैं तुम्हें मूर्ख नहीं समझता।"

यद्यपि मैक्यावैली के पास इतना ही धन बचा था जो फ्लौरेन्स तक पहुँचने के लिए ही पर्याप्त होता, पर उसने सोचा कि वह अवसर उदारता दिखाने का है। उसने अपना बटुआ निकाला और पांच अशर्फी पीयरो को अंतिम भेंट के तौर पर प्रदान कीं।

उसने कहा, "तुमने मेरी खूब सेवा की है और मुझे व्याजियो से तुम्हारी प्रशंसा करने में बड़ी खुशी होगी।"

उसने उसे स्नेह से चूमा और वे दोनों हाथ में हाथ डाले नीचे तक उतर कर आए। पीयरो ने घोड़े की लगाम पकड़ी और मैक्यावैली उस पर सवार हो गया। वह नगर के फाटक तक उसके साथ-साथ चला और वहां से दोनों लग-अलग हो गए।

[३५]

मैक्यावैली ने घोड़े को ऐड़ लगाई और वह रवाल चलने लगा। दोनों नौकर पीछे-पीछे चल रहे थे। उसका चित्त खिन्न था। इसमें कोई सन्देह नही रहा था कि फ्रा टिमोटियो, औरेलिया, उसकी मां तथा पीयरो सबने मिलकर उसको खूब मूर्ख बनाया। वह यह नहीं समझ सका कि उसे किस पर सबसे अधिक क्रोध आ रहा है। सबसे दुःख की बात यह थी कि वह उनसे बदला नही ले सकता था। उन्होने उसी के धन पर उसका खूब मजाक बनाया किन्तु उसे कोई उपाय नहीं सूझा जिससे उन्हें इसका मूल्य चुकाना पड़े। वास्तव में औरेलिया मूर्ख है। वह और स्त्रियों की भांति मक्कार भी है किन्तु है मूर्ख। नही तो एक अनुभवी महत्वपूर्ण युवा पुरुष को छोड़कर एक साधारण से सुन्दर छोकरे को नहीं पसन्द करती। कोई भी समझदार आदमी इस बात को अस्वीकार नहीं कर सकता कि तुलना में वह पीयरो से बढ़कर है। कोई उसे आकर्षण-हीन भी नहीं कह सकता। मेरिएटा सदा उससे कहा करती थी कि वह उसके बालों को बहुत पसन्द करती है जो मखमल जैसे मुलायम हैं। परमात्मा का धन्यवाद कि कम से कम एक स्त्री तो ऐसी है जिस पर विश्वास किया जा सकता है। उससे चाहे छः महीने तक अलग रहो किन्तु फिर भी वह किसी अन्य पुरुष की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखेगी। यह सच है कि थोड़े दिनों से वह उसे बहुत परेशान कर रही थी। उसने व्याजियो से लिखवाया था कि वह न तो वापिस आया, न पत्र लिखा और न खर्च ही भेजा। पर ऐसी अवस्था में स्त्री का चिड़चिड़ा होना स्वाभाविक ही है। मैक्यावैली को आए हुए साढ़े तीन महीने हो चुके थे। अब तो उसका प्रसवकाल समीप ही होगा। उन्होंने पहिले ही सोच रक्खा था कि बच्चे का नाम वर्नार्डो रक्खेंगे जो उसके स्वर्गीय पिता का नाम था। और यदि वह उसका विरह सहन नहीं कर पा रही थी तो इसका कारण केवल यह था कि वह बेचारी

उससे बहुत प्रेम करती थी। उसके पास शीघ्र पहुँचना ही ठीक है। अपनी स्त्री से एक लाभ तो यह है कि वह सदा प्राप्य है। यह ठीक है कि वह औरेलिया जैसी सुन्दरी नहीं है किन्तु पतिव्रता तो है और यह गुण सुन्दरता से भी बढ़कर है। वह सोचने लगा कि यदि वह उसके लिए कोई उपहार ले आता तो बहुत अच्छा होता। किन्तु उसने पहिले सोचा ही नहीं और अब उसके पास धन नहीं बचा था।

उसने औरेलिया पर इतना खर्च करके व्यर्थ मूर्खता की। रूमाल, दस्ताने, गुलाब का इत्र और सोने की चैन। नहीं, चैन सोने की तो नहीं चाँदी के पानी की थी जिसे कैटेरीना को भेंट किया था। यदि उसमें कुछ भी लिहाज़ होता तो वह उसे वापिस कर देती, जो मेरिएटा के लिए ठीक रहती। वह उसे पाकर बड़ी प्रसन्न होती। किन्तु स्त्रियों ने दिए हुए उपहार कब लौटाए हैं ?

वह एक बूढ़ी कुटनी है और वह भी बेईमान। वह भली भाँति जानती थी कि चैन उन वस्तुओं का मूल्य है जिनको वह उसके लिए जुटा रही है और जब माल नहीं मिला तो वह कम से कम मूल्य तो उसे अवश्य लौटा देना चाहिए था। किन्तु वह पुरानी घाघ थी। यह तो उसने उसे पहिली ही नज़र में भाँप लिया था। उसको दूसरों के भोग-विलास में ही सहायता देने से आनन्द आता होगा क्योंकि अब स्वयं वह इस योग्य नहीं रही। वह शर्त लगाने को तैयार है कि उसी ने पीयरो तथा औरेलिया को एक बिस्तर पर सुलाया होगा। जिस समय वह द्वार पर वर्षा में भीग रहा था उस समय वे लोग हँस-हँस कर वही मुर्गे और कबाब तथा शराब उड़ा रहे होंगे जो उसने पीयरो के हाथ भेजी थी। यदि बार्थोलोमियो मूर्ख न होता तो समझता कि वैसी स्त्री की देखभाल में अपनी पत्नी को सौंपना निरा पागलपन है।

कुछ क्षण के लिए मैक्यावैली की सारी विचारधारा उस मूर्ख व्यापारी की ओर प्रवाहित हो गई। यह जो कुछ हुआ सब उसी का दोष है।

मैक्यावैली ने मन ही मन कहा, "यदि वह उसको सावधानी से रखता

तो मुझे कुछ करने का विचार ही नहीं उठता और मैं प्रयत्न ही नहीं करता ।"

सब दोष बार्थोलोमियो का ही है। किन्तु मैक्यावैली भी कैसा मूर्ख था कि उसने वहाँ न पहुँचने की क्षमा माँगने के तौर पर भी बहुमूल्य रेशमी रूमाल भेजा, और वह भी पीयरो के हाथ जिसके पाँव मारे आनंद के धरती पर नही पड़ रहे होंगे। उसकी आवाज भी भारी थी, उसने पीयरो इतने तड़के भेजा ताकि वह बार्थोलोमियो के वहाँ पहुँचने के पहले ही लौट आवे। वे दोनों कैसे गुप-चुप हँसे होंगे और क्या पीयरो को फिर······का अवसर मिला होगा। पर उनकी जोड़ी है बहुत अच्छी और उनसे हर बात की उम्मीद की जा सकती है।

सबसे बुरी बात यह है कि उसने उसे न केवल उत्तम-उत्तम उपहार ही भेंट किए, वरन् उसको प्रसन्न करने के लिए अच्छी से अच्छी कहानियाँ सुनाईं, उसको आर्कषित करने के लिए अच्छे से अच्छे गीत सुनाए, उसकी खुशामद की। संक्षेप में किसी स्त्री को सन्तुष्ट करने के लिए जो कुछ एक पुरुष कर सकता है वह सब कुछ किया। और तब वह नालायक छोकरा आ धमका जिसे केवल १८ बरस की उम्र और सुन्दर चेहरे के कारण वह सब कुछ मिल गया जिसके लिए उसने एक माह का समय तथा अपनी हैसियत से भी कहीं ज्यादा धन खर्च किया था। पर वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि पीयरो ने यह सब कुछ कैसे किया। शायद कैटेरीना ने ही, बार्थोलोमियो कहीं अपने भाँजों को गोद न ले ले इस भय से यह प्रस्ताव किया होगा। उसने उसकी बातचीत का काल्पनिक चित्र इस भांति खींचा।

"अच्छा अब हमें क्या करना चाहिए ? हम सारी रात तो उसकी प्रतीक्षा नही कर सकते। और इस अवसर को भी हाथ से नही जाने देना चाहिए। औरेलिया, यदि तुम्हारी जगह मैं होती तो कुछ भी सोच-विचार न करती उसकी ओर देखो। कैसा प्यारा चेहरा है और कैसे घंघराले बाल हैं। उसका मुख बड़े नगर के बड़े हाल में टँगे हुए चित्र के

ऐंडोनिस के समान है। यदि मुझे इसमें और निकोलो में से किसी एक को चुनना होता तो मैं तो उस पीले रंग लम्बी नाक तथा बटन जैसे नेत्र वाले आदमी की अपेक्षा इसी को पसन्द करती। मेरी प्यारी बच्ची, दोनों में कोई तुलना ही नहीं। मैं दावे के साथ कहती हूं कि तुम जो चाहती हो उसे यह, उस पतले-दुबले राजदूत की अपेक्षा अच्छी तरह पूरा कर सकेगा।"

एक दुष्टा स्त्री और एक कुल्टा भी। उसकी समझ में नहीं आया कि क्यों उसने एक संसार के बुद्धिमान पुरुष को छोड़कर एक लड़के को अपनी बेटी के पुत्र का बाप बनाना चाहा।

पर शायद कैटेरीना को विशेष कहने की आवश्यकता ही न पड़ी हो। यह सच है कि वह लड़का बड़ा भोलाभाला और शरमीला लगता है, पर सूरत देखकर धोखा भी तो हो सकता है। उसमें रहस्य को गुप्त रखने की तो बड़ी क्षमता है ही। क्योंकि उसके हावभाव से तनिक भी संदेह नहीं हो सका था कि उसका औरेलिया से कोई सम्बन्ध था। और वह सधा हुआ पक्का झूठा था। केवल एक ही बार जब मैक्यावैली ने उसकी कमीज़ देख ली थी तो वह घबरा गया था। पर शीघ्र ही संभल कर उसने अपने सभी लांछनों का बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया था। सबसे पहले उसने धृष्टतापूर्वक औरेलिया के होठों को चूमा होगा और कोई विरोध न पाने पर फिर चुपके से उसकी खुली चोली में हाथ डाल दिया होगा। कोई भी सोच सकता है कि आगे क्या हुआ होगा। और तब मैक्यावैली क्रुद्ध भाव से कल्पना करने लगा कि किस प्रकार वे दोनों बार्थोलोमियो के सोने के कमरे में गए होंगे और उसके पलंग पर सोए होंगे।

बड़बड़ा कर वह कह उठा, "बड़ा अकृतज्ञ लड़का निकला।"

अपने नेक स्वभाव के करण ही मैक्यावैली उसे यात्रा में अपने साथ ले गया था और उसके साथ हर तरह की भलाई की थी। उसने बड़े-बड़े लोगों से उसका परिचय कराया। उसको इन्सान बनाने के लिए सब

कुछ किया । उसने उसको सद्व्यवहार सिखलाया । संक्षेप में उसको सभ्य बनाया । उसे अपनी सारी बुद्धि उसको यह सांसारिक ज्ञान सिखलाने में लगा दी कि किस प्रकार मित्रों को तथा अन्य लोगों को प्रभावित किया जाता है । और इस सब का पुरस्कार उसने यह दिया कि उसी के आगे से परसी थाली उसने उठाली, हाथ आई हुई लड़की को उससे छीन लिया ।

"पर मैंने उसे डर तो बहुत दिखा दिया है ।"

मैक्यावैली जानता था कि यदि कोई अपने उपकारी से साथ कपट जाल फैलाता है और उसका वर्णन अपने मित्रों से नहीं कर सकता तो उसका आधा स्वाद जाता रहता है । उसको कम से कम थोड़ा संतोष तो हुआ ।

किन्तु फ्राटिमोटियो पर उसका जितना क्रोध था उसकी तुलना में औरेलिया, पीयरो, कैटेरीना तथा बार्थोलोमियो सब पर मिलाकर भी कम था । उसी विश्वामघाती धूर्त ने उसके किए कराए पर पानी फेरा था ।

उसने क्रोधपूर्वक कहा, "फ्लोरेंस में धर्मोपदेश देने का अवसर जरूर अब तुम्हें मिलेगा ।"

उसके हृदय में कभी विचार भी नहीं आया था कि वह उस महन्त की इस कार्य के लिए सिफारिश करेगा । पर उसको संतोष था कि अब यदि कभी विचार आया भी तो वह उसे निकाल फेंकेगा । वह तो पक्का ठग निकला । इसमें कोई विस्मय नहीं कि लोगों के दिलों में से ईसाई मत का प्रभाव कम होता जा रहा है और वे लम्पट, भ्रष्ट तथा निरंकुश होते जा रहे हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि उनके धार्मिक गुरु ही बेईमान होते जा रहे है और उन्हें सच-झूठ का ज्ञान नही रहा है । सबने उसे मूर्ख बनाया, एकदम मूर्ख बनाया । पर जितना मूर्ख इस महन्त ने बनाया उतना किसी ने भी नहीं ।

वे सब मार्ग में भोजन करने के लिए एक सराय में ठहरे । भोजन निकृष्ट था पर शराब पीने लायक थी । मैक्यावैली ने खूब शराब पी,

जिसका परिणाम यह हुआ कि जब फिर वह यात्रा पर चला तो दुनिया उसे इतनी बुरी नहीं लग रही थी। उसको मार्ग में किसान मिले। उनमें से कुछ गायों को लिए जा रहे थे, कुछ सामान से लदे हुए गधों पर थे। उनको कुछ दूसरे यात्री भी मिले जो पैदल चल रहे थे या घोड़ों पर सवार थे। कुछ देर तक वह सोचता रहा कि चलते समय उसने ड्यूक को कैसा निराश किया। यदि वह केवल परिहास था तो उसने इसे गुप्त ही रक्खा जैसे वह अन्य रहस्यों को गुप्त रखता था। और यदि वह उसको वश में करने की कोई चाल थी तो वह उस समय असफल हो चुकी थी। तब उसके विचार औरेलिया की ओर गए। बीते पर पछताना व्यर्थ है। चार मास से उसने उसे देखा तक नही है। ऐसी औरत के लिए अधिक सोच-विचार करना व्यर्थ है जिसको उसने केवल चार-छः बार देखा है और मुश्किल से थोड़ी-सी बातचीत की है। संसार में वही अकेला पुरुष नही है जिसे किसी स्त्री ने निराश किया हो। यह तो ऐसी बात है जिसे बुद्धिमान लोग दार्शनिक दृष्टि से देखते हैं। सौभाग्य की बात यह है कि इस घटना को जानने वाले सभी लोगों का हित इसी में है कि वे इसे गुप्त ही रक्खें। इस प्रकार मूर्ख बन जाना लज्जा की बात अवश्य है। पर जब दूसरा कोई उस बात को नही जानता तो लज्जा करना व्यर्थ है। उस घटना को ऐसे दृष्टिकोण से देखना चाहिए मानो वह किसी अन्य व्यक्ति पर घटी हो। मैक्यावैली ने जान-बूझकर ऐसा करना आरम्भ किया।

सहसा चौंककर उसने झटके से लगाम खीची।। घोड़े ने समझा कि वह उसे रोकना चाहता है, इसलिए वह तुरन्त इतनी शीघ्रता से खडा हो गया कि मैक्यावैली जीन से आगे की ओर खिसककर गिर पड़ा। उसके नौकर उसके पास फौरन दौड़े।

"श्रीमान्। क्या बात है?"

"कुछ नहीं! कुछ नही।"

वह फिर चल पड़ा। उसके मस्तिष्क में सहसा एक विचित्र विचार

उठा था जिसके कारण उसने चौंककर घोड़े की लगाम खींच ली थी। पहले तो उसे जान पड़ा कि वह वमन करेगा। पर बाद में उसे अनुभव हुआ मानो कोई प्रेरणा उसे प्राप्त हुई हो। उसे लगा मानो सारी कथा में कोई नाटक है। अब उसे सूझा कि किस प्रकार वह उन लोगों से बदला ले सकता है जिन्होंने उसका उपहास किया तथा लूटा है। वह उनका घृणित तथा उपहासास्पद रूप दर्शायेगा। उसके मन की परेशानी गायब हो गई। उसकी विचारधारा तेजी से प्रवाहित होने लगी, उसका मुख किसी उल्लास के प्रफुल्लित हो उठा।

वह फ्लोरेंस में रंगमंच पर उनका प्रदर्शन करेगा क्योंकि वह जानता था कि फ्लोरेंस की गलियों में लोग उसका नाटक पसंद करेंगे। पात्र तो थे ही, बस उसको तो केवल इतना ही करना था कि उनके गुणों में कुछ अतिशयोक्ति कर दे जिससे वे रंगमंच पर अधिक आकर्षक लगें। उदाहरण के लिए बार्थोलोमियो को अधिक मूर्ख तथा सब पर सहज ही में विश्वास करने वाला दिखाया जायगा, औरेलिया अधिक शीलवती तथा सरलता से वश में होने वाली बनेगी। पीयरो बिचोलिया बनेगा, जिसके छल-कपट द्वारा नायक का उद्देश्य सिद्ध होगा उसको पूरा धूर्त दर्शाया जाएगा। नाटक का रेखाचित्र उसने सोच लिया था। वह स्वयं नायक बनेगा और नाम देगा कैलीमैसो। वह फ्लोरेंस निवासी, सुन्दर धनी युवक होगा जो बहुत दिनों तक पेरिस में रह चुका हो। इससे मैक्यावैली को फ्राँसीसियों के विरुद्ध कटुवचन कहने का अवसर मिलेगा जिनसे वह घृणा करता था। और जब वह पेरिस से लौटकर फ्लोरेंस आएगा तो वह औरेलिया को देखेगा तथा बुरी तरह उसके प्रेम में पड़ जायगा। पर उसका नाम क्या रखेगा? ल्यूक्रेज़िया। यह नाम सोचकर मैक्यावैली मन ही मन हँसा। ल्यूक्रेज़िया रोम की एक प्रसिद्ध घर-गृहस्थी वाली स्त्री का नाम था जो घरेलू गुणों के लिये प्रसिद्ध थी तथा जिसने टारक्वीनस के बलात्कार करने पर आत्महत्या करली थी। खेल वास्तव में सुखान्त होगा और कैलीमैसो एक रात

आनन्दपूर्वक अपनी प्रेमिका के साथ बिताता दिखाया जायगा।

नीले आसमान में सूरज चमक रहा था। मैदान अभी बर्फ से ढके हुए थे पर घोड़ों की टापों के नीचे सड़क सख्त और साफ थी। मैक्यावैली अपने सारे शरीर को कपड़ों से ढँके हुआ था और अपनी इस नयी सूझ पर मन ही मन बहुत प्रसन्न था। उसको विचित्र आह्लाद-सा हो रहा था। अभी उसके मस्तिष्क में नाटक का सिर्फ ढाँचा ही था। वास्तविक घटना उसके उद्देश्य के लिए पर्याप्त न थी। वह भली प्रकार समझता था कि उसको कोई ऐसा हास्यपूर्ण कथानक अवश्य सोचना पड़ेगा, जिस पर नाटक के सारे दृश्य आधारित हो सकें। वह ऐसी अनोखी सूझ की खोज में था जिससे दर्शक खूब हँसे और केवल उसका षड्यंत्र ही सफल न हो वरन् औरेलिया का भोलापन, बार्थोलोमियो की मूर्खता, पीयरो की धूर्तता, कैटेरीना की लम्पटता और फ्रा टिमोटियो की शठता का भली भाँति प्रदर्शन किया जा सके। उसके प्रस्तावित नाटक में एक महत्वपूर्ण पात्र होने वाला था। मैक्यावैली क्रोध से अपने हाथ मलते हुए यह कल्पना करने लगा कि किस भाँति उसका सच्चा रूप दिखलाया जाय जिससे उसका लोभी, पापी, मक्कार तथा पाखंडी रूप सब पर जाहिर हो जाय। दूसरे पात्रों के तो वह कल्पित नाम देना चाहता था पर फ्रा टिमोटियो का सच्चा नाम ही देगा जिससे लोगों को पता चल जाय कि वह कैसा झूठा और धूर्त है।

किन्तु अभी तक वह यह न सोच पाया था कि वह अपने पात्रों को सक्रिय कैसे बनायेगा। वे सब के सब असाधारण होने चाहियें क्योंकि वह सुखान्त नाटक लिखना चाहता था और ऐसा रोचक कि दर्शक पहले विस्मय से मुग्ध हों और तब हँसते-हँसते लोटपोट हो जायें। ग्रीक नाटककार प्लोटस और टिरेंस उसे भली भाँति याद थे पर उनमें उसके उद्देश्य को पूरा करने लायक कुछ भी न मिल सका। सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि उसके विचार अस्थिर थे और वह कभी कुछ सोचता था कभी

कुछ। इसी उधेड़-बुन में वक्त इतनी जल्दी बीत गया कि जब वह उस स्थान पर आ पहुँचा जहाँ उसे रात में ठहरना था। तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह घोड़े से उतर कर कहने लगा, "प्रेम में गोली मारो, कला के सामने प्रेम का मूल्य ही क्या है!"

[३६]

उस स्थान का नाम ऐरैंटीनो था और वहाँ की सराय उन सब से अच्छी थी जिनमें अब तक मैक्यावैली ठहर चुका था। खुली हवा में लम्बी यात्रा करने तथा विचारों में उलझे रहने के कारण उसे ज़ोर की भूख लग आयी थी। सराय में प्रवेश करते ही उसने सबसे पहले खाना मँगवाया। तब उसने पैर धोए क्योंकि वह सफाई पसन्द करता था और चौथे-पाँचवें दिन अवश्य पैर धो लेता था। पैरों को सुखाकर उसने विदेश मंत्री को पत्र लिखा और पत्रवाहक के हाथ तुरन्त भेज दिया। सराय ठसाठस भरी थी किन्तु सराय के स्वामी ने कहा कि जिस बड़े बिस्तर पर वह तथा उसकी पत्नी सोते हैं वह उसके लिए खाली किया जा सकता है। मैक्यावैली ने स्त्री की ओर देखकर उत्तर दिया कि यदि भेड़ की दो खालें रसोईगृह में बिछा दी जायं तो वह वहाँ भी अच्छी तरह आराम कर सकता है। तब वह भोजन करने के लिए बैठा।

उसने एक बार फिर कहा, "कला के सामने प्रेम क्या चीज है? प्रेम अस्थायी है, और कला शाश्वत। प्रेम प्रकृति का साधन है जिससे प्रेरित होकर हम ऐसे जीव उत्पन्न करते हैं जो जन्म से मृत्यु पर्यन्त भूख-प्यास, रोग-शोक, ईर्ष्या-द्वेष तथा घृणा से पीड़ित रहते हैं। मनुष्य के उत्पन्न होने की क्या सार्थकता है? शायद कला के लिए ही उसका जन्म हुआ

है। लुक्रेटियस, हौरेस, कैटूलस, डान्टे और पेट्रार्च सभी तो सुन्दर कलाकार थे। यदि इनका जीवन दुखमय न होता तो शायद ये सब भी उतना अलौकिक साहित्य नहीं उत्पन्न कर पाते। यदि मैं औरेलिया के साथ भोग में सफल हो जाता तो मेरे मस्तिष्क में भी ऐसा सुन्दर नाटक लिखने की प्रेरणा न होती। ध्यानपूर्वक देखा जाय तो जो हुआ अच्छा ही हुआ। मैंने तुच्छ नग खोकर ऐसा हीरा पा लिया जो किसी राजा के मुकुट की शोभा बढ़ाने योग्य है।

अच्छा भोजन पाने तथा इन विचारों के कारण मैक्यावैली अपनी साधारण प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देने लगा। सराय में एक महन्त भी ठहरा था जो एक मठ से किसी दूसरे मठ में जा रहा था। वह उसके साथ ताश खेलने लगा और खुशी से थोड़ा धन हार गया। तब भेड़ों की खाल पर लेट कर गहरी निद्रा में डूब गया और सबेरा होने पर ही उठा।

जिस समय उसने वहां से प्रस्थान किया तो सूरज की पहली किरणें ही धरती पर फैली थीं और ऐसा जान पड़ता था कि दिन में मौसम अच्छा रहेगा। वह बड़ा प्रसन्न था। कुछ ही समय में वह अपने घर पहुँच जाएगा, इस विचार ने उसके हृदय में आनन्द की लहरें पैदा कर दीं। उसको आशा थी कि मेरिएटा उसको देखकर हर्षित होगी और उसकी उपेक्षा के लिए उसको उपालम्भ न देगी। प्यारा मित्र व्याजियो भी रात को भोजन के बाद आएगा। कल वह पीयरो सौडरिनी से और विदेश सचिव कार्यालय के अन्य कर्मचारियों से मिलेगा। उसके बाद वह अपने मित्रों से मिलने जाएगा। फ्लोरेंस पहुँचकर, जब वह रोज उन बचपन से परिचित मोहल्लों से होकर फिर अपने कार्यालय में जाया करेगा, जहां मार्ग में मिलने वाले सभी लोगों का नाम तक जानता है तो उसे कितनी खुशी होगी।

कोई कहेगा, "मेसर मैं आपके लौटने का स्वागत करता हूँ" दूसरा कहेगा, "अरे निकोलो, तुम कहां से टपक पड़े ?" तीसरा कहेगा, "मालूम होता है खूब जेबें भर कर घर लौटे हो।" उसकी माँ का मिलने वाला

पूछेगा, "खुशी के मौके में कितनी देर और है ?"

उसके सामने बस फ्लोरेंस का घर का ही चित्र था।

फिर उसको ला केरोलीना का ध्यान आया। वह धर्माध्यक्ष की रखैल थी जो इतना धनी था कि स्वाभाविक रूप में उसकी मृत्यु न हो सकी। पर उसके मर जाने से कैरोलीना अब स्वच्छन्द थी। वह बड़ी ही भली स्त्री थी। थोड़ी मीठी-मीठी बातें बनाकर उससे चाहे जो कुछ ले लो। जिसके लिए दूसरों को बहुत मूल्य देना पड़ता है।

टस्केन की भूमि कैसी सुन्दर है ! अगले मास में बादाम के वृक्षों पर फूल खिलेंगे।

फिर वह उसी नाटक का कथानक सोचने लगा जो उसके मस्तिष्क में बड़ी तेज़ी से घूम रहा था। उसकी याद आते ही वह इतना प्रसन्न और स्वस्थ हो गया मानो उसने खाली पेट पर शराब पी ली हो। उसने उन सारे कुटिल और द्वेषपूर्ण वाक्यों को मन ही मन दुहराया जिनको वह फ्रा टिमोटियो के मुख से कहलवाना चाहता था। सहसा उसने घोड़े की लगाम खीची। नौकर उसके पास यह पूछने के लिए दौड़े आए कि उसको किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं है। उनको यह देखकर बड़ा विस्मय हुआ कि मारे हँसी के उनके मालिक का सारा शरीर कांप रहा है। उनके चेहरों का भाव देखकर उसको और हँसी आई। तब एक भी शब्द बोले बिना उसने घोड़े को एड़ मारी और उसको बेतहाशा दौड़ाने लगा। घोड़े को बहुत तेज़ दौड़ने का अभ्यास न था। इसलिए थोड़ी ही देर में फिर अपनी स्वाभाविक चाल से धीरे-धीरे चलने लगा। जिस विचार की तलाश में उसने अपने मस्तिष्क की सारी शक्तियां लगा दी थीं वह अब उसे सूझ गया था। यह विचार सहसा ही उसे आया था और वह यह न जान सका कि कैसे और कहां से आया। वह ऐसे ही विचार की खोज में था जो अश्लील तथा हास्य से परिपूर्ण हो। यह लगभग एक चमत्कार की भांति ही था। सब जानते हैं कि अन्ध विश्वासी औरतें गर्भ धारण करने के लिए सूर्यमुखी की जड़ दिया

करती हैं। यह अन्धविश्वास सर्व साधारण में फैला हुआ था और उससे सम्बन्धित बहुत-सी दुराचार की कथाएं थीं ।

मैक्यावैली ने अपने नाटक में बार्थोलोमियो का नाम मि०निसीसिया रखा था । अब उससे यह कहा जायगा कि यदि उसकी स्त्री इस जड़ का काढ़ा पी ले तो उसके गर्भ रह जायगा । उसे पीने के बाद जो भी आदमी सबसे पहले उसके साथ संभोग करेगा वह अवश्य मर जाएगा तो फिर बार्थोलोमियो कैसे फुसलाया जाय ? यह बहुत सरल था। वह (कैलीमेसो) ऐसे डाक्टर का रूप धारण करेगा जिसने ेरिस में शिक्षा पाई हो और वही यह इलाज बतलाएगा। यह तो स्वाभाविक था कि बाप बनने के लिए मेसर निसीसिया अपना जीवन संकट में नहीं डालेगा। इसलिए एक राही के लिए वह किसी अजनबी की खोज करेगा । यह परदेशी दूसरे भेष में कैलीमेसो अर्थात स्वयं मैक्यावैली ही होगा।

नाटक का कथानक इस भांति तैयार हो जाने पर दृश्य तो एक के बाद एक स्वयं आने लगे। वे गोरखधन्धे के टुकड़ों की भांति अपनी-अपनी जगह ठीक बैठते जा रहे थे। नाटक मानो अपने आप बनता जा रहा था। और मैक्यावैली तो केवल उसका निमित्त मात्र था । अपनी असफलता के कारण जब पहले-पहले नाटक लिखने का विचार उसके मन में आया तो उस समय वह बहुत उत्तेजित हो उठा था । पर इस समय तो उससे भी दूने आवेश में था। सारे दृश्य उसकी आखों के आगे इस प्रकार प्रत्यक्ष थे जैसे सामने कोई सुन्दर बाग हो जिसमे बरामदे, फव्वारे छायादार पगडंडियां और कुंज सब अपनी-अपनी जगह मौजूद हों । जब वह भोजन करने बैठा तो मैक्यावैली अपने पात्रों में इतना उलझा हुआ था कि उसे पता हो नहीं लगा कि उसने क्या खाया । और जब वे फिर चल पड़े तो उसे पता नहीं चला कि वह कितनी दूर निकल आया है। वे फ्लोरेंस के समीप पहुंच गए। नगर के बाहर का मैदान उसका ऐसा जाना-पहचाना था मानो वह वहीं पैदा

हुआ हो। पर यह सब देखने के लिए उस समय उसके पास आंखें न थीं। सूरज बहुत पहले ही मध्यान्ह पार करके पश्चिम की ओर बढ़ा जा रहा था, जहां क्षितिज पर धरती और आसमान एक हो जाते हैं। पर मैक्यावैली ने उधर आंख उठाकर भी नही देखा। वह कल्पना के संसार में विचर रहा था और भौतिक संसार उसके लिए छायामात्र था। इस समय वह महान् था। वह कैलीमैसो है, नवयुवक सुन्दर, धनी, वीर और आकर्षक। और ल्यूक्रोज़िया के लिए प्रेम की जो प्रचण्ड ज्वाला उसके हृदय में धधक रही है उसके आगे औरेलिया का प्रेम नगण्य है। वह छायामात्र था, यह वास्तविक है। मैक्यावैली यदि चेतनावस्था में होता तो जानता कि उसको इतना अपार सुख हो रहा है जितना परमात्मा की सृष्टि में किसी भी मनुष्य के लिए संभव है।

उसका नौकर पास आकर कहने लगा, "श्रीमान्, देखिए फ्लोरैंस आ गया।

मैक्यावैली देखने लगा। जाड़े के दिनों का आसमान डूबते हुए सूरज से नीला हो गया था। द्वार पर उसे वह प्रसिद्ध गुम्बद दिखाई पड़ा जिसे ब्रमेन्टे ने बनवाया था। वह ठहर गया। उसके प्राणों से प्यारा नगर आ गया था। जब उसने अपने देश-प्रेम की चर्चा इलवैन्टीनो से की थी तो वह दिखावटी न थी। फूलों का देश फ्लोरैंस उसके सामने था। जिसमें घण्टाघर तथा गिरजाघर थे, महल थे और थे वन, उपवन तथा वाटिकाएं। पेचदार सड़कें थीं। पुराना पुल था जिसे प्लाज्जो जाते समय वह पार करता था। और उसका घर था, उसका भाई टोटो, पत्नी मेरिएटा तथा उसके मित्र थे। वह अपना ही नगर था जहां की ईट-पत्थरों तक से उसका परिचय था। महान् इतिहास से जुड़ा हुआ यह नगर उसकी तथा उसके पूर्वजों की जन्म-भूमि थी। उसी नगर में डान्टे तथा बोकेसियो ने जन्म लिया था। जिस नगर ने अपनी स्वतन्त्रता के लिए शताब्दियों तक युद्ध किया था वही फूलों का देश उसका प्यारा फ्लोरैन्स था।

उसके नेत्रों से बड़े-बड़े आँसू निकल कर उसके गालों पर लुढ़क पड़े। अपनी सुबकियों को रोकने के लिए उसने अपने दांत भींच लिए। फ्लोरैन्स अब शक्तिहीन हो चुका था। उसका शासन उन लोगों के हाथ में था जो अपना साहस गँवा बैठे थे, तथा भ्रष्ट थे। वहाँ के निवासी जो सदैव से अपनी स्वतंत्रता के लिए शत्रुओं से लड़ने के लिए तत्पर रहते थे, आज केवल व्यापारी मात्र थे। फ्रांस की कृपा से ही वह उस समय स्वतंत्र था, जिसके लिए उसको भारी कर देना पड़ता था। उसकी स्वतंत्रता भाड़े के सैनिकों पर निर्भर थी। वह अपनी रक्षा उस वीर अत्याचारी के हत्याकाण्डों से किस प्रकार कर सकेगा, जिसने अपनी दुर्वासना को छिपाना भी अनावश्यक समझा। फ्लोरेंस का भाग्य डूब रहा था। संभव है उस पर सीज़र बोर्जिया का अधिकार न हो किन्तु किसी दूसरे का होगा। संभव है कुछ समय तक उसकी स्वतंत्रता बनी रहे, किन्तु उसके वृद्ध होते-होते अवश्य ही उसकी स्वतन्त्रता नष्ट हो जाएगी।

उसने कहा—"कला जहन्नुम में जाय। स्वतंत्रता के सामने कला का क्या मूल्य है। जो मनुष्य स्वतंत्रता खो बैठता है सब कुछ खो बैठता है।"

एन्टोनियो ने कहा, "यदि श्रीमान् शीघ्र ही नही चलेंगे तो अँधेरा हो जाएगा।"

मैक्यावैली ने कंधे हिलाकर लगाम खींची और थके हुए घोड़े चल पड़े।

उपसंहार

चार वर्ष बीत गए और इस लम्बे समय में बहुत सी घटनाएं हो चुकीं। ऐलैक्ज़ेण्डर छठे की मृत्यु हो गई। इलवैन्टीनो ने पिता की मृत्यु के पश्चात् होने वाली सब घटनाओं का प्रबन्ध तो कर लिया था किंतु वह यह नहीं देख सका कि पिता की मृत्यु के साथ ही उसकी भी मौत का द्वार खुल जाएगा। वह बीमार था और उसकी अवस्था इतनी बिगड़ चुकी थी कि अब वह अपने दृढ़ शरीर के ही कारण जीवित था।

तो भी उसने पोप के चुनाव में पायस तृतीय को सफल बनाने का प्रबन्ध किया जिससे उसको कोई भय नहीं रहे, पर जिन सरदारों पर उसने आक्रमण किया था अथवा भगा दिया था उन्होंने इस अवसर से लाभ उठाकर अपना-अपना प्रदेश जीतना चाहा और वह उनके रोकने का कुछ भी उपाय न कर सका। ग्याडोवाल्डो अरवीनो में लौट आया। विटेली ने कैस्टलो ले लिया और पागोलो वैगलियोनी ने पैरूगिया पर अधिकार कर लिया। केवल रोमागना उसकी ओर बना रहा। वृद्ध और रोगी होने के कारण पायस तृतीय का भी देहान्त हो गया और बोर्जिया का कट्टर शत्रु जुलियस द्वितीय पोप की गद्दी पर बैठा। उसने ड्यूक को वचन दिया कि यदि वह अपने मित्र धर्माध्यक्षों को वोट दिलवा देगा तो उसे चर्च का प्रधान सेनापति बना दिया जाएगा, और उसका प्रदेश उसको मिल जाएगा। सीज़र ने सोचा कि चाहे वह अपने वचनों का पालन करे या न करे, दूसरे अवश्य पालन करेंगे। यह उसकी घातक भूल थी। जुलियस द्वितीय प्रतिसिंहक, मक्कार, अविचारी तथा लम्पट था। थोड़े ही समय के बाद उसने किसी बहाने से ड्यूक को बंदी कर लिया और बलपूर्वक उससे रोमागना का प्रदेश ले लिया। उसके बाद उसको नेपिल्स जाने की आज्ञा दे दी। वहाँ थोड़े दिनों पश्चात् शाह फर्डीनेन्डो की आज्ञा से उसको पुन: बंदी करके स्पेन ले जाया गया। पहले उसको मुर्सिया के छोटे दुर्ग में रक्खा गया फिर सावधानी के लिए पुराने दुर्ग में येडीना-डेल केम्पो के कारागार में बन्द कर दिया गया। ऐसा जान पड़ा मानो इटली सदा के लिए एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति के पंजे से छुटकारा पा गया जिसने उसकी शान्ति भंग कर रक्खी थी।

पर कुछ ही महीनों बाद सारा देश यह सुनकर विस्मय से चकित रह गया कि वह निकल भागा है और दुर्दान्त यात्राओं को पूरा करके व्यापारी के वेश में पैम्पलौना पहुंच गया है जो उसके बहनोई की राजधानी थी। उसका बहनोई नवारी का शाह था। इस समाचार से उसके दल वाले बड़े उत्साहित हुए और रोमागना में जबर्दस्त खुशियां

मनाई गई । इटली के छोटे-छोटे राजा लोग भय से कांप उठे। नवारी का शाह उस समय अपने सूबेदारों से युद्ध कर रहा था। उसने सीज़र बोर्जिया को सारी सेना का अधिकार दे दिया

इन चार वर्षों में मैक्यावैली बहुत ही कामकाज मे लगा रहा। उसको कई बार राजकाज से बाहर जाना पड़ा। उसको एक सुदृढ़ सेना के संगठन का भार भी सौंपा गय था जिससे भाड़े की सेना पर निर्भर न रहना पड़े। और जब कोई दूसरा काम न होता तो उसे सचिव कार्यालय में काम करना पड़ता था। उसकी पाचन शक्ति पहले से ही शोचनीय थी। जाड़े, गर्मी, बरसात, हवा और ओलों में घोड़े की यात्रा मार्ग का निकृष्ट भोजन, थकावट तथा कार्य-भार ने उसे जर्जरित कर दिया और सन् १५०७ के फर्वरी महीने में वह सख्त बीमार पड़ गया। उसने बहुत इलाज किया, अपनी चिकित्सा स्वयं भी की। तब वह किसी प्रकार अच्छा हुआ पर वह इतना दुर्बल हो गया था कि उसको सरकार से एक मास की छुट्टी मिल गयी। वह अपने खेतों पर सेन कैसियानो चला गया जो फ्लोरेंन्स से तीन मील की दूरी पर था। वहां धीरे-धीरे उसका स्वास्थ पहले जैसा हो गया।

उस वर्ष वसन्त समय से कुछ पहले ही आ पहुँचा। गावों में वृक्षों पर नई पत्तियाँ लद गई, जंगली फूल खिल उठे, हरी-हरी घास उग आई और गेहूँ के पौदे लहलहाने लगे। यह सब दृश्य नेत्रों को बड़ा लुभावना लगता था। टस्केनी का दृश्य मैक्यावैली के मन को बहुत भाता था। उसमें आल्पस की ऊँचाई की गरिमा न थी और न सागर की गहराई की मधुरिमा ही। पर यहाँ की धरती ऐसी चौरस थी जो बड़ी मनोहर और आकर्षक लगती थी। उनमें तीव्रता न थी और वह उन मनुष्यों के रहने योग्य थी जो हास्य, तर्क, सुन्दर स्त्रियों तथा आमोद-प्रमोद को पसन्द करते हैं। यह डान्टे के उच्चतम गंभीर संगीत के समान न होकर लौरेन्ज़ो के चलते हुए सामान्य गीत के समान थी।

मार्च महीने में एक दिन सबेरे मैक्यावैली अपनी भूमि पर उस नाली

"वही चक्की वाला और कसाई।"

"राम राम। ऐसे गंदे लोगों के साथ ?"

"वे मेरी बुद्धि को जंग नहीं लगने देते। जब वे बात करते हैं तो मिनिस्टर से कम नहीं लगते और वे सब दुष्ट नहीं हैं।"

उसने अपने बड़े लड़के वर्नार्डो को घुटने पर बैठा लिया और उसे खाना खिलाने लगा। मेरिएटा बोली, "अपना भोजन ठंडा मत करो।"

उन्होंने रसोईघर में ही भोजन किया। नौकरानी तथा एक मजदूर भी वहीं बैठे थे। शोरबा खत्म होने पर नौकरानी लोहे की छड़ में पके हुए छः लवा पक्षी लाई। उसको देखकर बड़ा विस्मय तथा आनन्द हुआ, क्योंकि साधारणतया उसके भोजन में केवल शोरबा और सलाद ही होते थे।

"यह क्या है ?"

"ग्यावेनी ने पकड़े थे ये पक्षी। मैंने सोचा कि तुम उन्हें भोजन के साथ बहुत पसंद करोगे।"

"क्या ये सब मेरे ही लिए हैं ?"

"हां, सब के सब।"

"मेरिएटा, तुम बड़ी भली हो।"

उसने रुखाई से उत्तर दिया, "हमारे विवाह को पांच वर्ष हो गए और मैं जान गई हूँ कि अच्छा भोजन देकर तुम्हारे हृदय को जीता जा सकता है।"

मैक्यावैली एक छोटा-सा पक्षी अपनी पत्नी के मुँह में जबरदस्ती ठूँसने लगा जिसे वह हाथ से हटा रही थी। मैक्यावैली ने कहा, "प्रिये ! तुमने मेरे मन की बात ताड़ ली जिसके पुरस्कार में मैं तुम्हें एक लवा देता हूँ।"

"पक्षी आनन्द के साथ आकाश में उड़ते हैं और मस्ती में गीत

गाते हैं। पर फिर कोई आवारा लड़का उनको पकड़ लेता है और पका कर खा जाता है। उसी प्रकार बड़े-बड़े ऊँचे आदर्श वाला मनुष्य भी अपनी चतुराई के स्वप्न देखता रहता है तथा असंभव को पाने की इच्छा करता है। पर अन्त में दैव के थपेड़ों से मारा जाकर कीड़ों का भोजन बनता है।"

"अच्छा, पहले भोजन करलो। बातें पीछे कर लेना। मैक्यावैली हँसा। उसने एक और पक्षी छड़ से निकाला और अपने दृढ़ दाँतों से चबाता हुआ बड़े प्रेमपूर्वक अपनी स्त्री की ओर देखने लगा। वास्तव में वह बड़ी नेक थी। वह मितव्ययी तथा शीलवती थी। जब वह परदेश जाता तो वह बड़ी दुःखी होती थी और जब लौटकर घर आता तो बड़ी प्रसन्न होती थी। उसको आशंका होती थी कि कहीं वह यह तो नहीं जानती कि वह उसके साथ वफादार नहीं है। पर यदि वह जानती भी है तो भी उसने कभी यह प्रगट नहीं होने दिया। इससे प्रत्यक्ष था कि वह बुद्धिमती है और सरल स्वभाव की भी। यदि वह अपनी पत्नी से इतना खुश न होता तो और भी पतन की ओर बढ़ जाता। जब वे निवृत्ति हो चुके और नौकरानी वर्त्तन मलने लगी तो मेरिएटा ने अपने बालकों को विस्तर पर सुला दिया।

मैक्यावैली दिन भर के मैले-कुचैले वस्त्रों को बदलने के लिए ऊपर गया। उसने वहां बढ़िया और साफ कपड़े पहने क्योंकि अपने अध्ययन कक्ष में बैठकर पुस्तकें पढ़ने का उसका नित्य का स्वभाव था।

वह अभी कपड़े बदल भी न पाया था कि उसने एक घुड़सवार की पहिचानी हुई आवाज़ सुनी जो नौकरानी से उसी के बारे में पूछ रहा था। वह व्यक्ति व्याजियो था और इस बात से उसको बड़ा विस्मय हुआ कि इस असमय में वह नगर छोड़कर वहां क्यों आया है।

उसने नीचे से ही पुकारा, "निकोलो, मैं तुम्हारे लिए एक समाचार लाया हूँ।"

"एक मिनिट ठहरो, मैं अभी तैयार होकर नीचे आया।"

दिन छिप चुका था और ठंड पड़ने लगी थी। इसलिए उसने अपने कोट पर लबादा ओढ़ लिया और द्वार खोला। व्याजियो सीढ़ियों के नीचे उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"इलवैन्टीनो मर गया।"

"तुम्हें कैसे पता चला ?"

"पेमालोना से आज एक दूत आया है। मैंने सोचा तुम जानना चाहोगे। इसलिए तुरन्त घोड़े पर चढ़कर चला आया।"

"अन्दर कमरे में आओ।"

वे दोनों कमरे में जाकर बैठ गए—मैक्यावैली अपने लिखने वाली मेज़ पर और व्याजियो एक नक्काशीदार कुर्सी पर जो मेरिएटा के दहेज में आई थी। व्याजियो को जो कुछ वृत्तान्त मालूम था वह उसने सुना दिया। सीज़र बोर्जिया ने अपना मुख्य कार्यालय ऐब्रो के एक ग्राम में बनाया था। वहां से वह लेरिन के दुर्ग पर आक्रमण करना चाहता था जो विद्रोही सूवेदारों में सब से अधिक शक्तिशाली था। १२ मार्च को उसके तथा काउन्ट के आदमियों में आपस में झड़प हो गई। जब खतरे की घंटी बजी तो सीज़र बोर्जिया अपने कमरे में ही था। उसने अपना कवच पहना घोड़े पर सवार हुआ और युद्धभूमि की ओर दौड़ा। विद्रोही भाग गए किन्तु वह बराबर उनका पीछा करता रहा। उसने यह नहीं देखा कि उसका भी पीछा किया जा रहा है। अन्त में वह एक गहरे खड्ड के पास जा पहुंचा जहां उसको चारों ओर से घेर लिया गया। वह बड़ी वीरता से अंत तक लड़ता रहा। दूसरे दिन शाह को उसकी नंगी लाश मिली क्योंकि विद्रोहियों ने उसका कवच और वस्त्र सब उतार लिए थे। शाह ने अपने लबादे से उसका बदन ढका।

मैक्यावैली ध्यानपूर्वक व्याजियो की बात सुनता रहा और सब कुछ सुन लेने पर भी मौन ही रहा।

थोड़ी देर में व्याजियो बोला, "यह अच्छा ही हुआ कि वह मर गया।"

"उसका प्रदेश, धन तथा सेना सब बरबाद हो गई थी, फिर भी इटली-निवासी उससे डरते थे।"

"वह बड़ा ही भयानक मनुष्य था।"

"रहस्यमय भी। उसका भेद कोई नहीं जान सका। वह निर्दयी, अविचारी तथा विश्वासघाती था। पर साथ ही वह योग्य और वीर था। स्वभाव से वह शान्त तथा संयमी था। अपने मार्ग में कोई विघ्न वह सहन नहीं कर सकता था। स्त्रियाँ उसे अच्छी लगती थीं किन्तु उन्हें वह केवल अपनी भोग-विलास की सामग्री मानता था। उनमें अनु-रक्त कभी नहीं हुआ। उसने ऐसी सेना बनाई थी जो स्वामिभक्त थी तथा उस पर भरोसा करती थी। वह आराम-तलब न था। जब वह युद्ध पर जाता तो भूख तथा ठंड की सर्वदा उपेक्षा करता और उसके अंग ऐसे सुदृढ़ थे कि थकने का तो नाम ही न लेता। वह धीर-वीर तथा साहसी था। अपने छोटे से छोटे मित्र के लिए अपने को विपत्ति में डालता। वह युद्ध करने में जितना चतुर था उतना ही शान्ति स्थापित करने में भी। वह अपने मंत्री नाप-तोल कर चुनता था किन्तु इस बात का प्रयत्न करता था कि वे उसकी दया के अधीन रहें। उसने अपने को सशक्त बनाने के लिए सारे उपाय किए जो एक बुद्धिमान से बुद्धिमान पुरुष कर सकता है। फिर भी यदि वह असफल रहा तो इसमें उसका कोई दोष नहीं। भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। जिस उत्साह तथा उच्चाकांक्षा से उसने कार्य किया उससे अधिक करना किसी के लिए संभव नहीं। उसके उद्देश्यों पर अलैग्जेंडर की मृत्यु तथा उसकी बीमारी के कारण पानी फिर गया। यदि उसका स्वास्थ्य ठीक होता तो वह सारी कठिनाइयों पर विजयी होता।"

व्याजियो ने कहा। "उसके अत्याचारों का उसे उचित ही दण्ड मिला।

मैक्यावैली ने अपने कंधों को झकझोरा।

"यदि वह जीवित रहता और भाग्य उसका दामन नहीं छोड़ता तो वह लुटेरों और अत्याचारियों को इस अभागे देश से मार भगाता, और

इसे शान्त तथा समृद्ध बनाता। तब लोग भूल जाते कि शक्ति संचय करने के लिए उसको क्या-क्या पाप करने पड़े थे और भावी संतान उसे महापुरुष मानती। अब कौन सोचता है कि सिकंदर महान निर्दयी और कृतघ्नी था तथा जूलियस सीजर विश्वासघाती था? इस संसार में केवल यही आवश्यक है कि शक्ति संचय करो और सशक्त बने रहो, तो जिन साधनों से तुमने शक्ति पाई है, लोग उनका भी आदर करेंगे तथा प्रशंसा करेंगे। यदि सीज़िर बोर्जिया को आज बुरा कहा जाता है तो केवल इस कारण कि वह असफल रहा। किसी दिन मैं उसका जीवन-चरित्र लिखूँगा और उसके कार्यों से जो शिक्षा मिली है उनका वर्णन करूँगा।"

"निकोलो भाई, तुम बड़े अव्यावहारिक हो। बताओ उसे कौन पढ़ेगा? ऐसी पुस्तक लिखकर तुम अपना नाम अमर नहीं कर सकोगे।"

मैक्यावैली ने हँस कर कहा, "मुझे उसकी आकांक्षा नहीं।"

व्याजियो ने संशय के साथ मैक्यावैली की मेज पर एक विशाल हस्त-लिखित पुस्तक देखी, "वह सामने क्या है?"

मैक्यावैली के मुख पर मधुर मुस्कान फैल गई। "एक बार मैं निठल्ला था इसलिए सोचा कि एक नाटक लिख कर ही अपना समय व्यतीत करूँ। तुम सुनोगे?"

व्याजियो ने संदेह के स्वर में कहा, "नाटक? उसका कोई राजनीतिक महत्व है?"

"बिल्कुल नहीं। यह तो केवल दूसरों को हँसाने के लिए लिखा गया है।"

"आह निकोले, तुम कब गंभीर बनोगे। आलोचक तुम्हें व्यंग-बाणों से छेद डालेंगे।"

"क्यों? एप्यूलियस ने 'गोल्डन आस' तथा पेट्रोनियस ने 'सेटाई-रोकोन' केवल लोगों को खुश करने के ही लिए लिखे थे।"

"किन्तु वे उच्चकोटि की साहित्यिक कृतियाँ हैं। उनकी बात अलग है।"

"तुम्हारा कहना है कि मनोरंजन की पुस्तकें भी प्राचीन होकर वृद्धा दुराचारिणी के समान आदरणीय हो जाती हैं? मुझे प्रायः आश्चर्य होता है कि आलोचकों को ऐसा पुराना मज़ाक ही क्यों पसन्द आता है जिसका स्वाद फ़ीका पड़ चुका हो। वे नहीं जानते कि सच्चे परिहास वास्तविकता पर ही आधारित होते हैं।"

तुम तो कहा करते थे कि उक्ति की आत्मा संक्षिप्तता में नहीं, अश्लीलता में ही है। क्या अब तुम्हारा विचार बदल गया है?"

"बिल्कुल नहीं, क्योंकि अश्लीलता से अधिक वास्तविक और क्या हो सकता है? प्यारे व्याजियो, विश्वास रक्खो कि यदि ऐसा न होता तो लोगों को अपना वंश बढ़ाने में ही कोई दिलचस्पी न होती और तब सृष्टिकर्त्ता के इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रयोग का अंत हो जाता।"

"निकोलो, अपना नाटक सुनाओ। तुम जानते हो कि मुझे तुम्हारी इस प्रकार की बातें अच्छी नहीं लगतीं।"

हँसकर मैक्यावैली ने अपनी हस्तलिखित पुस्तक उठाली और पढ़ना आरम्भ किया।

"फ्लोरैन्स का एक मोहल्ला।"

एक दम उसको ध्यान आया कि कहीं उसकी यह प्रथम कृति उसके मित्र को अरुचि-कर न लगे इसलिए नए लेखक की सी झिझक उसे हुई। वह रुककर कहने लगा, "यह मेरा प्रथम प्रयास है और मुझे विश्वास है कि दुबारा देखने पर मैं इसमें बहुत कुछ सुधार कर दूंगा।"

वह शीघ्रता पूर्वक पुस्तक के पन्ने पलटने लगा। उसको यह नाटक लिखकर बड़ी खुशी हुई थी पर उसने दो एक बातों पर ध्यान नहीं दिया था। नाटक के पात्र ने एक अपनी निज की गति प्राप्त करली थी और वे अपने मूल रूप से बहुत दूर चले गये थे। ल्यूक्रज़िया, औरेलिया की भांति ही छायामयी-सी बनी रही थी। वह इसे अधिक ठोस रूप न दे पाया था। कथानक की आवश्यकताओं के कारण उसने उसे अत्यन्त सदाचारिणी स्त्री बनाया था जिसे उसकी माँ तथा पुरोहित उसकी

इच्छा के विरुद्ध पाप की ओर अग्रसर करते थे। पीयरो का नाम उसने लिगूरियो रक्खा था, और उसका महत्व नाटक में आशा से कहीं अधिक हो गया था। मूर्ख पति को वही वह योजना सुझाता था, वही ल्यूक्रेज़िया की माँ तथा पुरोहित से मिलता था। संक्षेप में वह सारा चक्र उसी ने घुमाया था जिससे अंत में नायक की इच्छा पूरी होती थी। वह दक्ष, कार्य-कुशल, चतुर तथा आकर्षक रूप में सिद्धान्त हीन था। मैक्यावैली ने बड़ी आसानी से अपने आपको उस दुष्ट नायक के रूप में चित्रित कर दिया पर अन्त में नाटक समाप्त करने पर उसने अनुभव किया कि उसके अपने चरित्र की छाप प्रेमाक्रांत नायक के ऊपर जितनी है उतनी ही उस चतुर षड्यन्त्रकारी के ऊपर भी है।

एक ही नाटक में दो पात्रों के रूप में इस भाँति प्रगट होना उसे बड़ा अजीब लगा। यह सोचकर व्याजियो की ओर देखकर पूछा—

"अच्छा, तुम्हारे भांजे पीयरो के आजकल क्या समाचार हैं?"

"वास्तव में मैं आपको उसके बारे में बतलाना भी चाहता था। पर इलवैन्टीनो की मृत्यु ने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया कि मैं भूल ही गया। पीयरो का विवाह होने वाला है।"

"क्या सचमुच? अच्छी लड़की मिल गयी?"

"हाँ! वह साक्षात् लक्ष्मी से विवाह कर रहा है। तुम्हें इमोला के बार्थोलोमियो का स्मरण तो होगा? उससे मेरा दूर का रिश्ता भी था।"

मैक्यावैली ने सम्मतिसूचक सिर हिलाया।

"जब इमोला में विद्रोह हुआ तो उसने वहां से उस समय तक के लिए खिसक जाना उचित समझा जब तक शान्ति न स्थापित हो जाए। तुम तो जानते ही हो कि वह भी ड्यूक का खास आदमी था और उसने समझ लिया कि ड्यूक के साथ-साथ उसे भी विपत्ति में पड़ना होगा। वह तुर्किस्तान चला गया, जहाँ उसका व्यवसाय भी था। पोप के सैनिक गड़बड़ होने से पूर्व ही नगर में पहुँच गए। भाग्यवश पीयरो भी उन्हीं के साथ था।

ऐसा लगता है कि कुछ ऐसे विशिष्ट व्यक्ति उससे प्रसन्न थे जिनका कहना पोप मानता था। इसीलिए वह बार्थोलोमियो की सम्पत्ति की रक्षा करने में सफल हो गया। किन्तु बार्थोलोमियो को देश निकाला हो चुका था, बाद में समाचार मिला कि स्मरना में उसकी मृत्यु हो गई। पीयरो अब उसी की विधवा से विवाह कर रहा है।"

मैक्यावैली ने कहा, "बहुत ही ठीक और उचित काम है।"

लोगों से सुना है कि उसकी उम्र बहुत कम है और देखने में भी सुन्दर है। उसे भी निस्संदेह अपनी रक्षा के लिए कोई योग्य व्यक्ति चाहिए। पीयरो काफी समझदार है।"

"उसके व्यवहार से मैं भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचा था।"

"पर एक बाधा अवश्य है। बार्थोलोमियो के एक छोटा-सा लड़का था, कोई तीन चार वर्ष का, वह अभी जीवित है। इसलिए पीयरो के अपने बच्चों का भविष्य अधिक उज्ज्वल नहीं होगा।"

मैक्यावैली कुछ रुखाई से बोला, "मुझे तो यक़ीन है कि वह उस बच्चे को भी अपने बच्चे की भांति ही प्यार करेगा।"

वह फिर अपना नाटक सुनाने लगा। संतोष की मुस्कान उसके मुख पर फैल गई। वह यह सोचे बिना न रह सका कि फ्रा टिमोटियो के चरित्र-चित्रण में वह सफल हुआ है। उसकी कलम से जो शब्द निकले थे वे उसे लोगों की दृष्टि से गिराने के लिए पर्याप्त थे। लिखते समय भी वह रोषपूर्ण हँसी उसके मुख पर खेल गई थी। उसके चरित्र में उसने ऐसे पुरोहितों के लिए अपनी सारी घृणा कूट-कूटकर भर दी थी जो भोले-भाले लोगों को ठग मोटे होते हैं। उसके ही चरित्र के ऊपर ही उसके नाटक की सफलता या असफलता निर्भर थी। उसने फिर आरम्भ किया।

"फ्लोरेंस का एक मोहल्ला।"

वह रुककर ऊपर देखने लगा।

व्याजियो ने पूछा—"क्या बात है?"

"तुम कहते हो कि सीज़र बोर्जिया को उसके कर्मों का उचित दण्ड मिल गया। वह अपने बुरे कामों के कारण नहीं, वरन उन परि-स्थितियों के कारण नष्ट हुआ जिन पर उसका कोई वश न था। उसकी दुष्टता का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। पाप और पुण्य की इस दुनिया में यदि पुण्य की पाप पर विजय होती है तो उसका कारण यह नहीं कि वह पुण्य है, बल्कि इसलिए कि उसके पास अधिक शक्ति और साधन होते हैं। यदि ईमानदारी बेईमानी पर विजय पाती है तो उसका कारण भी यही है कि उसके शस्त्र पैने हैं। यदि नेकी बदी को पराजित करती है तो उसका कारण है उसके पीछे भरे हुए बटुए का बल होता है। सत्य का मार्ग ग्रहण करना ठीक है, पर यह नहीं भूल जाना चाहिए कि यदि शक्ति का हमारे पास अभाव है तो उससे कुछ भी प्राप्त न होगा। हमें विश्वास है कि परमात्मा सदाचारियों से प्रेम करता है किन्तु इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है कि वह मूर्खों की मूर्खता के परिणाम से रक्षा करता फिरेगा।

उसने लम्बी सांस ली और फिर तीसरी बार पढ़ना आरम्भ किया।

"फ्लोरेंस का एक मोहल्ला ! कैलीमासो और लिगूरियो का प्रवेश.................."

—:o:—